डॉ. मन्नूराव आनन्द : व्यक्तित्व और कृतित्व

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की

हिन्दी साहित्य विषय में

पी–एच.डी. शोध उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

2005-2006

मार्गदर्शक :

डॉ. श्यामसुन्दर सोनकिया
पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
श्रीमंत विजयाराजे सिंधिया
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अड़ोखर
जिला भिण्ड (म. प्र.)

सहमार्गदर्शक :

डॉ. दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव
पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष,
डी.वी. कॉलेज, उरई, उ.प्र.

अनुसंधित्सु :

वन्दना मिश्रा

कु. वन्दना मिश्रा
पुत्री श्री रघुवीर सहाय मिश्रा
275–गोपालगंज, उरई
जनपद जालौन (उ. प्र.)

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है है कि **कु. वन्दना मिश्रा** ने मेरे निर्देशन में ***''डॉ० मन्नूराव 'आनन्द' : व्यक्तित्व और कृतित्व''*** विषय पर अपना शोध कार्य पूर्ण किया है।

शोधार्थिनी ने मेरे निर्देशन में 200 दिन की उपस्थिति देकर कार्य को विधिवत् सम्पन्न किया।

शोध प्रबंध विश्व विद्यालय की शोध–उपाधि से सम्बन्धित अध्यादेश की वांछित नियमावली को पूर्ण करता है तथा विषय वस्तु और भाषा दोनों ही दृष्टियों से परीक्षकों के सम्मुख प्रस्तुत करने योग्य है।

मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

सह मार्गदर्शक :

डॉ. दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव
पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष
डी. वी. कॉलेज, उरई (उ.प्र.)

मार्गदर्शक :

डॉ. श्यामसुन्दर सौनकिया
पूर्व विभागाध्यक्ष–हिन्दी
श्रीमंत विजयाराजे सिंधिया महाविद्यालय,
अड़ोखर, जिला भिण्ड (म.प्र.)

शोधार्थिनी का घोषणा-पत्र

मैं घोषणा करती हूँ कि **''डॉ. मन्नूराव 'आनन्द' : व्यक्तित्व और कृतित्व''** शीर्षक शोध प्रबंध ***डॉ. श्यामसुन्दर सौनकिया*** के मार्गदर्शन में किया गया सर्वथा मौलिक प्रबंध है तथा मेरे द्वारा किये गये शोध कार्य पर आधारित है। मेरे पूर्ण ज्ञान से इस शीर्षक पर किसी भी विश्व विद्यालय और शैक्षणिक संस्थान में अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ।

शोधार्थिनी :

वन्दना मिश्रा

कु. वन्दना मिश्रा

D/o ***श्री रघुवीरसहाय मिश्रा***

२७५- गोपाल गंज उरई

जिला जालौन, उ.प्र.

आरंभिकी

बुन्देलखण्ड की पावनधरा पर श्रेष्ठ संत, उद्भट विद्वान, महान कवि, उच्चकोटि के साधक, वीर नरेश तथा अनुपम योद्धा अवतरित होते रहे हैं। यमुना, पहूज, चम्बल, क्वांरी तथा सिंधु नदियों से परिवेष्टित जनपद जालौन बुन्देलखण्ड का प्रवेश द्वार माना जाता है। जालौन में अवतरित **डॉ. मन्नूराव ''आनन्द''** विरचित राष्ट्रीय ऐतिहासिक महाकाव्य **'झाँसी की रानी'** को दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उरई के पुस्तकालय में देखने व पढ़ने का सौभाग्य मिला। महाकाव्य की वस्तु—प्रतिपाद्य एवं भाषाशैली देखकर डॉ. मन्नूराव आनन्द के सम्बन्ध में कुछ और जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

'डॉ. मन्नूराव आनन्द के व्यक्तित्व और कृतित्व' पर शोधकार्य करने की लालसा से जब मैं अपने शोध—निर्देशक डॉ. श्याम सुन्दर सौनकिया से मिली, तो उन्होंने मुझे प्रोत्साहित करते हुए शोध ा—निर्देशक बनने की स्वीकृति दे दी तथा बड़ी आत्मीयता से विषय की रूपरेखा तैयार करने में मेरी भरपूर मदद् की। इस विषय की रूपरेखा निश्चित करने में डॉ. दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव तथा डॉ. रामशंकर द्विवेदी (सेवा निवृत्त प्राध्यापक द्वय दयानंद वैदिक महाविद्यालय, उरई) के सुझाव मूल्यवान रहे हैं। डॉ. दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव ने स्नेहाशीष के साथ सह—निर्देशक बनने की कृपा की।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से शोध—प्रबन्ध को आठ अध्यायों में विभक्त किया गया है। अन्त में परिशिष्ट के अन्तर्गत आधार एवं संदर्भ ग्रन्थ सूची दी गई है। **प्रथम अध्याय** के अन्तर्गत डॉ. आनन्द का

परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत है। पारिवारिक पृष्ठभूमि, जन्म, माता–पिता, कद–काठी, वेश–भूषा, खान–पान, रुचि–अरुचि, काव्यपाठ, विनोद प्रियता एवं स्वाभाविक उदारता को विश्लेषित किया गया है।

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत डॉ. मन्नूराव आनन्द के साहित्यिक कृतित्व का संक्षिप्त विवेचन है। उनकी प्रकाशित कृतियाँ **झाँसी की रानी, एम. एल.ए.राज, सन् अड़तालीस,** तथा **शक्ति निदान** का सामान्य परिचय प्रस्तुत किया गया है तथा अप्रकाशित रचनाएँ जैसे– **दारुलशफा, पब्लिक इन्टरेस्ट, हिमालय सीमा, फौजी गठबन्धन** आदि का परिचयात्मक विवरण भी विश्लेषण का विषय है।

तृतीय अध्याय में डॉ. आनन्द के महाकाव्य **'झाँसी की रानी'** की विषयवस्तु, राजनीतिक संदर्भ, तत्कालीन सामाजिक स्थिति, भाषा–सामर्थ्य, मार्मिक स्थलों का वर्णन तथा अंगीरस का विशद विवेचन प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत महाकाव्य ओजगुण प्रधान रचना है। अतः उसमें वीररस को अंगीरस के रूप में विवेचित किया गया है।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत डॉ.आनन्द की अन्य प्रकाशित रचनओं– **एम.एल.ए.राज, सन् अड़तालीस** तथा **शक्ति निदान** की विषयवस्तु, सामाजिक प्रभाव, भाषा का स्वरूप तथा तत्कालीन राजनीतिक संदर्भों को प्रतिपाद्य बनाकर विश्लेषित किया गया है। **'शक्ति निदान'** रचना प्रसिद्ध आयुर्वेदिक ग्रन्थ **'माधव निदान'** का भावानुवाद है। इसे पढ़कर डॉ. आननद का आयुर्वेद सम्बन्धी ज्ञान एवं अनुभव उजागर होता है।

पंचम अध्याय में कवि की अप्रकाशित कृतियों का विवरण है। उनकी अप्रकाशित कृतियों में **दारुलशफा, पब्लिक इन्टरेस्ट, हिमालय सीमा, फौजी गठबन्धन, यही देश है वह, बात आ गई है** आदि हैं। इन रचनाओं की विषयवस्तु, रचनाओं में हास्य एवं व्यंग्य, राष्ट्रप्रेम, भाषायी स्वरूप तथा राजनीतिक प्रभावों का परीक्षण किया गया है।

षष्ठ अध्याय में डॉ. आनन्द की काव्य–भाषा को विश्लेषण का विषय निर्धारित किया गया है। इसमें काव्य की भाषा का सामान्य स्वरूप, काव्य भाषा की शब्द–सम्पदा जैसे तत्सम, तद्भव, देशज, स्थानीय तथा बुन्देली शब्द–रूप, काव्य भाषा में अनुप्रासमयता, चित्रमयता तथा नादात्मकता विवेच्य रही है। काव्य–भाषा की व्याकरणिक कोटियों के मूल्यांकन में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण तथा अव्यय आदि का विश्लेषण किया गया है।

सप्तम् अध्याय के अन्तर्गत डॉ. मन्नूराव आनन्द के साहित्यिक कृतित्व का समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत है। इसमें कवि के सम्पूर्ण रचना संसार में रसों का विवेचन, राष्ट्रीयता तथा आंचलिकता को प्रतिपाद्य बनाकर विश्लेषण किया गया है। अध्याय के अन्त में **निष्कर्ष** भी दिया गया है।

अष्टम् अध्याय में उपसंहार है। इसमें सम्पूर्ण शोध–प्रबन्ध का संक्षिप्त सार प्रस्तुत किया गया है। डॉ. आनन्द की भाषा–शैली तथा विषय प्रतिपादन की क्षमता पर पुनर्विचार किया गया है।

!! आभार !!

आदरणीय डॉ. दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव, डॉ. राजेशय पाण्डेय, डॉ. नीलम मुकेश तथा डॉ. रामशंकर द्विवेदी ने समय–समय पर अपने अमूल्य सुझावों से विषय प्रतिपादन में सहायता दी, इसके लिए मैं उन विद्वान महानुभावों के प्रति कृतिज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

राजकीय पुस्तकालय, उरई, डी.बी. कालेज, गाँधी महाविद्यालय तथा सनातन महाविद्यालय, उरई के पुस्तकालयाध्यक्षों को सादर अभिवादन पूर्वक धन्यवाद देती हूँ। इनके विनम्र सहयोग से दुर्लभ ग्रन्थों को पढ़ने का सुयोग मिल सका।

परम श्रद्धेय पिताश्री, माता श्री, बड़ी बहिन तथा भाइयों के प्रति आभार व्यक्त करने से अपनत्व का अपमान होगा। उन सबकी स्नेह पूर्ण सत्कृपा पर मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। इन सभी ने आर्थिक सहयोग

के साथ मौखिक रूप से उत्साह वर्धन करके सदा ही मेरा मनोबल ऊँचा किया। प्रिय भाई योगेश को जितना धन्यवाद दिया जाय, उतना कम है। इन्होंने पुस्तकें एकत्रित करने तथा विश्वविद्यालयीन कार्यों में हाथ बटाकर मेरी आशा से अधिक मदद् की है। वे अतिशय धन्यवाद के पात्र है।

मेरी अभिन्न सहपाठिनी कु. श्वेता दीक्षित तथा कु. मीनाक्षी गोस्वामी का प्रेम–प्लावित प्रोत्साहन मेरी शोध–यात्रा का पाथेय रहा है।

जिन विद्वानों के ग्रन्थों से तथा मौखिक सम्पर्क से मुझे किंचिनमात्र भी सहायता मिली,उनके प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ।

अन्त में मैं इस शोध–प्रबन्ध के निर्देशक डॉ. श्यामसुन्दर सौनकिया के प्रति हृदय से श्रद्धा समन्वित आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके आदेश–निर्देश से तथा आत्मीय व्यवहार से मेरा समुचित पद–प्रदर्शन होता रहा तथा त्रुटियों से बचने की प्रेरणा मिलती रही। उनके परिवार जनों ने मुझे अतिशय आत्मीयता प्रदान की तथा शोध–प्रबन्ध को पूरा करने की प्रेरणा दी। मैं उनका तथा उनके परिवार जनों का आभार व्यक्त करती हूँ।

अक्षर कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर्स, सेंवढ़ा जिला दतिया (म. प्र.) के संचालक श्री ज्योतिप्रकाश श्रीवास्तव को हृदय से धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने इस शोध–प्रबन्ध को सुन्दर तथा स्वच्छ ढंग से टंकित कर पुस्तक का आकार दिया है।

अनुसंधित्सु :

कु. वन्दना मिश्रा

अनुक्रम

अनुसंधित्सु :

प्रथम अध्याय :

डॉ. आनन्द - परिचय एवं व्यक्तित्व

- पारिवारिक पृष्ठ भूमि
- जन्म
- माता-पिता
- कद-काठी
- वेश-भूषा
- खान-पान
- रुचि-अरुचि
- अखिल भारतीय काव्य मंच : कविता पाठ एवं संचालन
- विनोद प्रियता
- स्वाभाविक उदारता

प्रथम अध्याय

डॉ. आनन्द : परिचय एवं व्यक्तित्व

क - परिचय

जन्म – ओज और राष्ट्रीय चेतना के प्रखर व्यक्तित्व, सर्वतोमुखी प्रतिभा सम्पन्न कवि, संवेदनशील भावों के स्फूर्तिवान उत्कर्ष तथा काव्य क्षेत्रान्तर्गत प्रवाहपूर्ण शैली, सजग चिन्तन एवं अनूठी काव्य प्रतिभा के मूर्धन्य हस्ताक्षर डॉ. मन्नूराव 'आनन्द' का जन्म बुन्देलखण्डान्तर्गत आध्यात्मिक सांस्कृतिक चेतना एवं राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष के महत्वपूर्ण केन्द्र जालौन में 25 अगस्त सन् 1900 ई. को ब्रह्मभट्ट परिवार में हुआ।

हिन्दी साहित्य जगत में 'डॉ. आनन्द' उप नाम से ही अखिल भारतीय स्तर पर आपने ख्याति अर्जित की। "जनपद जालौन बुन्देलखण्ड के पूर्वी द्वार के रूप में जाना जाता है। महर्षि पाराशर, वेदव्यास, उद्दालक तथा क्रोंच ऋषियों की तपोभूमि एवं प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की महारानी लक्ष्मीबाई, नाना साहब पेशवा, कुँवरसिंह बाँदा और तात्याटोपे आदि ने इस जनपद की क्रान्ति भूमि से कर्त्तव्य पथ को आगे

बढ़ाया है।[1] इसी अंचल में जन्मे डॉ. मन्नूराव आनन्द ने अपनी अदम्य काव्य प्रतिभा से यहाँ के साहित्यिक वातावरण को चेतना प्रदान की।

माता-पिता :

डॉ. आनन्द की माता का नाम श्रीमती राधारानी और पिता का नाम गोविन्दराव था। आपके पितामह श्री मुकुन्दराव सेंवढ़ा जिला दतिया से प्लेग महामारी के प्रकोप के कारण जालौन आकर बस गए थे। श्री मुकुन्दराव प्रतिष्ठित तथा प्रतिभा सम्पन्न सम्माननीय नागरिक थे। तत्कालीन राजाओं एवं जागीरदारों के यहाँ उनका सम्मान था।

डॉ. आनन्द के पिता गोविन्दराव अपने पिता मुकुन्दराव की इकलौती सन्तान थे। गोविन्दराव प्रतिभा सम्पन्न आशु कवि थे। पहलवानों की तरह सुडौल, सुगठित शरीर था। प्रातः दो घण्टे नित्य कसरत का अभ्यास किया करते थे। आधा किलो घी उनकी नित्य की खुराक में शामिल था। भंग का नियमित सेवन करते थे। उनके घोड़े का नाम राजबकश था। वे जमींदारों तथा ताल्केदारों के यहाँ घोड़े पर सवार होकर जाते थे। कविता सुनाकर श्रोताओं को मंत्र–मुग्ध करना उनका नित्य का कार्य था। हर जमींदार से चाँदी का एक सिक्का विदाई में मिलना पूर्व निश्चित था। आपका ऊँचा कद, गौरवर्ण, स्वस्थ एवं सुगठित शरीर, सिर पर बालों का जूड़ा, माथे पर लम्बा तिलक, कुल मिलाकर प्रभावशाली व्यक्तित्व था। जीवन के सम्पूर्ण सुख भोगते हुए सन् 1947 में गोविन्दराव दिवंगत हो गए।

डॉ. आनन्द की माँ राधारानी के पिता ग्राम ररी, जिला–भिण्ड के निवासी थे। राधारानी के ज्येष्ठ भ्राता हरनाथ जी प्रतिष्ठित कवि थे। उनके छोटे भाई शिवनाथ भी काव्य–सृजन में आजीवन संलग्न रहे। राधारानी संस्कार सम्पन्न, धार्मिक रुचि तथा स्वभाव से उदार महिला थीं। भजन–पूजन में व्यस्त रहना उनका नित्यकर्म था।

1– हर्षिता भूगोल : जिला जालौन – डॉ. बी. शर्मा, हर्षिता प्रकाशन मंदिर, राजमार्ग, उरई, पृष्ठ 3

परिवार

डॉ. आनन्द की माता जी ने चार संतानों को जन्म दिया। इनमें तीन बालक तथा एक बालिका थी। इनके नाम क्रमशः डॉ. मन्नूराव 'आनन्द', रामदास तथा भगवानदास थे। वंशवृक्ष इस प्रकार है–
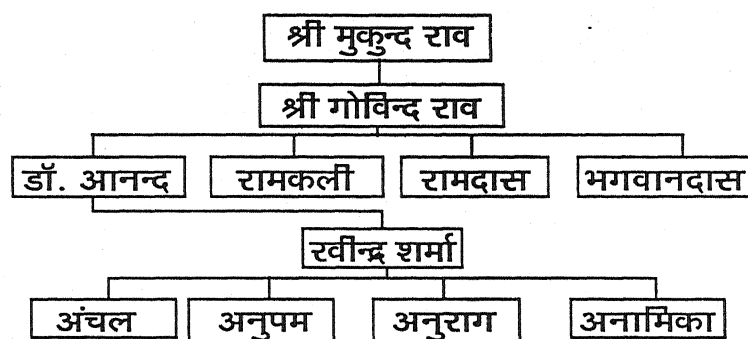
डॉ. आनन्द के परिवार का क्रमशः संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

1– डॉ. आनन्द :

जिन पर यह शोध प्रबन्ध ही प्रस्तुत है।

2– श्रीमती रामकलीदेवी :

आपका पाणिग्रहण संस्कार ग्राम धनौरा (कोंच) निवासी श्री मंगलदास जी के साथ सम्पन्न हुआ। कुछ बर्षों के उपरान्त यह दम्पति कानपुर निवासी हो गये। इनके कोई सन्तान नहीं थी।

3– रामदास :

आप रामजी भइया के नाम से श्रेष्ठ मृदंग वादक के रूप में प्रसिद्ध हुए। आप विश्व प्रसिद्ध कुदऊसिंह घराना से सम्बद्ध थे। इन्दौर में आयोजित विश्व–मृदंग–वादक प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर आपको नानापानसेकर अवार्ड से सम्मानित किया गया। दीपक राग, धमार, ध्रुवपद तथा मेघमल्हार में आप सिद्धहस्त थे। ऐसा कहा जाता है कि मृदंग पर गजपरन बजाकर आप पागल हाथी को भी वश में कर लेते थे। गणेशपरन में तो आपकी समता कोई कर नहीं सका। काली ताण्डव तथा शिवताण्डव जब मृदंग पर बजाते थे, तब एक–एक बोल स्पष्ट समझ में

आता था। अखिल भारतीय स्तर पर ख्याति प्राप्त करने के बाद आपको मृदंग वादन के लिये फिल्मों में आमंत्रित किया गया। परिणामतः आपने पाकीजा, मुगलेआजम, किनारा, पूजा के फूल, फूलों की सेज, नवरंग तथा झनक–झनक पायल बाजे आदि फिल्मों में कुशलता पूर्वक मृदंग वादन किया। इनके कोई सन्तान नहीं थी। अन्त में वृद्धावस्था में बम्बई में ही इनका स्वर्गवास हो गया।

4– भगवानदास :

आप चचा भगवानदास के नाम से प्रसिद्ध थे। अपने बड़े भाई रामजी भइया के मृदंग वादन में तबला बजाकर उनकी संगत करते थे। आप काव्य अभिरुचि सम्पन्न भी थे। युवावस्था में आपका पाणिग्रहण टुण्डला निवासी रामप्रसाद की पुत्री श्रीमती प्रेमादेवी के साथ हुआ था। आपके रवीन्द्र, सुरेन्द्र, वीरेन्द्र, राजेन्द्र तथा जितेन्द्र पाँच पुत्र तथा ऊषा और किरन दो पुत्रियाँ थीं। डॉ. आनन्द के कोई सन्तान नहीं थी, इसलिए भगवानदास के ज्येष्ठ पुत्र रवीन्द्र शर्मा को उन्होंने दत्तक पुत्र के रूप में ग्रहण किया था। चचा भगवानदास जी को उत्तर प्रदेश सरकार के संस्कृति विभाग की ओर से कलाकार पेन्शन भी मिली थी। अन्त में पिचहत्तर बर्ष की आयु प्राप्त कर आप परलोक वासी हो गये।

5– रवीन्द्र शर्मा :

आप स्नातकोत्तर (हिन्दी) शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त छत्रशाल इन्टर कॉलेज, जालौन में हिन्दी प्रवक्ता के पद पर वर्तमान में कार्यरत हैं। अखिल भारतीय स्तर पर गीतकार के रूप में आपको जाना जाता है। डॉ. आनन्द के दत्तक पुत्र के नाते आपको उनकी समस्त चल–अचल सम्पत्ति पर अधिकार प्राप्त है। आपको तीन पुत्र एवं एक पुत्री रत्न प्राप्त है।

शिक्षा

डॉ. आनन्द ने प्राथमिक स्तर की शिक्षा जालौन में ही प्राप्त की थी। अनेक गतिरोधों से इनकी शिक्षा अवरुद्ध हो गई। तदुपरान्त स्वाध्याय में इनकी सतत् प्रवृत्ति रही। राजनीतिक आन्दोलनों में इन्हें

कारावास भोगना पड़ा और वहीं जेल में रहकर आपने हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, बंगला तथा पंजाबी भाषा का समुचित ज्ञान प्राप्त किया।

विवाह

डॉ. आनन्द का पाणिग्रहण 19 वर्ष की आयु में ग्राम वासुदेव मई (फिरोजाबाद) निवासिनी श्रीमती आनन्दी से हुआ। इनके कोई सन्तान नहीं हुई। सन् 1941 में जब डॉ. आनन्द व्यक्तिगत सत्याग्रह में जेल में बन्द थे, घर पर आनन्दीबाई का निधन हो गया। कुछ वर्षों के अन्तराल में डॉ. आनन्द का दूसरा विवाह बंगरा निवासी श्री सुजान की पुत्री प्रेमवती के साथ हुआ। श्रीमती प्रेमवती जूनियर हाईस्कूल में शिक्षिका थीं। वे तत्कालीन उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री गोविन्द वल्लभ पंत के मनोनयन पर नोटी फायडेरिया–जालौन की पाँच वर्ष तक चेयरमेन भी रहीं। इनके भी कोई सन्तान नहीं थी।

ख- व्यक्तित्व

व्यक्तित्व व्यक्ति की वह विशेषता है जो उसे अन्य व्यक्तियों से भिन्न करती हुई उसके निजत्व का स्वरूप धारण करती है। जीवन के विभिन्न तन्तुओं से व्यक्तित्व निर्मित होता है। व्यक्ति के संस्कार, समाज, वातावरण तथा उसकी संस्कृति आदि मिलकर व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं, परन्तु इस निर्माण में स्वयं व्यक्ति का जितना हाथ रहता है, उतना किसी अन्य का नहीं।[1] यहाँ डॉ. आनन्द के व्यक्तित्व को रेखांकित करने के लिए उनके संस्कार, स्वभाव, प्रेरणा और प्रभाव, रुचि–अरुचि तथा वेषभूषा आदि का सम्यक् विवेचन करना आवश्यक है।

1–कद–काठी एवं वेषभूषा

डॉ. आनन्द के व्यक्तित्व निर्माण में उनकी शारीरिक संरचना का विशेष महत्व है। उनका गौरवर्ण, स्वस्थ सुडौल शरीर, गम्भीर चेहरा, सौम्यता एवं संस्कार सम्पन्नता, चिन्तनशील हल्की नीली आँखें, मुखमण्डल

1– वचन पत्रिका– अक्टूबर (2003) आलेख–प्रकाश त्रिपाठी, प्रभात प्रिन्टिंग प्रेस इलाहाबाद, पृष्ठ 17

गंभीर होते हुए सरलता एवं आत्मीयता से पूर्ण, उच्च ललाट, सफेद, बड़े एवं अस्त–व्यस्त बाल सब मिलकर सहज व्यक्तित्व निर्मित करते हैं। डॉ. आनन्द के बाह्य स्वरूप की जो छवि थी, वह उनके बहु–आयामी व्यक्तित्व के अनुरूप थी। उनका जीवन विविधतापूर्ण, व्यक्तित्व मोहक और आकर्षक था। उनका हृदय अत्यन्त सरल, स्नेह–सद्भाव और सौहार्द्र से परिपूर्ण था।

सफेद खादी की धोती और कमीज यह उनकी प्रिय वेशभूषा थी। आँखों पर काला चश्मा उनकी मुख छवि को द्विगुणित करता था। जाड़ों में अधिकतर ओवर कोट पहनकर काव्य–मंचों पर काव्य पाठ किया करते थे। एक सर्वोदयी झोला कंधे पर लटका रहता था। दाढ़ी–मूछ नित्य प्रातः बनाया करते थे। उनकी कद काठी एवं वेशभूषा से आदर्श झलकता था।

2- स्वभाव

स्वभाव की सहजता महान व्यक्तियों की विशेषता होती है। डॉ. आनन्द के स्वभाव में सारल्य, सौम्यता, मधुरता, स्नेहसम्पन्नता, अपनत्व तथा शालीनता और उदारता आदि समस्त मानवीय गुणों का सामंजस्य था। इस प्रकार वे अनुपम स्वभाव के धनी तथा विशिष्ट आकर्षण सम्पन्न महान व्यक्तित्व थे। उन्हें व्यावहारिक अनौपचारिकता अधिक पसन्द थी। वे बनावटीपन से दूर रहते थे।

पारिवारिक मुखिया होने के नाते सभी की सुविधाओं का ध्यान रखना उनके स्वभाव में था। इनका व्यक्तिगत जीवन देश भक्ति एवं राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत था। स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय सहयोग देकर जेल यात्रायें भी कीं। वस्तुतः वे उग्रदल के सदस्य थे। बमकाण्ड में अज्ञात वास किया। सन् 1942 में व्यक्तिगत असहयोग आन्दोलन में कारावास हुआ। मुक्त होने पर पुनः वही प्रक्रिया प्रारम्भ की। लालबहादुर शास्त्री, भगवतीचरण वर्मा, पं.परमानन्द आदि अनेक आन्दोलनकारी इनके सम्पर्क में रहते थे। वृद्धावस्था में स्वतंत्रता सेनानी की पेंशन भी इन्हें मिली।

इस प्रकार डॉ. आनन्द अनेक गतिविधियों में सहभागी होते हुए अकल्पनीय अध्यवसाय की सतत् साधना में निरत रहे, यह आश्चर्य क़ी बात है। कवि के स्वभाव में कर्मठता, आचरण में स्पष्टता तथा व्यवहार में निश्छलता सदैव विद्यमान रही। इनकी रचनाओं में व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप है। आप ऐसे व्यक्ति थे, जिनका आचरण नैतिकता की कसौटी पर खरा उतरता है। मानव कल्याण एवं देशहित की कामना इनकी रचनाओं में प्रमुख है।

3– विचार एवं दृष्टि

डॉ. आनन्द की पारिवारिक पृष्ठभूमि, स्वाध्याय और जीवन संघर्ष का संक्षिप्त परिचय होने के कारण उनकी सृजन–साधना के प्रति मेरे मन में सदैव एक सहज उत्सुकता रही और उनकी सतत् जीवन–संघर्ष पद्धति, अभावग्रस्तता में आगे बढ़ने और किसी के समक्ष अपना स्वाभिमानी सिर न झुकने की प्रवृत्ति ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया और प्रेरणा दी उन पर शोध कार्य करने की। देश में आर्थिक विषमता की दिनों–दिन चौड़ी होती हुई खाई, बदस्तूर जारी रहने वाले अन्याय व शोषण तथा धूर्त और मक्कार नौकरशाही की मनमानी ने डॉ. आनन्द के विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया। एक ओर पूँजीपतियों की तिजोरियाँ भर रही हैं, दूसरी ओर मजदूर किसान भुखमरी और गरीबी की मार झेल रहे हैं। जनतन्त्र व समाजवाद का ढोल पीटकर भोली–भाली जनता को स्वार्थ और भ्रष्टाचार की राजनीति द्वारा गुमराह होता देखकर कवि के अन्तर में वैचारिक आन्दोलन उठ खड़ा हुआ।

डॉ. आनन्द ने विस्तृत भारत भूमि में एक चेतन्य राष्ट्र के दर्शन किये हैं। उनके काव्य में देश की अखण्डता का गायन है। वे देश को प्रकृति निर्मित भूमि–खण्ड ही नहीं, अपितु आत्म चैतन्य से समृद्ध जीवित राष्ट्र–पुरुष का सम्मान देते हैं। राष्ट्रीय भावना उनमें कूट–कूट कर भरी थी। उनकी रचनाओं में उत्साह तथा संघर्ष की प्रेरणा सर्वत्र सुलभ है।

उनके उत्तेजक विचार एवं आलोचक दृष्टि उनकी रचनाओं में मुखरित हुई है। वे लकीर के फकीर नहीं थे। अपना मार्ग स्वयं निश्चित करने वाले ओजस्वी विचारों के समर्थक डॉ. आनन्द प्रखर प्रतिभा की पराकाष्ठा थे। उनकी गम्भीर दृष्टि एवं विशद् चिन्तन से प्रभावित होकर हिन्दी जगत के प्राण पं. श्री नारायण चतुर्वेदी 'श्री वर' लिखते हैं— 'डॉ. आनन्द को मैं प्रायः तीस वर्षों से जानता हूँ। वे हिन्दी के एक लब्धप्रतिष्ठ कवि हैं, इन्होंने विभिन्न विषयों पर काव्य रचना की है। इनकी लेखनी अबाध गति से इतने दिनों से चलती आ रही है और यह इस समय के हिन्दी कवियों में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं।[1]

डॉ. आनन्द के सम्पूर्ण साहित्य का सूक्ष्मावलोकन करने पर ज्ञात होता है कि आप स्वतन्त्र प्रकृति के व्यक्ति थे। काव्य—सृजन को आपने कभी आजीविका नहीं बनाया। कविता के माध्यम से कटु सत्य कहने में कभी संकोच नहीं करते थे। पर मुखापेक्षी एवं पिष्टपेषण का भाव उनके मन में कभी नहीं आया। काव्य में सदैव मौलिक उद्‌भावनाओं को प्राथमिकता देते थे। कटूक्तियों तथा व्यंग्य द्वारा विरोधियों को परास्त करने में वे सिद्धहस्त थे। रचनाओं में समाविष्ट उनके उच्च एवं आदर्श विचारों से श्रोता अभिभूत हुए बिना नहीं रहते थे। भ्रष्टाचार का उन्होंने डटकर विरोध किया। परिवहन विभाग में व्याप्त अनैतिकता एवं भ्रष्टाचार को उजागर करते हुए परिवहन मंत्री के नाम खुली चिट्‌ठी लिखने में उन्हें कोई संकोच नहीं हुआ। **'पाप के किले पर पहिला गोला' 'दूसरा गोला' 'तीसरा गोला'** इस तरह परिवहन मंत्री के नाम निर्भय होकर कई चिट्‌ठियाँ लिखीं। 'समाजबादी गाड़ी' नाम से कविता लिखकर समाजबाद का डटकर विरोध किया। नेताशाही के विरोध में उनका लेखन सदैव गतिशील रहा।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि डॉ. आनन्द ने अपने समूचे काव्य में समाज में व्याप्त दुर्नीतियों का निर्भय होकर खण्डन किया।

1— झाँसी की रानी— शुभकामनायें, पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी 'श्री वर' पृष्ठ 4

उच्च विचारों एवं आदर्शों की स्थापना में आजीवन लगे रहे। राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति को प्राथमिकता देकर समाज कल्याण में अपना अमूल्य योगदान देते रहे। डॉ. आनन्द उच्चकोटि के विचारक, विद्वान कवि एवं वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता थे।

4- प्रेरणा एवं प्रभाव

परिवार बच्चे की प्रथम पाठशाला होती है। आनुवंशिक संस्कार माँ–बाप से बच्चे में स्वभावतः स्फुरित हो जाते हैं। डॉ. आनन्द में भी अपने माता–पिता के गुण जन्म से ही आ गये थे। इनके पिता गोविन्दराव प्रतिष्ठित आशुकवि थे। उनके काव्य सृजन–संस्कार अदृश्य रूप में बालक डॉ. आनन्द के हृदय में जन्म से ही निहित थे, किन्तु काव्य–सृजन की प्रेरणा युवा डॉ. आनन्द को अपने मौसेरे भाई हरनाथ (ग्राम ररी, जिला भिण्ड) से प्राप्त हुई। हरनाथ तथा उनके अनुज शिवनाथ दोनों भाई अच्छे कवि थे। वे रीतिकालीन परम्परानुसार काव्य सृजन में आजीवन संलग्न रहे।

डॉ. आनन्द प्रारम्भ के दिनों में 'ख्याल' लिखते थे। ख्याल के बाद समस्यापूर्तियाँ लिखीं, फिर हास्य –बुन्देली कविता का प्रारंभ हुआ। इस वीर प्रसूता बुन्देलभूमि के जन्मज संस्कारों के प्रतिफल स्वरूप डॉ. आनन्द वीर–रस की रचना में पारंगत हो गये। मासिक या साप्ताहिक काव्य–गोष्ठियों का भी प्रभाव पड़ा। तत्कालीन कवि मित्र श्याम नारायण पाण्डेय, शिशुपालसिंह 'शिशु' तथा बलवीरसिंह 'रंग' अधिकतर वीर रसात्मक रचनायें ही लिखते थे। कुल मिलाकर डॉ. आनन्द वीर–रस के ओजस्वी कवि के रूप में ख्यात हो गये।

राजनीतिक क्षेत्र में महात्मा गाँधी के सत्याग्रहों का तथा असहयोग आन्दोलनों का डॉ. आनन्द के जीवन पर प्रभाव पड़ा। डॉ. आनन्द चूंकि उग्र प्रकृति के थे, इसलिए चन्द्रशेखर 'आजाद', सुभाषचन्द्र बोस आदि उग्र नेताओं का इन पर दीर्घ कालीन प्रभाव पड़ा। परिणामतः आपको जेल यात्रा तथा अज्ञातवास भी भोगना पड़ा।

बुन्देलखण्ड की ऐतिहासिक वीरत्व व्यंजक घटनाओं का उनके मानस पर गहरा प्रभाव पड़ा। परिणाम स्वरूप **'सन् अड़तालीस'**, **'अगस्त सन् बयालीस'** तथा अनूठा महाकाव्य **'झाँसी की रानी'** उनकी ओजस्वी लेखनी से अवतरित हुए। देश में व्याप्त राजनीतिक प्रदूषण ने उनके हृदय को आघात पहुँचाया। राजनेताओं के कूटनीतिक षड्यंत्र, भ्रष्टाचार तथा सुरा—सुन्दरी में लिप्त रहकर देश को पतन के कगार पर ले जाने के मर्म भेदी आघात ने कवि के मस्तिष्क पर अमिट प्रभाव छोड़ा, जिसकी प्रतिक्रिया स्वरूप **'दारुल शफा'** तथा **'एम.एल.ए.राज'** जैसी रचनायें सृजित हुईं।

काव्य सृजन के प्रेरक, कवि के मौसेरे भाई हरनाथ जी रीतिकालीन परम्परा के कवि थे। श्रृंगारिक रचनाएँ उन्हें प्रिय थीं। हरनाथ जी का प्रारंभिक प्रभाव डॉ. आनन्द पर पड़ा। कवि डॉ. आनन्द ने श्रृंगार रस की रचनाओं से अपने कवि जीवन को अग्रसर किया। एक उदाहरण देना असंगत नहीं होगा—

'प्यार में बीती किसी की निशा तो किसी की निशा तकरार में बीती।
जो किसी की बस्ले यार में तो ये किसी की किसी इन्तजार में बीती।।
जीत में बीती किसी—किसी की किसी की किसी बात की हार में बीती।
और किसी—किसी की ये निशा पग पायलों की झनकार में बीती।।[1]

उक्त छन्द में कवि ने श्रृंगारिक भावनाओं को उड़ेल कर रख दिया है। प्रेमियों द्वारा निशा—उपयोग के विविध तरीकों का आकर्षक वर्णन है। इसी प्रकार बुन्देली का अतिशय प्रभाव कवि की कविता में दृष्टिगोचर होता है। कवि बुन्देलखण्ड के ग्रामीण परिवेश से पूर्णतः अनुरक्त रहा। आजीवन स्थायी निवास भी ग्रामीण क्षेत्र में ही रहा। आपकी रचनाओं में बुन्देली की सरसता तथा लोच का विशेष आकर्षण पाया जाता है। एक उदाहरण देखिये—

1— पांडुलिपि—2, निशा, पृष्ठ 6

जो कऊँ हम पढ़ जायें।

नाँव न ले हम जुड़ई चना को भूटी पिसिया खायें।।

तेरौ कौल बजार हाट में कितऊँ न धोको खायें।

जो कागद पै रहे लगाउत सो हम सबै दिखायें।।[1]

इतना ही नहीं काँग्रेसियों पर इनकी एक व्यंग्य रचना अत्यंत लोकप्रिय रही– **'टोपी नोकदार हाय रे कँगरिसिया'**।[2]

कवि सामाजिक प्राणी होता है। सामाजिक अनुभूतियों को अपनी अनुभूति बनाकर अभिव्यक्त करना कवि की संवेदनशीलता का परिणाम होता है। समाज के अगणित प्रभाव कवि–हृदय पर पड़ते हैं, विविध प्रेरणायें कवि को प्रेरित करती हैं और कवि उन सभी प्रेरणाओं एवं प्रभावों के परिणाम स्वरूप अपने काव्य जीवन में, अपने कविता सृजन में वैविध्य लाता है तथा काव्य को समाज के जीते–जागते प्रतिबिम्ब के रूप में निरूपित करता है।

5. नाट्य लेखन

डॉ. आनन्द आजीवन ओजस्वी कवि के रूप में स्थापित रहे। आपने 'झाँसी की रानी' जैसा अप्रतिम राष्ट्रीय ऐतिहासिक महाकाव्य हिन्दी जगत को दिया तथा सन् अड़तालीस, अगस्त सन् ब्यालीस, चीन और पाकिस्तान, दारुलशफा जैसी अपनी अनेक रचनाएँ ओजस्विता के क्षेत्र में सराहनीय रहीं। किन्तु डॉ. आनन्द केवल काव्य–क्षेत्र में ही प्रतिष्ठित नहीं रहे, आपने नाट्य लेखन में भी पहल की और हिन्दी जगत को **'वैश्या सती'** नामक श्रेष्ठ नाटक प्रदान किया।

इसके साथ सम्बद्ध घटना का उल्लेख आवश्यक हो जाता है। घटना इस प्रकार से है– आपने एक नाटक पढ़ा, जिसका शीर्षक था **'सती वैश्या'**। आपके मन और मस्तिष्क में एक विचार आया कि सती वैश्या

1– पांडुलिपि–2, पृष्ठ 11

2– उपरिवत्, पृष्ठ 7

नहीं होसकती। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप आपने **'वैश्या सती'** नाटक लिखा और यह भली भाँति सिद्ध कर दिया कि वैश्या तो सती हो सकती है, किन्तु सती का वैश्या होना सम्भव नहीं है। इस नाटक का आपने सफल मंचन भी किया, किन्तु दुर्भाग्य यह रहा कि आपका यह नाटक प्रकाशित नहीं हो सका तथा जीर्ण–शीर्ण अवस्था में आज भी उनके दत्तक पुत्र के पास सुरक्षित है।

नाट्य लेखन के अतिरिक्त आपकी अभिनय क्षमता भी सराहनीय रही। राम–लीला में आपने रावण तथा नारद का बहुत ही सटीक अभिनय कई वर्षों तक किया। यदि यह कहा जाय कि उनके कुशल अभिनय एवं मंच–संयोजन की प्रभावपूर्ण क्षमता के कारण इनके गृह नगर जनपद जालौन की रामलीला को प्रान्तीय प्रसिद्धि प्राप्त हुई, तो अत्युक्ति न होगी।

6. आजीविका एवं वृत्ति

इस भौतिक जगत में अपना तथा अपने परिवार के भरण–पोषण हेतु प्रत्येक को कुछ न कुछ जीविकोपार्जन का साधन जुटाना अनिवार्य होता है। डॉ. आनन्द की पैतृक कृषि योग्य भूमि मुख्य आजीविका तो थी ही, साथ ही आप उत्तर प्रदेश सरकार के ग्राम–सुधार विभाग में किसी पद पर सन् 1937 तक कार्यरत रहे। उन्मुक्त विचारों के कवि डॉ. आनन्द नौकरी की पराधीनता से सन्तुष्ट नहीं थे इसी कारण आपने गाँधीजी के आवाहन पर व्यक्तिगत सत्याग्रह में सहभागिता करते हुए सन् 1941 में ग्राम सुधार विभाग की नौकरी से त्याग–पत्र दे दिया।

जनवरी 1963 ई. में आपके दिल्ली के लाल किले पर चीन विरोधी काव्य पाठ से प्रभावित होकर तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने एक विशिष्ट पेंशन आपको स्वीकृत की थी। इस केन्द्रीय मासिक पेंशन के अतिरिक्त अखिल भारतीय स्तर पर कविरूप में प्रसिद्धि के उपलक्ष्य में उत्तर प्रदेश सरकार के कला एवं संस्कृति विभाग से भी पेंशन मिलती थी। यह दोनों राशियाँ इनके उच्चस्तरीय मासिक व्यय के लिए पर्याप्त थीं। स्वतंत्रता सेनानी होने के कारण उपलब्ध पेंशन भी इनकी आय

में सम्मिलित थी। सम्पूर्ण भारत वर्ष में आयोजित कवि सम्मेलनों में काव्य पाठ से भी पर्याप्त धनराशि प्रायः मिलती रहती थी।

कुल मिलाकर इनकी मासिक आय परिवार के मासिक व्यय हेतु आवश्यकता से अधिक थी। आप इस सम्बन्ध में पूर्ण निश्चिन्त थे।

7. अखिल भारतीय काव्य मंच, प्रसारण एवं प्रकाशन

डॉ. आनन्द वीर रस के अखिल भारतीय स्तर के माँ वीणा पाणि के ऐसे वरद् पुत्र थे, जिनकी ओजस्वी वाणी से निःसृत कविता सहृदय श्रोताओं को मंत्रमुग्ध तो करती ही थी, रोमांचित भी करती थी। इनके नाम से कवि–सम्मेलनों में अपार जनसमूह उमड़ पड़ता था। इनके समय की कवि–त्रयी में शिशुपालसिंह 'शिशु', डॉ. आनन्द तथा बलवीरसिंह 'रंग' प्रसिद्ध थे। सम्पूर्ण भारत वर्ष में काव्य सरिता प्रवाहित करने वाली कवि–त्रयी के बिना कवि सम्मेलन का मंच अधूरा सा लगता था। इस त्रयी में डॉ. आनन्द अपनी तरह के एक विशिष्ट प्रतिभावान कवि थे।

डॉ. आनन्द प्रकृति से ही कवि थे। सृजन के प्रति ऐसा एक–निष्ठ समर्पण प्रायः कवियों में कम मिलता है। विरासत में मिली सारस्वत–साधना को आपने अपने अध्यवसाय एवं लगन से अक्षुण्ण बनाये रखा। आपके काव्य में अनुभूति की सघनता तथा अभिव्यक्ति का सौन्दर्य समवेत रूप में उपलब्ध है। आपकी कविता में भावों और शब्दों का अनूठा सामंजस्य है। आपकी कविता जीवन के संघर्ष की कविता है, अखिल भारतीय काव्य मंचों पर अनमोल काव्य रत्न बिखेरने वाली कविता है।

डॉ. आनन्द जनपद जालौन की साहित्य परम्परा की एक अमूल्य धरोहर हैं। इनकी साहित्य–सर्जना जनपद के लिए मील का पत्थर है। वस्तुतः डॉ. आनन्द के वर्चस्व को एक जनपद की सीमा में देखना अपनी अज्ञता का परिचय देना है। उनकी कविता से भारत वर्ष के विशाल हिन्दी भाषी क्षेत्र में कहाँ–कहाँ, किस–किस वर्ग के लोगों ने प्रेरणा प्राप्त नहीं की होगी, कह सकना कठिन है। आज भी उनके श्रद्धालुदेश के दूरवर्ती

स्थानों में रहते हुए उनके उस सहज आत्मीय व्यक्तित्व और वाणी को बड़े सम्मान और श्रद्धा से स्मरण करते होंगे।

आप **'साप्ताहिक दुनाली'** समाचार पत्र का सम्पादन बड़ी तत्परता एवं लगन के साथ करते थे। उनकी रचनायें एवं व्यंग्य लेख **'दुनाली'** के माध्यम से जन सामान्य तक पहुँचते थे। कालपी से प्रकाशित प्रगतिशील प्रमुख साप्ताहिक समाचार पत्र **'जय हिन्द'** में 17 अगस्त सन् 1948 को डॉ. आनन्द की एक रचना **'तख्त आज से हुआ हमारा हुआ हमारा ताज। उठकर गया आज भारत से वह 'अंग्रेजी राज'।** प्रकाशित हुई। इस रचना में ब्रिटिश राज्य की पराधीनता से मुक्ति विषयक हर्षातिरेक व्यंजित है इस कविता ने जनपदीय पाठकों में नवीन चेतना का संचार किया तथा स्वतंत्र्यानुभूति का सचेतक सम्बल प्रदान किया।

'साप्ताहिक हलचल' (उरई से प्रकाशित) समाचार पत्र में 7 सितम्बर 1961 को **'ट्रान्सपोर्ट मिनिस्टर के नाम खुली चिट्ठी'** और **'पाप के किले पर पहला गोला'** डॉ. आनन्द का एक व्यंग्य लेख प्रकाशित हुआ। इसी तरह प्रतिमाह पाप के किले पर दूसरा गोला, तीसरा गोला तथा चौथा गोला व्यंग्य लेख प्रकाशित हुए। इन लेखों में परिवहन विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार को उजागर किया गया है।

'दैनिक जागरण' (झाँसी से प्रकाशित) 26 जुलाई 1970 को खाद्य मंत्रालय पर एक व्यंग्य लेख प्रकाशित हुआ। इस लेख में डॉ. आनन्द ने खाद्य मंत्रालय को सामाजिक जीवन की कब्र बतलाते हुए ईश्वर से प्रार्थना की है, कि **हे प्रभो, अगले जन्म में हमें आदमी नहीं बनाना।**

'साप्ताहिक दुनाली' में (जालौन से प्रकाशित) 5 अप्रैल 1971 को **'मस्तराम की तरंगे–दुन्दराम एक्ट दफा–75'** एक व्यंग्य लेख प्रकाशित हुआ। इस लेख में डॉ. आनन्द ने घूसखोरी का पर्दाफाश करते हुए लिखा है कि **–'लूटो, पीटो, खाओ, पियो, लेकिन आधार ऊपर बढ़ा दिया करो' यही है दुन्दराम एक्ट दफा 75।**

इस प्रकार कवि डॉ. आनन्द को व्यंग्य क्षेत्र में पर्याप्त महारत हासिल थी। वे अपनी कटु यथार्थ उक्तियों को प्रकाशित किये बिना रह नहीं सकते थे। इस बात का उनमें अपूर्व साहस था। व्यंग्य–प्रकाशन की धारावाहिक श्रृंखला विभिन्न समाचार पत्रों में छपा करती थी। तमाम व्यंग्य लेख समय के गर्त में विलीन हो गये, प्राप्त नहीं हो सके।

जहाँ तक उनके काव्य–पाठ एवं प्रसारण का प्रश्न है, कहा जा सकता है कि डॉ.आनन्द दिल्ली के लाल किले पर तथा राष्ट्रपति भवन में काव्य पाठ के लिए विशिष्ट सम्मान के साथ बुलाये गये थे। आपको दिल्ली प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन में दिसम्बर 1955ई. को राष्ट्रपति भवन में काव्य–पाठ हेतु आमंत्रित किया गया। 15अगस्त 1957ई.को आपने लाल किले पर 'झाँसी की रानी' महाकाव्य के महत्वपूर्ण अंश पढ़कर स्मृति चिह्न एवं पुरस्कार प्राप्त किया। पुनः 15 अगस्त 1958ई. को लालकिले पर ही आपका ओजस्वी काव्य–पाठ हुआ। इस तरह अखिल भारतीय स्तर पर आपने ख्याति अर्जित की।

22 मई 1958ई.को काव्य पाठ हेतु आप आकाशवाणी भोपाल द्वारा आमंत्रित किये गये, जिसका प्रसारण 14 जून 1958ई. को हुआ। 9दिसम्बर 1962ई. को संगीत कला मंदिर के तत्वाधान में भारत विनिमय भवन कलकत्ता में आपका काव्य पाठ हुआ। 29 दिसम्बर 1963ई.को राष्ट्रीय लोक भाषा कवि संगोष्ठी (पंचायत घर) के कार्यक्रम में आपके काव्य पाठ का सीधा प्रसारण आकाशवाणी इलाहाबादसे हुआ। जनवरी 1963ई. को बम्बई के विडला मातु श्री सभागार में चीन विरोधी कविता पढ़कर आपने जनपद जालौन का नाम उजागर किया।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि डॉ. आनन्द अखिल भारतीय काव्य–मंचों के प्रतिष्ठित एवं यशस्वी कवियों में अपना विशिष्ट स्थान रखते थे। काव्य–पाठ के साथ ही मंच का संचालन भी इतना सटीक एवं समृद्ध था कि उसकी प्रशंसा में जितना भी कहा जाय, कम है।

8. विनोदप्रियता

डॉ. आनन्द के व्यक्तित्व को निखारने में विनोदप्रियता की विशिष्ट भूमिका रही है। आप बड़े ही खुश मिजाज थे। बहुत ही हल्का किन्तु गम्भीर हास्य–विनोद उनकी बातों में झलकता था। चलते–फिरते, उठते–बैठते और विशेषकर कवियों के बीच उनका विनोदपूर्ण वार्तालाप वातावरण को रंगीन बनाये रखता था। हास्य में वे ठहाका लगाकर हँसना अच्छा नहीं मानते थे। खिलखिलाकर हँसने को वे फूहड़ता कहते थे। उनका शिष्ट विनोद परिमार्जित एवं रहस्यपूर्ण हुआ करता था, जिसे हर व्यक्ति नहीं समझ पाता था। एक बार डॉ. आनन्द के साथ इनके दत्तक पुत्र भी काव्य पाठ के लिए एक ही काव्यमंच पर आमंत्रित थे। डॉ. आनन्द कवि सम्मेलन प्रारम्भ होने से एक घंटा पूर्व पहुँच गये तथा उनके चिरंजीव कवि–सम्मेलन प्रारम्भ से दो घण्टे बाद पहुँचे। उनकी विलम्ब से उपस्थिति पर डॉ. आनन्द धीरे से कहते है– **'भई, बड़े कवि विलम्ब से ही आते हैं।'**

इस शिष्ट विनोद ने चिरंजीव को पानी– पानी कर दिया। इसमें व्यंग्य एवं परिहास का पुट भी था। कवि लोग सुनकर हँस पड़े। इस तरह उनके जीवन की विविध विनोदपूर्ण घटनायें हैं– उनके आधार पर डॉ. आनन्द को विनोदी प्रवृति का कहने में मुझे कोई संकोच नहीं है। अपनी विनोदप्रियता के कारण वे सर्वप्रिय थे। जब कोई काल–कवलित हो जाता था अथवा किसी का असामयिक निधन होने पर वे प्रायः ये पंक्तियाँ कह उठते थे–

'घर से मर घट तक की इतनी दूरी
इसको तय करने में हमने उम्र बिता दी पूरी'[1]

उक्त कथन में कितनी गम्भीर, रहस्यपूर्ण बात को कितने सहज और सरल ढ़ंग से व्यक्त किया गया है। डॉ. आनन्द की विनोदप्रियता जब उन्हें अत्यधिक कुरेदती थी, उकसाती थी तब वे मंच पर भी हास्य

1– पांडुलिपि–2, पृष्ठ 45

व्यंग्य पढ़ते थे। उनके हास्य विनोद पढ़ने पर मंचीय हास्य कवि बगलें झाँकने लगते थे। **'मोटर का मजा'** नामक कविता में एक गम्भीर एवं शिष्ट विनोद की झलक देखना उचित ही होगा—

कुछ खद्दर पोश पिछाड़ी थे
जहाँ कुजड़े और कबाड़ी थे
पर थानेदार अगाड़ी थे।
था जिनके सिर पर टोप सजा
मोटर का मजा मोटर का मजा।[1]

उक्त पंक्तियों में मोटर का अत्यधिक भरा जाना तो निर्दिष्ट है ही, साथ ही थानेदार पर व्यंग्यात्मक प्रहार करते हुए बात को विनोदपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त किया गया है।

निम्न पंक्तियों में उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री चन्द्रभानु गुप्त के प्रशासन पर किये गये व्यंग्य को शिष्ट भाषा में विनोदी बनाकर प्रस्तुत किया गया है। उदाहरण दृष्टव्य है—

सुभान अल्ला फिर झन झनाओ तो यार।
नगाड़े के डण्डे से वीणा के तार।।
तुम्हें देखता हूँ बड़ी चाह से।
कभी वाह से तो कभी आह से।।
करो जुल्म चाहे करो तुम सितम।
मुझे गम नहीं कुछ तुम्हारी कसम।।
मुबारक हो हिन्दोसतां का स्वराज।
मुबारक हो यू. पी. में गुप्ता का ताज।।
भरे रोजगारी मिटे रोजगार
सुभान अल्ला फिर झन झनाओ तो यार।।[2]

1— पांडुलिपि—2, मोटर का मजा, पृष्ठ 2

2— उपरिवत्, पृष्ठ 5

उक्त पंक्तियों में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री की कार्य प्रणाली को दोष पूर्ण बतलाते हुए बड़े विनोदपूर्ण ढंग से बात कही गई है। कवि को ऐसी अभिव्यक्तियों के लिए महारत हासिल था, इसे निस्संदेह रूप से वर्णन कौशल का विनोदपूर्ण ढंग ही कहा जा सकता है।

9. उल्लेखनीय संस्मरण

डॉ. आनन्द काव्य जगत के ऐसे ऊर्जावान कवि थे, जिनकी कविता का प्रभाव आज तक अक्षुण्ण है तथा साहित्येतिहास में अपनी विशिष्ट छवि के साथ सदैव अंकित रहेगा। उनका सृजन–संसार वीर रसात्मक ओजस्वी रचनाओं के लिए सुपरिचित है। भाव प्रधान अनुभूतियों की अभिव्यक्तियों के वह सिद्ध कवि थे। वे जितने गम्भीर थे, उतने सहृदय भी थे। उनका उदार विनोदी स्वभाव सम्पर्कित जिज्ञासुओं के आकर्षण का केन्द्र था। डॉ. आनन्द एक लम्बी अवधि तक साहित्य जगत से सम्बद्ध रहे। उनके जीवन के ऐसे अनेक संस्मरण हैं, जिनसे उनका व्यक्तित्व प्रतिभासित होता है। उनके सान्निध्य में रहे लोगों से मिले कुछ संस्मरण यहाँ प्रस्तुत करना समीचीन होगा।

अ-

डॉ. आनन्द को एक 315 वोर रायफल स्वीकृत करवानी थी। आपने कलेक्टर को प्रार्थना पत्र दिया, उसमें एक तोप स्वीकृत करने की प्रार्थना की। कलेक्टर के समक्ष प्रार्थना पत्र पहुँचा, वह पढ़कर आश्चर्य चकित हुआ, उसे लगा कि आखिर यह कौन व्यक्ति है जो तोप चाहता है। कलेक्टर के बुलाने पर डॉ. आनन्द उपस्थित हुए, बताया कि श्रीमान् लोग जब रायफल का प्रार्थना–पत्र देते हैं तो दुनाली 12 वोर स्वीकृत हो जाती है तथा जो दुनाली 12 वोर का प्रार्थना–पत्र देते हैं, उन्हें एक नाली 12वोर स्वीकृत होती है। इसलिए श्रीमान् मैने तोप का प्रार्थना–पत्र दिया था कि रायफल तो स्वीकृत हो ही जायेगी। सुनकर कलेक्टर इनकी वाक्पटुता से प्रभावित हुआ तथा तुरन्त रायफल का लाइसेन्स स्वीकृत हो गया।

ब-

एक बार डॉ. आनन्द, शिशुपालसिंह 'शिशु' तथा बलवीरसिंह 'रंग' की कवित्रयी किसी कवि सम्मेलन से लौट रही थी। रेलगाड़ी में तीनों लोग अपनी–अपनी बर्थ पर लेटे हुए थे। टिकट निरीक्षक आया। उसकी आवाज सुनकर डॉ. आनन्द ने पोस्ट आफिस का एक रेवेन्यू टिकिट अपने माथे पर चिपका लिया। उसने कहा टिकिट दिखाइये। इन्होंने उँगली से माथे की तरफ इशारा कर दिया। उसने पूछा कि– आखिर आप लोग कौन हैं– इन्होंने बताया कि हम लोग कवि हैं, कवि सम्मेलन से लौट रहे हैं। तब वह इनके व्यक्तित्व से प्रभावित हुआ और उसने प्रसन्न होकर इन लोगों को चाय पिलवाई।

स-

किसी शासन विरोधी जुलूस के सम्बन्ध में अदालत में बयान के लिए डॉ. आनन्द को बुलाया गया। इन्होंने मजिस्ट्रेट के समक्ष पद्य में अपना बयान पढ़ा, सुनकर मजिस्ट्रेट बहुत प्रभावित हुआ। बयान इस प्रकार था–

यह लिख लीजे मेरा बयान।
देखा जुलूश अबलाओं का पुरुषों की देखीं भींड़–भाड़।।
छोटे–छोटे बच्चों को भीं देखा इमलीं के ताड़–ताड़।
आ गई पुलिस महारानी थीं जिनके मुंह में थे दबे पान।।
यह लिख लींजे मेरा बयान।
आ गये लाल पगड़ीं धरकर था नाम उनका सदर अलीं।
वह समझ रहे थे अपने को उस मौजे भर का पिंदर अलीं।।
हम जुलूस के दायें बायें चप्पल चटकाते जाते थे।
दीवान औरतों में सटकर आँखे मटकाते जाते थे।।
यह लिख लीजे मेरा बयान।[1]

1– पांडुलिपि–2, बयान, पृष्ठ 13

उक्त तीनो संस्मरणों से यह सिद्ध होता है कि डॉ. आनन्द का व्यक्तिव प्रतिभा सम्पन्न एवं प्रभावशाली था। वाक्‌चातुर्य इनके व्यक्तित्व को द्विगुणित कर देता था। स्वभाव सहज एवं सरल था किन्तु संलाप गम्भीर होकर भी प्रेरणादायी एवं रुचिकर था।

10. सम्मान एवं पुरस्कार

अखिल भारतीय काव्य मंच पर प्रतिष्ठित, राष्ट्रीय चेतना के संवाहक तथा ओजस्वी कविता के अप्रतिम रचनाकार डॉ. आनन्द की रचनाओं में ऐतिहासिक तथ्यात्मकता के साथ बुन्देली गीतों की रसात्मकता भी है, व्यंग्यात्मकता के साथ इनका विचार पक्ष भी पुष्ट एवं सबल है। हिन्दी काव्य जगत में अल्पायु से ही आपको यश और प्रतिष्ठा मिलने लगी थी। कविता आपको विरासत में मिली थी। आपने अपने अध्यवसाय एवं सतत् अभ्यास से उसे गतिशील बनाये रखा।

हिन्दी साहित्य के प्रतिष्ठित कवि डॉ. आनन्द को उनके वैभव एवं साहित्यिक सेवाओं के लिए कई बार सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया। उनके प्रमुख सम्मान एवं पुरस्कार निम्नांकित है–

(1) 11 दिसम्बर सन् 1923 ई. को ऑनरेरी लेफ्टिनेन्ट राजा शाह बहादुर ओ.बी.ई. रियासत जगम्मनपुर ने डॉ. आनन्द को **'कवि रत्न'** की उपाधि से सम्मानित किया।

(2) 15 अगस्त सन् 1972 को स्वतंत्रता के पच्चीसवें वर्ष के अवसर पर स्वतंत्रता संग्राम में स्मरणीय योगदान के लिए राष्ट्र की ओर से प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने ताम्र पत्र भेंट किया।

(3) 2 अक्टूबर सन् 1972 को स्वतंत्रता की रजत जयन्ती के पुनीत पर्व पर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपनी निस्वार्थ सेवा एवं तपस्या के द्वारा महत्वपूर्ण योगदान के लिए जिलाधिकारी जालौन श्री मुन्नीलाल ने प्रशस्ति पत्र भेंट किया।

(4) 11 फरवरी सन् 1973 ई. को झाँसी कमिश्नरी के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को मुख्यमंत्री द्वारा ताम्र पत्र भेंट किये गये।

(5) बम्बई की प्रसिद्ध साहित्यिक संस्था **'कवितायन'** के संस्थापक कविवर श्री निधि द्विवेदी ने **'झाँसी की रानी'** महाकाव्य की श्रेष्ठता पर आपको सम्मानित किया।

(6) सन् 1975 में कानपुर नगर की सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक संस्था **'चयनिका'** ने स्वतंत्रता संग्राम साहित्य सेनानी' के रूप में 15 कवियों का सार्वजनिक अभिनंदन किया, इनमें डॉ. आनन्द भी सम्मिलित थे।

11. निर्वाण

समय का चक्र सदैव घूमता रहता है। समय परिवर्तनशील एवं गतिशील है। संसार में जो आया है, उसे एक दिन संसार से जाना भी पड़ता है। डॉ. आनन्द ने अपने जीवन में पर्याप्त यश अर्जित किया। अपनी व्यावहारिक सरलता, बौद्धिक क्षमता तथा काव्य–प्रतिभा से आप लोगों के हृदय के सर्वोच्च आसन पर विराजमान रहे। केन्द्र सरकार तथा प्रान्तीय सरकार से अपने जीवन में ही विविध सम्मान एवं पुरस्कार अर्जित किये। डॉ. आनन्द व्यक्ति ही नहीं, अपने आप में एक संस्था थे। जनपद जालौन को गौरवान्वित करने वाले अप्रतिम ओजस्वी कवियों में डॉ. आनन्द का श्रेष्ठ स्थान रहा है। उनके काव्य वैभव एवं वाक्चातुर्य, उनकी ओजस्वी वाणी एवं व्यावहारिक कुशलता से उनके सम्पर्क में आनेवाला कभी कोई असन्तुष्ट नहीं रहा।

7 अक्टूबर सन् 1977 को अचानक हृदय गति रुक जाने से जनपद जालौन ही नहीं, वरन् समूचे बुन्देलखण्ड का गौरवशाली काव्य–प्रभाकर अस्त हो गया। अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर उनकी आत्मा सर्वात्मा में विलीन हो गई।

डॉ. आनन्द की निर्वाण सूचना पाकर साहित्यिक वर्ग को एक झटका सा लगा। इस अपूरणीय क्षति को पूरा नहीं किया जा सकता था। उनके निर्वाणोपरान्त बहुत सी भाव भीनी श्रद्धांजलियाँ उनके दत्तक पुत्र को प्राप्त हुईं। उनमें से कुछ का उल्लेख करना उचित ही होगा।

डॉ. ब्रजेन्द्र अवस्थी-बदायूँ

'जब तक उस झाँसी रानी का सुयश बुलन्द रहेगा।
जब तक उस बुन्देल खण्ड का स्वर स्वच्छन्द रहेगा।।
जब तक वीर भाव का जागृत कोई छन्द रहेगा।
काव्यानन्द अमर देता तब तक आनन्द रहेगा।।

उदय प्रताप-मैनपुरी

जिसके गर्जन से सिंहों के ह्रदय धड़क जाते थे।
समय पन्थ पर रवि के रथ के अश्व भड़क जाते थे।।
उस नर नाहर,कवि–कुल–भूषण के तन का अस्त हुआ है।
माँ वाणी के मंदिर का कंगूरा ध्वस्त हुआ है।।

प्रकाश सक्सेना- झाँसी

हजनको सुमिरन करबे आये, जाने किते बिलाये।
गरजत रयेते मुलक भरे में वीर भूमि के जाये।।
लिख कैं गये'झाँसी की रानी'आज सुनई नईं पाये।
पैलऊँ पैल 'प्रकाश' उनईं ने मोय इतै बुलवाये।।

सुमन दुबे-कानपुर

टींकौ बुन्देलखण्ड धरती कौ नीकौ हतौ।
करत उजेरौ रह्यौ अबलौं दिन दूनौ सौ।।
छूटि गयो सोई आज काल के झपेटे सौं।
ताके बिन ओज भयो आज जगत ऊनो सौ।।
जोशभरी गाथा वीर भूमि की सुनैहै को?
लगत बुन्देलखण्ड ह्वै गयौ बिहूनों सौ।।
हूकत हियो है यों 'आनन्द' न ऐहै अब।
आज वीर रस को भयो कौनो एक सूनौ सौ।।

मुकुट बिहारी 'सरोज'-ग्वालियर

'कविता को जनता के निकट लाने वालों में डॉ. आनन्द का नाम सर्वोपरि है। वे जनवादी भाषा के एक मात्र प्रतिनिधि थे। उन्होंने कविता को आत्मरति

से मुक्त किया था और उसे युगीन विषयों से सज्जित किया था। डॉ. साहब एक इतिहास थे, एक सूत्र थे, जिन्होंने पुरानी और नई पीढ़ी को संयुक्त किया था।'

डॉ. रामकुमार वर्मा-साकेत-इलाहाबाद

'डॉ. आनन्द मेरे परम आत्मीय थे। प्रभु उनकी आत्मा को शन्ति प्रदान करें।

भगवानदास माहौर- झाँसी

'भाई डॉ. आनन्द के असामयिक और नितान्त शोकप्रद समाचार से बज्राहत सा रह गया। संवेदना प्रकट करने के अतिरिक्त और कर ही क्या सकता हूँ।'

श्रीनारायण चतुर्वेदी-लखनऊ

'वियोग बड़ा दुःखदायी होता है, किन्तु वह कभी न कभी होता ही है। आशा है कि आप इस दुःख को धैर्य से सहन करेंगे। आपके शोक सन्तप्त परिवार के प्रति मेरी हार्दिक संवेदना है। भगवान से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति दे।'

उपर्युक्त प्रतिष्ठित साहित्यकारों द्वारा सम्प्रेषित श्रद्धांजलियाँ उनके व्यक्तित्व को समग्र रूप से रेखांकित करती हैं। डॉ. आनन्द व्यक्तिगत स्तर पर एक आत्म सजग व्यक्ति थे। उनमें गहरी जिजीविषा थी। वे वीर काव्य परम्परा के उज्ज्वल प्रतिमान थे। अखिल भारतीय काव्य–मंच के प्रख्यात स्तम्भ थे। व्यावहारिक निपुणता, स्वाभाविक निर्मलता तथा प्रभावकारी वैयक्तिक क्षमता से परिपूर्ण डॉ. आनन्द की यशकाया शताब्दियों तक जालौन जनपद को सजग प्रहरी के रूप में चेतना प्रदान करती रहेगी।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि डॉ. आनन्द का अप्रतिम व्यक्तित्व निस्सन्देह प्रभावकारी था। वे समूचे बुन्देलखण्ड के गौरव थे। उनकी प्रतिभा एवं क्षमता को विस्मृत नहीं किया जा सकता है।

द्वितीय अध्याय :

डॉ. आनन्द - साहित्यिक कृतित्व

- प्रकाशित रचनाएँ : सामान्य परिचय
- पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाएँ
- अप्रकाशित रचनाएँ : सामान्य परिचय

द्वितीय अध्याय

डॉ. आनन्द : साहित्यिक कृतित्व

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, अखिल भारतीय काव्य–मंच पर प्रतिष्ठित, ओज और राष्ट्रीय चेतना के संवाहक डॉ. आनन्द के जीवन की अनुभूतियाँ जीवन–संघर्ष के साथ एकाकार होकर उनके काव्य में प्रतिबिम्बित हुई हैं। डॉ. आनन्द का रचना संसार बहुआयामी है। इनके काव्य में एक ओर राजनीतिक उथल–पुथल से उद्भूत आक्रोश की अभिव्यंजना है, तो दूसरी ओर कारुणिक प्रसंगों से प्लावित सहानुभूति पूर्ण संवेदना की निष्पत्ति। एक ओर बुन्देली गीतों में कोमल भावनाओं का सरस संचार है, तो दूसरी ओर वीरोचित भावनाओं को साकार स्वरूप प्रदान करने वाले उग्र तेवर। एक ओर चुटीले व्यंग्यों का तिलमिला देने वाला प्रखर प्रहार है, तो दूसरी ओर म्लान हृदय–सुमन को पुष्पित करने वाले हास्य की सरस बौछार।

डॉ. आनन्द को पद्य संरचना के क्षेत्र में तो प्रभुत्व प्राप्त था ही, गद्य क्षेत्र में भी वह पीछे नहीं थे। व्यंग्य लेख इतने धारदार होते थे कि सहृदय पाठक सोचने के लिए विवश हो जाता था। सम्पादन–कला में

निष्णात डॉ. आनन्द **'दुनाली'** साप्ताहिक समाचार पत्र का सम्पादन आजीवन करते रहे। **'मस्तराम की तरंगे'** शीर्षक से हास्य एवं व्यंग्य धारावाहिक प्रकाशन उनके **'दुनाली'** का विशेष आकर्षण था। परिवहन विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार को उजागर करने के लिए **'पाप के किले पर पहला गोला' 'दूसरा गोला', 'तीसरा गोला', चौथा गोला'** शीर्षकों से प्रति सप्ताह व्यंग्य लेख प्रकाशित होते थे। डॉ. आनन्द को ग़ज़ल–लेखन में भी दक्षता हासिल थी।

कृ-

डॉ. आनन्द की प्रकाशित साहित्यिक कृतियों का सामान्य परिचय निम्नानुसार है–

झाँसी की रानी-

'झाँसी की रानी' राष्ट्रीय ऐतिहासिक काव्य हिन्दी साहित्य जगत में एक अनूठा महाकाव्य है, इसमें कवि ने वीरता की गरिमा को ओजस्वी स्वरों में गाकर राष्ट्रीय आत्मा को सजगता का पीयूष पान कराया है। **'झाँसी की रानी'** में वीरता के उत्कृष्ट और आदर्श रूप का रसोत्कर्ष, राष्ट्रीय चेतना का ओजस्वी शंखनाद कवि के प्रतिभावान व्यक्तित्व का परिचायक है। डॉ. रामकुमार वर्मा का कथन है– ***'मैने अनेक वर्षों पूर्व डॉ. आनन्द से 'झाँसी की रानी' काव्य अत्यंत आग्रह और प्रेम से सुना था। उस समय वीर–काव्य के क्षेत्र में वह अद्वितीय रचना समझी गई और अखिल भारतीय काव्य मंच पर सराही गई।***[1]

डॉ. आनन्द को स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व की राजनीतिक उथल–पुथल ने अत्यधिक प्रभावित किया। उसी राजनीतिक उथल पुथल को **'झाँसी की रानी'** महाकाव्य में रेखांकित किया गया है। वे राष्ट्रीय चेतना के ओजस्वी कवि थे। अतः उनकी इस कृति में राष्ट्रीय चेतना के स्वर मुखरित हैं। डॉ. सेवक वात्स्यायन तो यहाँ तक कहते हैं कि –***'इस कृति के***

1– भूमिका–झाँसी की रानी, लेखक रामकुमार वर्मा, आनन्द प्रकाशन, प्रथम संस्मरण सन् 1967 ई., पृष्ठ 3

कर्ता डॉ. आनन्द बहुत दूर नहीं गये, झाँसी तक गये, झाँसी की रानी तक गये और उसका घोड़ा, उसकी तलवार, किला और बुन्देलखण्ड का भावनामय इतिहास अपने प्रकृतिस्थ रूप में अपनी सिंहवत हुंकार से इस रूप में ऊपर उठा रखा कि अन्धे को भी दिखाई दे जाय और बधिर को भी उसका गौरव–गान सुनाई पड़े। आनन्द जी ने इस काव्य में यद्यपि इतिहास से प्रामाणिक उल्लेख उद्‌धृत किये हैं, परन्तु कवि का मुख्य उद्‌देश्य कथा नहीं, नित्य तरुण शौर्य–सौन्दर्य का श्रद्धावेष्ठित राष्ट्रीय अनुगान ही रहा है।'[1]

उपर्युक्त उद्धरण में डॉ. वात्स्यायन ने बुन्देलखण्ड के भावनामय इतिहास को बुलन्दियों तक पहुंचाने का श्रेय डॉ. आनन्द को दिया है। डॉ. आनन्द वस्तुतः ऐतिहासिक गाथा को काव्य का स्वरूप देने में पूर्ण रूपेण सफल हुये हैं।

डॉ. आनन्द के **'झाँसी की रानी'** महाकाव्य में चौदह सर्ग हैं। ऐतिहासिक महागाथा को चौदह सर्गों में समेटे यह अमरकाव्य 1967 ई. में प्रकाशित हुआ। बुन्देलखण्ड की अनुपम शौर्य–गाथा को प्रारम्भ करने से पूर्व वीणा वादिनि माँ सरस्वती की वन्दना की गई है। पंक्तियाँ देखिये–

ओ वीणा वादिनि वर दायिनि तुम सदा दाहिनी हो माता।
मेरे मन–मानस में बिहरो तुम हंस वाहिनी हो माता।।
अपनी वीणा के स्वर देकर माता झंकृत कर दे सितार।
बज उठे एक नव युग लेकर मेरी तंत्री का तार–तार।।[2]

किसी काव्य के प्रारंभ में बाग्देवी की वंदना करना कवि का धर्म है; नैतिक कर्तव्य भी है। कवि माँ से कविता में प्रसाद, प्रवाह तथा भावुकता भरने की ओर वर्ण–वर्ण तथा पद–पद में प्रतिभा भरने की प्रार्थना करता है। तदुपरान्त कवि कैलाशवासी, चन्द्रचूड़, प्रलयंकर भगवान शिव के

1– समीक्षा– झाँसी की रानी, डॉ. सेवक वात्स्यायन, आनन्द प्रकाशन जालौन (उत्तर प्रदेश), पृष्ठ 5

2– झाँसी की रानी, डॉ. आनन्द, पृष्ठ 2

चरणों में नत्–शिर होकर अभयदान का प्रार्थी बनता है और खप्पर प्रिय, खड्गपाणि माँ के वांच्छित फलदायी चरणों में नमन् करके काव्य प्रारम्भ करता है–

जो चण्डी बनकर चाट गई उर रक्त बीज के रक्त बिन्दु।

मन वांच्छित फलदेने वाले जिसके सुचारु चरणार विन्दु।।

उस खड्गपाणि को कर प्रणाम उस खप्पर प्रिय को कर प्रणाम।

कर में अब कलम उठाता हूँ उस रुधिरः प्रिय को कर प्रणाम।।[1]

डॉ. आनन्द अपने लघु जीवन–गीता में अमर ज्ञान गढ़ने वाली, ह्रदय में निर्भयता का दुर्भेद्य कवच मढ़ने वाली उस वीरांग्ना शिरोमणि रानी लक्ष्मीबाई को भी विनम्र प्रणाम करते हैं, जिसके असीम रणोद्गार तथा अपार साहस को देखकर ब्रिटिश इतिहासकारों ने वीरों की साम्राज्ञी कहकर सम्बोधित किया–

ओ स्वदेश की गौरवान्विते ओ क्षत्राणी ओ प्रणवाली।

ओ अश्ववाहिंनी ओ अजये ओ स्वतंत्रता की मतवाली।।

मैं आज तुम्हारा एक अमर इतिहास सुनाने को आया।

तेरी कृपाण का लिखा हुआ मुँह से दोहराने को आया।।[2]

उपर्युक्त छन्द में तलवार का मानवीकरण अत्यन्त आकर्षक बन पड़ा है। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि रानी की कृपाण से लिखे हुए इतिहास को मुँह से दोहराने की अनुमति माँग रहा हो।

सन् 1857 ई. के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में जिन वीरों ने अपने जीवन को बलिदान कर दिया, वस्तुतः उनका उचित मूल्यांकन नहीं हो पाया। महारानी लक्ष्मीबाई का अल्पकालीन जीवन वीरतापूर्ण चमत्कारों से परिव्याप्त रहा। यदि इनके स्वरूप की रक्षा न की गई, तो एक समय ऐसा भी आयेगा कि लोग रानी लक्ष्मीबाई की बात को कोरी कल्पना मानेंगे।

1– झाँसी की रानी, डॉ. आनन्द, पृष्ठ 5

2– उपरिवत्, पृष्ठ 9

इसका दायित्व कवि समाज पर अधिक है। 'झाँसी की रानी' काव्य के प्रणेता डॉ. आनन्द ने इस दायित्व का निर्वाह किया है। डॉ. सेवक वात्स्यायन ने लिखा है— ***'कवि आनन्द ने इतिहास के विपुल मूल उद्धरणों द्वारा काव्य के अभिव्यक्ति पक्ष एवं उसकी रागात्मकता को अक्षुण्ण बनाये रखकर अपने कथनों एवं तर्कों का पुष्ट आयोजन किया है। काव्य–सृजन के साथ ही इस प्रकार इस कृति द्वारा उन्होंने बुन्देलखण्ड का ऐतिहासिक उद्धार भी किया है।***[1]

डॉ. आनन्द ने **'झाँसी की रानी'** काव्य में सिद्ध कर दिया है कि राष्ट्रीयता में वीरता हो सकती है; प्रायः होती है, पर केवल वीरता का नाम राष्ट्रीयता नहीं होता। रानी लक्ष्मीबाई की वीरता के दो मुख्य उपादान हैं तलवार और घोड़ा। कवि ने काव्य के प्रारम्भ में तलवार के गुणों को संक्षेप में बतलाया है—

थी झपट कहीं झंकार कहीं प्रतिबिम्ब कहीं था बार कहीं।
था एक प्रलय का चमत्कार थी मार कहीं तलवार कहीं।।
प्रतिपल शोणित की प्यासी थी पर पानीदार कहाती थी।
जिसके पानी से पानी में बेलाग आग लग जाती थी।।[2]

उपर्युक्त छन्द में कवि ने तलवार की त्वरित गति का चमत्कारिक वर्णन विरोधाभास तथा यमक का आश्रय लेकर किया है। इसी प्रकार घोड़ा के वर्णन में भी कवि का वर्णन कौशल दृष्टव्य है—

घोड़े पर था मधुमास नया, घोड़े पर था उल्लास नया।
घोड़े ने अपनी टापों से, लिख दिया एक इतिहास नया।।
थम सका न तीर कटारों से, जम गया तोप की मारों से।
समरांगण में जी खोल–खोल, घोड़ा खेला तलवारों से।।[3]

उपर्युक्त छन्द में घोड़े का अद्वितीय वर्णन है। डॉ. सेवक वात्स्यायन लिखते हैं— ***'हमारा विचार है कि इस काव्य में मुख्य पात्र दो ही हैं–***

1— समीक्षा— झाँसी की रानी, डॉ. सेवक वात्स्यायन, पृष्ठ 10

2— झाँसी की रानी, डॉ. आनन्द, पृष्ठ 14–15

3— उपरिवत्, पृष्ठ 19

एक रानी और दूसरा घोड़ा। कवि की सारी श्रद्धा–निष्ठा और सम्मान दृष्टि जहाँ रानी में केन्द्रित है, वहीं कवि का व्यक्तित्व और उसकी वीर भावामूला प्रकृति इस घोड़े के साथ जुड़ी है। अपने स्वतंत्र महत्व में जायसी के पद्मावत में जो स्थान शुक हीरामन का है, इस वीर–काव्य में वही महिमा इस घोड़े की है।'[1]

घोड़े के वर्णन की व्यापक व्यंजना एकदम अनूठी है। दरअसल डॉ. वात्स्यायन की टिप्पणी सटीक है, क्योंकि शुक हीरामन के बिना पद्मावत का घटना–चक्र गतिहीन एवं निष्क्रिय हो जाता और उसी प्रकार घोड़े के बिना रानी की शौर्य–गाथा अधूरी रह जाती।

'झाँसी की रानी' काव्य के प्रारम्भ में डॉ. आनन्द ने वीरभूमि बुन्देलखण्ड की गौरव–गाथा को संक्षेप में प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि यह वह शौर्य स्थली है, जहाँ त्योहार भी कटार की पैनी धारों से मनाये जाते हैं, नारियाँ भी तलवारों से खेला करती हैं। यहीं शाहंशाह औरंग्जेब का माथा झुका था; यहाँ के पत्थर–पत्थर पर कुर्बानी की अमर कहानी अंकित है। यहाँ रानी लक्ष्मीबाई ने स्वतंत्रता देवी का पूजन अपने प्राण–प्रसून चढ़ाकर किया था। प्रकृति–नटी का नर्तन यहाँ का ज्वलन्त दिग्दर्शन है। बेतवा इस भूमि की गौरव–गाथा का निरन्तर गायन करती है। यह वही भूमि है, जहाँ तुलसी और केशव जैसे महाकवि अवतरित हुए। कवि आनन्द अपनी मातृभूमि बुन्देलभूमि से याचना करता है–

मातृभूमि तुझसे मैंने कब–कब क्या–क्या न लिया है।
बतला इस याचक जग को तूने क्या–क्या न दिया है।।
ओ बुन्देल भूमि जननी रखले स्वदेश का पानी।
एक बार फिर से दे दे लक्ष्मीबाई सी रानी।।[2]

डॉ. आनन्द ने बुन्देलखण्ड के स्तवन में अपनी असीम श्रद्धा–भावना को उड़ेल कर रख दिया है। एक अनूठा चित्र सा उपस्थित

1– समीक्षा–झाँसी की रानी, डॉ. सेवक वात्स्यायन, पृष्ठ 6

2– झाँसी की रानी, डॉ. आनन्द, पृष्ठ 28

कर दिया है। यद्यपि बुन्देलखण्ड पर बुन्देली साहित्य और संस्कृति के पुरोधा स्व. गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर', स्व. कृष्णानन्द गुप्त, स्व. रामचरण हयारण 'मित्र', स्व. श्यामसुन्दर 'बादल', स्व. बनारसीदास चतुर्वेदी, स्व. गनेशीलाल बुधौलिया, डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्ता तथा डॉ. सीताकिशोर ने बहुत कुछ लिखा, विभिन्न शोध–कार्य हुये, किन्तु डॉ. आनन्द ने अल्प वर्णन में जिस भावगाम्भीर्य को समाविष्ट किया है, बुन्देलखण्ड की अर्चना में जिन भाव सुमनों को समर्पित किया है, अपने स्नेह–बिन्दुओं का अर्घ्य चढ़ाया है, उसकी प्रशंसा के लिए शब्द कम पड़ जाते हैं। कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

इसी भूमि के यज्ञ कुण्ड की हैं अनेक संस्मृतियां।
यहीं हुआ करती हैं हँस–हँस प्राणों की आहुतियां।।
इसी भूमि पर रक्त रंजिता रहती रण स्थली थी।
इसी भूमि पर रानी की तीखी तलवार चली थी।।[1]

उपर्युक्त पंक्तियों में बुन्देल भूमि के वैभव का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि यहाँ युद्धरूपी यज्ञ–कुण्ड में हँस–हँसकर प्राणों की आहुतियां दी जाती रहीं तथा इसी वीर–प्रसूता बुन्देल भूमि पर अपनी आन–बान–शान को प्राणों से अधिक प्रिय समझने वाली लक्ष्मीबाई ने वीरता का अद्भुत प्रदर्शन कर विश्व इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर भारत वर्ष का नाम अंकित करा दिया।

डॉ. आनन्द के **'झाँसी की रानी'** काव्य में प्रकृति वर्णन कम मात्रा में हैं, किन्तु जहाँ भी हैं, अत्यन्त मनोरम एवं आकर्षक हैं। महाकाव्यों में प्राकृतिक दृश्यों का आयोजन मुख्य रूप से अनिवार्य माना जाता है। कहीं तो शुद्ध प्रकृति वर्णन अपनी छटा बिखेरता है; तो कहीं नीति को पुष्ट करने या उपमान रूप में किसी वस्तु की शोभा बढ़ाने में प्रयुक्त होता है।

डॉ. वात्स्यायन कहते हैं कि –***'कवि की दृष्टि जल, जल–धाराओं और पर्वतों तथा आकाश तक ही रमी है, जैसे कालपी के तालाब वर्णन में***

1– झाँसी की रानी, डॉ. आनन्द, पृष्ठ 24

–"थे सेत कमल तालाबों में लखकर होता था यही भान, मानों धरती पर उतर पड़ा, तारागण लेकर आसमान" तथा "यह था पानी में आसमान या आसमान में पानी था।" 'सिपाही–विद्रोह' और 'झाँसी में क्रांति' शीर्षक सर्ग के प्रारम्भ में बड़ा व्यापक काव्योचित प्रकृति का वर्णन है।[1]

इसी प्रकार **'भाण्डेर की लड़ाई'** सर्ग में, जब रानी झाँसी छोड़कर भाण्डेर आ जाती है और जालौन जनपद के कालपी नगर के समीप पहुंचती है, प्रकृति के अत्यन्त मनोहारी दृश्य उपस्थित हुए हैं। रानी चिन्तातुर स्थिति में रात भर अनिद्रा का शिकार रही। जाग्रतावस्था में हार्दिक उथल–पुथल, मानसिक क्लेश तथा संकल्प–विकल्प के मध्य रानी रातभर डूबती उतराती रही। जागते–जागते सबेरा हो गया, वृक्षों पर पक्षी कलरव कर उठे, पुष्प पुष्पित होने लगे तथा पात झूमने लगे। क्यारियाँ महक उठीं तथा बुलबुलें चहक उठीं। उदाहरण देखिये–

विटपों पर पंछी बोल उठे, कुछ नीले पीले हरे–हरे।

देखा नगरी के बीच–बीच, निर्मल जल के तालाब भरे।।

फूल फूलने लगे, पात झूलने लगे।

क्यारियाँ महक उठीं, बुलबुलें चहक उठीं।

ताकने लगा गगन, झाँकने लगी किरन।

मंद मंद डोलने लगा, प्रभात का पवन।।[2]

यहाँ पर कवि ने सेना की समानता घटा से तथा रानी की समानता बिजली से की है। उपमान के रूप में प्रकृति वर्णन सराहनीय है।

'झाँसी की रानी' महाकाव्य में डॉ. आनन्द ने रानी के युद्ध कौशल का जो सजीव वर्णन किया है, उसे पढ़कर युद्ध का चित्र उपस्थित हुये बिना नहीं रहता। जब अंग्रेजों ने कूटनीति से युक्त संधि–पत्र इस प्रस्ताव का भेजा कि– ***'तुम करो राज झाँसी का, पर ब्रिटिश छत्र छाया में'*** तो

1– समीक्षा–झाँसी की रानी, डॉ. सेवक वात्स्यायन, पृष्ठ 8

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 179

रानी के उत्तर में झलकता हुआ स्वाभिमान कवि के शब्दों में देखने योग्य है तथा वीरोचित भावना के अनुकूल है—

रानी ने लिख भेजा उत्तर स्वीकार आपका मंत्र नहीं।

मैं हूँ छत्राणी इसीलिए रह सकती हूँ परतंत्र नहीं।।

जो मिले गुलामी में रहकर ऐसा घर जाना ही अच्छा।

इस समझौते से तो अपना रण में मर जाना ही अच्छा।।

उसका मिट जाना ही अच्छा रह सकता जो कि स्वतंत्र नहीं।

मैं हूँ छत्राणी इसीलिए रह सकती हूँ परतंत्र नहीं।।[1]

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने वीरोचित दर्प, अटल स्वाभिमान तथा दृढ़ प्रतिज्ञ होने का भाव दर्शाया है। अंग्रेजों की फौज से झाँसी में घमासान युद्ध हुआ, उसमें रानी शत्रुओं के जीवन—दीप को बुझाने में प्रलय—प्रभंजन के समान, शोणित बरसाने में बादलों के समान तथा आग लगाने में बिजली के समान सिद्ध हुई। पलभर में दल के दल काटने वाली, युद्ध—भूमि में लाशों पर लाशें पाटने वाली तथा रण—नौका पर सवार शत्रुओं को मौत के घाट उतारने वाली रानी प्रलयंकर की साक्षात् संहार शक्ति बनकर जब आगे बढ़ती थी तो—

थे रुण्ड कहीं थे मुण्ड कहीं गिर पड़े झुण्ड के झुण्ड कहीं।

हो गये धराशायी पल में कट—कट कर बाज वितुण्ड कहीं।।

कुछ जले और कुछ बुझे और कुछ हुए हताहत प्राणहीन।

एक ही बार में अरिदल पर गिर पड़ी बिजलियाँ तीन—तीन।।[2]

उक्त छन्द में कवि ने घमासान युद्ध का वर्णन किया है, जहाँ रुण्ड—मुण्ड कट—कट कर जमीन पर गिर रहे हों, रक्त—रंजित युद्ध—भूमि पर आहत कराह रहे हों। इतना सजीव वर्णन कवि की अद्भुत कल्पना शक्ति का प्रमाण है, अपूर्व संवेदना—शक्ति का परिचायक है।

1— झाँसी की रानी, पृष्ठ 129

2— उपरिवत्, पृष्ठ 116

'झाँसी की रानी' महाकाव्य का एक हृदय–स्पर्शी प्रसंग, जिसे कवि ने महाकाव्य की श्रृंखला में एक कड़ी के रूप में प्रस्तुत किया है– यह है कि किले में रसद पहुँचाने वाला अग्रवाल हलवाई अंग्रेजों को किले के अन्दर का भेद दे देता है। परिणामतः अंग्रेजी फौज किले पर आक्रमण करती है। हलवाई अन्दर से फाटक खोल देता है। मार–काट प्रारंभ हो जाती है। अग्निकांड होता है। एक तहलका मच जाता है। संघर्ष में मुख्य द्वार का संरक्षक खुदाबख्श तथा प्रधान तोपची गुलाम गौस खाँ मारे जाते हैं, रानी निराश होकर आत्म हत्या के लिए तैयार होती है, तभी एक वृद्ध सरदार अश्रु–धारा प्रवाहित कर करुण कंठ से बोल पड़ा–

है महाशोक है महाशोक जो आत्मघात कर जाओ तुम।
इससे तो यह अच्छा होगा लड़ते–लड़ते मर जाओ तुम।।
रानी तेरे यश का गवाह थल होगा नभ मण्डल होगा।।
पर इतने पर ही झाँसी का इतिहास नहीं उज्ज्वल होगा।।[1]

इतना सुनते ही रानी की चेतना जाग्रत हुई और वह सन्नद्ध होकर प्राण–पण से युद्ध कार्य में प्रवृत्त हो गई।

महाकाव्य के अंत में कवि का दार्शनिक चिन्तन मुखरित हो उठता है। रानी के निधन का शोक छा जाता है, सभी निराश हृदय होकर व्यथित हो जाते हैं। कवि का नैराश्य–भाव करुणा और निर्वेद में परिणत हो जाता है। जीवन के प्रति कवि का दृष्टिकोंण प्रस्तुत है–

क्या भरोसा जिन्दगी में जिन्दगी का,
जिन्दगी में है सृजन तो नाश भी है।
जींवको साँसें मिलीं जो जिन्दगी में;
एक उनमें साँस अंतिम साँस भी है।।[2]

उक्त पंक्तियों में करुणा प्लावित स्वर में कवि जीवन के प्रति

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 139–140

2– उपरिवत्, पृष्ठ 219

उदासीनता का भाव व्यक्त करता है। जीवन क्षण–भंगुर है। यहाँ कुछ भी स्थायी नहीं। दुर्बल और बलवान, मूर्ख और विद्वान तथा निर्धन और धनवान सभी को एक दिन जाना है। जो रत्न–जटित सिंहासन पर आसीन रहे उन्हें अन्त समय कफन भी उपलब्ध न हो सका–

रत्न मण्डित मणि जटित नव चन्द्रिका से,
शीश जिसका था गया निशि दिन सजाया।
आज वह दुर्दैव की गति है कि उसने,
अन्त पर दो गज़ कफ़न तक भी न पाया।।[1]

जब महारानी लक्ष्मीबाई का पार्थिव शरीर चिता में धू–धू कर जल उठा, उनका प्रिय दत्तक पुत्र सिसकियाँ भरता बिलखता रह गया–

और वह बालक चिता के पास बैठा,
सिसकियाँ भरता बिलखता रह गया जो।
बेतवा के बाँध पलकों में दबाये,
बस चिता की ओर लखता रह गया जो।।[2]

उक्त पंक्तियों में कवि ने शास्वत सत्य का उद्घाटन किया है। जगत की अविराम नाट्य लीला अनवरत चल रही है। जगत के प्रति कवि का दार्शनिक चिंतन देखिये–

हर पात्र यहाँ पहचान नहीं पड़ता है।
आवरणों में अनुमान नहीं पड़ता है।।
यद्यपि न वास्तविकता है इसमें कुछ भी।
लेकिन मिथ्या सा जान नहीं पड़ता है।।[3]

सन् अड़तालीस :

डॉ. आनन्द गाँधीवाद से प्रभावित थे। गाँधीवादी विचारधारा उनके मन और मस्तिष्क में समा गई थी। उनके सिद्धान्त उन्हें प्रिय थे।

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 220

2– उपरिवत्, पृष्ठ 221

3– उपरिवत्, पृष्ठ 223

परतन्त्र भारत वर्ष को स्वतन्त्र कराने में गाँधी के सत्य, अंहिसा पर आधारित आन्दोलनों ने डॉ. आनन्द को अत्यधिक प्रभावित किया। गाँधी जी के आह्वान पर ग्राम सुधार विभाग से सन् 1941 में आपने त्यागपत्र दे दिया तथा व्यक्तिगत सत्याग्रह के सिलसिले में सन् 1941 में ही जेल यात्रा की।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के त्याग और बलिदान के परिणाम स्वरूप 15 अगस्त 1947ई. को भारतवर्ष अंग्रेजों की दासता से मुक्त हो गया। समाज का प्रत्येक वर्ग आजादी से अनुप्राणित होकर हर्ष से विभोर हो गया। सम्पूर्ण देश में आजादी की लहर दौड़ गयी। स्वराज प्राप्त हो गया। बापू की प्रतिभा रूपी माता ने स्वराज्य रूपी बालक को जन्म दिया। स्वराज्य रूपी बालक अभी पाँच माह का ही था, अचानक बज्रापात हुआ। क्रूरकाल के नृशंस हाथों से 30 जनवरी 1948ई. को पूज्य वापू काल–कवलित हो गये। राष्ट्र–गगन तिमिराच्छादित हो गया। जन–जन की पीड़ामय पुकार कराह उठी। उस नृशंस हत्यारे को कवि नरपिशाच कहता है तथा अपनी अन्तर्वेदना व्यक्त करता है–

ओ नर पिशाच तूने इसका निर्णय तो नेक किया होता।
माँ का बध करने के पहले शिशु को भी पूछ लिया होता।।
बापू तुम जिस दिन चले गये बस चला गया अपना स्वराज।
अब कोई नहीं गरीबों की सुनने वाला रह गया आज।।[1]

उपर्युक्त छन्द में कवि नैराश्य से उद्भूत विषाद की अभिव्यंजना करता है। बापू की छत्र–छाया हटने के पश्चात् नेतागण उच्छृंखल हो गये। अपनी लाज और शर्म को त्यागकर, मदान्ध होकर मन–मानी करने में व्यस्त हो गये। अन्याय, लूट–खसोट, पद–लोलुपता तथा रिश्वत का बाजार गर्म हो गया। नारी की लज्जा न बच सकी। कवि नेताओं को सावधान करता हुआ कहता है–

1– सन् अड़तालीस– डॉ. आनन्द, आनन्द प्रकाशन, जालौन (उत्तर प्रदेश) सन् 1950ई. पृष्ठ 2

नारी की लज्जा बच न सकी, मिल सका गरीबों को न त्राण।

तब कवि ने बरबस उठा लिया, अपने हाथों में धनुष बाण।।

ओ नेताओ अब होशियार, लीडरो रहो अब सावधान।

चढ़कर आते हैं छाती पर, मजदूर वीर, योधा किसान।।[1]

उक्त पंक्तियों में कवि अपने उग्रतापूर्ण तेवर के साथ नेताओं को सावधान करता हुआ उन पर मजदूरों और किसानों के आक्रमण की धमकी देता है। कवि कहता है कि *वह स्वतंत्रता कहाँ अदृश्य हो गई? जिसकी अर्चना में वीरों ने अपने शीश समर्पित किये थे, माताओं ने अपनी गोदी के लाल लुटा दिये थे, जिसके लिए भारत माता के टुकड़े–टुकड़े हो गये, जिसकी खातिर कितनी कलियां खिलते–खिलते मुरझा गयीं, कितनी बहिनें अपने भाई को राखी भी न बाँध सकीं, जिसके लिए देश की बर्बादी हो गई। वह आजादी किस बंगले में कैद कर ली गई?* इन भावों को कवि निम्न छन्द में इस प्रकार व्यक्त करता है–

जिस आजादी पर बिसमिल ने फाँसी पर चढ़कर पढ़े छन्द।

वह आजादी किस बंगले में बतलादो कर ली गई बन्द।।

जिस बंगले में वह कैद हुई उसके फाटक खुलवा देंगे।

यदि खुल न सके तो बंगले की ईटों से ईंट बजा देंगे।।[2]

उपर्युक्त छन्द में कवि ने ओजस्वी वाणी में बिसमिल के वीरतापूर्ण गौरव को दोहराया है। आजादी के लिए कवि कुछ भी करने को तैयार है, चाहे बंगलों की ईंट से ईंट ही क्यों न बजाना पड़े। जिस स्वतंत्रता की वेदी पर झाँसी की रानी मुस्कुराते हुए कुर्वान हो गई, जिस पर अनगिनत किशोर बलिदान हो गये, हम जिसके तराने मुक्त कण्ठ से गाते रहे, जिस आजादी के चरणों में अनगिनत मस्तक और अनगिनत सुहाग कुर्वान हो गये; वह आजादी कहाँ है? हम तो उसी तरह परतंत्र हैं जिस तरह ब्रिटिश साम्राज्य में थे।

1– सन् अड़तालीस–डॉ. आनन्द, आनन्द प्रकाशन, जालौन (उ.प्र.) 1950ई.,पृ.3

2– उपरिवत्, पृष्ठ 5

कवि नेताओं की कटु आलोचना करता हुआ कहता है—

हाँ यह माना हमने बेशक नेता, नेता आजाद हुए।
अपने नेताओं के खण्डहर, बंगले बनकर आबाद हुए।।
है तुम्हें कसम सच बतलाना, देंगे सम्मान तभी तुमको।
क्या नवयुवकों की फाँसी की आती है याद कभी तुमको।।[1]

यहाँ पर कवि ने नेताओं को लक्ष्य बनाकर तीखा प्रहार किया है। नवयुवकों की फाँसी की बात को दोहराया है।

डॉ. आनन्द ने **'सन् अड़तालीस'** में सन् 1948 को ब्रिटिश क्रान्तिकारी घटनाओं की स्मृति के रूप में लिया है। तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जबाहरलाल नेहरू को बार—बार इंगित कर उनकी दुर्बल शासनावस्था की निन्दा की है। भारत माँ के अरमानों पर तुषारापात करने का तथा भूखे मजदूर किसानों पर अत्याचार करने का आरोप लगाया है। विधायकों की दुर्नीति एवं मनमानी से क्षुब्ध होकर सच्चा स्वराज्य लाने का कवि संकल्प लेता है। विधायकों के प्रति तीव्र आलोचना के स्वरों में कवि अपनी असन्तुष्टि व्यक्त करता है—

हम युग के निर्माता हैं तो इस युग में आग लगा देंगे।
हम भारतीय हैं भारत से एम. एल. ए. राज्य मिटा देंगे।।
एम. एल.ए. तो होंगे लेकिन एम. एल. ए. राज्य नहीं होगा।
उस दिन होगा सच्चा स्वराज्य, कोई साम्राज्य नहीं होगा।।[2]

उक्त छन्द में कवि ने सच्चे स्वराज्य की कल्पना की है। सच्चा स्वराज्य वही है, जहाँ कोई साम्राज्य न हो। शोषण कर्ता न हों, तानाशाही न हो। व्यवस्था के लिए प्रतिनिधि हों, किन्तु उनके विशेषाधिकारों पर अंकुश हो। सच्चा स्वराज्य तब होगा जब किसान राजा हो तथा मजदूर प्रधानमंत्री हो।

1— सन् अड़तालीस—डॉ. आनन्द, आनन्द प्रकाशन, जालौन (उ.प्र.) 1950ई.,पृ.6

2— उपरिवत्, पृष्ठ 9

कवि अपनी साहसिकता का परिचय देते हुए कहता है कि वर्तमान में जो स्वराज्य है, वह पूर्व की भाँति ही है। पहले विदेशी ब्रिटिश राज्य था, अब स्वदेशी ब्रिटिश राज्य है। हमारे नेता ब्रिटिश शासकों से भी बदतर हैं। ब्रिटिश साम्राज्य में भले ही देश का अभ्युत्थान अवरुद्ध था, किन्तु हम वोट और व्यापार के लिए स्वतन्त्र थे। कवि कहता है–

अंग्रेज हुकूमत थी तब थे हम पेट पालने में स्वतन्त्र।
अंग्रेज हुकूमत थी तब थे हम वोट डालने में स्वतन्त्र।।
लेकिन अब तो लेसन्स बिना, व्यापार हमारा बन्दी है।
लेसन्स बिना यह जन्मसिद्ध अधिकार हमारा बन्दी है।।[1]

तात्पर्य यह है कि नागरिक के कुछ जन्मसिद्ध अधिकार होते हैं। जैसे लोकमान्य तिलक ने नारा दिया था– **'स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।'** उसी तरह व्यापार करके अपने परिवार का भरण–पोषण भी हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। वर्तमान सरकार ने लाइसेन्स प्रारंभ कर वह अधिकार भी हमारा छीन लिया।

डॉ. आनन्द की प्रथम प्रकाशित कृति **'सन् अड़तालीस'** अवरुद्ध वेगपूर्ण उद्‌गारों का अपूर्व विस्फोट है। कवि की राष्ट्रीय भावना उसे विवश कर देती है दूषित आचरणों के विरोध के लिए। उसका स्वतन्त्र हृदय परवशता में छटपटाता है। जब संयम का बाँध टूट जाता है, उसके उग्र विचारों का अखण्ड प्रवाह एकदम फूट पड़ता है। फिर वह कहे बिना रह नहीं पाता–

क्या नहीं देश मुहताज हुआ, दाने– दाने के लिए आज।
क्या यही नीति बापू की थी, क्या यही हुआ अपना स्वराज्य।।
अपने स्वराज्य में अपनी ही लड़कियाँ सताई जाती हैं।
अपने स्वराज्य में अपनों पर गोलियाँ चलाई जाती हैं।।[2]

कवि ने नेताओं के क्रिया–कलापों पर, स्वराज्य की बदली हुई परिभाषा पर कटाक्ष किये हैं। नेताओं के जन्म दिवस, उद्‌घाटन,

1– सन् अड़तालीस–डॉ. आनन्द, पृ. 13

2– उपरिवत्, पृष्ठ 14–15

शिलान्यास तथा अधिवेशन और समारोहों पर अनावश्यक व्यय को इंगित कर कवि उलाहना देता है, कटु सत्य उद्घाटित करता है। पंक्तियाँ देखिये–

पर बुरा न मानो तो पूछूँ, जिसने तुमको आजाद किया।
बतलाओ तुमने कब कब उस नेता सुभाष को याद किया।।
जिसकी कुर्बानी के बल पर तुमने सिंहासन पाया है।
उस भगतसिंह की फाँसी का, कब फाँसी दिवस मनाया है।।[1]

कवि, नेता सुभाषचन्द्र बोस तथा सरदार भगतसिंह की स्मृति दिलाता हुआ कहता है कि जिन्होंने कुर्बानी की, बलिदान दिये, उनके लिए वर्तमान शासन के प्रतिनिधि क्या करते हैं? चन्द्र शेखर आजाद की माँ अपने चन्दू को रात–रात भर रो– रोकर पुकारती होगी, किसी ने उसकी करुण आवाज को सुना? जिसके बेटे ने भारत का सौभाग्य भानु जगमगा दिया था, जिसके बेटे ने ब्रिटिश राज्य का सिंहासन डगमगा दिया था। उसकी माँ दो–दो दानों को तरस रही है, क्या किसी ने सोचा है?

कवि अपने कथन में कारुणिकता का समावेश करते हुए कहता है–

उसके वह बीते दिवस कभी क्या याद नहीं आते होंगे।
उसके सपनों में क्या उसके आजाद नहीं आते होंगे।।
तुम कभी पूछ लेते आकर उसकी माँ को क्या कहती है।
क्या खाती है क्या पीती है कैसे खण्डहर में रहती है।।
अपने मक्खन अंडे से तुम कुछ बजट निकाल नहीं सकते।
उस नर–नाहर की माँ को क्या दो दाने डाल नहीं सकते।।[2]

उपर्युक्त कथन तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जबाहरलाल नेहरू को इंगित कर लिखा गया है। उन्हीं को कवि का चुनौतीपूर्ण सन्देश है, तिरस्कार युक्त उपालम्भ है तथा घृणित फटकार भी है। उस नर–नाहर की

1– सन् अड़तालीस–डॉ. आनन्द, पृष्ठ 16

2– उपरिवत्, पृ. 18

माँ के पोषण की कोई व्यवस्था नहीं, जिसने ब्रिटिश राज्य का सिंहासन हिला दिया था। जिसने मातृ भूमि पर अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया था। ऐसा कहा जाता है कि प्रधानमंत्री पं. जबाहरलाल नेहरू ने डॉ. आनन्द की जब यह रचना सुनी तो चन्द्रशेखर आजाद की वृद्धा माँ के लिए तत्काल पेंशन की व्यवस्था कर दी थी।

डॉ. आनन्द की **'संन् अड़तालीस'** में शोषण अव्यवस्थाओं तथा दुर्नीतियों के विरुद्ध आवाज है, वास्तविक स्वराज्य का सन्देश है तथा नेताओं पर व्यंग्य–बाण का करारा प्रहार भी है।

एम. एल. ए. राज

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी देश में व्याप्त भुखमरी, बेकारी, चोरबजारी तथा घूसखोरी के विकराल स्वरूप को देखकर कवि की अन्तरात्मा तिलमिला उठी। भ्रष्टाचार के चरम विकास ने देश की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा आर्थिक प्रगति को अवरुद्ध कर दिया। स्वराज्य के सुखद स्वप्न की कल्पना धराशायी हो गई। जन–मानस विक्षिप्त सा हो गया। विकास के तौर–तरीके कुंठित हो गये। स्वतंत्रता के लिए समर्पित प्रतिभायें निराश होकर किंकर्तव्यविमूढ़ हो गयीं। विषम परिस्थितियाँ विकराल हो गईं। असामाजिक तत्वों का उत्कर्ष हो गया। सभ्यता एवं संस्कृति का ह्रास हो गया। ऐसी स्थिति में सामाजिक तथा राष्ट्रीय चिन्तन की प्रतिबद्धता से प्रभावित कवि का हृदय छटपटाने लगा। परिस्थितियों की प्रतिक्रिया स्वरूप डॉ. आनन्द की यह कृति **'एम.एल.ए.राज'** सन्1951 में प्रकाशित होकर देश–प्रेमियों के समक्ष आई तथा प्रबुद्ध नागरिकों ने इसका भरपूर सम्मान किया।

युगीन चेतना के अद्भुत चितेरे डॉ. आनन्द अपने भावों की अभिव्यक्ति के प्रति गहराई के साथ प्रतिबद्ध थे। उन्होंने व्यक्ति और समाज की जीवन स्थितियों से वास्तविक सन्दर्भों को लेकर अपनी अभिव्यक्ति का आधार बनाया। मनुष्य जीवन की दशाओं के प्रति कवि की संवेदना सतत् जागरूक प्रहरी की भाँति होती है। इसलिए उन्होंने साधनहीनों के सच्चे

हितैषी के रूप में राजनीतिक मान्यताओं से भी विचार ग्रहण करने में संकोच नहीं किया। **'एम.एल.ए.राज'** में ओजस्वी वाणी में उनका अखण्ड विश्वास रूपायित हुआ है।

उनकी अभिलाषा थी कि राजनीतिक स्वार्थों से मुक्त होकर जन–प्रतिनिधि समाज सेवी बनें। समाज में समरसता हो। दलित, उत्पीड़ित प्राणी मात्र सामाजिक उन्नयन में सहभागी हों तथा उन्नति के साधन उपलब्ध हों। आदर्श मानवी गुणों का विकास हो, जिससे उच्चकोटि की साहित्यिक परम्परा का निर्वाह और सत्साहित्य की पयस्विनी का प्रवाह अबाधित रूप से हो सके।

कवि ने जन प्रतिनिधियों की स्वेच्छाचारिता एवं अव्यवस्थाओं को देखकर खेद प्रकट किया है–

तुमने अपनी सारंगी के जाने कैसे तार मिलाये।

जो बापू के राम राज्य का कुछ भी राग अलाप न पाये।।

सौ–सौ बनीं योजनायें नित लेकिन कुछ परिणाम न निकला।

पंचम स्वर से तान उठाई पर सम पर बे ताले आये।।[1]

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने नेताओं की योजनाओं पर आरोप लगाते हुए बापू के रामराज्य की सुखद कल्पना के प्रति निराशा व्यक्त की है। जन प्रतिनिधियों के दिये गये आश्वासनों को पूरा न कर पाने पर खेद प्रकट किया है। डॉ. आनन्द की अभिव्यक्ति–क्षमता इससे स्पष्ट है कि वे गम्भीर बात को भी सहज ढंग से कहकर पाठकों पर स्थायी प्रभाव छोड़ देते हैं।

नेताओं की खद्दरी पोशाक पर तथा खद्दरधारियों के कारनामों पर तीखा प्रहार करते हुए काँग्रेस–शासन की दुर्नीतियों को उजागर करते हैं। देखिये–

कपड़े पर कण्ट्रोल लगाकर तुमने चोर बाजार चलाये।

चावल, चीनी, शकर, तेल में हाथ सफाई के दिखलाये।।

1– एम. एल. ए. राज–डॉ. आनन्द, आनन्द प्रकाशन, जालौन, 1951ई. पृष्ठ 1

रिश्वत नजराना को तुमने इस युग में अनिवार्य बनाया।

खद्दर के कुरता टोपी में जाने कितने पाप छिपाये।।

माल गाड़ियों के भीतर से किसका माल न कट जाता है।

फिर खद्दर की चद्दर पर वह दिन दुपहर ही बँट जाता है।।[1]

कवि शासन सूत्रों से प्रश्न करता है कि तुमने सर्वोदय तथा जनहित के कितने कार्य किये हैं? यातायात सुगम करने को कौन सी सड़क निकाली? शिक्षोन्नति के लिए कहाँ–कहाँ महाविद्यालय खोले? कितनी नहरें बनवाई,? कहाँ वृक्षारोपण कराया तथा कितना अन्न–वस्त्र का वितरण करवाया? जनता नंगी–भूखी तड़प रही है। निराशा के गर्त में आकण्ठ मग्न है। इतना ध्यान रहे कि यदि जनता की रक्त–शिराओं में गरम रवानी आ गई तो जो स्थिति अंग्रेजों की हुई थी, वही तुम्हारे शासन की होगी। कवि चुनौतीपूर्ण शब्दों में कहता है–

नवयुग के तूफ़ान उठेंगे जन–युग की आँधी आयेगी।

युग–व्यापी बन लाल क्रान्ति की बिजली तड़प–तड़प जायेगी।।

अंग्रेजों की तरह आज यह जो अंगरेजी काँगरेस है।

बाँधे हुये बोरिया बिस्तर कभी भागती दिखलायेगी।।

फट पड़ने के लिए अनेकों आकुल ज्वाला मुखी आज हैं।

बड़े भेद हैं, बड़ी पोल है, बड़े राज हैं।[2]

उपर्युक्त छन्द में कवि ने उन देश भक्तों की ललक की ओर संकेत किया है, जो देश पर प्राण निछावर करने को तत्पर हैं तथा अनेकों ज्वालामुखियों की तरह फट पड़ने को आकुल हैं। कवि उक्त पंक्तियों में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' की स्मृति भी दिलाता है।

कवि युग–दृष्टा होता है। सचेतक होता है और होता है सच्चा समाज–सुधारक। इस द्वन्द्वात्मक भौतिक युग में कटु सत्य को

1– एम. एल. ए. राज–डॉ. आनन्द, पृष्ठ 2–3

2– उपरिवत्, पृष्ठ 7

अनावृत करने का साहस कवि के ही वश की बात है। कवि की अन्वेषक दृष्टि त्रुटियों को सहज ही खोज लेती है। अभाव को प्रमाणित करने की तार्किक क्षमता तो कवि में होती ही है और होती है साधिकार विवेचन की निपुणता। डॉ. आनन्द अपनी कवि कला में पूर्ण निष्णात थे। वे पुलिस की धांधली, सेलटैक्स का इज़ाफा, उद्योगों पर कानूनी बंदिश, सुरसा सा बढ़ता हुआ पशुओं पर कर, वोटर लिस्ट की जालसाजी, शिक्षा शुल्क बढ़ाना, परीक्षा में परचे आउट करवाना तथा उन्नतिशील बीजों की धोखा धड़ी को कविता के माध्यम से मंच पर जब कड़कती आवाज में पढ़ते थे, श्रोताओं को रोमांच हो जाता था। उन्नतिशील बीजों पर उनका व्यंग्य देखने योग्य है–

पर वह अच्छा बीज आपने खद्दर के खेतों में बोया।
दफ्तर के कागज पत्रों में बड़े–बड़े भुट्टे लटकाये।।
दफ्तर में बैठे ही बैठे अपना खेत बना लेते हो।
फौरन मुठिया थाम बखर का फोटू साफ खिंचा लेते हो।।
भैंस बंधीं गायें चरतीं हैं इनकी सदरी की जेबों में।
लूट–लूट कर जनता का धन उड़ा रहे हैं यार हमारे।।[1]

उक्त पंक्तियों में कवि ने सफेद पोश खद्दरधारी जन प्रतिनिधियों की स्वार्थ परायण नीतियों का स्पष्ट चित्र खींचा है। उनकी समस्त विकास–योजनायें कार्यालय में ही सम्पन्न हो जाती हैं। ऐसे अराजक तत्व अपने प्रवंचनापूर्ण क्रिया–कलापों से देश को पतनोन्मुख करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ते।

भारत लोकतंत्रात्मक गणराज्य है। जन प्रतिनिधि जनता द्वारा निर्वाचित होकर विधान परिषद के सदस्य बनते हैं। जनता के हित–चिन्तक होते हैं। जनता का मत इनके लिए बहुत मूल्यवान होता है। किन्तु विडम्बना यह है कि अपने को जन–हित का समर्थक कहने वाले **'डेड़ मिनट की डेड़ बात में डेड़ हजार किया करते हैं'** तथा **'पता नहीं है किस लालच में**

1– एम. एल. ए. राज–डॉ. आनन्द, पृष्ठ 11

अत्याचार किया करते हैं'। इनके दमन–चक्र से बचकर निकल पाना, इनके षड्यन्त्रों से अपनी सुरक्षा कर लेना तथा इनकी कूटनीति के कठघरे से अपने को बचा लेना उन्हीं की कृपा पर निर्भर है। इनके कुसंकल्प और कुविचार अशांति उत्पन्न करते हैं, देश के लिए घातक सिद्ध होते हैं। इनके अन्यायों से धर्म काँप जाता है, विश्वास डगमगा जाता है। मंदिरों के दरो–दीवार चीखने लगते हैं। पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

चिल्ला चिल्लाकर कहती हैं मन्दिर मस्जिद की मीनारें।
अन्यायों से चीख रहे हैं गुरुद्वारों के दर दीवारें।।
आज देश में गिरजाघर का कंकड़–कंकड़ कांप उठा है।
आँसू बनकर बह निकली हैं वह गंगा यमुना की धारें।।[1]

उक्त छन्द में कवि ने भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा को मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारा तथा गिरजाघर के माध्यम से व्यक्त किया है। अन्याय चरम सीमा पर होता है तो जड़ पदार्थ भी आँसू बहाते हैं। जन प्रतिनिधियों की रिश्वतखोरी का पर्दाफाश किया गया है निम्न छन्द में–

पहिले तो स्वीकार बजट में कई हजार किया करते हैं।
फिर कागज के पन्ने पर ही आधा पार किया करते हैं।।
सरल हृदय हैं, देशभक्त हैं, नेता हैं, खद्दर–धारी हैं।
बड़े चाव से बड़ी लगन से देश सुधार किया करते हैं।।[2]

कवि ने व्यंग्य के माध्यम से नेताओं पर प्रखर प्रहार किया है। खद्दरधारी नेता अपने को समाज सुधारक कहते हैं, देश का भक्त बतलाते हैं तथा देश–सुधार के नाम पर देश बरबाद किया करते हैं। भारत की शोषित जनता ऐसों को कभी माफ नहीं करेगी, चौराहे की खुली सड़कों पर एक दिन इन्साफ होगा। अरे नेताओ, जरा ठहरो, विप्लव की चिन्गारी सुलग जाने दो। वह जलाकर भस्म कर देगी, अन्तरिक्ष तक साफ कर

1– एम. एल. ए. राज–डॉ. आनन्द, पृष्ठ 8–9

2– उपरिवत्, पृष्ठ 16–17

देगी। कवि उन देशद्रोहियों को चुनौती देता हुआ कहता है–

पर भारत में रहकर यदि वे अंग्रेजों के गुण गायेंगे।

तो दुनियां की दुनियां जाने हम तो देख नहीं पायेंगे।।

नेता सुनलें कान खोलकर आज खुला एलान हमारा।

देश–द्रोही नेताओं के अब इन्साफ किये जायेंगे।।[1]

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने उन नेताओं को खरी खोटी सुनाई हैं जो हिन्दुस्तान में रहकर विदेशों का समर्थन करते हैं। इस प्रकार 'एम.एल.ए.राज' कृति में डॉ. आनन्द ने देशहित में बाधक, स्वार्थी अराजक तत्वों को अपने व्यंग्य का लक्ष्य बनाया है तथा उनके दुष्कर्मों और दुर्नीतियों का खुलाशा किया है।

शक्ति निदान

डॉ. आनन्द कृत **'शक्ति निदान'** प्रसिद्ध आयुर्वेदिक ग्रन्थ **'माधव निदान'** का पद्यानुवाद है। आयुर्वेद के गूढ़ विषय की विलक्षण शक्ति का अपूर्व परिचायक यह ग्रन्थ जनवरी सन् 1936 में प्रकाशित हुआ। **'माधव निदान'** वास्तव में निदान ग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। बड़े–बड़े विद्वानों का यही मत है–

'निदाने माधवः प्रोक्तः सूत्र स्थानेतु 'वाग्भट'

शरीरे 'सुश्रुतः' प्रोक्तश्चर कस्तु चिकित्सिते'[2]

'शक्ति निदान' की भूमिका में आयुर्वेदाचार्य पं. जी.पी. शास्त्री ने लिखा है– ***'आनन्द जी ने माधव निदान का पद्यानुवाद कर हिन्दी भाषावादी वैद्यों का जो उपकार किया है इसके लिए भाषावादी चिकित्सा संसार की ओर से आप विशेष धन्यवाद के पात्र हैं।'***[3]

1– एम. एल. ए. राज–डॉ. आनन्द, पृष्ठ 21

2– भूमिका–शक्ति निदान, ले. आयुर्वेदाचार्य जी.पी.शास्त्री, कानपुर, पृ. स (2) आनन्द प्रकाशन–जालौन, सन् 1936ई.

3– उपरिवत्, पृष्ठ 3

तात्पर्य यह है कि इससे पूर्व आयुर्वेद वेत्ताओं ने उसका भाषा टीका किया था, किन्तु इतने बड़े ग्रन्थ की गद्यात्मक भाषा टीका कंठाग्र होना असम्भव था। अतः डॉ. आनन्द के पद्यानुवाद की भूरि–भूरि प्रशंसा हुई। इस पद्यानुवाद में कवि का परिपक्व आयुर्वेदिक ज्ञान प्रतिभासित होता है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में कवि ने गणेश वन्दना की है। तदुपरान्त ज्वरों के लक्षण एवं निदान पर विचार किया गया है। सन्निपात के तेरह भेद तथा उनके लक्षण और निदान बतलाये गये हैं। कुछ ऋषियों ने सन्निपात के बावन भेद बतलाये हैं, किन्तु माधव निदान में सन्निपात के कुल तेरह प्रकार ही हैं। डॉ. आनन्द का पद्यानुवाद देखिये–

नेत्र वंक अरु फटे कान में शब्द सुनावे।
तन्द्रा खाँसी श्वास अरुचि बेहोशी आवे।।
कान नाक मुख छिद्र पके कफ कण्ठ दिखावे।
शब्द मंद हो स्वेद, मूत्र–मल थोड़ा आवे।।
तृषा बहुत भ्रम शीत नींद का नाश हुआ हो।
पर शरीर कृश न हो तेज का ह्रास हुआ हो।।
इधर–उधर शिर धरे व्यर्थ बकवाद बढ़ावे।
भारी–भारी पेट, कण्ठ, कण्टक दरसावे।।
हाड़ सन्धि मस्तक पीड़ा हो, अश्रुपात हो।
कृष्ण खुरदरी जीभ दाह भी अकस्मात हो।।
बात पित्त कफ हुआ बिगड़ कर एक साथ है।
वैद्यवरों ने उसे बताया सन्निपात है।।[1]

उपर्युक्त छन्दों में कवि ने सन्निपात के लक्षणों को अत्यन्त सरल भाषा में अभिव्यक्त किया है। लक्षणों की स्पष्टता और सरलता से विज्ञ वैद्य बड़े–बड़े पेचीदा रोग बिना नाड़ी परीक्षा के तुरन्त समझ लेते हैं। 'शक्ति निदान' से प्रभावित होकर अंग्रेजी और फारसी भाषा के विद्वान डॉ. एन.एल. सिन्हा अपनी टिप्पणी में लिखते हैं– **'शक्ति निदान'** लिखकर आनन्द

1– शक्ति निदान, डॉ. आनन्द, पृष्ठ 6

जी ने सचमुच एक बहुत बड़ा काम किया है, ऐसी पुस्तक यदि कोई अंग्रेज बिलायत में लिखता तो निश्चय ही बिलायत वाले उस लेखक को सिर पर उठा लेते।[1]

तात्पर्य है कि **'शक्ति निदान'** में कवि की विलक्षण प्रतिभा तो झलकती ही है, साथ ही आयुर्वेदिक विस्तृत ज्ञान भी प्रतीत होता है।

डॉ. आनन्द ने **'माधव निदान'** का जो पद्यानुवाद 'शक्ति निदान' नाम से किया है उसमें मूलग्रन्थ की गरिमा पूर्ण रूपेण सुरक्षित है। कवि ने ग्रंथ में अतीसार, ग्रहणी, अर्श, मंदाग्नि, अजीर्ण, कृमिरोग, पाण्डुरोग, रक्तपित्त, राजयक्ष्मा, कास, हिचकी, श्वांस, स्वरभेद, अरुचि, छर्दि तथा तृष्णा आदि रोगों के लक्षण एवं निदान स्पष्ट भाषा में रेखांकित किये हैं। इन रोगों में कुछ खास रोगों के लक्षण एवं निदान 'शक्ति निदान' के अनुसार प्रस्तुत हैं– **राजयक्ष्मा**

पूर्वरूपः–खाँसी, उन्मत्तता श्वांस तालुआ सूखना।
हो निद्रा, मंदाग्नि, वमन, श्लेष्म थूकना।।
पीनस, नेत्र सफेद, मांस खाने पर मन है।
देख रहा दुःस्वप्न बढ़ी इच्छा मैथुन है।।
कौवा, तोता, मोर स्वप्न में दिखलाता है।
वानर, कुरकट, गीध सवारी में आता है।।
जल बिन देखे नदी, स्वप्न में केश झराता।
धूए धुआँ से पीड़ित जिसको वृक्ष दिखाता।।
इस प्रकार के स्वप्न रात में जिसे दिखाते।
राजयक्ष्मा होने की सूचना सुनाते।।[2]

उक्त छन्दों में कवि ने राजयक्ष्मा के पूर्व–लक्षणों का वर्णनकिया है। इन लक्षणों को देखकर वैद्य के लिए साध्य रोग अथवा असाध्य रोग सुनिश्चित करना आसान हो जाता है।

1– शक्ति निदान–सम्मतियाँ, डॉ. एन.एल.सिन्हा, एम.डी.एच (लन्दन), पृष्ठ 2

2– शक्ति निदान, डॉ. आनन्द, पृष्ठ 80–81

साध्य लक्षण-

क्षई रोग के जितने लक्षण शास्त्र बतावें।
एक साथ वह मिलकर चाहे सब आजावें।।
किन्तु नहीं बल मांस क्षीण जिसका हो जाता।
वह रोगी सद्वैद्यों से मरने नहीं पाता।।[1]

असाध्य लक्षण-

भोजन करता बहुत किन्तु कृश होता जावे।
यह रोगी भी नहीं चिकित्सा योग्य कहावे।।
क्षई रोग में अतीसार जिसको प्रगटावे।
वह रोगी भी एक रोज निश्चय मर जावे।।
क्योंकि क्षई वाले का जीना मलाधीन है।
इसे वही जानेगा जो पंडित प्रवीन है।।[2]

अजीर्ण-

मनुष्य के कफ से आम, पित्त से विदग्ध तथा बात से विष्टब्ध इस तरह से तीन प्रकार का अजीर्ण रोग होता है और भोजन का कुछ अंश न पचने से रस शेष रह गया हो, उस रस से उत्पन्न हुआ 'चौथा अजीर्ण होता है और किसी—किसी के मत से हड़फूटन, अफरा आदि लक्षणों वाला पाँचवा अजीर्ण कहलाता है।'[3]

आमादिक अजीर्ण का लक्षण -

पेट अंग भारी हैं आती है उबकाई।
जैसा भोजन किया उसी विध डकार आई।।
जिसके नेत्र कपोलों में कुछ कुछ सूजन है।
उसको आमादिक अजीर्ण का यह लक्षण है।।[4]

1— शक्ति निदान, डॉ. आनन्द, पृष्ठ 82—83

2— उपरिवत्, पृष्ठ 83

3— उपरिवत्, पृष्ठ 61

4— उपरिवत्, पृष्ठ 61

अर्श (बवासीर)- पूर्व रूप :

अन्न कूंख में रहे अपच दुर्बल शरीर हो।
अफरा हो मन्दाग्नि डकारें जांघ पीर हो।।
भ्रान्ति पान्डु ग्रहणी की हो थोड़ा मल आता।
उसको कुछ दिन बाद अर्श निश्चय हो जाता।।[1]

अतीसार- पूर्व रूप :

हृदय नाभि या पेट कूंख में पीरा आती।
दर्द गुदा में शरीर में फुटनी दर्शाती।।
मल का हो अवरोध अपच रुक रही पवन है।
अतीसार के पूर्व रूप का यह लक्षण है।।[2]

स्वर भेद-

स्वर भेद– निदान से पूर्व डॉ. आनन्द ने टिप्पणी में बताया है कि बहुत जोर से बोलने से, विष खाने से, ऊँचे स्वर में गाने से, चिल्लाने से, पाठ करने से, कंठ के स्वर का नाश हो जाता है। यह स्वर–भेद वात, पित्त, कफ, सन्निपात, क्षय और भेद इस तरह छै प्रकार का होता है।

मुख्य रूप से स्वर–भेद वात, पित्त और कफ तीन प्रकार का ही होता है। उदाहरण दृष्टव्य है–

वात स्वर-भेद

नेत्र और मुख का भी रंग काला पड़ जाता।
मूत्र और मल भी काला काला दर्शाता।।
जिसने गर्धव सा टूटा सा शब्द सुनाया।
ग्रन्थों में वह रोग बात स्वर भेद बताया।।[3]

1– शक्ति निदान, डॉ. आनन्द, पृष्ठ 51

2– उपरिवत्, पृष्ठ 37

3– उपरिवत्, पृष्ठ 102

पित्त स्वर-भेद

जिसके मुख पर नेत्रों पर पीलापन आया।
पीले ही रंग का जिसने मल मूत्र बताया।।
शब्द बोलते समय गले में दाह रहा है।
ऋषियों ने वह रोग पित्त स्वर भेद कहा है।।[1]

कफ स्वर-भेद

जिसका देखा कंठ भरा कफ से रुक जाता।
मंद–मंद अति धीरे–धीरे बोल सुनाता।।
जो दिन में अत्यन्त बोलते हुये दिखाते।
वैद्यक में उसको कफ का स्वर भेद बताते।।[2]

पाण्डुरोग-

मल. से प्रकट हुई कृमि पाण्डु (पीलिया) रोग को प्रकट करती है। यह पाँच प्रकार का होता है। वात, पित्त, कफ, सन्निपात और मिट्टी खाने से। पाण्डुरोग के लक्षण निम्न प्रकार हैं–

रुचि मिट्टी पर, नेत्रों पर सूजन आ जाती।
फटने लगती त्वचा, थुक थुकी भी हो जाती।।
अंग अकड़ते हैं, न ठीक पच रहा अन्न है।
हों पीले मल–मूत्र पाण्डु का पूर्व चिह्न है।।[3]

डॉ. आनन्द ने **'माधव निदान'** के पद्यानुवाद में रोगों के लक्षणों को सरलतम पद्यात्मक रूप में अभिव्यक्त करके वैद्यों एवं सामान्यजनों को सुविधा सम्पन्न मार्ग प्रशस्त कराया है। निदान से अनभिज्ञ वैद्य उपचार में सफल नहीं हो सकता। यदि वैद्योचित योग्यतायें वैद्य में नहीं हैं, तब भी वह रोगी के उपचार में असफल ही रहेगा। रोगी को भी वैद्य का आज्ञाकारी होना आवश्यक है। इस प्रकार कवि ने वैद्य तथा रोगी के लक्षणों को सुनिश्चित किया है।

1– शक्ति निदान, डॉ. आनन्द, पृष्ठ 103

2– उपरिवत्,

3– उपरिवत्, पृष्ठ 67

वैद्य के लक्षण–

जिसके आते हीं आते होता मंगल हो।
ज्ञाता हो शास्त्र का कार्य का क्रिया कुशल हो।।
गुरू से भले प्रकार शास्त्र पढ़कर हो आया।
जिसको कुछ दिन वृद्ध वैद्य ने हो सिखलाया।।
चतुर चिकित्सा में हो ठीक निदान जानता।
मृदु वक्ता, व्यवहार धर्म आचरण मानता।।
सिद्धहस्थ जिसके स्वभाव का बढ़ा सुयश हो।
रहता जिसके पास सदा बहुमूल्य सुरस हो।
जो न किसी में भी लोभी लालची रहा है।
ग्रन्थों में वह वैद्य प्रशंसा योग्य कहा है।।[1]

रोगी के लक्षण-

आयुवान हो धनी वैद्य का आज्ञाकारी।
आस्तिक मत का साध्य विवेकी हो बलकारी।।
जहाँ जाए सद्वैद्य अधिक आदर पाता है।
ऐसा रोगी मुक्त रोग से हो जाता है।।[2]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि उचित उपचार के लिए योग्य वैद्य तथा आज्ञाकारी रोगी ही आवश्यक नहीं है वरन् उत्तम औषधि भी अनिवार्य है। दोषपूर्ण औषधि से उपचार भी दोषपूर्ण ही रहेगा। अतः वैद्य, रोगी तथा औषधि तीनों का सामंजस्य आवश्यक है।

डॉ. आनन्द ने '**शक्ति निदान**' लिखकर भाषावादी वैद्यों का बहुत बड़ा उपकार किया है। पं. तुलसीराम–आयुर्वेद शास्त्री '**शक्ति निदान**' की उपयोगिता सिद्ध करते हुए कहते हैं कि –*'न्याय के नाते और मुक्त*

1– शक्ति निदान, डॉ. आनन्द, पृष्ठ 56

2– उपरिवत्, पृष्ठ 27

कंठ से यह बात सभी कहेंगे कि 'शक्ति निदान' रचकर डॉ.आनन्द जी ने हमारे चिकित्सा संसार की एक बहुत बड़ी कमी को पूरा किया है।[1]

ख- डॉ.आनन्द की अप्रकाशित रचनाओं का साहित्यिक मूल्यांकन

1. अगस्त सन् बयालीस

'अगस्त सन् बयालीस' रचना का मुख्य प्रतिपाद्य संघर्ष और आक्रामकता है। कवि राष्ट्र के विद्रूपित यथार्थ को देखकर अन्दर तक तिलमिला उठताहै, हार्दिक दुःख व्यक्त करते हुए गलत का प्रतिकार करता है। रचना में व्यवस्था या शासकवर्ग को चेतावनी के साथ कवि की बेचैनी व्यथा तथा आक्रोश का रचनात्मक रूपान्तरण है। 1921 ई. में जन्मा असहयोग– अवज्ञा–आन्दोलन इक्कीस वर्षों की युवावस्था में अन्याय से मोर्चा लेने को उतावला था। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए निर्णायक प्रहार तथा भारत माता की परतंत्रता की श्रृंखलाओं को तोड़ने की तीव्रता में ज्ञात–अज्ञात कार्यकर्ता भगीरथ प्रयत्न कर रहे थे। अगस्त 1942 को कांग्रेस महासमिति के अधिवेशन के उपरान्त गाँधी जी के **'अंग्रेजो भारत छोड़ो'** तथा **'करो या मरो'** के आह्वान पर क्रांतिकारी प्रबल उद्वेग में आ गये और दीवाने बन गए। **'फूट डालो और राज्य करो'** की कुटिल प्रशासकीय नीतियों के विरुद्ध सामान्य निहत्थी जनता की एकता ने सशक्त साम्राज्यवादी एवं दमनकारी बन्दूकों, बमों और बर्बरता के अत्याचारों से मुठभेड़ें कीं और बलिदानियों ने यशोगाथा के पृष्ठ अपने खौलते खून से लिखे।

'अगस्त सन् बयालीस' रचना में कवि ने राष्ट्रीय चेतना से उद्भूत अनुभूति के स्वरों को जो अर्थ संपृक्त स्वरूप प्रदान किया है, उसमें देश के नैसर्गिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आदर्शों का गायन है। डॉ. आनन्द स्वतंत्रता सेनानी थे तथा राष्ट्र के प्रति

1– भूमिका–शक्ति निदान, लेखक तुलसीराम (आयुर्वेद शास्त्री) पृष्ठ 4

पूर्ण समर्पित थे। **'भारत छोड़ो आन्दोलन'** में बलिया के नरसंहार में हुए शहीदों का अभिवादन करते हुए कवि कहता है—

जिनके हित मंदिर बने आज

भू लुंठित वलिया के मकान।

जिनकी ईटों पर विद्यमान

अब तक हैं गोली के निशान।।

जिनके बलिदानों से पाया

सन् बयालीस ने अमर नाम।

भारत के उन्हीं शहीदों को

है कोटि–कोटि कवि का प्रणाम।।[1]

अमर शहीदों को प्रणाम करते हुए कवि तत्कालीन अंग्रेज सरकार को उलाहना देते हुये कहता है कि सन् 1914 के प्रथम विश्वयुद्ध में, जब ब्रिटिश राज्य सिंहासन पर बज्रापात होने को था, भारत ने तन, मन, धन देकर लंदन की लाज बचाई थी, जिसका प्रमाण इतिहास के पृष्ठों में आज भी उपलब्ध है। उसका प्रत्युपकार जलियाँ वाले बाग के काण्ड के रूप में तुमने किया। जब पोलेण्ड, लंदन तथा जर्मनी राजमद में मदान्ध हो गए, द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ गया, तब तुमने हमारे जन–मत को ठुकराकर उस महासमर की भट्टी में भारत को झोंक दिया। हमने अपना सर्वस्व बलिदान करके भी तुम्हारा साथ दिया, लेकिन तुमने अपने वायदे को नहीं निभाया। उदाहरण देखिये—

मेरे बलिदानों को देखो फिर अपने वादे याद करो।

दुनियां को मुँह दिखलाना है तो भारत को आजाद करो।।

हमने धोखे खा–खाकर भी तुमसे फिर प्रेम बढ़ाया है।

अथवा हमने फिर एकबार अजमाये को अजमाया है।।[2]

1– अगस्त सन् बयालीस– (अप्रकाशित) डॉ. आनन्द, पृष्ठ 1

2– अगस्त सन् बयालीस– पृष्ठ 3

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि के चिंतन में ओजस्वी भावों का गम्भीर अनुभूतियों के तारल्य से प्रवाहित जो स्वर अभिव्यक्त हुआ है, उसमें राष्ट्र की अस्मिता के प्रति समर्पण का भाव है, देश की माटी के प्रति अपूर्व स्नेह है तथा नयी पीढ़ी को नया संदेश है।

डॉ. आनन्द अंग्रेज सरकार की दुर्नीतियों का खुलाशा करते हुए कहते हैं कि– **'इस युग में इन्सानों से ही इन्सान आज खतरे में है। हिन्दू, मुस्लिम अबलाओं का ईमान आज खतरे में है।'** इतना ही नहीं वे आगे– **'नारी की लज्जा हरने के बनते कानून यहाँ देखे, जिन्दा को मुर्दा करने के बनते कानून यहाँ देखे।'** भी कहते हैं। जब अंग्रेज सरकार ने गाँधी जी को अपमानित करते हुए अपशब्दों का प्रयोग किया, उसकी प्रतिक्रिया कवि के शब्दों में देखिये–

भारत रक्षक हैं आप और गाँधी जी भारत भक्षक हैं,
यह पूर्व पुण्य भारत का था जो आप मिले संरक्षक हैं।
भारत रक्षा से पूर्ण हुई इस भारत भर की अभिलाषा,
वलिया के उर पर अंकित है भारत रक्षा की परिभाषा।।[1]

डॉ. आनन्द की उक्त पंक्तियों में जीवन के कटुतिक्त सत्य को निर्भीक वाणी में व्यक्त करने का उपक्रम तो है ही, व्यंग्य की चुभती उक्तियों से भोली–भाली जनता को फुसलाने वालो को बेनकाब करने की तत्परता भी है।

चरमसीमा पर पहुँची हुई अंग्रेजों की क्रूरता का दृश्य इन पंक्तियों में रेखांकित है, जहाँ वलिया काण्ड में हुए अमर शहीदों के शहीद–दिवस मनाने पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। उदाहरण प्रस्तुत है–

बलिया के अमर शहीदों की हम चिता सम्हाल नहीं पाये।
बहिनों की लाशों पर अपने दो आँसू डाल नहीं पाये।।
इकलौते शिशुओं को माँ से चिर विदा न लेने दी तुमने।
प्यारी पतिनी से प्रिय पति को अल्विदा न लेने दी तुमने।।
अब दिवस शहीद मनाने पर यह लगी हुई पाबंदी है।
है द्वेष भाव मृतकों से भी यह नीति हुकूमत गंदी है।।[2]

1– अगस्त सन् बयालीस, पृष्ठ 5

2– उपरिवत्, पृष्ठ 6

मानवता को लज्जित करने वाले शासकों के बर्बरता पूर्ण कारनामों की प्रतिक्रिया इतनी जोरदार हुई कि युवाशक्ति ने शासन को लँगड़ा, लूला तथा अधमरा बना दिया था। विद्रोह इतना सफल था कि शासन तंत्र निरर्थक हो गया। जुलूस पर जुलूस निकाले गये। मारकर मरने का जुनून ऐसा था, जिसके आगे कोई विकल्प नहीं था। पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

प्रातः के छे बजे से निकाला गया जुलूस।
सांचे में अहिंसा के था ढाला गया जुलूस।।
ललनायें चलीं आगे तिरंगा लिए हुये।
उस दिन सभी तरह से सम्हाला गया जुलूस।।[1]

जब क्रांतिकारी शासन के विरोध में नारे लगाते हुए जुलूस निकलते थे, भले ही वह जुलूस अहिंसा के सांचे में ढाला गया हो, फिर भी शासन कठोरता से नियंत्रण करके दमनचक्र द्वारा आन्दोलन को कुचलने की प्रक्रिया अपनाता था। शासन का क्रूरतम व्यवहार निम्न पंक्तियों में देखा जा सकता है–

देखा तो दौड़ने लगे घोड़े जुलूस पर।
चलने लगे पुलीस के कोड़े जुलूस पर।।
लोहे से जड़ी लाठियाँ सिर फोड़ रही थीं।
चलते थे इस तरह से हथौड़े जुलूस पर।।[2]

शासन का दमनचक्र जितना क्रूर होता, क्रान्तिकारियों का जुलूस या आन्दोलन उतनी ही तेजी पकड़ता। मध्य प्रान्त में कुछ दूरी पर स्थित चैमूर की वस्ती में इस आन्दोलन की ज्वाला सर्वप्रथम ऐसी भड़की कि उसने शान्त होने का नाम नहीं लिया। चारों ओर भीषण चिनगारियाँ उठ रही थीं। घर हो या दुकान, मजदूर हो या किसान, झोपड़ी हो या मंदिर यहाँ

1– अगस्त सन् बयालीस, पृष्ठ 8

2– उपरिवत् पृष्ठ 8

तक कि पीड़ाओं में पले हुए प्राणों में भी युद्ध की भीषण ज्वाला धधक रही थी। आन्दोलन में इतना उत्साह था कि जो लाशें पड़ी थीं वे भी सचेतन की भाँति मुस्कुरा उठीं।

9 अगस्त सन् 1942 सम्पूर्ण देश में अपार हर्ष और उत्साह के साथ मनाया गया। अगस्त तो हर वर्ष आता है लेकिन अंग्रेजों की सदियों की दासता से उन्मुक्त कराने वाला, जन–जन के प्राणों में चेतना का संचार करने वाला अगस्त कुछ अलग ही था। उदाहरण देखिये–

यो तो अनेक बार भी आया गया अगस्त।

लेकिन ये जानबूझ के लाया गया अगस्त।।

बनकर महान पर्व जो आया था देश में।

हिन्दोस्तान भर में मनाया गया अगस्त।।[1]

डॉ. आनन्द ने अगस्त माह को इतना अधिक महत्व दिया और यहाँ तक कह दिया कि–

बूटी स्वतंत्रता की पिलादी अगस्त ने।

मुर्दा जो कौम थीं वो जिलादी अगस्त ने।।

चर्चिल से एमरी से खड़े देखते रहे।

आखिर ब्रिटिश की नींव हिलादी अगस्त ने।।[2]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि डॉ. आनन्द की इस रचना में जीवन संघर्ष की सहज अनुभूतियों के जिस स्वरूप से हमारा साक्षात्कार होता है, उसमें भावों की यथार्थ अभिव्यक्ति को जितनी प्रखरता के साथ हम आत्मसात करते हैं, वही उनकी रचनाओं की अलग पहिचान है। राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा के लिए कवि ने अपनी रचना के माध्यम से तरुण और युवा पीढ़ी को जाग्रत करने, उनमें उत्साह भरने और कुछ कर गुजरने की अदम्य शक्ति का संचार किया है।

1– अगस्त सन् बयालीस– पृष्ठ 9

2– उपरिवत्, पृष्ठ 9

2– दारुल शफा

डॉ. आनन्द की इस कृति में कृत्रिम सभ्यता की हृदयहीन सत्ता और मानवीय मूल्यों का चतुर्दिक ह्रास अनेक प्रकार से प्रत्यक्ष हुआ है। यह रचना कवि की विश्लेषणात्मक क्षमता और वैचारिक समृद्धि के लिए उल्लेखनीय है। इसमें डॉ. आनन्द का भावात्मक विरोध सक्रियता के साथ प्रतिबिम्बित है, क्रियात्मक विरोध स्वल्प मात्रा में है। रचना में तत्कालीन काँग्रेस सरकार के विधायकों की जीवन–शैली विविध रूपों में रूपायित हुई है। राजनीतिक उच्छृंखलता, चारित्रिक पतन, सुरा–सुन्दरी का अटूट प्रयोग, आर्थिक विलासिता, मजदूर–गरीबों की चीख–पुकार तथा शासकीय सम्पत्ति का दुरुपयोग आदि का तथ्यात्मक चित्रण इस रचना में प्रतिबिम्बित है। राजनीतिक भ्रष्टाचरण तथा अराजकता का नग्न प्रदर्शन **'दारुल शफा'** में साकार हुआ है। जनप्रतिनिधि की पदानुकूल गरिमा के स्खलन एवं उनके दुर्व्यसनात्मक चरित्रांकन पर कवि की विशेष दृष्टि रही है। सत्ताधिकार का दुरुपयोग एवं राजनीतिक आदर्शों का अवमूल्यन उजागर किया गया है।

प्रस्तुत रचना **'दारुल शफा'** में उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के विधायक निवास का सांगोपांग चित्र प्रस्तुत किया गया है। लखनऊ के मुगल सम्राट बाजिद अलीशाह के पराभव के उपरान्त काँग्रेस शासन की व्यवस्थाओं से त्रस्त लखनऊ का व्यथित चित्र तथा महात्मा गाँधी के रामराज्य की परिकल्पना का वीभत्स स्वरूप निम्न पंक्तियों में दृष्टव्य है–

बाजिद अली के बाद से रोती थी लखनऊ।
तब से न कभी चैन से सोती थी लखनऊ।।
मुद्दत से परेशान सी होती थी लखनऊ।
अश्कों से आस्तीन भिगोती थी लखनऊ।।
बापू के रामराज्य के सदके हजार बार।
दारुल शफा में लौट के आई है फिर बहार।।[1]

1– दारुल शफा– डॉ. आनन्द, पृष्ठ 1

उक्त पंक्तियों में लखनऊ का आँसुओं से आस्तीन भिंगोना तथा मुद्दत से परेशान रहकर कभी चैन की नींद न सोना शासन की दुर्नीतियों का दुष्प्रभाव व्यंजित करता है। तत्कालीन काँग्रेस सरकार में पूँजीपतियों का वर्चस्व रहा है। आर्थिक दृष्टि से सुसम्पन्न लोग भोग–विलास में व्यस्त रहकर दुर्व्यसन पूर्ण जीवन जीते थे। व्यक्तिगत ऐश्वर्य और सुख भोग ही उनके लिए काम्य था। काँग्रेस की स्थिति का एक चित्र देखिये–

राजा रईस लोग हैं अब काँग्रेस में

खासे विलास भोग हैं अब काँग्रेस में।

क्या–क्या न जाने रोग हैं अब काँग्रेस में

पूरे पतन के योग हैं अब काँग्रेस में।।

अब काँग्रेस में न वो इनसान रह गया।

अब काँग्रेस में न वो ईमान रह गया।।[1]

काँग्रेस सरकार की घातक गतिविधियों का भंडा फोड़ करते हुए कवि ने उसमें पतन के सम्पूर्ण योग की भविष्यवाणी की है। काँग्रेस दल के नेताओं के कारनामों को स्पष्ट किया गया है निम्न पंक्तियों में–

कण्ट्रोल के दफ्तर में भी जाती है काँग्रेस

कोठे पै देखते हैं तो गाती है काँग्रेस।

इन्साफ, अदालत में लिखाती है काँग्रेस

पुलीस में थाने में दिखाती है काँग्रेस।

यह लुप्त जिन्दगी है मजे में उड़ाये जा।

जय हिन्द बोल–बोल के खाये खिलाये जा।।[2]

उक्त छन्द में '**जयहिन्द बोल–बोल के खाये–खिलाये जा**' पंक्ति में काँग्रेस नेताओं पर तीखा व्यंग्य किया गया है। तात्पर्य यह है कि ये नेतागण अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए कोई भी निम्नातिनिम्न घृणित कार्य कर सकते हैं। चाहे पुलिस का थाना हो या अदालत का इंसाफ। चाहे कण्ट्रोल का दफ्तर हो या तवायफ का कोठा। नेता सभी जगह अपनी पहुँच रखता है। कवि को नेताशाही से सख्त परहेज है– ऐसा प्रतीत होता है।

1– दारुल शफा– डॉ. आनन्द, पृष्ठ 12

2– उपरिवत्, पृष्ठ 16

लखनऊ के दारुल शफा स्थित विधायक निवास में क्या–क्या नहीं होता है। इसको मुल्क की शान बतलाता हुआ कवि कहता है–

खाने का सहारा है तो दारुल शफा में है

पीने का इशारा है तो दारुल शफा में है।

किसमत का सितारा है तो दारुल शफा में है

हूरों का नजारा है तो दारुल शफा में है।

इस मुल्क में अल्लाह रे दारुल शफा की शान।

क्या बात है बल्लाह रे दारुल शफा की शान।।[3]

तात्पर्य यह है कि विधायक–निवास में सुरा–सुन्दरी का दौर एक आम बात है। अपनी किस्मत पर नाज करने वाले विधायक दारुल शफा में हूरों का नजारा देखते हैं तथा देश में दारुल शफा की शान का आनन्द भी लूटते हैं। उपरोक्त पंक्तियों में अन्तर्निहित व्यंग्य देश में नेताओं की बढ़ती हुई उच्छृंखलता को दर्शाता है।

जिस स्वराज्य को देश ने अनगिनत बलिदानों के बाद पाया था, मातृभूमि को परतंत्रता की बेड़ियों से छुड़ा पाया था, अनेक वीर शहीद हो गये थे, माताओं की वात्सल्यमयी गोदें सूनी हो गई थीं, श्रृंगार लुट गया था। उसी स्वराज्य का विकृत स्वरूप कवि ने जब देखा, तत्कालीन काँग्रेस प्रशासन की तानाशाही कवि की अन्तरात्मा को कचोटने लगी, तब कवि संवेदना प्रकट करता हुआ स्वदेशी स्वराज्य पर आक्रोश व्यक्त करता है–

चिल्ला उठे गरीब की शामत है लखनऊ

मजदूर लगे चीखने आफत है लखनऊ

कहने लगे किसान कयामत है लखनऊ

क्या खूब लखनऊ में नजारा है आज का।

नकशा है साफ–साफ स्वदेशी स्वराज का।।[2]

1– दारुल शफा– डॉ. आनन्द, पृष्ठ 18

2– उपरिवत्, पृष्ठ 25

उपरोक्त पंक्तियों में लखनऊ से तात्पर्य लखनऊ स्थित दारुल शफा के काँग्रेस विधायकों तथा उनके तानाशाह नेताओं से है, जो प्रदेश की भुखमरी और गरीबी को भी खुदा की नियामत समझकर गरीबों की चीख–पुकार को नजर–अन्दाज कर रहे थे तथा स्वदेशी स्वराज्य के नाम पर मनमानी कर रहे थे।

काँग्रेस सरकार की अनियमितताओं तथा अलोकतांत्रिक क्रिया–कलापों को कवि ने स्पष्ट रूप से उजागर किया है। गरीब जनता पर करारोपण के विधान को शासन का दुष्टतापूर्ण कृत्य बताकर कवि ने कड़े शब्दों में फटकार लगाई है तथा शासन के बेसुरे सितार बजाने की कटु निन्दा भी की है।–

मन्त्री नहीं है एक मिनिस्टर हैं बेशुमार।
कोई है वजहदार तो कोई है तरहदार।।
है चार सौ छत्तीस पै छत्तीसपन सवार।
इनकी घड़ी में दस हैं तो उनकी घड़ी में चार।।
ये मौत पर भी टेक्स लगाते चले गये।
क्या बेसुरे सितार बजाते चले गये।।[1]

यहाँ पर कवि ने मंत्री और मिनिस्टर में तात्विक अंतर स्पष्ट किया है। मंत्रणा देने वाला मंत्री एक भी नहीं है तथा अधिकार पूर्वक शासन करने वाले मंत्रियों का बाहुल्य है। सम्भवतः उस समय उत्तर प्रदेश विधान सभा में चार सौ छत्तीस सदस्य हुआ करते थे और उन सब पर छत्तीसपन अर्थात् कौटिल्य सवार था।

तात्पर्य यह है कि तत्कालीन विधायकों में सद्भाव न होकर क्रूरता ही अधिक थी। उनमें पारस्परिक स्नेह–सौहार्द्र का भी अभाव था। इस स्थिति में कवि उनकी छवि को धूमिल करता हुआ उनके द्वारा मौत पर भी कर लगाने का आरोप लगाता है।

1– दारुल शफा– डॉ. आनन्द, पृष्ठ 28

3– पब्लिक इन्टरेस्ट

'पब्लिक इन्टरेस्ट' डॉ. आनन्द की सामयिक व्यंग्य रचना है। लोक सभा चुनाव के उपरान्त केन्द्रीय काँग्रेस सरकार ने रेलवे तृतीय श्रेणी यात्रियों का किराया पब्लिक इन्टरेस्ट (जनहित) में मनमाने तौर पर बढ़ाया। बताया गया कि इससे नई रेल्वे बोगियाँ खरीदी जायेंगी तथा उनमें पंखों की भी व्यवस्था की जायेगी। इस अविश्वसनीय आश्वासन से असन्तुष्ट कवि डॉ. आनन्द ने सन् 1965ई. में इस रचना को जन्म दिया, रचना में **'पब्लिक इन्टरेस्ट'** शब्दयुग्म को व्यंग्यात्मक रूप में प्रयुक्त कर कवि ने केन्द्रीय सरकार पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष आरोप लगाये हैं तथा कतिपय सुझाव भी दिये हैं।

कवि ने व्यंग्य के माध्यम से शासन व्यवस्था की कटु आलोचना करते हुए कहा है कि चुनाव जीते कुछ ही समय हुआ, शासन की दुर्नीतियाँ लागू हो गईं–

आपके लिक्खे हुये तार अभी रक्खे हैं।
और फोटो छपे अखबार अभी रक्खे हैं।।
झंडियाँ भी तो चढ़ी हैं अभी मीनारों पर।
आज भी बैल बने हैं कई दीवारों पर।।
देश का दर्द मिटाने लगे, क्या कहना है।
टेक्स पर टेक्स बढ़ाने लगे, क्या कहना है।।[1]

उक्त छन्द में निहित व्यंजनार्थ कवि की कुशल निरूपण क्षमता का द्योतक है। **'टेक्स लगाकर देश के दर्द मिटाने की बात कहना'** शासन पर अप्रत्यक्ष आरोप का मण्डन है। जनहित में क्या–क्या नहीं हो सकता है? शासन की जनहित–योजना में शासन के सभी फर्ज अदा हो जायँ, योजना अधूरी न रह जाय– इस निमित्त कवि अपने अमूल्य सुझाव निम्न पंक्तियों में प्रस्तुत करता है–

1– पब्लिक इन्टरेस्ट– डॉ. आनन्द (अप्रकाशित) पृष्ठ 32

तीसरे क्लास के यात्री को इस सजेशन पर।

पाँच जूते भी लगा दीजिए हर टेशन पर।।

मैं विधायक हूँ विधाने के लिए आता हूँ।

पब्लिक इन्टरेस्ट के कुछ फायदे समझाता हूँ।।

कितने बेरोजी रुजुक और हैं कितने बेकार।

कितने टेशन हैं जहाँ देश में करिये तो विचार।।

पब्लिक इन्टरेस्ट में इनके लिए कुछ करना है।

पब्लिक इन्टरेस्ट में इनकाभी उदर भरना है।।[1]

उक्त पंक्तियों में कवि ने '**पब्लिक इन्टरेस्ट**' में प्रत्येक यात्री को पाँच जूते लगाने का सुझाव देकर उसके लाभों को भी गिनाया है। जैसे—बेरोजगारों को रोजगार मिलेगा, भीड़ की भीड़ नौकरी में लग जायेगी, रोने चिल्लाने से शोर गुल होगा, लूट पाट की घटनायें कम होंगी, सिर की धूल झड़ जायेगी तथा कुछ की टोपियाँ उड़ जायेगीं आदि। आगे कवि यहाँ तक कह देता है कि—

कौन कहता है कि ऐसा कहीं हो सकता है?

पब्लिक इन्ट्रेस्ट में क्या—क्या नहीं हो सकता है?[2]

सामान्य से सामान्य विषय का गम्भीर विवेचन करके विषय को गम्भीर बना देना, हास्य और व्यंग्य का पुट देकर सहज बात को धारदार बना देना डॉ. आनन्द की विशेषता है। सहज सम्प्रेषणीयता उनकी कविता की विशेष पहिचान है। कवि ने जनता और सरकार के सम्बंधों पर कटाक्ष करते हुये जनहित के लिए अपनी दी हुई सलाह को उचित ठहराया है—

लोग कहते हैं कि सरकार तो जनता की है।

नेता बैठेंगे मगर कार तो जनता की है।

किराया रेल का जनहित में बढ़ाया होगा।

और जनता की समझ में नहीं आया होगा।

1— पब्लिक इन्टरेस्ट— डॉ. आनन्द (अप्रकाशित) पृष्ठ 32

2— उपरिवत्, पृष्ठ 33

यहाँ तो देश के हित में सभी कुछ होता है।

रेल में कौन है ऐसा जो नहीं सोता है।।

सोने वालों की अटैची भी चली जाती है।

पास में एक भी कौड़ी नहीं रह जाती है।।

पाँच घल जायँ तो आलस नहीं आ सकता है।

कोई सामान भी चोरी नहीं जा सकता है।।[1]

उक्त छन्दों में कवि ने निहितार्थ को व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। कवि का मत है कि शासन पब्लिक इन्टरेस्ट में रेल का किराया बढ़ा सकता है तो यात्रियों के पाँच–पाँच जूते क्यों नहीं दिये जा सकते। इस कथन में जनता के हित की उपेक्षा करके रेल का किराया बढ़ाने की निन्दा की गई है। सोने वालों की अटैची का चोरी चला जाना तथा एक भी कौड़ी पास न रह जाना–जैसे उद्धरण तो कथन की पुष्टि के लिए आयोजित हैं।

इस सम्पूर्ण रचना में सरकार के दुष्कृत्यों की तीखी आलोचना है। जूतों का अधिक प्रयोग होने पर जूते अधिक टूटेंगे, चमड़ा–उद्योग पनपेगा, चर्मकारों का व्यवसाय प्रगति पर होगा, दूर स्थान पर जूतों की बड़ी कम्पनियाँ खुलेंगीं तथा लाखों का व्यापार चलेगा। कवि का कटाक्ष यहाँ तक होता है कि बड़ी कम्पनियों का उद्घाटन नेता लोगों द्वारा ही किया जायगा।

निम्न पंक्तियों में कवि ने जूता पड़ने के कुछ अन्य लाभ भी बताये हैं। बढ़े हुये बाल अपने आप कट जायेंगे, बालों को धोना नहीं पड़ेगा, बालों में जूँ नहीं पैदा होंगे, तेल साबुन की बचत होगी आदि। उदाहरण देखिये–

नाई लोगों के कटिंग रेट भी हैं मनमाने।

बाल कटवाई के लेने लगे बारह आने।।

फिर इन्हें धोयें तो साबुन की खपत होती है।

बाल झड़ जायं तो पैसे की बचत होती है।।

1— पांडुलिपि–1, दारुल शफा, पृष्ठ 34

पाँच कस–कस के जहाँ चाँद पै पड़ जायेंगे।

बाल कैसे भी हों मजबूत तो झड़ जायेंगे।।[1]

'पब्लिक इन्टरेस्ट' कविता को काव्य सौष्ठव की दृष्टि से तो सराहनीय नहीं कहा जा सकता, किन्तु अपनी बात को व्यंग्य के माध्यम से कहने का कवि का ढंग अत्यन्त आकर्षक है। गम्भीर भावों को सरल शब्दों में व्यक्त करना कवि की वर्णन क्षमता को प्रकट करता है। शासन का विरोध राजनीतिक स्तर पर न करके समाज के प्रतिनिधि के रूप में किया गया है। अन्त में कहा जा सकता है कि **'पब्लिक इन्टरेस्ट'** रचना कवि के अभूतपूर्व साहस को व्यंजित करती है। कवि ने निर्भय होकर अपने स्वच्छन्द विचारों को काव्य–बद्ध करके समाज के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह किया है।

4. हिमालाय सीमा

डॉ. आनन्द राष्ट्रीय चेतना को उद्दीप्त करने वाले जनपदीय कवियों में तो अग्रगण्य हैं ही, साथ ही अखिल भारतीय स्तर पर अपनी ओजपूर्ण रचनाओं से देश को कीर्तिमान करने वालों में वे एक विशिष्ट स्थान के अधिकारी हैं। इस रचना में कवि ने चीन के आक्रमण से क्षुब्ध होकर राष्ट्र की सुप्त आत्मा को जाग्रत करने का प्रयास करते हुए युग और परिवेश का जीवन्त चित्रांकन किया है। इस रचना को लघु काव्य की संज्ञा दी जा सकती है। इसमें राष्ट्रीय एकता का संदेश प्रसारित है तथा देश भक्ति का उद्‌भावन भी। विदेशी शक्तियों को करारी फटकार है, तो संगठित भारत की जय–जयकार भी है।

चीन द्वारा भारत पर आक्रमण की सम्भावना से बौखलाकर कवि अपने भावोद्‌गार व्यक्त करता है। कवि ने फटकार लगाते हुए कहा है। कि हमारी मातृभूमि का हिम–किरीट नगराज हिमालय, जो अगणित पुण्य सलिलाओं का पथ–प्रशस्त कर रहा है, जिसकी सिंध सरिता की घाटी में चन्द्रगुप्त की कीर्तिलता लहरा रही है, जो शैल–सुता का साधना–स्थल रहा

1— पांडुलिपि–1, पब्लिक इन्टरेस्ट, पृष्ठ 34

है, जहाँ पर स्वर्ग से गंगावतरण होता है, जिसने अपना हृदय गलाकर भारत में गंगा—यमुना को अस्तित्व प्रदान किया है, वह उत्तर दिशा का प्रबल पहरेदार चीन और भारत का सीमांकन करते हुए भारत की सीमा में स्थित है, देश का तट—रक्षक है और भारत माँ के प्राणों का गौरव है। पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं—

जो त्याग भूमि जो तपोभूमि जो तीर्थ भूमि,
ऋषियों—मुनियों का वह देवालय किसका है।
भारत को जीवन देने वाली सरिता से पूछो,
यह पर्वत राज हिमालय किसका है।।[1]

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि हिमालय पर अपना अधिकार सिद्ध करते हुए चीन को सन् अठारह सौ नब्बे में ब्रिटिश—चीन के संधि—पत्र की स्मृति दिलाता है, जिसमें सिक्किम की रक्षा का भार भारत को सौंपा गया था। इन्द्रप्रस्थ के राजसूय यज्ञोपरान्त गाण्डीवधारी अर्जुन को चीन सल्तनत द्वारा सम्मनित किया गया। उसी चीन के आँगन में भारत ने अपना विजय—ध्वज फहराया था, वही चीन भारत पर आँखें गड़ाए, हो नहीं सकता। कवि चुनौती पूर्ण शब्दों में अपना आक्रोश व्यक्त करता है—

ले एक हाथ में अमन एक में इन्कलाब,
हिमखण्ड शिखर अब अग्नि खण्ड बन जायेगा।
सुन सके न जो तुम कहीं शांति की शहनाई,
तो रण भेरी का बिगुल बजाया जायेगा।
उत्तुंग हिमालय की चोटी से उठ—उठ कर,
जिस समय क्रान्ति के प्रबल झकोरे आयेंगे।
तुम अपने फरजी मानचित्र पर मत गरजो,
इनसे आँधी तूफ़ान न रोके जायेंगे।।[2]

उक्त पंक्तियों में कवि ने युद्ध की भयंकरता को सांकेतिक

1— पाण्डुलिपि—1, हिमालय सीमा, पृष्ठ 1

1— उपरिवत्, पृष्ठ 2

रूप से स्पष्ट किया है। यदि चीन शांतिपूर्ण वार्ता में सहमति प्रकट नहीं करता तो युद्ध का तूफान नहीं रोका जा सकता। तत्कालीन चीनी राष्ट्राध्यक्ष चाऊ–इन–लाई को युद्ध की विभीषिका से परिचित कराते हुए कवि समरभूमि में मौत की आँधियों का वर्णन करता है, युद्ध के दिनों में खेतों और खलिहानों में कयामत की हवाओं की बात करता है तथा रण की लपटों से गरीबों की झोपड़ियाँ झुलस जाने की बात करता है–

युद्ध के दिनों अकस्मात् हीं क्षण–क्षण पर,
घनघोर प्रलय की घटा घुमड़कर आती है।
दीवार चैन की दृढ़ कितनी ही हो लेकिन,
युद्ध के एक हीं झौंके में ढह जाती है।।[1]

यहाँ कवि ने युद्ध की स्थिति का सजीव चित्रण किया है तथा शत्रु को उसकी वास्तविक भीषणता से रू–ब–रू कराने का प्रयास किया है। कवि की वाणी में भावाभिव्यंजना की अपूर्व शक्ति है, भाषा भावों का अनुगमन करती चलती है।

चीन साम्यवाद का समर्थक है, किन्तु साम्यवादी सिद्धान्तों और नीतियों के परिपालन से क्षुब्ध होकर कवि ने उसकी कटु भर्त्सना की है। साम्यवाद को प्रगतिवाद का उद्‌गम न स्वीकार कर कुगतिवाद का सुत्रधार घोषित किया है। उसे अशान्ति का काला कदम तथा पाप के ढाँचे पर घोर विषमता बाद बतलाया है–

कुछ मार्क्सवाद साहित्य पढ़ा हमने भी है,
हमने भी लेनिन का लिटरेचर देखा है।
जो प्रथम घोषणा–पत्र छपा था वर्लिन में,
उसका भी हमने रूप उच्चतर देखा है।।

तुम प्रगतिवाद का उद्गम कहते हो जिसको।
वह कुगतिवाद का गहरा गंदा नाला है।।[2]

1– पाण्डुलिपि–1, हिमालय सीमा, पृष्ठ 2

2– उपरिवत्, पृष्ठ 4

डॉ. आनन्द अपनी सहृदयता व्यक्त करते हुये कहते हैं कि शान्ति के प्रयास विफल होने पर यदि युद्ध विराम न हुआ, तो सम्पूर्ण सद्ग्रन्थ, ज्ञान–विज्ञान, कला–कौशल, कविता आदि तथा मानवता के गुण, सभ्यता, शील आदि निर्मूल हो जायेंगे। इसलिये–

हम नहीं चाहते हैं कि मसल डाला जाये,
छोटे–छोटे शिशुओं की मृदु मुस्कानों को।
हम मरघट में तब्दील नहीं होने देंगे,
दुनियाँ के सुन्दर हरे–भरे उद्यानों को।।
वन को,उपवन को,फूल–फलों की शोभा को,
क्या बदल दिया जायेगा यह वीरानों में।
माताओं का अनुराग प्रिया का प्रणय–राग,
क्या सुला दिया जायेगा कबरिस्तानों में।।[1]

चीन ने सीमा–विवाद पर जो कुतर्क प्रस्तुत किये थे, तन्निमित्त डॉ. आनन्द प्रश्न करते हैं कि जिस समय चीन में कम्युनिस्ट सरकार स्थापित हुई, तब सीमा–विवाद का प्रश्न क्यों नहीं उठाया गया। अँग्रेजों ने डेड़ सौ वर्ष भारत पर राज्य किया, तब भी नहीं तथा पाकिस्तानी बटवारे के समय भी नहीं। पंचशील पर हस्ताक्षर के समय भी तुमने सीमा का प्रश्न नहीं उठाया। कवि इन अवसरों को स्पष्ट करते हुये कहता है–

जब सर्व प्रथम मान्यता तुम्हें दी भारत ने,
उस समय प्रश्न सीमा का तुम ला सकते थे।
जब नेहरूजी से पहिली–पहिली भेंट हुई,
तब भी तुम अपनी सीमा समझा सकते थे।।
यह नक्शा चाऊ चंट भरी भाषा वाला,
क्या मुश्किल था तुम किसी रोज बनवा लेते।
जो आज बड़ी तकलीफ गवारा की तुमने,
यह भड़कीला भूगोल कभी छपवा लेते।।[2]

उक्त पंक्तियों में चीन की दुर्नीतियों का भंडाफोड़ करके भारतवर्ष का गौरव गान करते हुये कवि ने सीमा–विवाद की प्रतिक्रिया अभिव्यक्त की है।

1– पाण्डुलिपि–1, हिमालय सीमा, पृष्ठ 5

2– उपरिवत्, पृष्ठ 6

5– बात आ गई है

इस रचना में कवि ने देशवासियों को चीन के विरुद्ध युद्ध करने की प्रेरणा दी है। जब चीन का बढ़ता हुआ विद्वेष शान्त नहीं हुआ तथा चीन ने षड्यंत्र के तहत भारत पर आक्रमण कर ही दिया, तब कवि दृढ़ता पूर्वक युद्ध में सन्नद्ध होने की प्रेरणा देता हुआ कहता है–

सफीना भँवर से निकल तो चुका पर,
नदी के किनारों पै बात आ गई है।
अहिन्सा उठाकर धरो ताक में अब,
समय के दुधारों पै बात आ गई है।।[1]

कवि ने समाज के कलाकारों, कवियों एवं शायरों को सचेत करते हुए उद्बोधन किया है, उनकी चेतना को झकझोरा है तथा सम–सामयिक परिस्थितियों के प्रति प्रेरक बनकर उनके रुझान को मोड़ने का कार्य किया है। उदाहरण दृष्टव्य है–

न जाने कलाकार को क्या हुआ जो,
तमूरा लिये बेसुरा आ रहे हैं।
किसी ने नहीं देश का राग छेड़ा,
सरे आम ही भैरवीं गा रहे हैं।।
घुसे आ रहे चोर डाकू घरों में,
मगर यह लगे महिफिलों के जशन में।
करो बन्द तबला, सरंगी, मजीरे,
जुझारू नकारों पै बात आ गई है।।[2]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि डॉ. आनन्द ने चीन के आक्रमण से पूर्व और पश्चात् अपने उत्तेजक विचारों को प्रमुखता दी है।

1– पाण्डुलिपि–1, बात आ गई है, पृष्ठ 11

2– उपरिवत्, पृष्ठ 12–13

6– फौजी गठबंधन

जब भारत के विरुद्ध युद्ध का अभियान छेड़ने के लिये पाकिस्तान और अमेरिका के मध्य फौजी गठबंधन हुआ, तब मातृभूमि की आजादी के लिये प्राणपण से समर्पित, वीरता के ओजस्वी तराने गाने वाला कवि विचलित हो उठा। डॉ. आनन्द का कवि हृदय क्रान्तिकारी तूफानों से उद्वेलित हो गया, आत्मा सिहर उठी तथा वाणी का वेग न रुक सका। चूँकि कवि समाज का प्रतिनिधि होता है, इसलिये सामाजिक परिस्थितियों एवं समस्याओं से उद्‌भूत भावनाओं को रेखांकित करना कवि का दायित्व होता है। डॉ. आनन्द ने कवि कर्म का निर्वाह करते हुए उक्त 'फौजी गठबंधन' की तीखी आलोचना निम्न पंक्तियों में की है–

ऐसे फौजी गठबंधन कोई लाख करे,
पर आयेगा वह एक जमाना आयेगा।
जब दानवता की छाती पर चढ़कर कोई,
मानवता के मासूम तराने गायेगा।।
इस समझौते में समझौते के अड्डों पर,
जंगी जहाज उड़–उड़कर जिस दिन आयेंगे।
लहौर, कराँची क्या दिल्ली क्या काश्मीर,
हर ओर गगन में समझौते मँडरायेंगे।।[1]

उक्त उदाहरण में कवि ने सहज रूप से पाकिस्तान को युद्ध के परिणामों से अवगत कराते हुए लाहौर, कराँची, दिल्ली तथा काश्मीर के ध्वंश की ओर संकेत किया है तथा दानवता पर मानवता की विजय को सुनिश्चित किया है। कवि कहता है कि जब समझौते का वायुयान आगरा पहुँच कर मुमताज परी के घूँघट को लूटेगा, युद्ध में ताजमहल का कंगूरा धराशाही हो जायेगा, तब पाकिस्तान पर क्या गुजरेगी? अजमेर में स्थित ख्वाजा का मज़ार सिसकियाँ भरेगा, तब पाकिस्तान की भावनायें क्या चूर–चूर नहीं हो जायेंगीं ?

1– पाण्डुलिपि–1, फौजी गठबंधन, पृष्ठ 15

अजमेर कि जिसके दर की है दुनियाँ फकीर,
वह लपटों में पड़कर जब होगा छार–छार।
तब क्या न कयामत टूट पड़ेगी दुनियाँ पर,
हिचकियाँ भरेगा जिस दिन ख्वाजा का मज़ार।।
हैं जो कि मुगल कालीन कला कृतियाँ सुन्दर,
क्या इन पर अमरीकी पानी पड़ जायेगा।
मीनार कुतुब जामा मस्जिद दरगाह पीर,
क्या पाक आज इनको नापाक बनायेगा।।[1]

यहाँ कवि ने युद्ध की विभीषिका के दुष्परिणामों को उजागर किया है तथा कुतुबमीनार, जामा मस्जिद और पीर साहब की दरगाह के विध्वंश का चित्रांकन किया है। पाकिस्तान को आगाह किया है कि क्या तुम जामा मस्जिद तथा पीर साहब की दरगाह को नापाक होते देख सकोगे? जो मुगल कालीन सुन्दर विश्वप्रसिद्ध कला कृतियाँ हैं, उनकी क्या दशा होगी? बाबा फरीद की यादगार को क्या विस्मृत कर पाओगे? रुड़की में स्थित साबिर साहब का कलियर वाला मज़ार क्या भूल जाओगे? जब पीर पैगम्बरों के मज़ारों पर चिराग जलाने वाला कोई नहीं रहेगा, इकबाल, मीर और गालिब के कलाम आसमान में तैरेंगे, तब पाकिस्तान की मनःस्थिति कैसी होगी? उदाहरण दृष्टव्य है–

हैं जहाँ पीर पैगम्बर अपने दफन आज,
इस जगह कि जब इन्सान नहीं रह जायेगा।
मैं पूछ रहा हूँ आप सोचकर दें जबाब,
इनके मज़ार पर कौन चिराग जलायेगा।।
फिर यह भी सोचा होगा तुमने किसी रोज,
जब समझौते की सरिता उमड़ेगी अथाह।
यकबाल,मीर, गालिब, अनीस के यह कलाम,
क्या अटलांटिक सागर में पायेंगें पनाह।।[2]

1– पाण्डुलिपि–1, फौजी गठबंधन, पृष्ठ 15–16

2– उपरिवत्, पृष्ठ 16

उक्त छन्द में कवि ने पाकिस्तान को सोचने के लिये विवश कर दिया है तथा उसके स्मृति चिह्नों की भावी दुर्दशा पर पश्चाताप करने को बाध्य कर दिया है। साम्राज्ञी नूरजहाँ के विराट वैभव के विनाश की परिकल्पना को साकार कर दिया, जिसके भ्रू–इंगित पर भूचाल आ जाते थे, जिसकी पद–रज को राजमुकुट झुककर चूमा करते थे, उसकी कब्र अभी तक गीली होगी। पाकिस्तान को सम्बोधित करते हुये कवि कहता है–

वह नूरजहाँ का नाम सुना होगा तुमने,
जिसके भ्रू–इंगित परभूचाल कि आते थे।
जिसकी पद–रज को चूमा करते थे हिम किरीट,
जिसके चरणों पर राजमुकुट झुकजाते थे।।
वह नूरजहाँ की कब्र अभी तक गीली है,
है इस दुनियां का नूर कि जिसमें हुआ दफ़न।
मिट्टी में सोते–सोते सदियाँ बीत गईं।
पर अब तक जिसका नैक न मैला हुआ कफ़न।।[1]

यहाँ कवि ने पाकिस्तान को उसका अमूल्य रत्न नूरजहाँ और उसकी अनुपम छवि रूपी धरोहर की सुरक्षा के प्रति सचेत किया है। नूरजहाँ को कब्र में सोते–सोते सदियाँ बीत गईं, किन्तु उसका कफ़न अभी भी मैला नहीं हुआ। युद्ध की विभीषिका में उसकी करुण स्मृति सूचक कब्र की क्या स्थिति होगी, जिसे उसने जिन्दगी देकर पाया था।

युद्ध की वीभत्स एवं विध्वसांत्मक स्थितियों को निरावृत करते हुए कवि देश के प्राकृतिक सौन्दर्य के विनष्ट होने की कल्पना करता है तथा खेद व्यक्त करता है कि युद्ध की चिन्गारी से सारा वैभव तो निर्मूल होगा ही, बहारों में असमय ही पतझड़ का दृश्य उपस्थित हो जायेगा। प्रगति अवरुद्ध होने के साथ सब का सब नष्ट–भ्रष्ट हो जायेगा। युद्ध के दुष्परिणामों का चित्र देखिये–

1– पाण्डुलिपि–1, फौजी गठबंधन,

बुलबुल का होगा नाम चमन में कहीं नहीं,
जब हवा मौत की आँधी बनकर डोलेगी।
बगिया के कौने में अमुआ की डाली पर,
फिर कभी न मीठे बोल कोयलिया बोलेगी।।
यह चाँद किसी की पूनम के घर–आँगन के,
इन पर समझौते की बदली छा जायेगी।
खिल जायेंगे गुलशन में जब अमरीकी गुल,
हर ओर खिंजा अपनी बहार पर आयेगी।।[1]

कवि का आशय है कि यदि पाकिस्तान और अमेरिका का समझौता कारगर हो गया तथा अमेरिका का प्रभुत्व स्थापित हो गया, तो बगिया में अमुआ की डाली पर कोयलिया मीठे बोल न बोल पायेगी अर्थात् स्वच्छन्दता नष्ट होकर पराधीनता का साम्राज्य स्थापित हो जायेगा। सावन की रिमझिम में झूले पर कजरी गीत न गाये जा सकेंगे तथा सुनसान अटारी पर पायल की झनकार सुनाई नहीं देगी।

कवि शत्रुओं को चुनौती देता हुआ कहता है कि यदि शान्ति चाहते हो तो कान खोलकर सुनलो–

मानव जीवन में शान्ति चाहता है मानव,
एटम बम वाले दानव सुन लें खोल कान।
हम फौजी गठबंधन की गहरी कब्र खोद,
मरसिया पढ़ेंगे मिलकर हिन्दू–मुसलमान।।[2]

अन्त में कवि शांति के उपायों को निर्दिष्ट करता हुआ शत्रुपक्ष को चुनौती देता है तथा फौजी गठबंधन की कब्र खोदने अर्थात् समूल नष्ट करने की धमकी भी देता है।

1– पाण्डुलिपि–1, फौजी गठबंधन, पृष्ठ
2– उपरिवत्, पृष्ठ

स्फुट रचनायें

डॉ. आनन्द की कविता उस धरती की उपज है, जिसमें मनुष्यगत चेतना के बीज अंकुरित होते हैं। इसी कारण उनकी अधिकांश रचनाओं में उनका विद्रोही तेवर झलकता है। झाँसी की रानी, एम.एल.ए. राज., सन् अड़तालीस, हिमालय सीमा, बात आ गई है, फौजी गठबंधन आदि रचनाओं में उनका वीर रसात्मक ओजस्वी राष्ट्रीय स्वर प्रस्फुटित हुआ है। शक्ति निदान, माधवनिदान का पद्यानुवाद है, जिसमें आयुर्वेदिक ज्ञान की परिपक्वता प्रतिबिम्बित है। पब्लिक इन्टरेस्ट तथा दारुल शफा रचनायें व्यंग्य प्रधान हैं। इनके अतिरिक्त डॉ. आनन्द का सामयिक सन्दर्भों से सम्पृक्त स्फुट रचना संसार भी है, जिसमें देशभक्ति पूर्ण रचनायें, बुन्देलीगीत, गज़ल, घनाक्षरी, श्रृंगारिक गीत, समस्यापूर्ति, प्रकृतिचित्रण, नायिका भेद तथा राजनीति से प्रेरित रचनायें सम्मिलित हैं।

उपर्युक्त स्फुट रचनाओं की प्रस्तुति लेखन क्रम में निम्न प्रकार है–

1– अब तक सोने वाली :

प्रस्तुत रचना में आत्मा तथा परमात्मा के आन्तरिक सम्बंधों का निरूपण रूपक के माध्यम से किया गया है। आत्मा को पत्नी तथा परमात्मा को पति मानकर कवि उनके मिलन और विछोह की सारगर्भित विवेचना करता है। इस रचना को जागरण गीत या उद्‌बोधन गीत की संज्ञा से अभिहित किया जाए तो कोई अत्युक्ति न होगी।

'अब तक सोने वाली' रचना में कवि के अन्तर्भावों का उद्‌भावन सन् 1933 में हुआ। 'अब तक सोने वाली' से कवि का तात्पर्य परमात्मा के प्रति बेखबर होने से है। आत्मा रूपी प्रियतमा ने इस शरीर को अपना स्थायी निवास बना लिया है। इस शरीर रूपी घर को काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह आदि चोरों ने घेर लिया है, तेरा सारा धन लुटा जा रहा है, अब तू इसकी रक्षा कर सके तो कर ले। तुझे बहुत दूर जाना है, अब तेरे जाने का समय

नजदीक आ गया है, तुझे जाना ही होगा, कोई बहाना नहीं चलेगा। यहाँ तेरा शरीर रूपी महल खाली पड़ा रह जायगा। पंक्तियाँ देखिये–

दूर देश है तुझको जाना, दिन आगये गवन नगचाना।

चल न सकेगा एक बहाना, तू जायेगी रह जायेगी,

पड़ी महलिया खाली।

अब तक सोने वाली।।[1]

कवि इस पंचतत्वों से निर्मित शरीर को पचरंगी चादर मानता है। यह चादर सांसारिक माया मोह रूपी धूल से धूसरित हो गई है। परमात्मा का चिन्तन और मनन ही उस चादर को निर्मल करने के उपाय हैं। कवि की प्रेरक पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

यह पचरंगी चादर तेरी, धूलि धूसरित क्यों है एरी।

धोले इसको मतकर देरी, शोभा यही विदा के दिन की,

क्यों मैली कर डाली।

अब तक सोने वाली।।[2]

उक्त छन्द में कवि के आध्यात्मिक अनुभव का स्वारस्य अभिव्यंजित है। क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर से निर्मित यह अधम शरीर ही आत्मा रूपी बिरहिणी की पचरंगी चादर है, जो मैली है। मिलन का समय आ गया है। तात्पर्य है कि इस संसार में जो आया है उसे एक दिन प्रयाण करना ही पड़ेगा। अतः ईश्वराधना से उस मैली चादर को निर्मल करने का उपाय कवि ने उक्त पंक्तियों में व्यक्त किया है।

2– मधुशाला

डॉ. आनन्द का यह कोमल गीत सन् 1934 में लिखा गया है। इस गीत के माध्यम से कवि ने आध्यात्मिक प्रेम रूपी मदिरा पिलाने का आग्रह करते हुए कहा है–

1– पांडुलिपि–1, अब तक सोने वाली, पृष्ठ 44

2– उपरिवत्, पृष्ठ 44

मधुबाले तेरी मधुशाला

सुन बड़ी दूर से आया हूँ– मैं पहुँचे का पहुँचाया हूँ।।

अरमान एक बस लाया हूँ– ढलने दे सागर पर सागर,

चलने दे प्याले पर प्याला।।[1]

कवि प्रेम–मदिरा उन्मुक्त रूप से पीने का आकांक्षी है। उस प्रेम–मदिरा के नशे में ऐसा मतवाला होना चाहता है, जिसमें न दीन हो, न ईमान हो, न अपना ध्यान ही रहे तथा ऊँच नीच का ज्ञान भी शून्य हो जाय। तन–मन में तू ही तू हो। तात्पर्य है कि कवि ईश्वरीय प्रेम का दीवाना होकर ऐसी मस्ती चाहता है। देखिये–

भर दे ऐसी मस्ती भर दे, मिट जाय खुदी बेखुद कर दे।

खुल जायें पंथों के परदे, मैं करूँ दिव्य दर्शन तेरा,

लूँ देख रुखे रौशन आला।[2]

यहाँ पर कवि प्रेम की मस्ती में स्वअस्तित्व–बोध से शून्य हो जाना चाहता है। सम्पूर्ण धार्मिक आवरणों से असम्पृक्त होकर परमात्मा के दिव्य–दर्शन की अभिलाषा करता है। उस परम–प्रभु के पावन प्रकाश को देखने की सामर्थ्य चाहता है।

डॉ. आनन्द परमात्मा की परम प्रेम रूपी मधु को पीकर ऐसी विस्मृति की आकांक्षा करते हैं, जिसमें केवल उस इष्ट की याद रहे। ऐसा प्रेम, ऐसी लगन उत्पन्न हो जाय कि अज्ञान रूपी अंधकार विलीन होकर अलौकिक दिव्य प्रकाश जगमगा उठे। मैं तो सारे धार्मिक मत–मतान्तरों, आडम्बरों का परित्याग कर, मन्दिरों और मस्जिदों में ताला डालकर, हे मधुवाले–तेरी शरण में आया हूँ।

3– मैं किससे क्या पहिचान करूँ

जीवन की क्षण भंगुरता को रूपायित करने में सक्षम इस रचना का निर्माण सन् 1936 में हुआ। भविष्य अज्ञात एवं अनिश्चित है,।

1– पांडुलिपि–1, मधुशाला, पृष्ठ 48

2– उपरिवत्,

वर्तमान पूर्ण रूपेण ज्ञात एवं सुनिश्चित है। एक ऐसा भी समय निश्चित तौर पर आयेगा, जब सब कुछ यहीं पड़ा रह जायेगा। डॉ. आनन्द का कथन है कि हम अनिश्चित भविष्य के लिए सुनिश्चित वर्तमान का बलिदान क्यों करें। उदाहरण दृष्टव्य है—

अपना पथ है दो ही क्षण का, मैं किससे क्या पहिचान करूँ।

यह लोग देखते किसी रोज

सब दूर खड़े रह जायेंगे।

पथ में जीवन के चिर संचित

अरमान पड़े रह जायेंगे।

ऐसे भविष्य पर क्यों अपना

यह वर्तमान वलिदान करूँ

मैं किससे क्या पहिचान करूँ।[1]

आन्तरिक द्वन्द्व डॉ. आनन्द की रचना का मूल प्रस्थान विन्दु है। उनका सम्पूर्ण काव्य अनुभव की प्रामाणिकता से ओतप्रोत है। उनका जीवन संघर्षों का इतिहास है। निम्न पंक्तियों में सांसारिक सम्बंधों का यथातथ्य चित्रण प्रस्तुत है—

मेरे मधुमय प्रारम्भों के,

मुझको यह कटु निष्कर्ष मिले।

जग के हिंत जग से ही मुझको,

संघर्षों पर संघर्ष मिले।।

जो जग न समझ पाया अब तक,

जीवन परिभाषायें मेरी।

जिस जग में होती रहीं नित्य

कटु समालोचनायें मेरी।।

उस जग से क्यों न अलग होकर मैं अपना जग निर्माण करूँ।[2]

1— पांडुलिपि—1, मैं किससे क्या पहिचान करूँ, पृष्ठ 41

2— पांडुलिपि—1, मैं किससे क्या पहिचान करूँ, पृष्ठ 42

उक्त छन्द में कवि संसार के व्यवहार से असन्तुष्टि सूचक निराशा का वर्णन करता है। सांसारिक स्वार्थपरता कवि के जीवन में संघर्षों को जन्म देती है। जगत के तुच्छ–संकीर्ण स्वार्थों का प्राबल्य इतना हुआ कि संसार कवि के जीवन की गरिमामय परिभाषाओं को नहीं जान सका। संकुचित दायरे की फलश्रुति यह हुई कि कवि आलोचना एवं तिरस्कार का पात्र बना। स्वाभिमानी व्यक्तित्व का समर्थक कवि अपना पृथक संसार निर्माण करने को आकुल हो उठा।

4- प्यार करें क्या

सन् 1937 में प्रणीत **'ऐसे जग को प्यार करें क्या'** रचना में कविवर डॉ. आनन्द ने नश्वर जगत के प्रति उदासीनता तथा जागतिक यथार्थ का उद्घाटन करते हुए कहा है कि संसार में एक ओर असीम हास–विलास का अखण्ड नग्न नृत्य हो रहा है, तो दूसरी ओर करुणा प्लावित आहों का अनन्त साम्राज्य है। एक ओर मानव–मन हर्षातिरेक में उत्फुल्ल है, तो दूसरी ओर पीड़ा–ग्रस्त हृदय सुख की साँस लेने को बैचेन है। नेत्रों की मादक छवि पर तन–मन निछावर करने वाला उन्हीं नेत्रों से प्रवाहित करुणा विगलित आँसुओं की ओर नहीं देख पाता।

संसार में मृत्यु सुनिश्चित है। यही एक चिर सत्य है, जिसे मानव सब कुछ समझकर भी हृदयङ्ग्म नहीं कर पाता। निम्न पंक्तियों में भाव स्पष्ट हैं–

कल तो उठ–उठकर करते थे बैठाने की आशा।
आज लेट कर बता रहे हैं उठने की परिभाषा।।
जग ने जिसको कभी न समझा थी जो बात अकेली।
किन्तु एक हिचकी में सुलझी उलझी हुई पहेली।।
इस उलझन सुलझन में हम किसका सत्कार करें क्या?
ऐसे जग को प्यार करें क्या ?[1]

1– पांडुलिपि–1, प्यार करें क्या, पृष्ठ 43

डॉ. आनन्द सुख–दुख के अस्तित्व का निरूपण करते हुए कहते हैं कि सुख क्षणिक है, दुख चिरस्थायी है, अनवरत है। हँसना दो क्षण का है, रोना युग–युग का है। संयोग स्वल्प है, वियोग चिरकालीन है। ऐसे क्लेशयुक्त संसार में सभी को एक दिन अवश्यम्भावी मृत्यु की गोद में चिर निद्रा–मग्न होना है। जिससे बिछुड़ना ही है, उससे अंतरंग होने का क्या औचित्य है। उदाहरण दृष्टव्य है–

क्या हम क्या तुम एक रोज सब जिद पर अड़ जायेंगे।
मिलने के परिणाम मिलेंगे क्या कि बिछुड़ जायेंगे।।
कोई आज और कल कोई कहकर कुछ कहलाकर।
चल देंगे सब अपने–अपने अपनी आँख चुराकर।।
आँख चुरानेवालों से हम आँखें चार करें क्या?
ऐसे जग को प्यार करें क्या?[1]

उक्त पंक्तियों में संसार के प्रति घोर निराशा व्यंजित है। इस संसार रूपी मेले में किसी को आना है, किसी को जाना है। आवागमन का क्रम निरन्तर गतिशील है। समय आने पर सारा स्नेह–सौहार्द्र त्यागकर सभी को इस संसार से विदा लेना है। यह प्रकृति का अविचल नियम है। इसलिए कवि नैराश्य, खिन्नता एवं पश्चाताप करते हुए कहता है–**'ऐसे जग को प्यार करें क्या ?'**

5– हम किसी के गीत गाते रह गये

सन् 1938 में रचित डॉ. आनन्द की इस रचना में जीवन की रहस्यमयता का व्याख्यान है, विभिन्न मत–मतान्तरों के कारण उत्पन्न आध्यात्मिक भटकाव की अभिव्यंजना है तथा क्षणिक संयोग और चिर वियोग की व्यथामयी गाथा है। 'हम किसी के गीत गाते रह गये' शीर्षक से स्पष्ट है कि चिर वियोग–पीड़ित कवि परम मिलन की आकांक्षा अपने ह्रदय में संजोये है। जीवन की समाप्ति पर जागृत ज्ञान को कवि व्यंजना के माध्यम से व्यक्त करता है–

1– पांडुलिपि–1, प्यार करें क्या, पृष्ठ 43

जिन्दगी का जब हुआ झगड़ा तमाम।

वह चले कण्डा लिये ले राम नाम।।

जिन्दगी में आज वह देने चले।

जिन्दगी भर की मुहब्बत का इनाम।।

जिन्दगी का भेद वह समझे नहीं।

हिचकियों में हम बताते रह गये।।

हम किसी के गीत गाते रह गये।[1]

उक्त छन्द में कवि का कथन सारगर्भित है। समाज जीवन के रहस्य से अनभिज्ञ रहता है। प्रणान्त में प्राणी हिचकियाँ लेता है, मानो वह संकेत रूप में व्यक्त करता है कि एक दिन सभी का अन्त होना है। जीवनरूपी नौका भले ही कष्टों के झंझावात में उलझ गई हो, लेकिन जीवन अनंत है, तूफानों में भी गतिमान है। पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं—

बिजलियों ने रास्ता दिखला दिया,

इस अँधेरी रात की बरसात में।

जिन्दगी की नाव चलती ही रही,

मौत के तूफ़ान आते रह गये।।[2]

अज्ञानरूपी अंधकार में यदा कदा ज्ञान की किरण उपलब्ध हो जाती है। प्राणी कर्तव्य के प्रति सचेत हो जाता है। पुनः उसकी नाव माया—मोह के झंझावात में उलझ जाती है। मृत्यु अवश्यम्भावी है, फिर भी जीवन की अनंत यात्रा चल रही है।

डॉ. आनन्द ने इस रचना में विरक्ति—भावना से सम्पृक्त विचारों को व्यक्त किया है। सांसारिक सम्बंध स्वार्थ से प्रेरित हैं। बिना लक्ष्य निर्धारित किये जीवन की अनंत यात्रा अंधकार में भी गतिमान है। रास्ते में संयोगवशात् सुख—साधन मिलते हैं, किन्तु किसी भी मोड़ पर वियोग की चिर—पीड़ा पुनः स्थायी हो जाती है। पंक्तियाँ देखिये—

1— पांडुलिपि—1, हम किसी के गीत गाते रह गये, पृष्ठ 39

2— उपरिवत्, पृष्ठ 39

राह में कुछ कह लिया कुछ सुन लिया।

खूब तुमने साथ भी पथ में दिया।।

बीच ही में किन्तु पहली मोड़ पर।

तुम अलग हो मुड़ चले यह क्या किया।।

लुट गया संसार अपना और हम।

प्यार की दुनियाँ बसाते रह गये।।[1]

तात्पर्य यह है कि संसार का मोह मुक्त नहीं होने देता है। जीवन समाप्त हो जाता है। संसार के सभी साथी एक–एक कर छूटते जाते हैं, फिर भी अज्ञानांधकार तिरोहित नहीं होता और सृष्टिक्रम अनवरत चलता रहता है।

6– कवि

'कवि' शीर्षक कविता डॉ. आनन्द ने सन् 1949 में रची थी। साम्राज्यवाद समाप्ति पर था। शासन ने सत्ता स्वीकार कर ली थी। जब सरकार के अधिकारी–कर्मचारी भ्रष्टाचरण में लिप्त हो जाते हैं, न्यायालय पापों के सरकारी अड्डे बन जाते हैं, तब कलमकार की कविता पलभर में तूफान सा उपस्थित कर देती है। जब शासन के अनाचार से सदाचार शासित होने लगता है, सती नारियों की आहें चीत्कार करने लगती हैं, तब कवि की कविता से पल भर में विप्लव के बादल घिर आते हैं। कवि की पुकार पर नवयुवकों के दल के दल उमड़ पड़ते हैं। कवि की कविता की करामात देखिये–

जग ने वैभव की छाया में,

कविता को पलते देखा है।

पर कवि ने कविता पर जग का,

इतिहास बदलते देखा है।।

इतना ही नहीं कि कविता से,

इन्सान बदल देता है कवि।

मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर के,

भगवान बदल देता है कवि।।[2]

1– पांडुलिपि–1, हम किसी के गीत गाते रह गये, पृष्ठ 40

2– पांडुलिपि–1, कवि, पृष्ठ 30

कवि की कविता का चरमोत्कर्ष उपर्युक्त छन्द में रूपायित है। कविता असीम शक्ति की संचायिका है, मनोवांछित संकल्पों की विधायिका है। कविता इतिहास बदलती है, इंसान बदलती है और यहाँ तक कि भगवान बदलती है। कविता तो सकल गुण–निधान है ही, कवि की स्याही भी कम मूल्यवान नहीं। देखिये–

कवि की स्याही की कीमत का,
आँकना नहीं है सरल काम।
सत्ता का वैभव कर न सका,
कवि की स्याही की रोक थाम।।

कवि अपनी कविता के द्वारा,
जीवन में जीवन भरता है।
कितने किरीट कविता द्वारा,
कवि धूलि–धूसरित करता है।।[1]

इस रचना में डॉ. आनन्द ने कवि, कविता और कवि की स्याही– तीनों की विशिष्टता प्रकट की है। कविता से बड़े–बड़े राज–सिंहासन धराशायी हो जाते हैं। कवि कविता के माध्यम से जीवन को जीवन्त बना देता है। अन्त में कवि कहता है कि–कवि तुलसी की अमर लेखनी से मारा गया रावण प्रति वर्ष मारा जाता है, जबकि राम ने रावण को एक बार ही मारा था।

7– सावरमती के तट पर

स्वातंत्र्योपरान्त, पुनीत सरिता सावरमती के तट पर सम्पन्न काँग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक को इंगित कर डॉ. आनन्द ने इस रचना को जन्म दिया। रचना का केन्द्रीय भाव शासन के प्रतिनिधियों को उनके कर्तव्य–पथ का स्मरण दिलाना है, सर्वोदय के वास्तविक अर्थ का उद्‌घाटन करना है। कवि काँग्रेस व सर्वोदयी नेताओं को सचेत करता है कि जिस पावन पयस्विनी के तट पर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने दांडी–यात्रा–अभियान

1– पांडुलिपि–1, कवि, पृष्ठ 31

छेड़ा था, सर्वोदय का ताना–बाना बुना था, तुम उस पुनीत सरिता के गौरवमय अतीत को वर्तमान की चकाचौंध में विस्मृत न कर देना। सर्वोदय की यथार्थता व्यक्त है निम्न पंक्तियों में–

फिर बतला दो कूटनीति को त्याग आपने,
सत्य अहिंसा पर कितना विश्वास किया है।
और तुम्हारे सर्वोदय के इस तिलिस्म ने,
बतला दो किसको कितना अभ्युदय दिया है।।
पूछ रहीं हैं पुण्य नदी की लहरें तुमसे,
समाधान कुछ इनकी शंकाओं का कर दो।
प्रश्न कर रहा है तुमसे सरिता का कलरव,
जैसा भी हो सके इसे कुछ तो उत्तर दो।।[1]

कवि काँग्रेसी प्रतिनिधियों के सर्वोदय के प्रति अनास्था व्यक्त करता हुआ कहता है कि तुम्हारे सर्वोदय के घुँघरू तो रईसों की महफिल में गुंजार करते हैं और तुम्हारी सारंगी की स्वर लहरी अमीरों के मिल में सुनाई पड़ती है। क्या तुम्हारा सर्वोदय लोक–व्यापी सर्वोदय सिद्ध हो सकेगा? कवि असंगठित एवं निराधार सर्वोदय पर टिप्पणी करता है–

किन्तु तुम्हारे सर्वोदय के रथ के घोड़े,
आगे पीछे अगल बगल सब ओर लगे हैं।
अपनी–अपनी दिशा और खींचा तानी में,
एक साथ ही सभी लगाने जोर लगे हैं।।
सर्वोदय के ऐसे रथ को ठेल–ठेल कर,
क्या आगेकी ओर इंचभर बढ़ा सकोगे ?
नब्बे प्रतिशत की गंगा यमुना को क्या तुम,
हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर चढ़ा सकोगे?[2]

1– पांडुलिपि–1, सावरमती के तट पर, पृष्ठ 22

2– उपरिवत्, पृष्ठ 23

तात्पर्य यह है कि अव्यवस्थित और असंगठित सर्वोदय, प्रगति के पथ पर अग्रसर होकर मानव–कल्याण नहीं कर सकेगा। राष्ट्र की शक्ति को संबल प्रदान नहीं कर सकेगा। कवि आरोपित करते हुये कहता है कि तुम्हारा लोभी मन रूपी चातक चुनाव रूपी सावन–घन का प्यासा है और तुम्हारे अन्तर का पापी चकोर केवल चुनाव की चन्द्र–किरन का आशिक है। तुमने अपने अर्थोदय को ही सर्वोदय का केन्द्र–विन्दु मान लिया है। तुम्हारे और सामान्य मानवता के मध्य कितना वैषम्य है? तुमने देश–द्रोहियों को खोज–खोज कर देशभक्त होने का सम्मान दिया है। डॉ. आनन्द अपनी प्रेरक पंक्तियाँ प्रस्तुत करते हैं–

देश–द्रोही गद्दारों को ढूँढ़–ढूँढ़ कर,
जिनको तुमने देश–भक्त का टिकट दिया है।
विदेशियों के भक्त देश के गुनहगार को,
ऊँचा–ऊँचा पद देकर सम्मान किया है।।
करता हूँ बस यही सोचकर तुम्हें समर्पण,
ताकि एक समुचित निर्णय श्रीमान् ले सकें।
मेरी कविता की यह केवल चार पंक्तियाँ,
शायद कोई नई प्रेरणा तुम्हें दे सकें।।[1]

अपनी प्रेरणास्पद पंक्तियाँ देकर कवि यह आशा करता है कि शायद उनमें कोई सही निर्णायक क्षमता का उद्भव हो सके, देश का कल्याण हो सके, मानवता का उद्धार हो सके तथा कवि की प्रेरणा साकार हो सके।

8– यही देश है वह

डॉ. आनन्द सृजनात्मक साहस के पूर्ण धनी, राष्ट्र की आन, वान और शान के लिए समर्पित स्वतंत्रता सेनानी तथा ओज और राष्ट्रीय भावना के प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। भारत पर चीन के आक्रमण से कवि की

1– पांडुलिपि–1, सावरमती के तट पर, पृष्ठ 25

आत्मा सिहर उठी। देश के लिए पूर्ण रूपेण न्योछावर कवि का साहस द्विगुणित हो गया। भारत के प्राचीन वैभव की स्मृति दिलाता हुआ कवि कहता है–

सदाचार के गीत संसार को हम,
सुनाते रहे हैं सुनाते रहेंगे।
अनाचार के चीरने को प्रत्यंचा,
चढ़ाते रहे हैं चढ़ाते रहेंगे।।[1]

तात्पर्य यह है कि हमारा देश ऋषि–मुनियों का देश है, शील और सदाचार का देश है, राम और कृष्ण का देश है तथा गौतम और गाँधी का देश है। यदि हम सदाचार के गीत गाना जानते हैं, तो अनाचार के दमनार्थ प्रत्यंचा चढ़ाना भी अज्ञात नहीं है। यदि हम सात्विक आचरण के समर्थक हैं, तो अत्याचारों से प्रतिशोध लेना भी जानते हैं। अपने देश की शौर्य–गाथा को कवि निम्न पंक्तियों में स्पष्ट करता है–

तुम्हें राजपूती कथा क्या सुनायें,
यहाँ बाँकुरे वीर जैसे हुये हैं।
किसी भी तवारीख से पूछ लेना,
कि योद्धा पृथ्वी राज कैसे हुए हैं।।
ये वह देश है साहसी शूरमा का,
जो आँखे निकाली गई तो हुआ क्या।
मगर वाण पर शब्द भेदी निशाना,
लगाते रहे हैं लगाते रहेंगे।।[2]

उक्त छन्द में कवि ने पृथ्वीराज चौहान का ऐतिहासिक संदर्भ देकर स्पष्ट किया है कि इस देश में पृथ्वीराज चौहान जैसे–अचूक शब्द–भेदी लक्ष्य संधान करने वाले योद्धा भी होते रहे हैं, जिन्होंने चन्द्रवरदायी का संकेत पाकर मुहम्मद गौरी को मौत की नींद सुला दिया था। यह घटना विश्व–इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है कि मुहम्मद गौरी द्वारा पृथ्वीराज

1– पांडुलिपि–2, भारत का आन, पृष्ठ 9

2– पांडुलिपि–2, भारत का आन, पृष्ठ 17

की आँखे निकलवाने पर भी वीर यौद्धा ने अपने अचूक निशाने का अपूर्व परिचय दिया था।

कवि शत्रुओं को महाभारत के प्रसंग से भी अवगत कराता है, जिसमें भीष्म पितामह शर–शैया पर कई माह तक लेटे रहे थे। कवि कहता है कि–

जहाँ लोग जुल्मो सितम में पले हैं,
वहाँ आप जुल्मों सितम क्या करेंगे।
बुरा तुम किये जाओ तुमको उचित है,
भला तुम करोगे तो हम क्या करेंगे।।
मगर द्रोपदी ने पुकारा कहीं तो,
वहीं तेज तलवार की धार से हम।
कुटिल नीच दुःशासनों को कबर में,
सुलाते रहे हैं सुलाते रहेंगे।।[1]

कवि का आशय है कि हमारा देश सदाचार का आदर्श है किन्तु दुष्टों के दलन के लिए भी हम सदैव तत्पर हैं। हमारी संस्कृति सदशयतापूर्ण है, परोपकार हमारा आभूषण है। किन्तु अन्याय का प्रतिकार करना भी हमें भली भाँति ज्ञात है।

9– पन्द्रह अगस्त

अँग्रेजों की दो सौ वर्ष की दासता के उपरान्त, अनेक संघर्षों के बावजूद भारत वर्ष की पीड़ित मानवता को त्राण मिल पाया, 15अगस्त सन् 1947 को। राष्ट्र स्वतंत्र हो गया। भारत से अँग्रेजी राज्य समाप्त हो गया। कवि तो यहाँ तक कहता है कि–

चन्द्र सूर्य हैं और आज के और उदय हैं तारे।
आज और ही तौर दिखाई पड़ते भाग्य हमारे।।[2]

1– पांडुलिपि–2, भारत का आन, 18

2– पांडुलिपि–1, पन्द्रह अगस्त, पृष्ठ 54

तात्पर्य यह है कि परतंत्रता की बेड़ियाँ टूटने पर जो हर्ष देश को हुआ, उससे प्रतीत हुआ जैसे कि भाग्य ही बदल गये हों। चन्द्र, सूर्य और नक्षत्र कुछ और ही प्रकार के हो गये हों। किन्तु आजादी प्राप्त करने में देश को जो कुर्वानी देनी पड़ी, कितना मूल्य चुकाना पड़ा, अगस्त सन् 1942 में बलिया काण्ड में कितनों का बलिदान देना पड़ा, यह कह पाना बहुत मुश्किल है। कवि अंग्रेजी राज्य के अनीति पूर्ण कार्यों की ओर ध्यानाकर्षित करता है–

वह अंग्रेजी राज कि जिसने लूटा दो सौ वर्ष।
वह अंग्रेजी राज रहा जिससे सदैव संघर्ष।।
वही राज जिसमें भारत की किस्मत खतरे में थी।
वही राज जिसमें नारी की अस्मत खतरे में थी।।[1]

उक्त छन्द में अंग्रेजी राज्य की दुर्नीतियों का भंडा फोड़ किया गया है। भारत ने आजादी पाने के लिए कितना खोया है, कितना लुटाया है, कितनी ललनाओं ने अपना सुहाग समर्पित किया तथा कितनी माताओं की गोदें सूनी हो गईं? और दाने–दाने को मोहताज कर दिया गया। कवि कहता है कि यह मत पूछो, इन आँखों ने क्या–क्या देखा है?

हमने देखा इन आँखों से जलियां वाला बाग।
इन आँखों से हमने देखी काकोरी की फाग।।
देख न सकते थे जिसको वह इन आँखों ने देखा।
हमने देखे फाँसी घर में लटके हुये सुहाग।।[2]

तात्पर्य है कि जलियाँ वाले बाग में तथा काकोरी काण्ड में जो नर–संहार भारत को भोगना पड़ा, अमर शहीदों को फाँसी पर झूलते देखा, उसका बदला अंग्रेजों से ब्याज सहित लेना है। अनेक बलिदानों और कुर्बानियों के पश्चात् 15 अगस्त 1947 को हमारा देश स्वतंत्र हो गया, तब कवि मुक्त कंठ से कह उठा–

1– पांडुलिपि–1, पन्द्रह अगस्त, पृष्ठ 54

2– उपरिवत्, पृष्ठ 54

तख्त आज से हुआ आज से हुआ हमारा ताज।
उठकर गया आज भारत से वह अंग्रेजी राज।।[1]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि इस रचना में कवि ने हर्ष और आक्रोश का समवेत स्वरूप चित्रित किया है। अंग्रेजी राज्य के विदा होने का हर्ष एक ओर आनंदित करता है तो कुर्बानी और बलिदानों के कारण दूसरी ओर आक्रोश व्याप्त हो जाता है। कवि की राष्ट्रीय भावना सफलतम रूप में अभिव्यक्त हुई है। परतंत्रता की यातनाओं का सजीव चित्रण है। रचना के अन्तिम भाग में आजादी के लिए मर–मिटने वाले अमर शहीद सुभाषचन्द्र बोसको भाव–भीनी श्रृद्धांजलि समर्पित की गई है।

10– कि याद आयेंगे देख लेना

डॉ. आनन्द की इस रचना में जीवन और जगत का अस्थायित्व प्रतिपादित है। इस नश्वर संसार में सब कुछ क्षण भंगुर है। आज जो कुछ गरिमामय है, वह कल भविष्य के गर्त में विलीन हो जायेगा। न ये महफिलें होगीं, न ये जश्न–जलसे होंगे। जहाँ बहारें हैं, हो सकता है वहाँ मजारें बन जायें। यह जीवन रूपी चाँदनी चार दिन की है फिर अँधेरी रात ही शेष है। निम्न पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

ये जिन्दगानी है चार दिन की ये नौजवानी है चार दिन की।
ये खेल केवल हैं चार दिन के ये सब कहानी है चार दिन की।।
मिलेंगे इक रोज फिर किसी दिन अगर बनी जिन्दगी रहेगी।
तुम्हारे इस दिन की याद उस दिन तुम्हें दिलायेंगे देख लेना।।[2]

आशय यह है कि जिन्दगी, जवानी, खेल, कहानी ये सब केवल चार दिन के हैं अर्थात् क्षणिक हैं। इन पक्तियों में कवि का निर्वेद भाव अभिव्यक्त हुआ है। कवि संसार के प्रति उदासीन प्रतीत हो रहा है। कवि बहारों में आनन्दित होने वालों को पतझड़ की याद दिलाता है। आज का मिलन भविष्य में पुनः होगा कि नहीं, कोई नहीं जानता।

1– पांडुलिपि–1, पन्द्रह अगस्त, पृष्ठ 53

2– पांडुलिपि–1, कि याद आयेंगे देख लेना, पृष्ठ 53

यदि आप किसी के लिए चार आँसू बहा देंगे तो निश्चय जानिये कि तुम्हारे लिए अनगिनत आँखे अश्रु बहायेंगी। उदाहरण प्रस्तुत है—

अगर किसी के लिए गिरेंगे कभी दो आँखों से चार आँसू।

तो मेरी खातिर हजार आँखें बहायेंगी बेशुमार आँसू।।

किसी की नजरोंसे गिर चले हम किसी की महफिल से उठ चले हम।

किसी से आनन्द कह चले हम कि अब न आयेंगे देख लेना।।[1]

यह संसार वैविध्य पूर्ण है। कोई सन्तुष्ट है कोई असन्तुष्ट है। कुल मिलाकर इस रचना में जगत के प्रति कवि का नैराश्य ही अभिव्यंजित है।

11-पावस

हिन्दी साहित्य में ऋतु—वर्णन की व्यापक परम्परा रही है। सेनापति, पद्माकर आदि रीति कवियों ने इस परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखा। अप्रत्यक्ष रूप से तो सभी कवि प्रासंगिक तौर पर ऋतुओं का स्फुट वर्णन किया करते हैं; क्योंकि काव्य—सृजन में प्राकृतिक सौन्दर्य का बहुत बड़ा योगदान है। इसी क्रम में डॉ. आनन्द की सन् 1956 में सृजित 'पावस' रचना प्राकृतिक सौन्दर्य की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण है। इस रचना में कवि ने एक ओर अषाढ़ के घुमढ़ते बादलों का मनोहारी दृश्य उपस्थित किया है, तो दूसरी ओर बादलों से बरसने वाली रिमझिम फुहार तथा विरहिणियों के हृदय में आग लगाने वाली विद्युत छटा का आकर्षक वर्णन भी प्रस्तुत किया है।

विरहिणियों के वेदनावर्धक उपादान पावस में प्रचुर मात्रा में मौजूद रहते हैं। जैसे जुगनुओं का चमकना, बादलों की घटा का घहराना, पपीहा का पिउ—पिउ पुकारना, दामिनी का चमकना तथा नदियों का उमड़ कर बहना। जब विरहिणी के अटा पर बादलों की घटा घहराने लगी, उस समय उसकी मनः स्थिति का वर्णन देखने योग्य है—

1— पांडुलिपि—1, कि याद आयेंगे देख लेना, पृष्ठ 53

आन मरोर दियो मन मोर करीं बगुलान हू ने मन मानीं।
चातक चीर करेज्यो गयो इत डोल कें डारन बोल कें बानी।।
अंगन–अंगन पै गिरीं गाजसीं और उमंगन पै परयो पानीं।
वा खिन तो कढ़ेप्रान हीं जा खिन आन अटा पैघटा घहरानीं।।[1]

बादलों की उमड़ती घटा प्रिय की स्मृति दिलाती है। वियोगिनी का मन व्यथित होने लगता है। बगुलों और चातकों की ध्वनि से तो मानो उसकी सारी उमंगों पर पानी पड़ जाता है। कवि की दृष्टि विरहिणी की अन्तर्वेदना व्यक्त करने पर अधिक रही है। भारई (बरसाती कीड़ा) के बोलने से नायिका की लाज रूपी चादर डोलने लगती है, बादल विष के बीज बोने लगते हैं, जुगनू और मोर जमात बनाकर विरहिणी का मानो अनादर करने पर तुले हों। पावस प्रारंभ होते ही विरहिणी नायिकाओं की प्रिय– मिलनेच्छा का सुन्दर चित्र देखिये–

बिरहीन के आंगन में जब तें बरखा की घला घलीं माचन लागीं।
छतियां चिपकाय वियोगिनियां पतियां पति की लिखी बांचन लागीं।।
सगुनौती मनाय मनाय कोऊ पिय आवन की घड़ी जांचन लागीं।
बदरा लगे नाचन बादर में बुंदियाँ इतै भूमि पै नाचन लागीं।।[2]

उक्त छन्द में कवि ने विरहिणी नयिकाओं के मन पर पावस की प्रतिक्रिया को रेखांकित किया है। बादल और बूँदों का मानवीय करण अत्यंत आकर्षक बन पड़ा है। सगुनौती मनाना, लोक संस्कार जन्य उपक्रम है, स्वाभाविक प्रयोग है। कवि ने इस रचना में बादलों के विविध प्रयोग किये हैं। विरहणी नायिकाओं के हृदय पर बादलों की प्रतिक्रिया को विभिन्न तरीकों से व्यक्त किया गया है। कहीं दामिनी आग लगाने को दौड़ती प्रतीत होती है, तो कहीं बदरा बदराह करने को उत्सुक हैं। कहीं बादल विष की बूँदें बरसाते हैं, तो कहीं प्राण ही निकलने को तत्पर दिखाई देते हैं। नायिका की स्थिति का दृश्य देखिये–

1– पांडुलिपि–1, पावस, पृष्ठ 46

2– उपरिवत्, पृष्ठ 46

आंगन देख भरे अँसुवा दृग बादर देख भई मति बौरी।
पंथ कुपंथ न सूझ परे नहिं बूझ परे कछु काह भयोरी।।
दादुर दौर पर्‌यो पुर में उर में बिरहानल जात जर्‌योरी।
आय गये बक फूस बिछावन दामिनि आग लगावन दौरी।।[1]

उक्त छन्द में कवि विरहाग्नि की प्रबलता से नायिका की मानसिक स्थिति में होने वाले परिवर्तन की व्याख्या करता है। उचित और अनुचित की निर्णायिका शक्ति कुंठित हो जाती है, समझ निष्क्रिय हो जाती है। विरहिणी कोऐसा प्रतीत होता है कि बगुले फूस बिछाने का तथा दामिनि आग लगाने का कर्तव्य भली भाँति पूरा कर रहे हैं।

12–याद किसी की आ जायेगी

सन् 1964 में लिखी इस रचना में परिवर्तनशील संसार की छवि आरेखित है। कवि के काव्य–जीवन की पूर्ण परिपक्वावस्था में इस रचना का अवतरण हुआ। इस गतिमान संसार में सब कुछ नश्वर है, कुछ भी स्थायी नहीं। विविध आयामी जीवन में मनुष्य निरंतर प्रगति की ओर उन्मुख रहता है। आज का वर्तमान आगामी कल के लिए अतीत बन जाता है। आगे बढ़ने पर केवल अतीत की स्मृतियाँ ही शेष रह जाती हैं। जब आप अतीत की छवि को किसी भी रूप में भविष्य में दृष्टिगत करते हैं तो किसी की याद आ जाना स्वाभाविक होता है। यही भाव–भूमि रचना–सृजन का मुख्य आधार है।

कवि कहता है कि प्राकृतिक नियम के अनुसार हम तुम सदा साथ नहीं रह पायेंगे। संयोग है तो वियोग आयेगा ही। अतीत की स्मृति ही शेष रह जाती है। पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

कोई झूला डाल डालपर मेघ मलारें गाती होगी।
करमें ले राखी भइया को कोई बहिन बुलाती होगी।।
कजरारे घन की गोदी में विहँस पड़ेगी विद्युत माला।
जिसे देख विरही के मन में जाग उठेगी अन्तर्ज्वाला।।
इतने पर भी और आग में जुगनू आग लगा जायेगी।
जब कि तुम्हारे घर आंगन पर श्याम बदरिया छा जायेगी।।
होसकता हैउस क्षण तुमको याद किसी कीआ जायेगी।।[1]

1– पाण्डुलिपि–1, पावस, पृष्ठ 47

2– पांडुलिपि–1, याद किसी की आ जायेगी, पृष्ठ 26

उक्त छन्द में वर्तमान दृश्यों को देखकर अतीत की झाँकी के स्मृति पटल पर साकार होने का सटीक वर्णन कवि ने प्रस्तुत किया है। कवि कहता है कि दुनियां में जहाँ हर्ष है, वहाँ विषाद आयेगा ही, जहाँ बहारें हैं वहाँ एक दिन निश्चित ही मजारें बनेंगीं। इस जगत का आकर्षण मेले की भाँति है। अन्त में मृत्यु सुनिश्चित् है और वह मृत्यु एक थके राही के लिए विश्राम स्थल के मानिंद है। देखिये–

यह दुनियां तो वह दुनियां है, जहाँ आज हो गईं मजारें।
दुनियां वालो उसी जगह पर, कुछ पहिले हो गईं बहारें।।
दुनियां जिसे मौत कहती है,पर वह तो यह गीत गा गई।
चलते–चलते एक पथिक को,पथ में गहरी नींद आ गई।।[1]

कवि संसार के प्रति अनासक्ति व्यक्त करता हुआ कहता है कि यह संसार स्वप्नवत् है। स्वप्न में देखे भयंकर दृश्यों का भय जाग्रत होने पर ही जाता है। यहाँ अपने–पराये का भेद जानना बहुत कठिन है और यही माया का खेल है। डॉ. आनन्द की अतीत की स्मृतियों में आकर शिशुपाल सिंह 'शिशु', गोपालसिंह नेपाली, जिगर मुरादावादी तथा सुभद्रा कुमारी चौहान उनके हृदय को व्यथित करते हैं, पीड़ा जगाते हैं–

अपने युग का एक अकेला कोई 'शिशु' फिर आ जायेगा।
जो कि 'वीरजा' तुम्हें सुनाकर तुमको वीर बना जायेगा।।
कवियों से क्या गीतकार से यद्यपि धरा नहीं है खाली।
लेकिन इनमें आज कहाँ हैं श्री 'गोपालसिंह' नेपाली।।

कभी सुकवि सम्मेलन में भी उर्दू के शायर आते हैं।
किन्तु 'जिगर' के लिए आज हम जिगर थामकर रह जाते हैं।।
फिर से कोई बहिन 'सुभद्रा' कवयित्री होगी लासानी।
हिन्दी का श्रृंगार बनेंगे जिसकी कविता, गीत, कहानी।।[2]

1– पांडुलिपि–1, याद किसी की आ जायेगी, पृष्ठ 26

2– उपरिवत्, पृष्ठ 28–29

उक्त छन्द में कवि ने अतीत के झरोखे से अपने प्रिय कवियों की स्मृतियाँ रेखांकित की हैं। अन्त में डॉ. आनन्द अपने बाद अपनी स्मृति से व्यथित होने वालों की कल्पना को साकार करते हुये कहते हैं—

मेरी ही जैसी लिख देगा फिर कोई 'झाँसी की रानी'।

धरती से अम्बर तक जिसमें गूँज उठेगी कवि की वानी।।

हाथी पर हौदा हौदा पर घोड़ा टाप जमा जायेगा।

आयेगा आनन्द बहुत पर यह 'आनन्द' नहीं आयेगा।।[1]

संक्षेपतः कहा जा सकता है कि 'याद किसी की आ जायेगी' रचना कवि की विरक्ति को व्यक्त करती है। संसार से ऊबकर, संसार की वास्तविक स्थिति से अवगत होने पर कवि अपनी निर्वेद जन्य उदासीनता को सफलता पूर्वक चित्रित करता है।

1— पांडुलिपि—1, याद किसी की आ जायेगी, पृष्ठ 29

तृतीय अध्याय :

झाँसी की रानी - सामान्य परिचय एवं साहित्यिक मूल्यांकन

- विषयवस्तु
- झाँसी की रानी में राजनीतिक संदर्भ
- तत्कालीन सामाजिक स्थिति
- भाषा सामर्थ्य
- मार्मिक स्थल
- झाँसी की रानी का अंगीरस

तृतीय अध्याय

झाँसी की रानी- साहित्यिक मूल्यांकन

बुन्देलखण्ड की पावन वसुन्धरा रत्नगर्भा होने के साथ वीर प्रसूता भी है। यह भूमि असि तथा मसि की धरती है। प्राचीनकाल से इस धरा–धाम पर अनेक वीरों ने जन्म लेकर इसे गौरवान्वित किया है। यदि महाराणा प्रताप, छत्रसाल तथा रानी लक्ष्मीबाई जैसे रण–बाँकुरों ने समय–समय पर इस धरती की आन–बान–शान हेतु अपने प्राणों का उत्सर्ग किया है तो इन शूर वीरों की शौर्य–गाथा गाने वाले भूषण, सुभद्रा कुमारी चौहान, श्यामनारायण पाण्डेय तथा डॉ. आनन्द जैसे वाणी–पुत्र भी यहाँ अवतरित हुए हैं। यह विशाल परिक्षेत्र अपने नाम के अनुरूप प्राचीन गौरव व धरोहरों को समेटे एक सजग प्रहरी की तरह असीम सम्भावनाओं की बाट जोह रहा है। यहाँ के कवियों में देशभक्ति, राष्ट्रीयता तथा मातृभूमि के प्रति समर्पण का भाव विद्यमान रहा है। अरविन्द घोष ने राष्ट्रवादी भावना को पूरी तरह उजागर करते हुए कहा है– 'राष्ट्रवाद, राष्ट्र में अवस्थित दिव्य एकता को अनुभव कराने की भाव–प्रवण आकांक्षा है। यह एक ऐसी एकता है, जिसमें सभी अंगभूत व्यक्ति राजनीतिक, सामाजिक या आर्थिक क्षेत्र में अपने कार्यों की दृष्टि से विविध एवं असमान होने पर भी मूलरूप से एक ही होते हैं।'

इस कथन से सिद्ध होता है कि राष्ट्रवाद वह अदम्य ताकत है, जो किसी भी शस्त्र से नष्ट नहीं हो सकती। राष्ट्रवाद स्वतंत्रता की अविच्छिन्न कथा है।

डॉ. आनन्द का 'झाँसी कीरानी' महाकाव्य राष्ट्रीयता, वीरभावना तथा देश भक्ति की अमूल्य भावनाओं का समुच्चय है। इस महाकाव्य में डॉ. आनन्द कथ्य की वैयक्तिकता से निकलकर राष्ट्रप्रेम के महान मूल्यों को अपनाते हुये दिखाई पड़ते हैं। यह रचना निजी कुण्ठा अथवा वर्ग चेतना को नहीं, अपितु राष्ट्रीय अस्मिता को अपना विषय बनाती है। **'झाँसी की रानी'** ऐतिहासिक राष्ट्रीय महाकाव्य का साहित्यिक मूल्यांकन निम्न बिन्दुओं के आधार पर किया जाता है।

क- विषय वस्तु

डॉ. आनन्द की श्रेष्ठतम कृति राष्ट्रीय ऐतिहासिक महाकाव्य 'झाँसी की रानी' पर एक दृष्टि डालने पर आपको उनके व्यक्तित्व, विचार और भाव सम्पदा के साथ उस चेतना–केन्द्र का भी परिचय अनायास प्राप्त हो जायेगा, जिससे उनका जागरूक कवि प्रेरित और प्रभावित होता रहा है। यह महाकाव्य झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की शौर्य–गाथा को 14 सर्गों में समेटे है। काव्य के प्रारम्भ में वीणा वादिनी का विनम्र प्रणाम संयुत स्तवन करते हुऐ कवि ने वीरता की प्रतिमूर्ति रानी लक्ष्मीबाई की तलवार, घोड़ा तथा बुन्देलखण्ड की पावन धरा का प्रशस्ति गायन किया है।

महाकाव्य के प्रथम सर्ग में झाँसी के राजा गंगाधर राव के आकस्मिक निधन से उद्भूत शोकाकुल रानी की असीम हार्दिकवेदना अभिव्यक्त हुई है। झाँसी राज्य के ब्रिटिश पोलिटिकल एजेन्ट मेजर एलिस द्वारा राज्य कोषागार पर ताला डालना तथा दत्तक पुत्र की शासकीय अस्वीकृति का वर्णन किया गया है। द्वितीय सर्ग में रानी द्वारा लार्ड डलहौजी के पास भेजे गये प्रार्थना पत्र का विवरण हैं; जिसमें दत्तक पुत्र को स्वीकार करने तथा झाँसी पर स्थायी अधिकार देने का निवेदन किया गया है। मेजर

एलिस ने डलहौजी के आदेश का पालन कर झाँसी के किले पर अंग्रेजी परचम लहरा दिया तथा रानी को किला छोड़ने का आदेश जारी कर दिया।

तृतीय सर्ग में अंग्रेजों के विरुद्ध राज–द्रोह की चिनगारी का वर्णन है, जो यू. पी., सी.पी., पंजाब तथा बंगाल के साथ देश के सभी प्रमुख शहरों में एक साथ भड़क उठी थी। झाँसी में पुनः रानी का राज्य स्थापित हुआ। रानी की फौज के कर्मठ सिपाहियों ने झाँसी में कोई अंग्रेज जीवित नहीं छोड़ा तथा रानी को इस कृत्य से अवगत भी नहीं होने दिया। सर्गान्त में सदा शिवराव तथा नत्थे खां के आक्रमणों का वर्णन है।

चतुर्थ सर्ग में रानी की फौज ने नत्थे खां की फौज को पराजित कर खदेड़ दिया। जब यह समाचार मध्य भारत के पॉलिटिकल एजेन्ट हेमिल्टन को मिला और उसने यह सूचना बिलायत भेजी तो जनरल रोज के सेनापतित्व में अंग्रेजी सेना ने झाँसी पर बिगुल बजा दिया। पाँचवें, छठवें तथा सातवें सर्ग में क्रमशः गर्वोन्नत बिट्रिश सेना के मदमाते सिपाहियों के जंगी जहाज का बम्बई बन्दरगाह पर आना, विभिन्न राज्यों को पराभूत करते हुये अंग्रेजी सेना का झाँसी को घेर लेना, दोनों सेनाओं की भयंकर मोरचेबन्दी तथा झाँसी में दोनों सेनाओं के मध्य घमासान युद्ध का वर्णन किया गया है। अन्त में पराजय की कगार पर पहुँचे अंग्रेज अधिकारियों ने संधि–पत्र भेज कर युद्ध बन्दी का प्रस्ताव भेजा। यह उनका कूटनीतिक षडयंत्र था।

आठवें, नवमें तथा दशवें सर्ग में अग्रवाल हलबाई एवं दूला जी बुन्देला का विश्वासघात, बोनस, फोकस एवं निकलीजन का निधन, गुलाम गौस खां तथा खुदाबख्श की मौत, रानी का निराश होकर आत्म हत्या का प्रयास तथा एक वृद्ध सरदार का आकस्मिक उद्बोधन, राजमहल को अंतिम प्रणाम करके रानी का कालपी की ओर प्रस्थान, झाँसी की भयंकर लूट, मंदिर, मस्जिद, पुस्तकालय आदि में भयंकर अग्निकाण्ड, अबलाओं के प्रति विविध अनाचार एवं अत्याचार, भारतीयों की लाशों को

अंग्रेजों द्वारा आबारा फेंकना तथा अंग्रेजों की लाशों का विधिवत् संस्कार आदि का वर्णन है। ग्यारहवें सर्ग में भाण्डेर में रानी का लेफ्टिनेंट वाकर से युद्ध, रानी के प्रहार से वाकर घायल, जालौन जनपद में रानी का प्रवेश, तात्या टोपे, बाँदा के नबाब तथा कानपुर के बुन्देला की सेना द्वारा रानी के सहयोग का वर्णन है।

बारहवें सर्ग में रानी का अंग्रेजी सेना से घमासान युद्ध तथा पन्त, पेशवा और तात्या टोपे आदि सभी विद्रोहियों के जमाव का वर्णन है। ग्रीष्म ऋतु की भंयकरता का दृश्य भी उपस्थित हुआ है। तेरहवें सर्ग में रानी की फौज का ग्वालियर पर अधिकार वर्णित है। रानी की फौज द्वारा नानाराव पेशवा की संरक्षता में ग्वालियर फूलबाग में वीरों का जंगी दरबार हुआ। इस विजयोल्लास में ख्याति प्राप्त नर्तकियों का नृत्य–गान–कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। अन्तिम चौदहवें सर्ग में शत्रुओं की सेना से घमासान युद्ध करती हुई रानी शत्रुओं द्वारा तीनों ओर से घेर ली गई। रानी के प्रमुख वीरों ने जमकर युद्ध किया। अन्त में रानी अपनी अमर कीर्ति की एक वीर गाथा छोड़कर इस संसार से सदा के लिए विदा हो गई।

महाकाव्य के उपरोक्त सन्दर्भ अत्यंत संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किये गये हैं। पूर्ण परिचय तो विस्तृत अध्ययन से ही संभव है। 'झाँसी की रानी' ऐतिहासिक राष्ट्रीय महाकाव्य वीर–काव्य के क्षेत्र में अद्वितीय रचना है, सर्वांगीण सुन्दर है। इससे महारानी लक्ष्मीबाई के आदर्श चरित पर प्रकाश तो पड़ता ही है, साथ ही यह हिन्दी पाठकों और नवयुवकों के लिए एक सतत् प्रेरणा का स्रोत है।

ख- 'झाँसी की रानी' में राजनीतिक संदर्भ

भारत की संस्कृति सदैव से उदार और सबको अपने अन्तर्गत समाहित कर लेने की क्षमता से परिपूर्ण रही है। पर अनेक बार इस विशद भावना को हमारी कायरता मानने की भूल करने वालों को समुचित उत्तर देने की क्षमता भी हम में रही है। कविवर डॉ. आनन्द के महाकाव्य 'झाँसी

की रानी' में ऐतिहासिक, राजनीतिक और पारम्परिक चरित्र के आदर्श का गायन है। कवि ने एकसीमा तक मनोविश्लेषण करके अपने अन्तर्मन की गुफा में अनुभवों की मणियों को तलाशा है और समाज, राष्ट्र तथा विश्व का व्यापक अर्थों में चित्रांकन किया है। तत्कालीन परिस्थितियाँ अत्यन्त भयावह और त्रासद थीं, उनके भीतर से गुजर कर ही रचना–धर्म सार्थक एवं वजनदार हो सका है। कवि ने अतिरंजित अंकन से बचते हुए युगीन यथार्थ को प्रभावशाली एवं हृदयस्पर्शी ढँग से व्यक्त किया है।

'जब जाति, भाषा, धर्म, भूगोल, इतिहास तथा आकांक्षाओं के बंधनों में संगठित जनता भावात्मक एकता अनुभव करती है, तब राष्ट्रीय भावना का जन्म होता है। जब राष्ट्रीय भावनाओं से प्रेरित होकर जनता राजनीतिक एकता एवं स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने लगती है, तब राष्ट्रीय जाग्रति की स्थिति होती है।'[1]

भारत में अंग्रेजों के बढ़ते हुए आधिपत्य से जनसाधारण वर्ग में भले ही सक्षम विरोध जाग्रत न हुआ हो, पर स्वदेशी रजवाड़ों को ब्रिटिश शासन के बंधन स्वीकार न थे। अंग्रेज शासक भारतीय राजाओं के मान–मर्यादा और कुल–गौरव पर कुठाराघात करने में कोई कसर नहीं उठा रखते थे तथा अपने नित्य नवीन कानूनों से जमींदारों व राजाओं को दासता की बेड़ियों में जकड़ने के लिये प्रयत्नशील रहते थे। राजाओं में व्यक्तिगत शौर्य एवं वंशानुगत वीरता का अभाव नहीं था, किन्तु कतिपय राजाओं ने क्षुद्र स्वार्थ के वशीभूत होकर अंग्रेज शासकों से गठबंधन करके अपनी मातृभूमि की अस्मिता पर बज्राघात किया था, तथापि कुछ संगठित राजाओं के हृदय में विदेशी शासन की भावनाओं को कुचल देने के लिए एक वेगवती लहर उत्पन्न हुई, जिसने भारतीयों के मानस में व्याप्त साहस एवं अदम्य पौरुष को जाग्रत कर दिया, जिससे अंग्रेज शासक भारतीय राजाओं के कट्टर शत्रु हो गये।

1– भारतीय शासन एवं राजनीति, एम.पी. त्यागी, संजीव प्रकाशन मेरठ, पृष्ठ 5

भारतीयों की स्वतंत्रता प्राप्त करने की प्रबल इच्छा का संकेत करते हुए डॉ. हरिहर निवास द्विवेदी ने लिखा है कि–'भारतीय इतिहास इस बात का साक्षी है कि काल और परिस्थितियों के प्रबल थपेड़े भी इस देश की आत्मा को पराजित नहीं कर सके। यहाँ की जनता ने सदैव ही विरोधी विचार धाराओं को आत्मसात करने और विदेशियों के आधिपत्य से अपने को मुक्त करने का यत्न किया है।'[1] इसी स्वातंत्र्य भावना से प्रभावित होकर डॉ. आनन्द ने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देकर राजनीतिक आन्दोलनों में भाग लिया तथा अज्ञातवास करते हुए कुछ वर्षों के लिए जेल यात्रा भी की। **'झाँसी की रानी'** महाकाव्य में समावेशित राजनीतिक संदर्भों को निम्न विन्दुओं के आधार पर दर्शाया जा सकता है।

1- दत्तक पुत्र-विधान

21 नवम्बर सन् 1853 ई. को झाँसी के नरेश महाराजा गंगाधर राव की नाड़ी की गति मंद पड़ते ही उनके मृदुमय उच्चारण सदैव के लिए बन्द हो गये, महाराजा चिर–निद्रा लीन हो गये। साम्राज्य में महाशोक छा गया। वीरांग्ना महारानी लक्ष्मीबाई के सिर पर क्रूरकाल ने अचानक दैवी प्रकोप का पहाड़ गिरा दिया और रानी आर्त्तनाद करती हुई पछाड़ खाकर गिर पड़ी। गंगाधर राव निःसन्तान थे। उन्होंने दामोदर राव को दत्तक पुत्र के रूप में ग्रहण किया था। कानूनन राज्य का उत्तराधिकारी दामोदर राव ही था। इस विषय में बंगाल के अंग्रेज गवर्नर ने दिल्ली के बादशाह को एक समय जो पत्र भेजा था, वह स्वीकार किया गया था, किन्तु राजा के निधनोपरान्त दत्तक–सम्बन्धी जो विनय–पत्र भेजा गया, उसे ब्रिटिश सरकार ने अस्वीकृत कर दिया। यद्यपि विनय–पत्र में संधि–पत्र की दूसरी धारा का प्रमाण भी दिया गया था, जिसके अन्तर्गत झाँसी राज्य का हक उनके वंशजों को वंश–परम्परा विधान के तहत पास हुआ था–ये वंशज चाहे उसी वंश में उत्पन्न हुए हों या दत्तक लिए गये हों।

1– मध्य भारत का इतिहास–चतुर्थखण्ड, डॉ. हरिहर निवास द्विवेदी, सूचना प्रकाशन मध्यप्रदेश, प्रथम संस्करण 1959 ई., पृष्ठ 1

इंग्लैण्ड की पार्लियामेन्ट सभा में लार्ड डलहौजी ने अपने विचार प्रकट किये, जो '**हिस्ट्री आफ दी सिपाई वार**' में छपे हैं।– *"झाँसी सरकारी जिलों के बीच में है। अतएव उसको अपने कब्जे में ले लेने से हमको बुन्देलखण्ड में अपने सब प्रान्तों की अन्दरूनी राज्य व्यवस्था सुधारने में सुभीता होगा। झाँसी को अंग्रेजी राज्य में मिला लेने से जो लाभ होगा, वह हमारे अनुभव के कुछ पलों के उल्लेख से प्रकट होगा।"*[1]

अंग्रेज सरकार का उपर्युक्त निर्णय झाँसी राज्य की आशाओं के विपरीत तो था ही, एक कूटनीतिक षड्यंत्र भी था। संधि–पत्र की भाषा का अर्थ यह था कि जब वारिश का हक वंश–परम्परा के लिए दिया गया था, तब उसका यही अर्थ समझा गया था कि समय–समय पर जो वारिश होंगे, उन्हें राज्य का सब हक, अधिकार और वैभव प्राप्त होगा। इस बात का निर्णय विदेशियों के कानून के अनुसार नहीं किया जायगा, किन्तु वह, रियासत तथा राज्य के नियमों के अनुसार किया जायेगा, जिसकी स्वाधीनता की रक्षा के हेतु संधि की गई थी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी को इंग्लैंड के राजा तृतीय जार्ज की ओर से जो सनद मिली थी, उसमें लिखा है– 'उक्त देश के निवासियों के नागरिक (मुल्की) और धार्मिक रीतिरिवाजों का यथोचित आदर करने हेतु यह कायदा बनाया जाए कि कुटुम्बों के पिता और स्वामियों के हक और अधिकार उसी प्रकार सुरक्षित रहेंगे जिस तरह वे हिन्दू या मुसलमानों के कायदों के अनुसार बरते जाते थे।'[2] किन्तु खेद का विषय है कि इंग्लैंड के राजा तृतीय जार्ज के द्वारा मिली हुई इस सनद की शर्तों को लार्ड डलहौजी ने रद्दी की टोकरी में फेंक दिया। जिसका परिणाम आगे चलकर भारत वर्ष और इंग्लैंड दोनों को ही भोगना पड़ा।

अंग्रेजी शासन के निर्णयानुसार झाँसी राज्य को ब्रिटिश राज्य में मिलाने की घोषणा सुनते ही रानी लक्ष्मीबाई बौखला गई और कह उठी–

1– झाँसी की रानी, डॉ. आनन्द– पाद टिप्पणी, पृष्ठ 50

2– उपरिवत्, पृष्ठ 54

मैं सब कुछ दूँगी निज कर से,
चाहे निज की फाँसी दूँगी।
पर झाँसी है स्वातंत्र राज्य,
इसलिए नहीं झाँसी दूँगी।।
चाहे मैं अपनी आँखों से,
देखूँ अपनी बरबादी को।
पर सहज न होगा लेजाना,
मुझसे मेरी आजादी को।।[1]

दृढ़ प्रतिज्ञ रानी के कठोर वचनों को सुनकर मेजर एलिस ने सान्त्वनायें तो दीं किन्तु अपनी नीतियों को चरितार्थ करने तथा लार्ड डलहौजी के फरमान को लागू करने हेतु वह तुरन्त फौज लेकर आ गया। डॉ. आनन्द लिखते हैं—

मेजर एलिस तब रानी को,
चल दिये सान्त्वनायें देकर।
आ गये लौटकर कुछ क्षण में,
वह बारहवीं पलटन लेकर।।
अब नहीं मराठी राज्य यहाँ,
यहएलिस का एलान हुआ।
ले लिया गया अंग्रेजी में,
डलहौजी का फरमान हुआ।।[2]

झाँसी राज्य जब्त हो जाने पर महारानी लक्ष्मीबाई ने लन्दन के कोर्ट आफ डाइरेक्टर्स से इस विषय का निर्णय कराने के लिए उमेशचन्द्र बनर्जी नाम के एक बंगाली वकील और किसी एक यूरोपियन को साठ हजार रूपये देकर बिलायत भेजा, पर इसका कुछ पता न चला कि इन

1— झाँसी की रानी, पृष्ठ 55—56

2— उपरिवत्, पृष्ठ 56—57

लोगों ने बिलायत जाकर क्या किया। इस सम्बन्ध में 'डलहौजी एडमिनिस्ट्रेशन टू ब्रिटिश इण्डिया' नामक ग्रन्थ में इस प्रकार लिखा है–

'सतारा, नागपुर और झाँसी इन तीन रियासतों के उदाहरणों से यह बात प्रकट होती है कि गवर्नर जनरल ने राज्य के सब सूत्रों को एक केन्द्र स्थान में एकत्र करने की अपनी अनिवार्य तृष्णा से हिन्दुस्तान के सब राज्यों को उखाड़ने और हिन्दू शास्त्र की सौम्य तथा श्रेष्ठ विधियों का नाश करने का भी यत्न किया।'[1]

उस समय के हिन्दू और मुसलमान दोनों ने यह मान लिया था कि हमारा धर्म निर्मूल किया जा रहा है–उन्हें सरकार से घृणा करने का अच्छा अवसर मिल गया। जो देशी रियासतें पूर्व में अंग्रेजी राज्य में समाहित कर ली गईं थीं, वे पहले से ही अंग्रेजी सरकार से क्षुब्ध थीं। इसी समय सरकारी फौज के हिन्दू और मुसलमान सिपाहियों के मन कारतूस में लगी चर्बी के कारण धर्म–भ्रष्ट होने के भय से खिन्न हो रहे थे, इसी कारण आगे चलकर सिपाही विद्रोह का आरम्भ हुआ।

उपर्युक्त राजनीतिक संदर्भों को डॉ. आनन्द ने **'झाँसी की रानी'** महाकाव्य में सफलता पूर्वक चरितार्थ किया है। राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत कवि ने अदम्य उत्साह के साथ स्वातंत्र्य आदोलन में भाग लिया तथा उग्रवादी गर्मदल में सक्रियता का निर्वाह करते हुए जेल–जीवन भी भोगा। तत्कालीन सामाजिक–राजनीतिक जीवन में फैली हुई विकृति से मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी तथा कवि का क्षुब्ध होना स्वाभाविक था। जब अन्तःकरण में भावालोड़न होता है, तब सृजनकार के समक्ष एक प्रकार की बाध्यता होती है। यही बाध्यता सृजन का हेतु बनती है। यही सृजन सृजनकार को एक अनूठा आनन्द प्रदान करता है। डॉ. आनन्द ने महाकाव्य में अंग्रेजों के कूटनीतिक षड्यंत्रों, अन्याय व अत्याचारों को उजागर किया है तथा इतिहास सम्मत राजनीतिक संदर्भों को काव्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

1– झाँसी की रानी–पाद टिप्पणी, पृष्ठ 59

2– ब्रिटिश नीति

'प्रारम्भ में अंग्रेज भारत में व्यापार करने के उद्देश्य से आये थे, किन्तु बाद में अपनी कूटनीति से भारत के वास्तविक शासक बन गये। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारतीय व्यापार और उद्योग–धन्धों को भारी क्षति पहुँचानी प्रारम्भ कर दी। उसने देशी उद्योग–धन्धों को समूल नष्ट करके भारत के व्यापार पर एकाधिकार स्थापित कर लिया।'[1] अंग्रेजों की आर्थिक शोषण नीति ने शिक्षित भारतीयों को बहुत उत्तेजित किया, फिर भी अंग्रेज अपनी जड़ें जमाने में सफल हो गये।

ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों को सिविल सर्विसेज अर्थात् उच्च सरकारी पदों पर प्रतिष्ठित होने में प्रतिबंध लगाकर निराशाजनक स्थिति उत्पन्न कर दी। प्रेस की स्वतंत्रता का अपहरण किया। शस्त्र अधिनियम पारित कर भारतीयों के शस्त्र रखने पर प्रतिबंध लगाया। इस प्रकार अंग्रेज सरकार ने विभिन्न दुर्नीतियाँ लागू कर भारतीयों को विकास से वंचित कर पारस्परिक संघर्ष उत्पन्न किये। यहाँ तक कि राजाओं में भी फूट डालकर विभाजन कर दिया। कुछ राजाओं को पद–प्रतिष्ठा, मान–सम्मान देकर अपने पक्ष में ले लिया। अन्य राजाओं को दण्डित करके राज्याधिकार से वियुक्त कर दिया। सन्तानहीन राजाओं को दत्तक लेने की स्वीकृति देकर भी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के विनम्र निवेदन को ठुकरा दिया। सतारा तथा नागपुर की रियासतों को भयभीत ही नहीं किया, वरन् हिन्दू धर्म की जड़ को समूल उन्मूलित करने तथा हिन्दू शास्त्र की सौम्य, श्लाघ्य तथा श्रेष्ठ विधियों को नष्ट करने का यत्न भी किया।

अंग्रेजों की विद्वेषपूर्ण नीतियों तथा 'फूट डालो और राज्य करो' सिद्धान्त से भारतीयों के हृदय में भीतर ही भीतर राजद्रोह पनप रहा था। असन्तोष व्याप्त था। जन–मानस बौखला रहा था। इसी समयदेशी फौजों को यह सूचना प्राप्त हुई कि कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी

1– भारतीय शासन एवं राजनीति– एम.पी.त्यागी, पृष्ठ 87

लगकर आ रही है। इस सूचना से हर ओर अराजकता फैल गई। सम्पूर्ण भारत में विप्लव की स्थिति उत्पन्न हो गई। राजद्रोह भड़क उठा। डॉ. आनन्द 'झाँसी की रानी' में लिखते हैं–

फौजें बोलीं– विद्रोह करो,
पलटन बोलीं– विद्रोह करो।
सब बोल उठे– गोले–गोलीं,
विद्रोह करो विद्रोह करो।।
है चार जून का समाचार,
उत्पाद भयंकर बड़ा हुआ।
यों अकस्मात् झाँसी में भी,
बलवे का झंडा खड़ा हुआ।।[1]

चारों ओर से अचानक उठ खड़े हुए विप्लव के बादलों की सूचना जब झाँसी में पहुँची, झाँसी में शान्ति विद्यमान थी। उस समय झाँसी कमिश्नर मि. स्कीन अपनी रिपोर्ट में शान्ति और सुरक्षा का दावा करते हैं– "झाँसी में उपद्रव उठने का कोई भय तक दिखाई नहीं पड़ता, यहाँ की फौज बहुत ईमानदार है। बुन्देलखण्ड के छोटे–छोटे राज्यों के सम्बंध में भी कुछ भय नहीं है, क्योंकि इस समय ओरछा, छतरपुर और अजयगढ़ के राजा नाबालिग हैं और शेष राजाओं का प्रबंध अच्छी तरह कर लिया गया है, इसलिए मुझे पूरा विश्वास है कि यहाँ हम लोग सुरक्षित हैं।"[2]

उपर्युक्त रिपोर्ट से स्पष्ट है कि कमिश्नर झाँसी की संतोषजनक एवं शांतिपूर्ण स्थिति से पूर्ण सन्तुष्ट था किन्तु जब कारतूस की चर्बी का समाचार सुनकर फौज भड़क उठीं, झाँसी में भी क्रान्तिपूर्ण वातावरण समुत्पन्न हो गया। झाँसी में हर तरफ दंगा–फसाद, हत्यायें, तोड़–फोड़ तथा लूट–पाट का भयावना दृश्य उपस्थित था। अंग्रेजों ने जब अपने को

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 69

2– झाँसी की रानी, पाद टिप्पणी–पृष्ठ 68

सब ओर से निराश अनुभव किया, 'तब हार मान अंग्रेजों ने लाचार संधि प्रस्ताव किया'।

झाँसी में हुए विप्लवकारी ताण्डव का दोषी अंग्रेजों ने महारानी लक्ष्मीबाई को ठहराया। इस सम्बन्ध में अंग्रेजों के दिये हुये प्रमाणों को 'दी इण्डियन इम्पायर' ग्रन्थ में मि. मार्टिन साहब व्याख्यायित करते हैं–

'वे (महारानी लक्ष्मीबाई) मूर्ति पूजक थीं। अपराधों को क्षमा करना उनके धर्म ही में नहीं बतलाया गया। दत्तक और उत्तराधिकारी विषयक हिन्दू धर्मशास्त्र के नियमों के भंग से उन्होंने अपनी बहुत हानि समझी, और इसी से दुखित होकर उन्होंने लिंग और वय का कुछ भी विचार अपने मन में नहीं किया और सर्वशक्तिमान सरकार से भयंकर युद्ध आरम्भ कर दिया।'[1]

उपर्युक्त ऐतिहासिक टिप्पणी से यह अर्थ अभिव्यक्त है कि रानी ने जान बूझकर यह संघर्ष प्रारम्भ किया और सारा दोष रानी का ही है। जबकि इसी प्रकरण को 'हिस्ट्री आफ दि इण्डियन म्यूटिनी' में मि. मेलिसन इस प्रकार लिखते हैं–

'ब्रिटिश सरकार ने महारानी लक्ष्मीबाई के क्रोध और शिकायतों की कुछ परवाह न की। उन्होंने इस कारण भी यह बुरा काम किया, अर्थात् उन्होंने मानहानि के साथ बड़ी नीचता भी की। जिस समय सरकार ने झाँसी का राज्य जब्त कर लिया था, उस समय महारानी लक्ष्मीबाई को 500रूपये मासिक पेन्शन दी गई थी। पहले महारानी ने पेन्शन लेना स्वीकार न किया, परन्तु अन्त में उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया। जब उनसे यह कहा गया कि अत्यल्प वेतन में उनके पति का कर्ज भी अदा किया जाना चाहिए, तब वे कितनी कुपित हुई होंगीं, इस बात को हम कल्पना से जान सकते हैं।'[2]

1– झाँसी की रानी, पाद टिप्पणी, पृष्ठ 71

2– उपरिवत्, पृष्ठ 72–73

उपर्युक्त टिप्पणी से प्रतीत होता है कि रानी पूर्णतः निर्दोष थी। रानी के साथ अंग्रेजों ने बहुत अन्याय किये थे। जैसे—हिन्दुओं की बस्ती में गो—बध करना तथा मन्दिर के नाम पर प्राचीन राजाओं के दिये गये गाँवों को जब्त कर लेना आदि। इस शूर प्रकृति और तेजस्विनी स्त्री के हृदय में जो बात सबसे अधिक खटकती थी, वह स्वयं उसका अपमान ही था। इसलिए 1857ई. के प्रारम्भ में घृणित अंग्रेजों के विद्रोह के चिह्न देशी सिपाहियों में दिखाई पड़ने लगे, तब वह अत्यन्त हर्षित होकर उन लोगों में शामिल हो गई।

झाँसी के हत्याकाण्ड में रानी के निर्दोष होने के और भी प्रमाण हैं। अंग्रेजी के प्रसिद्ध इतिहासकार के॰ साहब लिखते हैं कि— 'मुझे यह बात दृढ़ प्रमाण सहित विदित हुई है कि इस बध के समय महारानी का एक भी नौकर वहाँ उपस्थित न था। यह कार्य मुख्यतः हमारे पुराने अनुयाइयों का प्रतीत होता है। **'इर्रेग्युलर केवलरी'** हत्या की आज्ञा दी और हमारा जेल—दरोगा उन हत्यारों का अगुवा था।'[1]

इससे प्रमाणित होता है कि रानी सर्वथा निर्दोष थी और अंग्रेजों के अपने कहलाने वाले असन्तुष्ट लोगों ने ही यह कार्यवाही की थी। इसको प्रमाणित करते हुए डॉ. आनन्द ने भी लिखा है—

अहमद हुसेन तहसीलदार,
काले खाँ वीर विजेता थे।
यह थे सब सरकारी नौकर,
पर इस बल्वे के नेता थे।।
झाँसी में बख्शिस अली एक,
पहिने जेलर का चोंगा था।
वह जेल दरोगा थे लेकिन,
विप्लव के बड़े दरोगा थे।।[2]

1— झाँसी की रानी, पाद टिप्पणी, पृष्ठ 77

2— झाँसी की रानी, पृष्ठ 70

तात्पर्य यह है कि अंग्रेजों की दमन नीति के कारण सरकारी फौज के प्रतिनिधि ही शासन के विरुद्ध आन्दोलन में सक्रिय थे। ब्रिटिश इतिहासकारों द्वारा लिखे गये लेखों से भी महारानी लक्ष्मीबाई के शुद्ध हृदय का पूरा–पूरा परिचय मिलता है। दुर्भाग्य की बात है कि फिर भी वह वागियों की पंक्ति में बिठला दी गई।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि डॉ. आनन्द पर देश की राजनीतिक गतिविधियों का पर्याप्त प्रभाव था। आजादी की लड़ाई में डॉ. आनन्द गर्मदल के सक्रिय सदस्य थे। चन्द्रशेखर आजाद, लाल बहादुर शास्त्री, पं.परमानन्द जी तथा अन्य क्रान्तिकारी इनके निवास पर समय–समय पर आते थे। वमकाण्ड में डॉ. आनन्द को कारावास भी भोगना पड़ा था। काकोरी काण्ड तथा अन्य ब्रिटिश विरोधी आन्दोलनों में भाग लेकर देश की राजनीति में सक्रिय योगदान करने वालेडॉ. आनन्द कईबार भूमिगत रहे तथा जेल यात्रायें भी कीं। आपके व्यक्तित्व और कृतित्व निर्माण में देश की राजनीति का व्यापक प्रभाव रहा। राजनीति से प्रभावित होकर आपने समय समय पर राजनीतिक संदर्भों को अपने काव्य में समायोजित किया। यदि यह कहा जाय कि राजनीतिक संदर्भों के श्रेष्ठ प्रतिपादन के कारण ही 'झाँसी की रानी' महाकाव्य राष्ट्रीय ऐतिहासिक महाकाव्य सिद्ध हो सका, तो कोई अतिरंजना नहीं होगी।

3– राज्यों के पारस्परिक सम्बंध

देशी राजाओं की राज्य सीमायें सत्ता–संघर्ष का केन्द्र रही हैं, इसी से सीमाओं में समय– समय पर परिवर्तन होते रहे हैं। सत्ता विस्तार के लिए शासक वर्ग एक–दूसरे को पराजित करके सन्तुष्टि का अनुभव किया करते थे। जिस समय भारत में अंग्रेजों का प्रभुत्व स्थापित हो गया, कुछ राजा महाराजाओं ने अपने संकीर्ण स्वार्थ पूर्ति के उद्देश्य से अंग्रेजों से निकट सम्बंध बना लिये। इस कार्य के लिए भले ही उन्हें किसी अपने ही देशी राजा की कुर्बानी क्यों न देनी पड़ी हो, और देर–सबेर अपना स्वयं का ही अहित क्यों न झेलना पड़ा हो।

अंग्रेजों ने झाँसी को चारों ओर से घेर लिया। रानी लक्ष्मीबाई असीम साहस और अप्रतिम शौर्य का परिचय देते हुये संघर्ष में प्रवृत्त थीं। ओरछा और दतिया नरेश कुछ ही दूरी पर सारी गतिविधियों पर वक्र दृष्टि लगाये थे। रानी के पराभव और झाँसी को अधिकृत करने की ताक में थे। कतिपय प्रयास भी किये गये, किन्तु रानी ने अपनी वीरता से दोनों राजाओं के दाँत खट्टे कर दिये।

ग्वालियर नरेश सिंधिया अंग्रेजों के भक्त थे। प्रतिफल में उन्हें अभयदान प्राप्त था तथा मान–सम्मान भी। स्वदेशी राजाओं के साथ विश्वासघात करके अंग्रेजों से मैत्रीभाव–राजनीति का घृणित स्वरूप था; स्वार्थ परायणता थी तथा अंध विश्वास भी था।

झाँसी में रानी लक्ष्मीबाई के अबला शासन को देखकर कुछ सत्ता–लोलुप राजाओं का मन ललचाने लगा और वे अपनी सेनायें सजाकर झाँसी पर आक्रमण करने लगे, किन्तु रानी की वीरता से पराभूत होकर प्राण बचाकर लौट गये। उन आक्रमणकारियों में एक सदाशिवराव था तथा दूसरा नत्थे खाँ। सदाशिव राव को रानी ने झाँसी में ही कैद करवा लिया तथा नत्थे खाँ की विशाल फौज से रानी का भीषण युद्ध हुआ। उस युद्ध का एक चित्र देखिये–

डगमग डगमग दिग्मंडल था,
तोपें दगती थीं धुवाँ धार।
रवि का प्रकाश पड़ गया मन्द,
छा गया गगन तक अंधकार।।[1]

रानी की फौज ने उस आक्रमण का डटकर प्रतिरोध किया, परिणामतः नत्थे खाँ युद्ध का मैदान छोड़कर भाग गया। उदाहरण दृष्टव्य है–

रणभूमि छोड़कर भाग चला,
नत्थे खाँ भी निजहार मान।
फिर लगा गगन तक फहराने,
रानी के रण–यश का निशान।।[2]

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 85

2– उपरिवत्, पृष्ठ 86

उपर्युक्त विवरणों से यह आशय निकलता है कि देशी राजे–महाराजे पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष एवं वैमनस्य से ग्रस्त थे। इन्हीं राजाओं की विद्वेषपूर्ण नीति ने कवि के अन्तर्मन को झकझोरा है तथा काव्य–प्रणयन की प्रेरणा प्रदान की है। इन राजनीतिक संदर्भों को डॉ. आनन्द ने **'झाँसी की रानी'** महाकाव्य में भलीभाँति रूपायित किया है।

4– स्वाधीनता संग्राम

भारत वर्ष में अंग्रेजी राज्य के प्रति जो असंतोष उत्पन्न हुआ था, उसके अनेक कारणों का उल्लेख 'मैमोरियल्स' नामक एक ग्रंन्थ में इस प्रकार किया गया है– 'हमारे शासन से इस देश के लोगों में जो असन्तोष उत्पन्न हुआ, उसके मुख्य कारण ये हैं– देशी रियासतों की स्वाधीनता का नाश, राजाओं और समाजनायकों की मानहानि, जमींदारों के माफी लगान के पैतृक स्वत्व का अपहरण, माल गुजारी के बाकी के लिए जमींदार–जायदाद को मुन्तकिल करना, गवर्मेन्ट की उत्तम सेवा करने वालों को भी किसी प्रकार का मान या जागीर न देना, हमारे अफसरों और इस देश के राजाओं, समाजनायकों और लोगों में मेल करने वाले और विश्वास–योग्य व्यवहार का अभाव इत्यादि।'[1]

उक्त ऐतिहासिक टिप्पणी से भारतीयों की क्षुब्धता के कारण स्पष्ट हैं। सन् 1949 में जमींदारी प्रथा का उन्मूलन, राजाओं का अपमान, लगान प्राप्त करने का अधिकार छीनना तथा राजाओं के साथ तथा कथित दुर्व्यवहार ही असंतोष के मुख्य कारण थे। अंग्रेज सरकार क्रमशः रियासतों पर अधिकार करती रही, युद्ध होते रहे तथा निर्दोष जनता का नर–संहार किया जाता रहा। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने भयंकर युद्ध करके कई बार अंग्रेजों के दाँत खट्टे किये। अन्ततः अपने ही अकतपय देश–द्रोहियों के कारण रानी को पराजय का मुँह देखना पड़ा। अन्त में बुन्देलखण्ड की वह वीर बाला महारानी लक्ष्मीबाई अद्वितीय साहस और बुद्धि चातुर्य से शत्रुओं के अभेद्य व्यूह में प्रवेश कर बाहर निकल गई। यह एक महान आश्चर्य की बात थी।

1– झाँसी की रानी– पाद टिप्पणी, पृष्ठ 60

स्वाधीनता संग्राम की मुख्य वीरांग्ना झाँसी से कालपी की ओर बढ़ी चली जा रही थी वीरता की प्रतिमूर्ति के रूप में। कुछ वीर सैनिक साथ में थे। अखण्ड विश्वास एवं दृढ़ संकल्प के साथ दुधारू तलवार लिये रानी अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर थी। रानी की दृढ़ता एवं अप्रतिम शौर्य को रेखांकित करती कवि की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

इस क्षण रानी के साथ–साथ, संकल्प चले विश्वास चला।

वलिदान चले आगे–आगे, पीछे–पीछे इतिहास चला।।[1]

रानी लक्ष्मीबाई का पीछा दलबल सहित लैफि्टनेन्ट 'बाकर' कर रहा था। रानी ज्यों ही भाण्डेर (एक कस्बा) पहुँची, बाकर ने घेर कर गिरफ्तार करना चाहा, किन्तु वह रानी के एक ही बार से घायल होकर धराशाही हो गया। रानी बढ़कर जालौन जनपद की सीमा पर पहुँची और कुछ ही समय में कालपी में प्रवेश किया। स्वाधीनता संग्राम की परिस्थितियों ने मोड़ लिया। रानी की सहायता के लिए पेशवा, तात्या टोपे, बाँदा के नबाब तथा बुन्देला राजा कानपुर और अन्य अनेक वीर मिलकर युद्ध के लिए सन्नद्ध थे। अंग्रेजों की फौज भी कालपी पर मृत्यु के गोले बरसा रही थी। भयंकर युद्ध हुआ। पंत, पेशवा, रानी लक्ष्मीबाई तथा तात्या टोपे सभी योद्धाओं के छक्के छूट गये।

स्वाधीनता संग्राम के प्रमुख नेता थे नानाराव पेशवा तथा राष्ट्रीय फौज के प्रधान सेनापति थे तात्या टोपे। सभी के परामर्श से ग्वालियर किले को हस्तगत करना तय हुआ। वीरता पूर्वक आगे बढ़ते हुये ग्वालियर राज्य पर रानी का अधिकार हो गया। सिंधिया ग्वालियर छोड़कर अंग्रेजों की शरण में आगरा चले गये। तात्या टोपे के सेना पतित्व में फौज की शक्ति सुदृढ़ कर ली गई। किन्तु अंग्रेजों में जनरल ह्यूरोज हैदराबाद की फौज लेकर आये, मेजर आर, कर्नल लिंडेल तथा जनरल नेपियर ने चारों ओर से ग्वालियर राज्य पर आक्रमण किये। घमासान युद्ध हुआ। सन्

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 145

1858 की 19 जून–ज्येष्ठमास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि थी। महान योद्धा अपने प्राणों की बाजी लगाकर स्वाधीनता संग्राम में बलिदान हो रहे थे। तात्याटोपे ने भयंकर युद्ध में धरती को रक्तरंजित कर दिया। उदाहरण प्रस्तुत है–

रण की धरती को लाल लाल,
कर दिया तांतिया टोपे ने।
शोणित से काली का खप्पर,
भर दिया तांतिया टोपे ने।।[1]

युद्ध करते हुये रानी चारों ओर से घिर गई। सिंधिया अस्तबल का घोड़ा सोन रेखा नामक नाला पार न कर सका। रानी पर दुश्मनों के बार–बार प्रहार हुए। अन्ततः रानी शत्रुओं से अपने को न बचा सकी और इस नश्वर संसार को त्यागकर विश्वात्मा में सदैव के लिए विलीन हो गई।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि डॉ. आनन्द प्रणीत 'झाँसी की रानी' महाकाव्य का कथानक राजनीतिक संदर्भो से पूर्णतः सम्पृक्त है। कहीं राजनीति ने कूटनीतिक षड्यंत्रों का रूप ले लिया है, तो कहीं राजनीतिक गुत्थियाँ अपने सघनतम रूप में उलझी हुई प्रतीत होती हैं। महाकाव्य का सम्पूर्ण इतिवृत्त राजनीतिक दाव पेचों का दस्तावेज सा प्रतीत होता है। डॉ. आनन्द ने ऐतिहासिक तथ्यों को काल्पनिक घटनाक्रम में राजनीति का पुट देकर ऐसा ग्रथित किया है कि सम्पूर्ण महाकाव्य में इतिहास के साथ राजनीतिक परिदृश्य भी समुपस्थित हो गया है।

ग– तत्कालीन सामाजिक स्थिति

कवि का धर्म अत्यंत व्यापक होता है। वह देश, समाज एवं विश्व के प्राणि–मात्र के प्रति सजग प्रहरी के रूप में कार्य करता है। वह लोक में भावनात्मक रस–धारा को प्रवाहित करता है। इस रस–धारा में न जाने कितने अशान्त हृदय तृप्ति का अनुभव करते हैं। किन्तु जब देश की

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 212

अस्मिता पर विदेशियों द्वारा नहीं वरन् अपनों के द्वारा ही प्रहार होता है, तो कवि कहीं अपने प्राचीन गौरवशाली इतिहास की दुहाई देता है; और कहीं वर्तमान सामाजिक कुरीतियों के प्रति आक्रोश व्यक्त करता है। भारतीय समाज में व्याप्त आपा–धापी, भ्रष्टाचार, अनाचार तथा असद् व्यवहार को देखकर कवि का हृदय विषाद से भर जाता है। इस विषाद और क्षोभ को व्यक्त करने के लिए कवि यत्किंचित संकोच भी नहीं करता है। डॉ. आनन्द का कवि सामयिक संवेदनाओं से पूर्ण रूपेण जुड़ा हुआ है। सामयिक संवेदनाओं का जुड़ाव जहाँ एक ओर विषय के फलक को विस्तार देता है, वहीं दूसरी ओर कवि की भावुकता का निदर्शन भी करता है।

'झाँसी की रानी' महाकाव्य में मानवीय सार्थकता, भाव गंभीरता, व्यक्ति की आत्मीयता, सामाजिक और राजनीतिक कुत्सा, अराजकता तथा मन की उद्विग्नता को कवि ने विविध संदर्भों में प्रस्तुत किया है। कवि की भावभूमि का विस्तार एवं सौन्दर्य अपनी सघनतम् अनुभूतियों के साथ अभिव्यक्त हुआ है।

अंग्रेजी शासन के आधिपत्य के उपरान्त हिन्दुओं की सामाजिक व्यवस्था असंतोष जनक एवं अव्यवस्थित हो गई थी। हिन्दुओं में अधिकांश प्राचीन परिपाटी के पोषक था। समाज अंध–विश्वासों, कुप्रथाओं तथा दुनीर्तियों के चंगुल में फँसा था। पोंगा पंथी तथा मिथ्याडम्बर वादी लोग अपना वर्चस्व बनाने में व्यस्त थे। उनके वर्चस्व के कारण धर्म का वास्तविक स्वरूप बाधित हो रहा था। पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष तथा वैमनस्य का बोल बाला था। अन्याय, अत्याचार तथा दुराचार की वृद्धि हो रही थी। देश में निर्धनता, निराशा, नास्तिकता तथा असन्तोष अधिक मात्रा में थे।

डॉ. आनन्द रचित **'झाँसी की रानी'** महाकाव्य के अनुसार तत्कालीन समाज में व्याप्त परम्परायें, रूढ़ियाँ, नियम, रीति रिवाज तथा सामाजिक मान्यताओं का विवरण निम्नवत् प्रस्तुत है–

(1) नारी की स्थिति और उसका स्वातंत्र्य

'भारत वर्ष में स्त्रियाँ सदियों से पुरुषों के अधीन रही हैं। इसी के परिणाम स्वरूप वे उत्पीड़न का शिकार रहीं। भारतीय धर्मों और उन पर आधारित नियमों तथा परम्पराओं के ग्रह–नियमों ने स्त्रियों को पुरुषों से हीन बनाये रखा।'[1] **'झाँसी की रानी'** महाकाव्य में भी डॉ. आनन्द एक स्थान पर 'कुछ हो सचेत फिर बैठ गई पति सम्मुख पति–भक्ता नारी'[2] कहकर नारी की हीनता तथा पति–भक्ति का द्योतन करते हैं। तात्पर्य है कि नारी पति के चरणों में पूर्णतः समर्पित रहकर उसे अपना सर्वस्व मानती थी। उसकी जीवन नौका का पति ही कर्णधार होता था। तत्कालीन समाज में नारी स्वयं को अबला मानकर पुरुष से सहायता की अपेक्षा करती थी। रानी लक्ष्मीबाई लार्ड डलहौजी को लिखे पत्र में स्वीकार करती है कि– **'हैं पूर्व प्रतिज्ञाबद्ध आप, मैं अबला हूँ दुखियारी हूँ'**[3] तथा **'इस अबला पर इस विधवा पर अब कृपा कोर श्रीमान् रहे'** [4]। उक्त कथनों में नारी ने स्वयं को अबला स्वीकार किया है। यहीं नहीं, ब्रिटिश राज्य के निर्णायक ने झाँसी राज्य को अंग्रेजी शासन में मिलाने पर रानी को 'इससे कोई यह मत समझे अबला पर अत्याचार हुआ' कहकर अबला कहा है। तात्पर्य यह है कि सम्पूर्ण समाज में नारी की स्थिति कमजोर तथा दीन–हीन की भाँति थी।

डॉ. आनन्द ने आगे चलकर नारी की स्थिति में एक मोड़ देकर जागरूक नारी के रूप में चित्रित किया है।– 'थी ललनाओं की सैन्य एक जिसमें नव–नव बालायें थी'[5] अर्थात् जो बालायें सैन्य संगठित कर

1– डॉ. हरिहर निवास द्विवेदी के साहित्यिक कृतित्व का मूल्यांकन–डॉ. सुखदेव सिंह सेंगर, पी–एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर–1993ई., पृष्ठ 40

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 35

3– उपरिवत्, पृष्ठ 47

4– उपरिवत्, पृष्ठ 48

5– उपरिवत्, पृष्ठ 100

युद्ध के लिए सन्नद्ध हो सकती हैं, उनको भला अबला कैसे कहा जा सकता है। नारी में एक चेतना जाग्रत हुई—स्वातंत्र्य चेतना। रानी परतंत्रता को मृत्यु के समान घोषित करती है—

उसका मिट जाना ही अच्छा, रह सकता जो कि स्वतंत्र नहीं।

मैं हूँ क्षत्राणी इसीलिये, रह सकती हूँ परतंत्र नहीं।।[1]

रानी लक्ष्मीबाई के स्वातंत्र्यपूर्ण संकल्पों से सिद्ध होता है कि पूर्व में जो नारी स्वयं को अबला, दीन—हीन तथा अनाथ मानकर पुरुष संरक्षण की लालसा रखती थी, वही नारी आगे जागरूक होकर स्वतंत्र रहने में ही जीवन की सार्थकता मानती है तथा परतंत्रता को मृत्यु केसमान समझती है। समाज के बदलते परिवेश में डॉ. आनन्द ने नारी चेतना का तथ्यात्मक चित्रण बड़े ही सटीक ढँग से किया है।

(2) भाग्यवाद की मान्यता

'संसार एक कर्मक्षेत्र है। कर्म का फल सुनिश्चित है। मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र उसका सुन्दर कर्म है और सबसे बड़ा शत्रु उसका दुष्कर्म है।'[2] यही कर्म भाग्य बनकर सामने आता है। विद्वानों ने जिसे भाग्य की संज्ञा से अभिहित किया है, वह पिछले कर्मों का फल ही तो है। जीव अपने संचित, प्रारब्ध और क्रियमाण तीनों प्रकार के कर्मानुसार संसार में आता जाता रहता है। संयोग और वियोग इन कर्मों के प्रतिफल होते हैं। डॉ. आनन्द ने 'झाँसी की रानी' महाकाव्य में कर्मफल को सुनिश्चित करते हुये भाग्यवाद के अस्तित्व को स्वीकारा है। तत्कालीन समाज में भाग्यवाद की मान्यता थी। कर्मों के आधार पर ही मिलन और विछोह माना जाता है। राजा गंगाधर राव अपने जीवन के अंतिम प्रहर में रानी को उद्‌बोधन देते हुए कहते हैं—

1— झाँसी की रानी, पृष्ठ 129

1— अनुभूति रत्नाकर, पं. मिहीलाल, साधन प्रकाशन, डेम्पियर नगर मथुरा, सन्1986, पृष्ठ 95

हम तुम मारग के साथी थे,

मारग में ही हो विलग चले।

मारग के ही नियमानुसार,

तुम अलग चलीं हम अलग चले।।[1]

यहाँ 'मारग के ही नियमानुसार' से तात्पर्य कर्मफलानुसार ही है। कवि कर्म–फल–प्राप्ति की दृढ़ता को और स्पष्ट करते हुए कहता है–

इस पथ में कितने ही संयोग,

कितने वियोग व्यापार मिले।

इस पथ में क्या जाने कोई,

कितनों को कितनी बार मिले।।[2]

तात्पर्य यह है कि भाग्य अविज्ञात है। कर्म–फल अवश्यम्भावी है। किन्तु यह सब मानवीय ज्ञान–क्षमता से परे की बात है। यही भाग्य के अगोचर और अज्ञात होने की विलक्षणता है। उपर्युक्त उद्धरण पुनर्जन्म की मान्यता पर भी बलदेते हैं। अगला जन्म पूर्व जन्म के कर्म फलानुसार ही उपलब्ध होता है।

सामाजिक स्थिति का चित्रांकन करते हुए डॉ. आनन्द कहते हैं कि तत्कालीन समाज विधि का विधान, कर्म की रेख तथा भाग्य के फेर को दृढ़ता से स्वीकारता था। सामाजिक मान्यता थी, कि विधि का विधान अपरिवर्तनीय है, अटल है। एक उद्धरण दृष्टव्य है–

पर टला नहीं विधि का विधान,

कर्म की रेख भाग्य का फेर।

इक्कीस मार्च को गोरो ने,

झाँसी के गढ़ को लिया घेर।।[3]

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 33

2– उपरिवत्, पृष्ठ 34

3– उपरिवत्, पृष्ठ 102

इस मान्यता के पक्ष में यदि विचार करें तो ऐसा प्रतीत होता है कि झाँसी के गढ़ को अंग्रेजी फौज द्वारा घेर लेना पूर्व निश्चित था। इस विषय में किसी शायर की पंक्तियाँ उद्‌धृत करना अनुचित नहीं होगा–

एक वक्त मुकर्रर है हर काम के लिए।

बेकार तेरा सोचना बेकार तेरी फिक्र।।

भाग्यवाद की विपरीत स्थिति को दुर्भाग्य तथा सुदिन की विपरीत दशा को दुर्दिन कहा जाता है। वस्तुतः दुर्भाग्य का अनुभव भी भाग्य वादिता को पुष्टि प्रदान करता है। जब झाँसी का गढ़ शत्रुओं द्वारा पराभूत हो गया, उससमय की कवि कल्पना दृष्टव्य है–

था भारत का दुर्भाग्य यही,

बुन्देल खण्ड के दुर्दिन थे।

गढ़ के पूरब दिश दलबल से,

कप्तान खड़े रॉविन्सन थे।।[1]

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने भाग्यवाद के अस्तित्व को स्वीकारते हुये दुर्भाग्यकी रूपात्मक व्यंजना की है तथा तत्कालीन समाज की मानसिक स्थिति को अनावृत किया है।

3– धार्मिक विश्वास

'झाँसी की रानी' महाकाव्य वीर रस प्रधान काव्य है। काव्य में आद्योपान्त वीर रस युक्त भावों का सफल परिपाक हुआ है। महाकाव्य में वीरांग्ना रानी लक्ष्मीबाई ने स्वधर्म की मर्यादा का ध्यान रखते हुए विधि के अटल विधान को मान्यता प्रदान की है। शुभ–अशुभ के अस्तित्व को हृदय से स्वीकार किया है। तत्कालीन समाज में धर्मावलम्बी एवं आस्थावान लोग ईश्वरीय नियम को अपरिवर्तनीय स्वीकार कर उसकी सार्वभौम सत्ता के प्रति श्रद्धावनत थे तथा किसी भी शुभ संकल्प के आदि में श्री गणेश तथा अन्य आराध्यों का शुभाशीष ग्रहण करना अपना परम कर्तव्य अंगीकार करते

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 109

थे। कवि ने स्थान–स्थान पर अपनी हार्दिक श्रद्धा–भावना को साकार किया है। यहाँ एक उदाहरण ही पर्याप्त होगा–

रानी ने फिर देखे अपने हर ओर अशुभ के चिह्न चक्र।
फिर देखा अपना भाग्य और विधि का विधान व्यापार–चक्र।।
देखी स्वधर्म की मर्यादा देखा स्वदेश का स्वाभिमान।
रानी ने फिर देखी अपनी बुन्देलखण्ड की आन–बान।।[1]

उपर्युक्त छन्द में शुभ–अशुभ, विधि–विधान तथा स्वधर्म की मर्यादा के साथ बुन्देलखण्ड की आन–बान को वीरों का सद्धर्म घोषित किया गया है। वीरों के लिए स्वदेश–रक्षा में प्राणोत्सर्ग भी श्रेयस्कर होता है और वही श्रेष्ठधर्म के मानिंद भी है। कवि ने अंग्रेजों के धार्मिक विश्वास एवं उनकी मान्यताओं को स्पष्ट करते हुए कहा है कि उनके धर्मान्तर्गत मृतकों का अंतिम संस्कार भी नियमानुसार किया जाता था–

अंग्रेजों की लाशों को सादर सकरूण उठवाकर।
क्रिश्चियन धर्म से उनका अंतिम संस्कार कराकर।।[2]

इस प्रकार स्पष्ट है कि कवि ने अपने काव्य में तत्कालीन समाज के धार्मिक सद्भावों एवं विश्वासों को स्पष्ट किया है; उनकी मान्यताओं को सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान की है तथा आस्थाओंको सकारात्मक स्वीकृति भी दी है।

4– देश भक्ति की भावना

तत्कालीन समाज में देश–भक्ति की भावना पूर्णतः परिव्याप्त थी। स्वाधीनता संग्राम, असहयोग आन्दोलन तथा भारत छोड़ो आन्दोलन आदि स्वदेश के प्रति भक्ति–भाव के ही परिचायक थे। स्वदेश के प्रति समर्पण–भावना अणु–अणु में समाई थी। मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए प्राण विसर्जन भी अमरत्व माना जाता था। महाकाव्य में डॉ. आनन्द ने रानी लक्ष्मीबाई की राष्ट्र–भक्ति को निम्न शब्दों में अभिव्यक्त किया है–

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 146

2– उपरिवत्, पृष्ठ 170

जो मातृभूमि का भक्त नहीं मैं उसे समझती भक्त नहीं।
वहरक्त नहीं जो स्वतंत्रता के चरणों में अनुरक्त नहीं।।
है धीर वही है वीर वही जिसने स्वदेश को जाना है।
जो देश–दीप पर मर मिटने वाला प्रमत्त परवाना है।।[1]

यहाँ कवि रानी की धीरता तथा वीरता को तभी श्रेष्ठ, सफल एवं सार्थक स्वीकारता है, जब वह देश–दीप पर प्रमत्त परवाने की तरह आत्म बलिदान कर दे। रानी स्वयं देश–भक्ति का चरम उत्कर्ष थी। रानी ने स्वतंत्रता संग्राम रूपी यज्ञ में अपनी अंतिम आहुति देकर दुनियां को बुन्देलखण्ड के पानीदार पानी का चमत्कार दिखा दिया। घायल अवस्था में रानी के मुँह से निकले हुए भावोद्‌गार दृष्टव्य हैं–

जन्म लेकर आज इस नश्वर जगत से,
ले चली हूँ मैं यही बस ले चली हूँ।
अब उठेगा जो महल स्वाधीनता का,
नींव को मैं ईंट पहली दे चली हूँ।।[2]

देश की स्वातंत्र्य रक्षा हेतु अपना बलिदान देकर रानी कृतार्थ हो गई तथा देश भक्ति का अनुपम आदर्श प्रस्तुत कर गई। कवि ने रानी के साथ देश के उन अप्रतिम वीरों की मातृभूमि के प्रति भक्ति भावना को उभारा है, जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग किया था। इन वीरों में तात्या टोपे, नानाराव पेशवा, बाँदा के नबाब आदि अनेक सूरमाओं ने प्राण–पण से स्वाधीनता संग्राम में अपने को समर्पित कर दिया। पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

धँस पड़ी तांतिया की पलटन, धरती पर करती मार–काट।
शोणित सरिता पर लोथों के अनगिन पुलके पुल दिये पाट।।
रण की धरती को लाल–लाल, कर दिये तांतिया टोपे ने।
शोणित से काली का खप्पर, भर दिया तांतिया टोपे ने।।[3]

X X X X

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 130

2– उपरिवत्, पृष्ठ 219

3– उपरिवत्, पृष्ठ 212

बाँदा नबाब वीर बने पेशवा के हाथ।

तो तांतिया टोपे रहे रानी के साथ–साथ।।[1]

'झाँसी की रानी' महाकाव्य रानी लक्ष्मीबाई की अनुपम शौर्य गाथा है। किन्तु इस स्वाधीनता संग्राम में रानी के बलिदान के साथ नानाराव पेशवा, तात्या टोपे तथा अन्य अगणित वीरों का सहयोग तथा समर्पण उनकी भक्ति का ही परिचायक है। इसलिए कहा जा सकता है कि यदि उस समय अंग्रेजों का सहयोग करने वाले देश–द्रोही एवं गद्दार मौजूद थे तो स्वाधीनता रूपी महायज्ञ में अपनी प्राणाहुति समर्पित करने वाले अप्रतिम देश–भक्त भी मौजूद थे, जिनकी अपूर्व शौर्य–गाथा इतिहास के स्वर्ण पृष्ठों में आज भी अंकित है। देश पर मर मिटने वाले उन अमर शहीदों की ब्रिटिश इतिहासकारों ने भी भूरि–भूरि सराहना की है। उन शहीदों की अमर कहानी नव पीढ़ी के हितार्थ प्रेरणा स्त्रोत बनी हुई है।

5– सत्ता लोलुपता

वीरगाथा काल के इतिहास पर सम्यक् दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि राज्यों की सीमायें सदैव से सत्ता–संघर्ष का कारण रही हैं। सीमा–विस्तार एवं सत्ता की लोलुपता राजाओं को अन्याय, अत्याचार एवं शोषण के लिए प्रेरित करती थी। मुगल शासकों में तो सत्ता के लिए पिता और भाइयों की नृशंस हत्यायें भी की जाती रहीं। इतिहास में इसके विविध उदाहरण उपलब्ध हैं। सत्ता–लोभ समाज में सदैव से अनेकानेक उत्पातों, अव्यवस्थाओं, अनीतियों तथा दुष्कर्मों का मुख्य कारण रहा है। अनेक हत्यायें, मारकाट, रक्तपात तथा विप्लवकारी षडयंत्र सत्ता के लालच में होते रहे हैं। आक्रमण के विरोध में आत्मरक्षा के लिए युद्ध भी हुए हैं। 'झाँसी की रानी' महाकाव्य में गंगाधर राव के दिवंगत होने पर अंग्रेजों की सत्ता लोलुपता का रानी लक्ष्मीबाई ने मुँह तोड़ जबाब दिया तथा स्वयं शासक पद पर प्रतिष्ठित हो गयीं। इस बीच **'अबला शासन झाँसी में लख**

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 196

ललचायें बहुतेरे'[1] तथा '**निज–निज सेनायें सजकर झाँसी पर चढ़–चढ़ आये'**[2] अनेक उत्पात हुये। किन्तु रानी के युद्ध–कौशल से अपने प्राण बचाकर लोगों को भागते ही बना। एक उदाहरण दृष्टव्य है–

था राव सदाशिव कोई उसकी भी हुई चढ़ाई।
हो गया कैद झाँसी में मुँह माँगी मुँहकी खाई।।
रानी को इन झगड़ों से अवकाश न मिल पाया था।
तब तक झाँसी के गढ़ पर नत्थे खाँ चढ़ आया था।।[3]

तात्पर्य यह है कि सत्ता के प्रति असीम लालच लोगों में था, उसके लिये भले ही कितनी जन–धन की अपूरणीय क्षति हो जाय। रानी का नत्थे खाँ से भयंकर युद्ध हुआ। अनेक निरपराध लोगों की हत्यायें हुईं। अन्त में नत्थे खाँ अपनी पराजय स्वीकार कर युद्ध से विरत होकर पलायन कर गया तथा रानी लक्ष्मीबाई की वीरता का परचम फहराने लगा।

सत्ता लोलुपता यदि अन्य राज्य पर आक्रमण हेतु विवश करती है, तो अपने राज्य की सुरक्षा का लालच अकरणीय कार्यों के लिए उत्प्रेरित करता है। ग्वालियर के सिंधिया नरेश ने अपनी राज्य–रक्षा हेतु ही रानी लक्ष्मीबाई से युद्ध किया तथा अंग्रेजों से मित्रता की। इस मित्रता ने यद्यपि उन्हें देश–द्रोही प्रमाणित किया, परन्तु राज्य की लोलुपता ने उन्हें विवश कर दिया था। रानी से युद्ध में पराभूत होकर सिंधिया नरेश अंग्रेज नवाबों की शरण में आगरा पहुँचे। कवि ने लिखा है कि–

तलवार डाल भाग उठे सिंधिया नरेश।
पहुँचे कहाँ जहाँ कि रहा आगरा प्रदेश।।[4]

विशाल साम्राज्य के अधिपति सिंधिया नरेश अपनी प्राण–रक्षा के निमित्त आगरा स्थित अंग्रेजों की छावनी में शरणागत बनकर पहुँचे, इससे अधिक सत्ता–लोलुपता का और क्या दुष्परिणाम हो सकता है।

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 78

2– उपरिवत्, पृष्ठ 78

3– उपरिवत्, पृष्ठ 79

4– उपरिवत्, पृष्ठ 199

6– राजद्रोह की चिनगारी तथा अराजकता

रानी लक्ष्मीबाई के दत्तक पुत्र की अस्वीकृति के उपरान्त अंग्रेजों ने घोषणा कर दी कि झाँसी को अंग्रेजों के शासन मेंसमाविष्ट कर लिया गया है। रानी की सेनायें बरखास्त कर दी गईं। रानी को किला से निर्वासित कर अन्यत्र व्यवस्था के लिए विवश कर दिया। दुर्ग पर ब्रिटिश साम्राज्य का परचम फहरा दिया गया। इस समाचार से समग्र भारत वर्ष में क्रान्ति की लहर उत्पन्न हो गयी। हिन्दू–मुसलमान राज–द्रोही बनकर भड़क उठे। उत्तर प्रदेश, सिन्ध प्रदेश, पंजाब तथा बंगाल का जन–सामान्य 'विद्रोह करो' की उद्घोषणा कर रहा था। लखनऊ, बरेली, कानपुर, फीरोजपुर, शाहजहाँपुर तथा दिल्ली में भयंकर उत्पात हुए। झाँसी में संघर्ष के स्वर गूँजने लगे। महाकाव्य में कवि ने तत्कालीन सामाजिक स्थिति का उद्घाटन इस प्रकार किया है–

भारत में था असन्तोष,
सब खौल रहे थे नर–नारी।
भीतर ही भीतर सुलग रहीं;
थीं राज–द्रोह की चिनगारी।।[1]

X X X

हर ओर अराजकता फैलीं,
हर भारतीय स्वाधीन उठा।[2]

डॉ. आनन्द ने **'झाँसी की रानी'** महाकाव्य में तत्कालीन सामाजिक स्थिति का तथ्यात्मक चित्रण प्रस्तुत किया है। घटनायें इतिहास पुष्ट होकर समायोजित हैं तथा कवि–कल्पना का भी अपूर्व योगदान है। कवि ने ब्रिटिश इतिहासकारों के मन्तव्यों को भी आरेखित किया है।

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 67

2– उपरिवत्, पृष्ठ 69

(घ) भाषा सामर्थ्य

भाषा एक माध्यम है चिन्तन और अभिव्यक्ति का। भाषा विचार विनिमय का साधन है। साहित्यकार बाह्य जगत के संसर्ग से उत्पन्न संवेदनाओं की अनुभूति भाषा में करता है और उस अनुभूति को दूसरे की अनुभूति का विषय बनाने के लिए भाषा में उसकी अभिव्यक्ति करता है। भाषा के बिना संवेदनात्मक अनुभूतियाँ नाम–विहीन रह जायेंगी और ऐसी स्थिति में अभिव्यक्ति असंभव है। रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव के अनुसार–'हम सोचते हैं तो भाषा के सहारे और किसी बात को समझते–समझाते हैं तो भी भाषा के सहारे। हमारे स्मृति कोष और चिन्तन–प्रक्रिया का आधार भाषा ही है। मानव–मन की सृजनात्मक शक्ति की अनुपम देन के रूप में यह भाषा ही बाह्य जगत और हमारे भाव–बोध के बीच सेतु का काम करती है।'[1] अतः भाषा साहित्यकार की संवेदनाओं को पहचान देती है, उसे सोच देती है और सोच का वहन भी करती है तथा सर्जना को आकृति देती है।

डॉ. आनन्द के **'झाँसी की रानी'** महाकाव्य में वीर रस की परिकल्पना की गई है। आपकी काव्य–भाषा में तत्समता है और तद्भवता भी। डॉ. मुक्तेश्वरनाथ तिवारी के शब्दों में–'एक अच्छे कवि में व्यवहारों वाला भाषा और काव्य–भाषा दोनों का निर्वाह मिलना चाहिए। पहले तो उसे चालू भाषा का गंभीर श्रोता होना चाहिए और उसमें यत्किंचित व्यवहार भी करना चाहिए। पीछे से उसे काव्य–भाषा के प्रयोगों का अध्ययन भी करना चाहिए। इस लिहाज से चालू भाषा, मूल़ चीज यानी कच्चा माल है, जबकि काव्य–भाषा कविता के भाषा व्यवहार का शास्त्र है।'[2] जब हम डॉ. आनन्द के महाकाव्य का भाषा–साम्थर्य की दृष्टि से सम्यक् अवलोकन करते हैं तो ज्ञात होता है कि डॉ. आनन्द के महाकाव्य में व्यवहारिक एवं काव्य–भाषा दोनों का निर्वाह हुआ है।

1– पल–प्रतिपल, सितम्बर–दिसम्बर 2002, कबीर की भाषा संचेतना, रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, पृष्ठ 15

2– शताब्दी के अंत में कविता, डॉ. मुक्तेश्वरनाथ तिवारी, साहित्य निकेतन, शिवाला रोड–कानपुर, पृष्ठ 92

'झाँसी की रानी' महाकाव्य 14 सर्गों में पूरा हुआ है। 'भाषा, भाव, शैली एवं अलंकार सौन्दर्य की दृष्टि से कवि के बारे में केवल इतना ही कहना पर्याप्त है कि यह सब उसकी स्वाभाविक लेखनी के साथ–साथ चलते गये हैं। कवि ने इस काव्य–कौशल में हम सबको एकसच्चा इतिहास दिया है।'[1] वस्तुतः भाषा व्यक्तित्व की परिचायक होती है। व्यक्तित्व की आंतरिक संरचना भाषा के चयन में सहायक होती है। डॉ. आनन्द ओज और राष्ट्रीय चेतना के प्रखर व्यक्तित्व, सर्वतोमुखी प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। महाकाव्य में जो बिम्ब, प्रतीक, छन्द विधान तथा अलंकार सौन्दर्य का स्वाभाविक संयोजन हुआ है, वह उनकी काव्य–प्रतिभा के अनुकूल ही है।

1– छन्द विधान

'जिन रचनाओं में वर्ण, मात्रा, यति, गति, तुक आदि पर बल दिया जाता है, वे छन्द कहलाते हैं।'[2] 'छन्द में लय और तुक प्रधान तत्व होते हैं। लय छन्दों के वर्णों और मात्राओं पर निर्भर करता है और इसी आधार पर हिन्दी में मात्रिक और वर्णिक छन्दों का विभाजन हुआ है।'[3] डॉ. आनन्द की लयाश्रित छन्द साधना अर्थ के नये अनुषंगों से समृद्ध हुई है। वे निहायत सादगी और संजीदगी के साथ गंभीर विचारों को अपने काव्य के धरातल पर उतारते हैं। यथार्थ की समस्त विभीषिकाओं के बीच संघर्षरत आस्थावान सर्जक का स्वर ही इनके काव्य का प्राण–तत्व है।

''झाँसी की रानी' महाकाव्य में भाषा अत्यन्त सरल, स्वाभाविक, ओजपूर्ण और निराडम्बर है, उसके प्रवाह और प्रभाव अनूठे हैं। छन्द एवं यत्र–तत्र पद–प्रयोगों के अनिवार्य आरोपों के अतिरिक्त इस कृति में कला का कृत्रिम विधान नहीं है।'[4]

1– झाँसी की रानी–समीक्षा, समीक्षक–सियारामशरण शर्मा, दैनिक जागरण, झाँसी, 26 मई 1968

2– मानक हिन्दी व्याकरण–डॉ. पृथ्वीनाथ पाण्डेय, जय भारती प्रकाशन, 267–बी, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद, पृष्ठ 264

3– अकबर दरवार के हिन्दी कवि– डॉ.सरयूप्रसाद अग्रवाल, लखनऊ विश्वविद्यालय प्रकाशन–सं. 2007 वि. पृष्ठ 259

4– झाँसी की रानी–समीक्षा, डॉ. सेवक वात्स्यायन, आनन्द प्रकाशन, जालौन उ.प्र., पृष्ठ 15

तात्पर्य यह है कि डॉ. आनन्द के महाकाव्य में छान्दिक चमत्कार न होकर सोलह मात्रा छन्द में कथ्य की सहज अभिव्यक्ति हुई है। यह छन्द महाकाप्व्य में अधिकतम प्रयुक्त हुआ है। एक उद्धरण दृष्टव्य है–

S S S S I I S I I S
रानी का धीरज टूट गया – 16
I I S S S I I I I I S I
नृप नाड़ी की गति विधि निहार–16
I I I S S I S S I I I I
बह चली लोचनों से बनकर – 16
S S I I S S I I I S I
गंगा यमुना सी धवल धार– 16[1]

महाकाव्य के सर्गान्त में छन्द–परिवर्तन के नियम का भली प्रकार निर्वाह हुआ है। कहीं–कहीं चौबीस मात्रा छन्द का भी प्रयोग किया गया है। अतः कहा जा सकता है कि महाकाव्य में भाषा की सामर्थ्य को छन्द योजना से बल मिला है।

2– उक्ति वैचित्र्य

उक्ति वैचित्र्य से अभिप्राय कथन के उस अनूठे ढँग से है, जो उस कथन की ओर श्रोता को आकर्षित करता है तथा उसके विषय को मार्मिक और प्रभावशाली बना देता है। डॉ. सरयूप्रसाद अग्रवाल के अनुसार– 'कवि अपने काव्य के वर्ण्य–विषय में घुल–मिल कर उसकी तीव्रानुभूति कराने के लिए कल्पना का आश्रय लेते हुए जब किसी–किसी स्थल विशेष के वर्णन को चमत्कार पूर्ण बना देता है, तो वे स्थल काव्यगत उक्ति वैचित्र्य के उदाहरण होते हैं।'[2] उक्ति वैचित्र्य प्रयत्न साध्य भी हो सकता है और नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा से उद्‌भूत भी हो सकता है। इस वैचित्र्य के लिए कवि में गहरी सूझ, अनूठी कल्पना और शब्द की लक्षणा–व्यंजना शक्ति का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है। इस रचना में कवि तथ्यों के विचित्र वर्णन द्वारा उच्च कला की सृष्टि करता है। डॉ. आनन्द की लेखनी एक समर्थ

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 35

2– अकबरी दरबार के हिन्दी कवि, पृष्ठ 243

कवि की लेखनी है। उन्होंने अपने काव्य में अनुभूति की प्रखरता, अभिव्यक्ति की सशक्तता और शब्द चयन एवं चित्रोपमता द्वारा काव्य–साधना के उच्च सोपानों का सृजन किया है। साहित्य–सृजन के क्षेत्र में वे पूर्णतः सिद्धहस्त कलाकार थे।

डॉ. आनन्द के **'झाँसी की रानी'** महाकाव्य में उक्ति–वैचित्र्य के अत्यंताकर्षक उदाहरण उपलब्ध हैं। इन वर्णनों में कवि ने कल्पना का उचित आश्रय लिया है। उदाहरण देखिये–

थे श्वेत कमल तालाबों में,
लखकर होता था यही भान।
मानो धरती पर उतर पड़ा;
तारागण लेकर आसमान।।[1]

उपर्युक्त छन्द में तालाबों में खिले श्वेत कमलों को तारागणों से परिपूर्ण गगन अनुमानित करने में उत्प्रेक्षा तो है ही, साथ ही कथन को प्रभावी बनाने का उपक्रम भी है। इसी प्रकार निम्न पंक्तियों में भी कवि ने कथन में वक्रता लाने का सफल प्रयास किया है–

कालपी का नाम हीं क्यों कालपीं।
काल को भीं लोग पीं जाते जहाँ पर।।[2]

यहाँ कालपी के नाम करण का विचित्र आधार अभिव्यक्त है। तात्पर्य है कि काल को भी पी जाने वाले लोग जहाँ है, वह कालपी है। 'झाँसी की रानी' महाकाव्य में कवि की वक्रोक्तियाँ और अर्थ को प्रभावी गरिमा प्रदान करने वाले कथन पाठक के हृदय को सहज रूप से स्पन्दित करने में सक्षम हैं। भाषा प्रवाहपूर्ण एवं पुष्ट है। कवि अपने उद्देश्य में सफल है। उक्ति–वैचित्र्य के कतिपय उद्धरण प्रस्तुत करना अनुचित नहीं होगा–

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 179

2– उपरिवत्, पृष्ठ 182

इस तरह से आ गई रानी कि जैसे,
कौंध कर बिजली धरा पर आ गई है।[1]

X X X

लग रहा आग में पानी है,
या पानी में लग रही आग।[2]

X X X

रण की विभीषिका से रण में,
हो गयी हवा की हवा बन्द।[3]

X X X

भय से यमुना का पानी भी,
हट गया किनारा दूर छोड़।[4]

उपर्युक्त उद्धरणों में कवि ने बिजली का कौंधकर धरा पर आ जाना, पानी में आग लगना, हवा की हवा बन्द हो जाना तथा पानी का भयभीत होकर किनारा छोड़ जाना–विचित्र उक्तियों का समायोजन करके अपनी अभिव्यक्ति को पुष्टि प्रदान की है। पाठक के मस्तिष्क पर स्थायी प्रभाव डालने का प्रयास किया है।

3– बिम्ब–विधान

डॉ. आनन्द के **'झाँसी की रानी'** महाकाव्य में भाषा भावानुकूल तो है ही, जैसा कि उनके काव्य से परिलक्षित होता है, उसमें बिम्ब विधायिनी शक्ति भी है। डॉ. आनन्द ने अपने काव्य में अनेक उत्कृष्ट बिम्बों की योजना की है। आपका बिम्ब–विधान कल्पना की समाहार शक्ति को द्योतित करता है। कहीं अनुभूति की सघनता शब्द–रूप ग्रहण कर ओजस्विता की सृष्टि करती है तो कहीं चित्रोपमता अंकित होकर जिस सुषमा का

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 183
2– उपरिवत्, पृष्ठ 188
3– उपरिवत्, पृष्ठ 189
4– उपरिवत्, पृष्ठ 190

संसार निर्मित करती है, वह अंतर से निःसृत भाव लोक का ही प्रतिबिम्ब होता है। यह कृतित्व परिवेश को प्रभावित करने की क्षमता से परिपूर्ण होता है।

कवि ने महाकाव्य में रानी लक्ष्मीबाई के घोड़े का अद्वितीय तथा अत्यन्त चमत्कारिक वर्णन किया है। डॉ. सेवक वात्स्यायन 'झाँसी की रानी' महाकाव्य की समीक्षा में लिखते हैं कि– 'हमारा विचार है कि इस काव्य में मुख्य पात्र दो ही हैं– एक रानी और दूसरा घोड़ा। हम तो यहाँ तक कह सकते हैं कि कवि की सारी श्रद्धा, निष्ठा और सम्मान–दृष्टि जहाँ रानी में केन्द्रित है, वहीं कवि का व्यक्तित्व और उसकी वीर भावामूलाप्रकृति इस घोड़े के साथ जुड़ी है। अपने स्वतंत्र महत्व में जायसी के पद्मावत में जो स्थान शुक हीरामन का है, इस वीर काव्य में वही महिमा इस घोड़े की है।'[1] डॉ. वात्स्यायन ने कवि की अन्तर्भावना को परखा है तथा उनके महाकाव्योचित पात्र–संयोजन की विशिष्टता की प्रशंसा की है। घोड़े के वर्णन में कवि–कथन की व्यापक व्यंजना के साथ मनोहारी बिम्ब प्रस्तुत है–

हैमिल्टन के सिर पर घोड़ा,
बाकर की छाती पर घोड़ा।
थल पर घोड़ा नभ पर घोड़ा,
हौदा पर हाथी पर घोड़ा।।

X X X

गोरे–गोरे अरि गातों को,
बस लाल–लाल रँग देता था।[2]

उक्त वर्णन पढ़ते ही सामान्यतः पाठक के मस्तिष्क में एक चित्र सा बन जाता है। ऐसा लगता है कि घोड़े की अद्भुत कलाबाजियाँ नेत्रों के समक्ष घटित हो रही हैं। बिम्ब–विधान भाषा की सम्प्रेषणीयता में सहायक होता है। वर्णन पढ़कर मस्तिष्क में बिम्ब बनते ही पाठक का कवि के साथ तादात्म्य हो जाता है, भावार्थ स्पष्ट हो जाता है। कतिपय चित्र प्रस्तुत हैं–

1– झाँसी की रानी, समीक्षा– डॉ. सेवक वात्स्यायन, पृष्ठ 6

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 113

घोड़ा खोला फिर बैठ गई,
रानी यमुना की घाटी में।
X X X
विटपों पर पंछी बोल उठे,
कुछ नीले पीले हरे–हरे।
देखा नगरी के बीच–बीच,
निर्मल जल के तालाब भरे।।
थे श्वेत कमल तालाबों में,
लखकर होता था यहीं भान।
मानो धरती पर उतर पड़ा,
तारागण लेकर आसमान।।[1]

इस प्रकार महाकाव्य में अगणित, अद्वितीय बिम्ब यत्र–तत्र बिखरे पड़े हैं। इन बिम्बों से कवि का भाषा–सामर्थ्य पुष्ट हुआ है, सम्प्रेषणीयता में अभिवृद्धि हुई है तथा भाषा में चमत्कारिक सौन्दर्य सृजित हुआ है। घोड़े के गत्यात्मक बिम्ब–चित्र के समान तलवार की गति का और उसकी झपट तथा झंकार का एक और बिम्ब देखिये–

थीं झपट कहीं झंकार कहीं,
प्रतिबिम्ब कहीं था वार कहीं।
था एक प्रलय का चमत्कार,
थीं मार कहीं तलवार कहीं।।[2]
X X X
रण में जब कोई साहस कर,
इसके सम्मुख अड़ जाता था।
उसके जीवन की आशा पर,
खासा तुषार पड़ जाता था।।[3]

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 178–179

2– उपरिवत्, पृष्ठ 117

3– उपरिवत, पृष्ठ 15

उक्त पंक्तियों में तलवार की गति का बिम्ब–विधान अत्यन्त आकर्षक बन पड़ा है। ओजस्वी कवि ने युद्ध–वर्णन में ऐसे अनेकानेक बिम्ब–चित्रों का सृजन किया है, जिन्हें पढ़कर सहृदय पाठक सहज रूप से युद्ध कालीन परिस्थितियों की अनुभूति कर लेता है।

4– गुण–योजना

डॉ. आनन्द का **'झाँसी की रानी'** महाकाव्य मूलतः वीरकाव्य है। कवि ने काव्य के माध्यम से भारतीय इतिहास की महानतम चरित्र गाथा से हमारा प्रत्यक्ष साक्षात्कार कराया है। क्रान्ति के चरमोत्कर्ष को रूपायित करने वाला महाकाव्य रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांग्नाओं तथा तात्याटोपे जैसे शूरवीरों के भव्य चरित्र का उद्घाटन करता है। काव्य की भाषा में वीर रस का पुट तो सर्वत्र विद्यमान है ही, कहीं–कहीं श्रंगार के मोहक वर्णन भी उपलब्ध हैं। सामान्य प्रसंगों में अभिव्यक्ति का सहज तथा सरल रूप भी मिलता है। इस प्रकार डॉ. आनन्द के 'झाँसी की रानी' काव्य की भाषा में प्रसाद, ओज तथा माधुर्य तीनों गुणों का सौन्दर्य समावेशित है। ओजगुण के तो विपुल उद्धरण दिये जा सकते हैं। जहाँ भी कवि की लेखनी वीर–भावना के लोमहर्षक वर्णन के लिए उद्यत होती है, ओज गुण का चमत्कार स्वयमेव उपस्थित हो जाता है। उदाहरण दृष्टव्य है–

इस समाचार से भारत का विप्लवकारी मढ़ गया गगन।
राजद्रोही बन भड़क उठे हिन्दू मुस्लिम दोनों के मन।।
यू. पी. बिगड़ी सी. पी. बिगड़ी, बिगड़े पंजाबी बंगाली।
बरहामपुर में बिगड़ उठी जब सोलहवीं पलटन काली।।[1]

उक्त छन्द में ब्रिटिश शासन द्वारा कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी लगे होने का समाचार पाकर भारतीय फौजों के भड़क जाने का ओजस्वी वर्णन है। सिपाहियों में असीम उत्साह एवं खुलकर विरोध करने का संकल्प अभिव्यक्त है। इस प्रकार ओज गुण के अनगिन उदाहरण

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 68

काव्य में बिखरे पड़े हैं। एक अत्यन्त आकर्षक उदाहरण प्रस्तुत है–

झट बालक को पीठ से बाँध,
पीठ पर चढ़ गई घोड़े की।
फिर एक बार रण करने की,
लालसा बढ़ गई घोड़े की।।
बाकर के दल की धूल देख,
सुनकर झंकार कृपाणों की।
घोड़े के सिर पर मचल उठी,
चढ़कर कनौतियाँ कानों की।।[1]

उक्त पंक्तियों में रानी तथा घोड़े का युद्धोत्साह वर्णित है। ओज की लहर से उत्साह की भावना ने जन्म लिया है। उत्साह वीर रस का स्थायी भाव है। अतः यहाँ ओज गुण का काव्य सौन्दर्य विद्यमान है। वर्णनात्मक शैली में कवि अपनी भावना को जहाँ सहज रूप से अभिव्यक्त करता है, वहाँ प्रसाद गुण की उपस्थिति होती है। सामान्य पाठक के मन में कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। पाठक घटना या वर्णन से मात्र अवगत हो जाता है। एक उदाहरण देना ही पर्याप्त होगा–

करने बैठा हूँ श्री गणेश, अबला की एक कहानी का।
लिखने बैठा हूँ रण साका, साका झाँसी की रानी का।।
सन् अट्ठारह सौ तिरपन था, था मास नवम्बर का विहान।
जग में है सबके लिए नहीं, यह उषा काल आगम समान।।[2]

कवि ने अपने मन्तव्य को सहज ढँग से अभिव्यक्त किया है। श्रोता या पाठक को सन् 1853 के नवम्बर मास की घटना का संज्ञान हो जाना ही कवि का मात्र उद्देश्य प्रतीत होता है। यहाँ पर प्रसाद गुणकी सरस व्यंजना हुई है। जहाँ कहीं कवि हास–विलास एवं मनोरंजन के

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 174

2– उपरिवत्, पृष्ठ 31

मनोहारी वर्णन प्रस्तुत करता है, वहाँ माधुर्य गुण की सरसता पाठक को रससिक्त कर देती है। पाठक मंत्र मुग्ध होकर आन्तरिक आनन्द की अनुभूति करने लगता है; हृदयतंत्री के तारों से मधुर स्वर झंकृत होने लगते हैं तथा आत्म विभोर होने की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। महाकाव्य में घटना क्रमानुसार जब ग्वालियर राज्य पर रानी लक्ष्मीबाई एवं नानाराव पेशवा की फौज का आधिपत्य स्थापित हो गया, फौज में खुशी की लहर दौड़ गई। शहर की ख्याति प्राप्त नर्तकियाँ बुलाई गईं तथा विभिन्न आमोद–प्रमोद आयोजित किये गये। उस समय कवि की भाषा में माधुर्य–गुण साकार हो जाता है। हर्ष एवं प्रेम–प्रसंग का अनूठा वर्णन कवि की काव्य–माधुरी को आकर्षक ढँग से सजाता–सवाँरता है। उदाहरण दृष्टव्य है–

जिन मारो नजरियाँ लग जै हैं।

लग जै हैं मन डग जै हैं।।

अनमोले मोले मन मानिक।

बिनहिं ठगाये ठग जै हैं।।

X X X

जिन जाउ भले भरतार–कुइलिया कुहू–कुहू कूकन लागी।

वन में महुआ महकन लागे, बिरहिन के मन बिहकन लागे।।

विष बुझी बयरिया के झोंकन, उर में अँगरा दहकन लागे।

सुनतइ खन फाग धमार–कुइलिया कुहू–कुहू कूकन लागी।।[1]

उपर्युक्त उद्धरणों में कवि की काव्य–भाषा की सरस माधुरी सहजरूप से अभिव्यक्त हुई है। बुन्देली भाषा की रसमयता दृष्टव्य है। इन पंक्तियों में विरहिणी पति को न जाने देने के विविध कारणों युक्त माधुर्य पूर्ण तर्क प्रस्तुत करती है। इन उदाहरणों में माधुर्य गुण विद्यमान होकर काव्य–भाषा को सरस अभिव्यक्ति प्रदान करता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि डॉ. आनन्द के **'झाँसी की रानी'** महाकाव्य का भाषा–सामर्थ्य

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 202–203

सब प्रकार से अनूठा है, अपूर्व है तथा छन्द–विधान, बिम्ब–विधान, उक्ति–वैचित्र्य तथा गुण योजना की दृष्टि से सराहनीय है। कवि की भाषा पर छटवें अध्याय में स्वतंत्र रूप से विचार किया जावेगा, जिससे कवि का भाषा पर अनूठा अधिकार सिद्ध हो सकेगा।

5– मुहावरे और लोकोक्तियाँ

'मुहावरा उन वाक्यों अथवा वाक्यांशो को कहते हैं, जो अपने शब्दों का सामान्य वाच्यार्थ न प्रकट कर कुछ विलक्षण ही अर्थ जताते हैं।'[1] मुहावरा शब्द अरबी भाषा का है। इसका शाब्दिक अर्थ होता है– अभ्यास करना। मुहावरों के शुद्ध प्रयोग में बड़ी कठिनाई होती है, इसलिए मुहावरों का उपयोग करने से पूर्व उसके अर्थ को जान लेना परमावश्यक होता है। मुहाबरों का प्रयोग गद्य–पद्य दोनों में किया जाता है। मुहावरों से भाषा का सौन्दर्य एवं प्रभाव बढ़ जाता है। मुहावरा अधिकतर वाक्यांश होता है जबकि लोकोक्तियाँ सम्पूर्ण वाक्य होती हैं। मुहावरे का प्रयोग कवि या लेखक स्वतंत्र रूप से नहीं कर पाता है, जबकि लोकोक्ति का स्वतंत्र प्रयोग होता है। मुहावरा कथन में चमत्कार उत्पन्न करता है तथा भाषा–सौन्दर्य की अभिवृद्धि करता है, जबकि लोकोक्ति का प्रयोग कथन के खण्डन तथा मण्डन के लिए किया जाता है। डॉ. आनन्द ने **'झाँसी की रानी'** महाकाव्य में मुहावरों के प्रयोग द्वारा अपनी भाषा को सजीव बनाया है। लोकोक्तियों का प्रयोग लगभग नहीं के बराबर है।

महाकाव्य में डॉ. आनन्द की संवेदनशीलता मात्रा, परिमाण और तीव्रता में सर्वाधिक संचित है, तभी उनका कवि अधिक से अधिक भाव–चित्र उकेरने में समर्थ हुआ है। विरासत में मिली सारस्वत साधना को कवि ने अपनी प्रतिभा से अक्षुण्ण ही नहीं रखा वरन् काव्य–गरिमा से अभिमंडित भी किया। उनके काव्य में मुहावरों से अभिव्यंजना के सौन्दर्य की अभिवृद्धि निश्चित रूप से हुई है।

1– मानक हिन्दी व्याकरण, डॉ. पृथ्वी नाथ पाण्डेय, पृष्ठ 163

'झाँसी की रानी' महाकाव्य में प्रयुक्त कुछ मुहावरे प्रस्तुत हैं जैसेः— आग बरसना, कण्ठ सूखना, धरती लाल होना, पानी मेंआग लगाना, हवा बन्द होना, फेंट बाँधना, श्री गणेश करना, माथे पै बल पड़ना, तन काँपना, सिंहासन डोल उठना, ईंट चूर—चूर होना, आँधी सी टूट पड़ना, सितारों को नींद आ जाना, देश पर मर मिटना, झंडा खड़ा होना, मुक्ता ढलकाना, तारे गिनकर रात काटना, चिनगारी सुलगना, रवि अस्त होना तथा मौत के घाट उतरना आदि।

डॉ. आनन्द ने **'झाँसी की रानी'** में कुछ लोकोक्तियों का प्रयोग भी किया है। लोकोक्ति को कहावत भी कहते हैं।

'लोकोक्ति या कहावत उस बँधे पद—समूह को कहते हैं, जिसमें अनुभव की कोई बात संक्षेपतः सुन्दर, प्रभावशाली तथा चमत्कारिक ढँग से कही जाती है।'[1] लोकोक्ति का प्रयोग मुहावरों की भाँति एक वाक्य में सम्भव नहीं है। इनके प्रयोग के लिए विद्वान लेखकों के ग्रन्थों का अध्ययन तथा अनुशीलन आवश्यक होता है। **'झाँसी की रानी'** में यद्यपि कहावतों या लोकोक्तियों का प्रयोग अल्पमात्रा में ही किया गया है, फिर भी कुछ लोकोक्तियाँ उदाहरणार्थ प्रस्तुत हैं—

- **वह वीर वीर ही क्या जिसको अपने पन पर अभिमान न हो।**
- **वह कवि ही कैसा कवि जिसकी कविता का प्रकट भाव न हो।**
- **उसका मिट जाना ही अच्छा रह सकता जो कि स्वतन्त्र नहीं।**
- **है धीर वही है वीर वही जिसने स्वदेश को जाना है।**
- **वह क्षत्री कैसा क्षत्री है जिसकी छाती पर घाव न हो।**
- **यह कौन जान सकता था क्या होने को था बाकी।**
- **यह अवसर वह अवसर है जो फिर बारंबार न आने का।**
- **कौन, जिसका मौत से नाता नहीं था।**

1— मानक हिन्दी व्याकरण, पृष्ठ 188

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जिस प्रकार मुहावरों के प्रयोगसे वाक्य की सुन्दरता एवं अर्थवत्ता में अभिवृद्धि होती है, ठीक उसी प्रकार कहावतों एवं लोकोक्तियों के प्रयोग से कथन में चमत्कार तो आता ही है, प्रभावात्मकता में भी वृद्धि हो जाती है। विद्वानों के सारगर्भित कथनों में मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग सामान्यतः किया जाता है; जिससे वे कथन श्रोताओं तथा पाठकों पर अपना अक्षुण्ण प्रभाव छोड़ जाते हैं।

(ङ.) मार्मिक स्थल

'झाँसी की रानी' महाकाव्य में कवि की संवेदनशीलता ने अपनी रचना धर्मिता को हृदय स्पर्शी बनाया है। इस काव्य में सृजनात्मक संघर्ष का सकारात्मक स्वरूप प्रभविष्णुता के साथ अभिव्यक्त हुआ है। भावों में समागत उच्छृखंलता से बचने के लिए बुद्धि का नियंत्रण भी प्रायोजित है तथा बुद्धि संरचनाओं में शुष्कता एवं नीरसता न उत्पन्न कर दे, इसलिए भावों का समृद्ध अभिसिंचन भी है। कवि ने युगीन परिस्थितियों के अनुरूप ही मानवीय वेदना के तथा विदेशियों की कुटिल राजनीतिक श्रृंखलाओं में जकड़े हुए तत्कालीन समाज की दारुण व्यथा के अनेक मार्मिक चित्र उकेरे हैं।

डॉ. आनन्द राग और रोष दोनों तत्वों को समवेत रूप में स्वीकार करते हैं। उनका जीवन राग संकटकालीन परिस्थितियों में परिपक्व हुआ है। आह्लाद और विषाद जो कुछ भी मानवीय जगत का है, उसे अपना बनाकर जीने वाले कवि का कथ्य जब मार्मिकता का संस्पर्श पा लेता है तो और भी सघन और संश्लिष्ट हो उठता है।

'झाँसी की रानी' काव्य में डॉ. आनन्द ने कुछ मर्म स्पर्शी स्थलों को रेखांकित किया है। कुछ प्रसंग तो कथावस्तु को महाकाव्य के अनुरूप गति प्रदान करते हैं, किन्तु कुछ ऐसे भी प्रसंग होते हैं जो पाठक के मन और मस्तिष्क पर स्थाई प्रभाव छोड़ जाते हैं, हृदय में एक कसक उत्पन्न करते हैं तथा पाठक को कुछ देर एकान्त में चिन्तन के लिए विवश कर देते हैं। महाराजा गंगाधर राव की प्रयाण वेला का कारुणिक प्रसंग

कुछ इसी प्रकार का है। पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

हम तुम मारग के साथी थे, मारग में ही हो बिलग चले।

मारग के ही नियमानुसार, तुम अलग चलीं हम अलग चले।।

मेरी रानी मत घबराओ, इस पथ का पारावार नहीं।

फिर मिल जायेंगे किसी जगह, फिर हो जायेगा साथ कहीं।।[1]

यहाँ अन्तिम प्रयाण वेला में मोहयुक्त ह्रदय से निःसृत ह्रदयस्पर्शी भाव व्यंजित है। जगत की नश्वरता तथा सृष्टि–विधान, सांसारिक मिलन और विछोह पाठक के अन्तर को झकझोरते हैं, आन्तरिक वेदना को जाग्रत करते हैं तथा मर्म स्पर्श भी करते हैं। राजा के प्रयाण के उपरान्त दत्तक विधान अस्वीकृत कर दिया गया। झाँसी के पोलिटिकल एजेन्ट मेजर एलिस ने जब सरकारी निर्णय घोषित किया, रानी के ह्रदय को करारी चोट लगी, रानी अचेत हो गई। पंक्तियाँ देखिये–

चढ़ गई श्वास दृग बंद हुए,

सब दास दासियाँ अकुलानी।

छिड़ काया मुख पर जल गुलाब,

नाड़ी की गति विधि पहिचानी।।

जब आई कुछ चेतनता तो,

रानी को अपना ज्ञान हुआ।[2]

अप्रत्याशित निर्णय सुनकर तथा अंग्रेज अधिकारियों का विश्वासघात देखकर रानी लक्ष्मीबाई का ह्रदय टूट गया। अचानक बज्रपात सा हुआ। मुख–छवि धूमिल हो गई, श्वास अवरुद्ध हो गया, दास–दासियाँ व्याकुल होकर उपचार करने लगे। तात्पर्य यह है कि निर्णय इतना कठोर तथा असहनीय था कि रानी का नारी–सुलभ कोमल ह्रदय उसे सहन नहीं कर सका।

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 33

2– उपरिवत्, पृष्ठ 53

अंग्रेजों से भयंकर युद्ध हुआ। रानी के साथ अपनों ने विश्वासघात किया। दुर्ग की ओर से छूँछी तोपें चलायी जा रही थीं। गद्दारों ने फाटक खोल दिया। शस्त्रालय छिन्न–भिन्न हो गया। अन्ततः निराश होकर रानी के मन में आत्मघात का दुर्विचार समुत्पन्न हुआ। रानी बारूद बिछाकर राजभवन में आत्महत्या के लिए उद्यत हो रही थी, तभी एक वृद्ध सरदार की प्रेरणास्पद परामर्श ने रानी का हृदय परिवर्तन कर दिया। यदि यह कहा जाय कि नया इतिहास रच दिया तो अत्युक्ति नहीं होगी। उदाहरण प्रस्तुत है–

था एक वृद्ध सरदार वहाँ,
उसने समझा अब मिटा खेल।
वह करुण कण्ठ भर बोल उठा,
कुछ नयनों की निधियाँ उड़ेल।।

X X X

है महाशोक है महाशोक,
जो आत्मघात कर जाओ तुम।
इससे तो यह अच्छा होगा,
लड़ते–लड़ते मर जाओ तुम।।[1]

यहाँ वृद्ध सरदार की प्रेरणा से रानी का अपने सत्कर्तव्य के प्रति जागरूक होना वर्णित है। यह एक ऐसी हृदय विदारक घटना है, जिसे पढ़कर पाठक का हृदय विदीर्ण होने से नहीं बच पाता।

'झाँसी की रानी' महाकाव्य का एक अन्य मर्म–भेदी स्थल दृष्टव्य है–

बुन्देलों की उस वीर भूमि झाँसी को फिर–फिर कर देखा।
अपना प्यारा वह राजमहल रानी ने जीभर कर देखा।।
देखी झाँसी की समर सेज सोया देखा निज शूरों को।
देख निज गढ़ से गिरे हुए उन भू–लुंठित कनगूरों को।।[2]

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 139

2– उपरिवत्, पृष्ठ 146

रानी की घोर निराशा का हृदय विदारक वर्णन प्रस्तुत है। रानीएक प्रकार से पराजित होकर झाँसी का दुर्ग छोड़कर कालपी की ओर प्रस्थान करती है। प्रस्थान करते समय बुन्देलों की वीर–भूमि झाँसी को, अपने राजमहल को, उस युद्ध भूमि को जहाँ झाँसी की ही फौज के योद्धा सिपाही मृत्यु–शैया पर सो रहे थे तथा गढ़ के टूटे हुए कंगूरों को रानी लौट–लौटकर देखती है। उस समय रानी की हार्दिक वेदना का अनुमान करना कितना कठिन है, कहा नहीं जा सकता।

इसी क्रम में एक और मार्मिक घटना का वर्णन प्रस्तुत है। अंग्रेजों ने झाँसी की लूट केसमय युवकों को बीन–बीन कर तो मारा ही था, माँ की गोद से शिशुओं को छीनकर मौत के घाट भी उतार दिया था। उदाहरण देखिये–

असहाय हाय अबलाओं पर गोरे पड़ते थे झूप–झूप।
था पैशाचिकता का प्रकोप था निर्दयता का नग्न रूप।।
था प्रेतराज प्रत्यक्ष वहाँ होता था ऐसा कृत्य जहाँ।
हो पाश्चात्य मद में प्रमत्त पशुता करती थी नृत्य जहाँ।।[1]

इन पंक्तियों में झाँसी की लूट का हृदय विदीर्ण करने वाला दृश्य उपस्थित है। अबलाओं पर पाशविक अत्याचार हो रहे थे, अंग्रेज बर्बरतापूर्ण दुराचरण में प्रवत्त थे। निर्दयता साकार उपस्थित थी तथा पशुता नग्न नृत्य कर रही थी। वर्णन पढ़कर सहृदय पाठक के मस्तिष्क में तत्कालीन स्थितिका बिम्ब–चित्र प्रस्तुत हो जाता है। वह विवश हो जाता है, सोचने के लिए।

महाकाव्य में इस प्रकार के मार्मिक प्रसंग प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं, जो पाठक के हृदय को आन्दोलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। एक कारुणिक प्रसंग उस घटना को रेखांकित करता है, जब रानी लक्ष्मीबाई अपने गन्तव्य स्थान कालपी पहुंचने के पूर्व भांडेर ग्राम

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 162

से गुजरती हैं। तृषा से व्याकुल, थकान से बेचैन रानी स्नान–ध्यान की बात मन में सोच ही रही थीं, तब तक लैफ्टिनेंट बाकर उन्हें घेर लेता है। उस समय का मार्मिक प्रसंग कवि के शब्दों में देखने योग्य है–

पथ के श्रम से कुछ रानी का,
मुख कमल रह गया कुम्हलाकर।
बस इसी समय ही रानी को,
बाकर ने घेर लिया आकर।।
कुछ सोच रही थीं मन ही मन,
करने को ही थीं स्नान–ध्यान।
है किन्तु दैव की गति विचित्र,
छिड़ गया अचानक घमासान।।[1]

उक्त पंक्तियों में अन्तर्निहित रानी लक्ष्मीबाई की आन्तरिक पीड़ा सहृदय पाठक को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकती। पाठक के हृदय को उद्वेलित करने वाले विविध मार्मिक वर्णन महाकाव्य में मौजूद हैं, जो डॉ. आनन्द की भाव–निरूपण क्षमता के द्योतक हैं। डॉ. आनन्द का काव्य क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। उनके काव्य में यदि एक ओर आम मनुष्य की वेदना का हृदय स्पर्शी वर्णन है, तो दूसरी ओर विशिष्ट राजनीतिक प्रतिभाओं का स्वार्थपरक आचरण भी है। यदि कहीं धर्म, नारी तथा राजनीति को वर्ण्य विषय बनाया गया है तो कहीं मानवीय स्वतंत्रता या उदात्तता की प्रतीति को ही काव्यका लक्ष्य माना गया है। वस्तुतः कवि अन्तर्मन से स्वतंत्रता का पुजारी है। स्वतंत्रता के लिए युद्धों का सटीक वर्णन पूर्व इतिहास के परिप्रेक्ष्य में करते हुए कवि ने विविध मार्मिक स्थलों का विधान किया है।

अतः कहा जा सकता है कि महाकाव्य में वर्णित मार्मिक प्रसंग पाठक के हृदय में संवेदना जाग्रत करने में पूर्ण सक्षम हैं, तथा पीड़ा का उद्भावन करने में पूर्ण समर्थ हैं।

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 173

व- झाँसी की रानी का अंगी रस

'रस का तात्पर्य स्वाद से है। जिस प्रकार भोजन से अनेक प्रकार का स्वाद प्राप्त होता है, ठीक उसी तरह काव्य के पढ़ने से हमें अनेक प्रकार के आनन्द की उपलब्धि होती है। अर्थात् हमारे हृदय में एकऐसे अनिवर्चनीय भाव का संचार होता है, जो आनन्द स्वरूप है। इसी अलौकिक आनन्द को 'रस' की संज्ञा दी गई है।'[1] 'भारतीय काव्य शास्त्र के अन्तर्गत रस का विशेष महत्व है। उसे काव्य की आत्मा के रूप में स्वीकार किया गया है।'[2] प्रत्येक काव्य में एक अंगीरस होता है तथा शेष अंग रस होते हैं। डॉ. आनन्द के 'झाँसी की रानी' महाकाव्य के अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि इसमें वीर रस को अंगीरस के रूप में प्राधान्य प्राप्त है, शेष अंग रस प्रसंगानुसार समावेशित हैं।

'झाँसी की रानी' में मन की गहराइयों तक रचे बसे भावकोष का छलकता रस प्रवाह है। यह काव्य अनुभूति के स्तर पर सम्प्रेषणीयता से सम्पन्न है तथा सच्ची अनुभूति से सम्पन्न रचना अपनी गरिमा से पाठक को अभिभूत किये बिना नहीं रहती। अनुभूति की सच्चाई को पारखी दृष्टि तुरन्त पहचान लेती है। डॉ. सेवक वात्स्यायन ने अपनी समीक्षा में लिखा है कि— 'आनन्द जी के इस काव्य में जहाँ—जहाँ शौर्य और पराक्रम के स्थिर अथवा गतिमय प्रसंग आये हैं, काव्य—कौशल अपने चरम को प्राप्त हुआ है और इस दृष्टि से चौदह सर्गों में विनिबद्ध इस राष्ट्रीय ऐतिहासिक काव्य में सर्व श्रेष्ठ अंश **'झाँसी में घमासान युद्ध'** शीर्षक सातवाँ सर्ग है। सम्पूर्ण हिन्दी वाङ्.मय में इस तत्पर त्वरितता और गरिमा के वीर रस काव्यांश अन्यत्र कदाचित कठिनाई से ही मिलेंगे।'[3] कथन का तात्पर्य यह है कि

1— मानक हिन्दी व्याकरण—डॉ. पृथ्वीनाथ पाण्डेय, पृष्ठ 253

2— साहित्यिक निबंध—डॉ. विजयपाल सिंह, पृष्ठ 123

3— झाँसी की रानी—समीक्षा, डॉ. सेवक वात्स्यायन, पृष्ठ 5

महाकाव्यान्तर्गत वीर रस योजना को डॉ. वात्स्यायन ने हिन्दीसाहित्य में अनूठा माना है तथा महाकाव्य को तरुण शौर्य–सौन्दर्य का राष्ट्रीय अनुगान भी स्वीकार किया है।

महाकाव्य में वीर रस के सहायक रसों के रूप में प्रसंगानुकूल करुण, श्रृंगार, वीभत्स तथा शान्त रस भी समायोजित हैं, किन्तु हमारा मुख्य प्रतिपाद्य 'झाँसी की रानी' महाकाव्य के अंगीरस का विवेचन करना है। डॉ. आनन्द मुख्यतः वीररस के कवि थे। **'झाँसी की रानी'** उनका वीररस प्रधान महाकाव्य है। इस काव्य में राष्ट्र प्रेम, देशभक्ति, राज्यों के पारस्परिक वैमनस्य तथा सामाजिक नैतिकता के अधःपतन के चित्र भी प्रस्तुत किये गये हैं; किन्तु प्रधानता वीर रस प्रधान वर्णनों की ही है।

डॉ. पृथ्वीनाथ पाण्डेय के अनुसार– 'उत्साह नामक स्थायी भाव जब विभावादि के संयोग से परिपक्व होकर रसरूप में परिणत होता है, तब वही वीर रस कहलाता है।'[1] कथन का तात्पर्य यह है कि वीर रस का स्थायी भाव उत्साह होता है। जब यह स्थायी भाव विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भावों के संयोग से परिपक्व हो जाता है, तबवीर रस की निष्पत्ति होती है। 'झाँसी की रानी' महाकाव्य में यद्यपि दानवीर, धर्मवीर, दयावीर तथा युद्धवीर सभी उद्धरण मिलते हैं, किन्तु प्रमुखता युद्ध वीररस के उदाहरणों की है। एक उदाहरण दृष्टव्य है–

घोड़ो की सरपट दौड़ों में आँधी दिखलाई देती थी।
खाकी टोपों पर टपक–टपक बस टाप सुनाई देती थी।।
रानी के चंचल घोड़े की दब सकी न रण में कोर कहीं।
छू सका न कोई छोर कहीं इस ओर कहीं उस ओर कहीं।।[2]

उक्त पंक्तियों में वीरांग्ना महारानी लक्ष्मीबाई के घोड़े की गति की चंचलता का ओजस्वी वर्णन कवि ने प्रस्तुत किया है। घोड़े का

1– मानक हिन्दी व्याकरण–डॉ. पृथ्वीनाथ पाण्डेय, पृष्ठ 255

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 113

उत्साह देखकर रानी के उत्साह की कल्पना की जा सकती है। 'खाकी टोपों पर टपक–टपक बस टाप सुनाई देती थी' पंक्ति में प्रत्येक शब्द से वीर रस टपकता सा प्रतीत हो रहा है। भाषा भावानुकूल है तथा रसोद्रेक में पूर्ण सहायक है।

घोड़े की वीरता के ओजस्वी वर्णन के साथ कवि ने रानी की तलवार का जो प्रभावी वर्णन प्रस्तुत किया है, ऐसा चमत्कारिक वर्णन वीर रस का कोई अन्य कवि नहीं कर सका। एक अनूठा उदाहरण देखिये–

नश्तर बनकर धँस गई और बनकर भाला बरछी निकली।
अरि सीने में सीधी धँसकर निकली बरछी तिरछी निकली।।
किसकी गर्दन पर वार न था किसकी छाती के पार न थी।
अरिदल में था वह कौन शूर जिसके सिर पर तलवार न थी।।[1]

यहाँ कवि ने तलवार के माध्यम से वीर रस का जो विध्वंश कारी दृश्य उपस्थित किया है, वह वस्तुतः कवि की वीर भावना का ही सुपरिणाम है। डॉ. आनन्द स्वयं स्वतंत्रता सेनानी थे। वीर भावना मानो उनमें कूट–कूट कर भरी थी। स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेकर कवि ने जेल यात्रायें भी कीं तथा अज्ञातवास भी भोगा था।

झाँसी का दुर्ग अजेय था तथा अंग्रेजों की विपुलवाहिनी और पर्याप्त शक्ति–सम्पन्नता के आगे अजेय ही बना रहा। गद्दारों ने गद्दारी न की होती तो शायद अंग्रेज विजयोल्लास से गर्वित न हो पाते। किले का फाटक खुलते ही ब्रिटिश सेनायें प्रविष्ट हो गयीं– उस समय झाँसी की फौज के रण–बाँकुरों की वीरता का एक अद्भुत दृश्य दर्शनीय है–

फिर भी झाँसी के नौजवान, बरछे भाले तन झेल उठे।
कितने ही रण में राजपूत यह खेल मौत से खेल उठे।।
उठ पड़े शेख सैयद कितने निज कर में लिए कृपाण उठे।
मर मिटने वाले मुसलमान कितने पठान अफगान उठे।।

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 117

X X X

कितने क्षत्री राठौर और कितने चौहान दिखाते थे।

जो समर सेज पर सो सोकर अपने को अमर बनाते थे।।

निज निज परिचय सबदेते थे भाले उड़–उड़ गोले दग–दग।

जगमग–जगमग तलवारों से हो उठी धरा डगमग–डगमग।।[1]

इन उद्धरणों को पढ़कर युद्ध की भयंकरता की अनुभूति होने लगती है। वीरों की अप्रतिम वीरता का वैभव नेत्रों में नृत्य करने लगता है। जब भाले–बरछे चलते थे, गोले दागे जाते थे तथा तलवारें अपनी चमक से चकाचौंध उत्पन्न करती थीं, तब पृथ्वी डगमगाने लगती थी। कवि की वर्णन क्षमता का नैपुण्य दर्शनीय है।

डॉ. आनन्द ने रानी लक्ष्मीबाई की अप्रतिम वीरता को अपनी लेखनी से ऐसा उत्कर्ष प्रदान किया है कि पाठक पढ़कर अपनी नशों में उत्तेजना अनुभव तो करता ही है, उसका खून भी खौलने लगता है। एक उदाहरण दर्शनीय है–

था शूर न कोई और साथ केवल कर लिए दुधारा थीं।

उस क्षण कृपाण ही रानी की रानी का एक सहारा थीं।।

दूसरा सहारा रानी को अपने ही साहस बल का था।

सच पूछे तो बस यही समय रानी के रण कौशल का था।।[2]

भांडेर ग्राम से गुजरते हुए रानी लक्ष्मीबाई को लेफ्टिनेन्ट बाकर ने जब घेर लिया, उक्त पंक्तियों में उस समय का रोमांचकारी वर्णन है। रानी को केवल अपनी तलवार और अपने अदम्य साहस का ही एक मात्र सहारा था। रण–कुशल योद्धा की भाँति रानी ने लेफ्टिनेन्ट बाकर पर ऐसा प्रहार किया, जिससे अचेत होकर वह धराशायी हो गया। रानी अपने गन्तव्य की ओर अग्रसर हो गई। कालपी पहुँचकर पुनः अंग्रेजों से घमासान

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 133–134

2– उपरिवत्, पृष्ठ 174

युद्ध हुआ। शत्रुओं की सेना का भयंकर जमाव देखकर रानी ग्वालियर किले को हस्तगत करने के लिए ग्वालियर पहुँची। चुने हुए योद्धाओं की सेना साथ थी। महाराजा सिंधिया से भयंकर संग्राम हुआ। एक चित्र देखिये—

रानी इधर से आ गई बनकर कराल काल।
तो डगमगा उठे सभी आकाश क्या पाताल।।
भृकुटी हुई थीं बंक बिखरने लगे थे बाल।
माथे पै बल पड़े हुए आँखें थीं लाल—लाल।।
रण—रोष जिस समय महारानी पै आ गया।
तो ग्वालियर का युद्ध जवानी पै आ गया।।[1]

उक्त छन्द में रानी के युद्ध में पहुँचते ही भुकृटि का बंक होना, माथे पै बल पड़ना तथा क्रोध के कारण आँखों का लाल होना सभी वीरोचित अनुभावों का सटीक प्रयोग हुआ है।

ब्रिटिश फौज के साथ रानी का अन्तिम युद्ध होने को था। रानी स्वराज्य की बलि—वेदी पर अपने प्राणों की आहुति देने को सन्नद्ध थी। नानाराव पेशवा, तात्याटोपे, सुन्दर, मुन्दर, रघुनाथसिंह तथा सभी दास—दासियों से अन्तिम मिलन हो रहा था, तभी ब्रिटिश फौज का भयंकर आक्रमण हुआ। रानी की विचित्र वीरता का दिल दहलाने वाला दृश्य देखिये—

फिर लगीं नाचने रण चण्डी खप्पर भरने रण—प्रांगण में।
ले लेकर प्राण हथेली पर आ गये शूर समराँगण में।।
वह तेज पुन्ज वह चमक—दमक वह शौर्य—सिन्धु वह वीर वेश।
बरछी कटार से रानी का शोभित इस क्षण था कटि प्रदेश।।[2]

वीरता की साक्षात् प्रतिमूर्ति रानी लक्ष्मीवाई का रण चण्डी के सदृश बरछी, कटार से सुसज्जित कटि प्रदेश, उसकी चमक—दमक तथा अनुपम शौर्य का वीरत्व व्यंजक वर्णन कितना लोमहर्षक बन पड़ा है—ऐसा ओजस्वी वर्णन अन्यत्र दुर्लभ है।

1— झाँसी की रानी, पृष्ठ 197

2— उपरिवत्, पृष्ठ 211

रानी लक्ष्मीबाई के रूप में साक्षात् वीर रस ही मानो अवतरित हुआ था। युद्ध के प्रांगण में रानी का तन, मन युद्धमय हो गया था। सर्वस्व बलिदान को समर्पित, स्वातंत्र्य युद्ध की अद्‌भुत वीरांग्ना रानी लक्ष्मीबाई का अभूतपूर्व शौर्य देखते ही बनता है–

मणि जटित हार में रानी के था प्रतिबिम्बित रण का कण–कण।
मानो रानी के तन–मन में अब समा रहा था रण ही रण।।
वह वायु वेग से दौड़ रही जो दृष्टि किसी के आ न सकी।
रवि की सहस्र किरणावलि भी जिसकी छाहीं छू पा न सकी।।[2]

कवि ने **'झाँसी की रानी'** महाकाव्य में वीर–रसात्मक प्रसंगों का वर्णन जिस कुशलता से किया है, वह वस्तुतः सराहनीय है। एक स्थान पर **'जिनि जाउ भले भरतार कोइलिया कुहू–कुहू कूकन लागी'** कहने वाला कवि अन्यत्र वीर भाव के ओजस्वी प्रसंगों का इतना सफलतम रेखांकन करता है, यह कवि की विलक्षण अभिव्यक्ति–प्रतिभा का परिचायक है। वस्तुतः डॉ. आनन्द **'राग और आग'** दोनों तत्वों को समान रूप से जीने वाले कवि थे, फिर भी उनके काव्य में वीर रस को जो गरिमा प्राप्त हो सकी है, वह अन्य किसी रस को नहीं। डॉ. आनद का काव्य उद्‌बोधन परक, ओजस्वी सर्जना के स्वरों की साधना है। आपका रचना संसार एकदृष्टि देता है, जो शास्वत जीवन–मूल्यों पर आधारित है।

अतः कहा जा सकता है कि **'झाँसी की रानी'** महाकाव्य वीर रस का अनूठा काव्य है, जिसमें झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की अखण्ड वीरता का अभूतपूर्व गायन है।

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 214

चतुर्थ अध्याय :

एम.एल.ए.राज तथा सन् अड़तालीस :
सामान्य परिचय एवं साहित्यिक मूल्यांकन

- विषय वस्तु
- सामाजिक प्रभाव
- भाषा-स्वरूप
- राजनीतिक संदर्भ

चतुर्थ अध्याय

सन् अड़तालीस तथा एम. एल. ए. राज : साहित्यिक मूल्यांकन

1– सन् अड़तालीस

भारतवासियों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त देश की सार्वभौमिक प्रगति, मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मधुर स्वप्न संजोये थे। परन्तु स्वतंत्रता को हम सहज रूप में ग्रहण नहीं कर सके। प्रारंभ से ही हमारे नैतिक मूल्यों पर कुठाराघात होने लगे। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश की राजनीतिक, सामाजिक व्यवस्थाओं में आमूल परिवर्तन होना चाहिये था, परन्तु ऐसा नहीं हो सका। परिणाम यह हुआ कि राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में हमारी वांछित प्रगति नहीं हो सकी। एक स्वतंत्र राष्ट्र से जो आशायें होती हैं, उन्हें हम पूरा नहीं कर सके। 30 जनवरी 1948 ई. को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की निर्मम हत्या कर दी गई। इस हत्या का कलंक भारतीय इतिहास के पृष्ठों में सदैव अंकित रहेगा। यह हत्या लोक–विश्वास और मानवीय मूल्यों पर कठोर बज्राघात सिद्ध हुई। देश में स्वार्थ, भ्रष्टाचार और अनीति का वर्चस्व हो गया, वैचारिक और सैद्धान्तिक अराजकता चारों ओर फैल गयी। चारित्रिक पवित्रता, त्याग, सेवा भावना, प्रेम और विश्वास ने अपना अस्तित्व खो दिया।

विभिन्न राजनीतिक दलों ने पारस्परिक ईर्ष्या और द्वेष के कारण वैमनस्य और संघर्ष को जन्म दिया। इन सभी अनियमितताओं और अव्यवस्थाओं के लिए तत्कालीन काँग्रेस सरकार तथा उनके अधिकारी पूर्ण रूपेण उत्तरदायी हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त तत्कालीन भारत सरकार को यह सिद्ध करना था कि वह देश की शासन व्यवस्था का सुचारू संचालन करने में सर्वथा समर्थ है, किन्तु वह ऐसा नहीं कर सकी।

'साहित्यकार जिस समाज का अंग होता है, उस समाज का चित्रण वह अवश्य अपनी कृतियों में करता है। परन्तु उसके इस चित्रण में समाज सुधार की भावना ही मूलतः रहती है। अतएव वह समाज का यथा तथ्य चित्रण कर या उसका संकेत मात्र प्रस्तुत कर पाठकों को इस सम्बंध में चिन्तन करने के लिए बाध्य करता है और कभी–कभी स्वयं किसी आदर्श की स्थापना करता है।'[1] डॉ. आनन्द ने **'सन् अड़तालीस'** में स्वातंत्र्योत्तर देश की दुर्व्यवस्थाओं एवं दुर्नीतियों को उजागर किया है तथा नई पीढ़ी के समक्ष एक वैचारिक चिन्तन प्रस्तुत किया है। तत्कालीन सरकार एवं कांग्रेसी नेताओं के चरित्र का इस कृति में उद्घाटन किया गया है। कवि ने अपनी अनुभूतियों को सफलता पूर्वक अभिव्यक्त किया है। 'सन् अड़तालीस' का साहित्यिक मूल्यांकन निम्नवत् प्रस्तुत है।

क- विषय वस्तु

स्वतंत्रता संग्राम के प्रतिफल स्वरूप आजादी प्राप्त हुए अभी पाँच महीने ही व्यतीत हुए थे कि 30 जनवरी सन् 1948 को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की निर्मम हत्या कर दी गई। उस दिन भारत–वसुन्धरा पर अचानक बज्राघात हो गया। इस कृति का नाम करण **'सन् अड़तालीस'** सम्भवतः महात्मा गाँधी की निर्वाण तिथि के आधार पर ही किया गया हो। **'सन् अड़तालीस'** में कवि का निहित उद्देश्य है उस समय की राजनीतिक

1– साहित्यिक निबन्ध (साहित्य और समाज)– डॉ. विजयपालसिंह, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 17

तथा सामाजिक परिस्थितियों का सांगोपांग निरूपण करना। कवि ने महात्मा गाँधी की प्रतिभा को माँ तथा स्वराज्य को बालक मानकर एक रूपक बाँधा है। जिस प्रकार बालक माँ के संरक्षण के बिना सकुशल जीवित नहीं रह सकता, उसी प्रकार गाँधी जी के संरक्षण के अभाव में स्वराज्य रूपी बालक का रहना असम्भव नहीं तो दुस्साध्य अवश्य है।

गाँधी जी के निर्वाणोपरान्त राष्ट्रीय गगन निराशा रूपी तिमिर से आच्छादित हो गया। अन्याय, पदलोलुपता तथा भ्रष्टाचार का बोलबाला था। नेताओं में स्वेच्छाचारिता पनप रही थी। गरीबों को त्राण नहीं मिल पा रहा था तथा नारियों की इज्जत को बचाना मुश्किल था। इन विषमताओं से प्रभावित होकर ही कथानक का सूत्रपात हुआ प्रतीत होता है।

कवि नेताओं को सावधान करता हुआ कहता है कि जिस आजादी के लिए अगणित वीर शहीद हो गये, भारत माँ के टुकड़े–टुकड़े हो गये, कितनी कलियाँ खिलते–खिलते कुम्हला गईं, कितनी बहिनें भाइयों को राखी भी नहीं बाँध पाईं, वह आजादी किस बँगले में कैद है? जिस आजादी के लिए बिसमिल जैसे वीर फाँसी के तख्त पर गीत गाते हुए झूल गये, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई कुर्बान हो गई, जिस आजादी के हम राग अलापते रहे, वह आजादी जिस बँगले में भी कैद हो, हम उसकी ईंट से ईंट बजाकर तहस–नहस कर देंगे। हमें स्वराज्य चाहिए।

डॉ. आनन्द जन प्रतिनिधियों को फटकार लगाते हुए कहते हैं कि इस तथा कथित स्वराज्य और ब्रिटिश हुकूमत की गुलामी में कोई अन्तर नहीं है। यहाँ पर कवि भारतीय कृषक और मजदूर का प्रतिनिधित्व करता हुआ नेताशाही को चुनौती देता है। नेताओं के दुष्कृत्यों को उजागर करता हुआ कवि कहता है कि तुमने भारत माँ के अरमानों पर तुषारापात किया है। भूखे मजदूर–किसान की वेदना को बढ़ाया है, उसकी वेवशी का अनुचित लाभ उठाया है, हजारों–हजारों का वेतन लेकर स्वार्थपरता में संलग्न हो गये हो, जबकि यह सिंहासन तुम्हें किसानों के बल पर ही मिला है। हम किसान इस युग के निर्माता हैं, नेताओं का भ्रष्टाचरण समूल

उन्मूलित कर देंगे। इस एम.एल.ए.राज को मिटाकर सच्चे स्वराज्य का स्थापन जब होगा उसका राजा मजदूर किसान ही होगा तथा मजदूर ही उसका मंत्री होगा।

कवि किसान–मजदूर की ओर से नेताओं तथा जन प्रतिनिधियों को उपालम्भ देता हुआ कहता है कि जब तुम जेल के सींखचों में बन्द थे तब तुम्हें स्वतंत्र कराने को हमने अंग्रेजों की गोलियाँ खाईं थीं। अब स्वराज्य के नाम पर तुमने भ्रष्टाचार राज्य स्थापित कर किसानों–मजदूरों को परतंत्र बना दिया है। उस पराधीनता और इस गुलामी में कोई अन्तर नहीं है। पहले बिदेशी ब्रिटिश राज्य था, अब स्वदेशी ब्रिटिश राज्य है। पहले हम पेट पालने तथा वोट डालने में स्वतंत्र थे, हमारे व्यापार पर कोई प्रतिबन्ध नहीं था, अंग्रेज टिकिट पर कोई चुनाव नहीं लड़े जाते थे, जीवन जीने के सभी अधिकार प्राप्त थे। किन्तु आज कांग्रेस के टिकिट पर चुनाव लड़ने का ऊँचा बाजार और खुला भाव है, चुनाव लाठी, बन्दूकों तथा आतंक के बल पर लड़े जाते हैं, बिना लाइसेन्स व्यापार निषिद्ध है, कांग्रेसियों के विरुद्ध मतदान नहीं कर सकते। क्या पूर्व की तुलना में आज देश दाने–दाने को मोहताज नहीं हुआ है, क्या यही नीति थी महात्मा गाँधी की, क्या अपने स्वराज्य की यही परिभाषा है?

जिस स्वराज्य में कन्याओं का अपहरणहोता हो, बलात्कार होते हों, गोलीकाण्ड, लूट–खसोट तथा विभिन्न राजनीतिक षड्यंत्रों का साम्राज्य हो तथा मजदूर किसानों पर अनाचार होते हों, क्या यही स्वराज्य की परिभाषा है? स्वराज्य के अग्रदूतों जैसे सुभाषचन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद तथा सरदार भगतसिंह का जन्मदिन कभी नहीं मनाया जाता, जबकि नेताओं के जन्मदिन रोज मनाये जाते हैं। जिन चन्द्रशेखर आजाद ने ब्रिटिश राज्य का सिंहासन डगमगा दिया था, उनकी वृद्धा माँ दो दाने के लिए तरस रही है, वह जीर्ण–शीर्ण खण्डहर में रहती है, सत्तारूढ़ नेताओं ने कभी इस पर ध्यान दिया है? कवि का आक्षेप तत्कालीन प्रधानमंत्री पं.

जबाहरलाल नेहरू की ओर है। प्रधानमंत्री से कटूक्ति कहने का कवि का साहस निम्न पंक्तियों में दर्शनीय है–

अपने मक्खन अण्डे से तुम,
कुछ बजट निकाल नहीं सकते।
उस नर–नाहर की माँ को क्या,
दोदाने डाल नहीं सकते ?[1]

उक्त व्यंग्योक्ति को सुनकर भला किसका हृदय नहीं दहल जावेगा। कहा जाता है कि इसके बाद नेहरू जी ने आजाद की माँ को अतिरिक्त सहायता के रूप में मासिक धनराशि देना प्रारंभ कर दिया था।

डॉ. आनन्द नेताओं पर तीखा प्रहार करते हुए कहते हैं कि आजादी के बाद पूर्व का सारा क्रान्तिकारीइतिहास विस्मृत कर दिया तथा उच्च वेतन भोगी होकर मजदूर–किसानों की ओर दृष्टिपात भी नहीं किया। कवि सचेत होकर जागरूक जनसामान्य की ओर से घोषणा करता है कि यदि हमने इस बर्बरता पूर्ण तानाशाही का तख्त न उलट दिया और दुनियां का इतिहास न बदल दिया तो हम कवि नहीं। कांग्रेस शासन में गद्दारों को उच्च पदों पर आरूढ़ किया जाता है, देश द्रोहियों को बुला–बुलाकर ताज पहिनाये जाते हैं। जिन छात्रों ने शहीद होकर देश को आजादी दिलवाई, उन पर लाठी बरसाने में तुम्हें शर्म नहीं आई। कवि ने बार–बार नेताओं को खरी–खोटी सुनाकर अन्त में पश्चाताप प्रकट किया कि आजादी मिली तो किन्तु न जाने कहाँ विलीन हो गई, उसका अपेक्षित लाभ देश को न मिल सका।

'सन् अड़तालीस' में कवि अपने उद्देश्य के प्रति पूर्णतः जागरूक रहा है। कथानक के मूलतत्व पर ही रचना का सारा ढाँचा निर्मित है। कथावस्तु में कवि ने रोमांचक और मनोग्राही मोड़ भी संयोजित किये हैं। घटनाओं का सुनियोजित विकास है। उद्देश्य की उपलब्धि में कवि पूर्ण सफल है। राष्ट्रीय भावना को सम्पूर्ण कृति में प्रमुखता प्रदान की गई है। कवि का रचना–शिल्प सराहनीय है।

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 18

ख-सामाजिक प्रभाव

कवि साहित्य और संस्कृति कर्मी समाज का सबसे संवेदनशील अंग होता है। एक संवेदनशील और भावुक कवि जब समाज में व्याप्त अन्याय, अराजकता तथा शोषण देखता है, तो वह ऐन–केन प्रकारेण प्रतिवाद भी करता है। यह उसकी सांस्कृतिक जिम्मेदारी है, यही कवि धर्म है। कवि–धर्म का परिमार्जित स्वरूप कभी राजनीति का अनुगमन नहीं करता, वह तो समाज का मार्ग दर्शक होता है। सामाजिक परिस्थितियाँ उसके काव्य में चित्रित रहती हैं। सामाजिक परिवेश का रेखांकन होता है उसकी कविता में। वह अपने काव्य में निजानुभूति की निश्छल व्यंजना प्रस्तुत करता है। समर्थ कवि सामाजिक सत्य को उद्घाटित करता है। साहित्य जीवन से सम्बंधित समाज का ही प्रतिफल होता है। एक विचारक के कथनानुसार–' कवि वास्तव में समाज की व्यवस्था, वातावरण, धर्म–कर्म, राजनीति तथा सामाजिक शिष्टाचार और लोक–व्यवहार से ही अपने काव्य के उपकरण चुनता है और उनका प्रतिपादन अपने आदर्शों के अनुरूप ही करता है।'[1]

'सन् अड़तालीस' में कवि ने तत्कालीन समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार को यदि एक ओर रूपायित किया है तो दूसरी ओर देशभक्ति की भावना के आकर्षक चित्र भी खींचे हैं। युग–दृष्टा होने के नाते कवि ने अपने काव्य में समूचे युग को प्रतिबिम्बित किया है। नेताओं की अराजकता को उभारने कीभरपूर कोशिश परिलक्षित होती है तो दूषित राजनीति की दुर्गन्ध को भी उजागर किया गया है। कृति में कदम–कदम पर कवि की देश–भक्ति एवं राष्ट्रीय भावना का स्वरूप मुखरित है। अराजक नेतृत्व को कवि की राष्ट्र–भक्ति ने आड़े हाथों लिया है। राजनीतिक प्रदूषण को प्रकट करने की पुरजोर कोशिश की गई है। **'सन् अड़तालीस'** में वर्णित तत्कालीन सामाजिक स्थितियाँ तथा उनके प्रभाव को निम्नवत् प्रस्तुत किया जा सकता है।

1– साहित्यिक निबंध–साहित्य और समाज–डॉ.विजयपालसिंह, पृष्ठ 17

1- समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब होता है। साहित्यकार साहित्य में जीवन और जगत का समग्र रेखांकन प्रस्तुत करता है। वह अपनी रचना में वास्तविक रूप में घटित होने वाली घटनायें, उनके कारणों, परिस्थितियों तथा प्रभावों का यथातथ्य वर्णन करता है। यथार्थ जीवन में अनेक समस्यायें आती हैं, जिनसे मनुष्य सदैव संघर्ष करता रहता है। इस संघर्ष का चित्रण साहित्य का मुख्य ध्येय है। **'सन् अड़तालीस'** में डॉ. आनन्द ने तत्कालीन समाज में व्याप्त आचारों, विचारों, घटनाओं एवं परिस्थितियों का सटीक वर्णन प्रस्तुत किया है। महात्मा गाँधी के निर्वाणोपरान्त सम्पूर्ण देश में कांग्रेस नेताओं ने अपने भ्रष्टाचारों से जन–जन में निराशा की लहर उत्पन्न कर दी थी। जन–जन की पीड़ामय पुकार ने कवि को व्यथित किया और कवि विवश हो गया तत्कालीन समाज का चित्रण करने को। समाज की परिस्थितियों का एक चित्र दृष्टव्य है–

अन्याय, लूट, पद–लोलुपता,
हैं रिश्वत के बाजार गर्म।
नेताओं ने बालाये ताक,
रखदी अपनी सब लाज शर्म।।
नारी की लज्जा बच न सकी,
मिल सका गरीबों को न त्राण।
तब कवि ने बरवस उठा लिया,
अपने हाथों में धनुष–बाण।।[1]

उक्त छन्द में कवि का विद्रोही तेवर झलक रहा है। नेताओं ने स्वेच्छाचारी होकर अन्याय, अत्याचार एवं भ्रष्टता कीसीमा पार कर दी थी। निर्धन मजदूर–किसानों का शोषण तथा अबलाओं का अपहरण आम बात थी। चोर बाजारी तथा लूट–खसोट की खुली छूट थी। ऐसी विषमतापूर्ण

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 3

अराजक स्थिति का कवि ने अपनी ओजस्वी वाणी में साहसपूर्ण खण्डन किया है तथा न्याय की वैधता को प्रोत्साहित करते हुए राष्ट्रहित को प्राथमिकता देकर नेताओं को खरी–खोटी भीसुनाई हैं। नेताओं की स्वार्थ परायणता तथा पद–लोलुपता को निरावृत किया है।यही नहीं आगे कवि ने नेताओं के चरित्र को भी उछालने का साहसिक कार्य किया है।उनके चरित्र पर चोट करते हुए कवि कहता है–

तुम देख किसी का नव यौवन,
मन ही मन भरने लगे आह।
नेता होकर भी युवती पर,
चुपके–चुपके डाली निगाह।।
तुम ढूँढ रहे हो छुप–छुप कर,
अब गिलमाओं को हूरों को।
तुमने तो फूटी आँखों भी,
देखा न दीन मजदूरों को।।[1]

उक्त छन्दों में कवि ने जनप्रतिनिधियों के चारित्रिक पतन की पराकाष्ठा को दर्शाया है। सुरा–सुन्दरी के अत्यधिक प्रयोग से नेताओं की बुद्धि का कुठित होना प्रकट किया है। युवती पर चुपके–चुपके दृष्टि डालना तथा छुप–छुप कर छद्‌म रूप से कामिनियों की तलाश करना नेताओं के चरित्र की दुर्गति को सूचितकरता है। यह कृत्य उनकी सामाजिक संस्कृति के अधः पतन का परिचायक है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि डॉ. आनन्द ने 'सन् अड़तालीस' में तत्कालीन समाज का तथा समाज के भ्रष्ट प्रतिनिधियों का ऐसा चित्र खींचा है जिसमें उस समय की परिस्थितियाँ, घटनायें, नेताओं की उच्छृंखल प्रवृत्तियाँ एवं पतनोन्मुख चारित्रिक विशेषताओं को उजागर किया गया है।

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 18–19

2- देश-भक्ति की भावना

आधुनिक हिन्दी साहित्य में देशभक्ति की भावना का आविर्भाव विशेषतः ब्रिटिश शासन की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ है। पराधीनता की स्थिति में सम्पूर्ण राष्ट्र में स्वातंत्र्य आन्दोलन गतिशील था। देश भक्ति की प्रबल भावना कवियों की वाणी में मुखरित हो रही थी। मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान तथा सोहनलाल द्विवेदी आदि कवि अपनी रचनाओं के माध्यम से आत्म–बलिदान की प्रेरणा देकर युवकों को जागरण का संदेश दे रहे थे।

तत्कालीन परिस्थितियों की प्रतिक्रिया स्वरूप डॉ. आनन्द ने भी इस सांस्कृतिक जिम्मेदारी का निर्वाह किया। कवि–धर्म का अनुपालन करते हुये डॉ. आनन्द ने निजानुभूति की निश्छल व्यंजना अपने लघुकाव्य **'सन् अड़तालीस'** में की और तत्कालीन सामाजिक परिवेश का रेखांकन किया। एक विचारक के कथनानुसार–'कवि वास्तव में समाज की व्यवस्था, वातावरण, धर्म–कर्म, रीति–नीति तथा सामाजिक शिष्टाचार या लोक व्यवहार से ही अपने काव्य के उपकरण चुनता है और उनका प्रतिपादन अपने आदर्शों के अनुरूप ही करता है।'[1]

डॉ. आनन्द ने –सन् अड़तालीस' में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किये गये बलिदान एवं समर्पण की भावना का स्मरण दिलाकर राष्ट्र के प्रति अपनी भक्ति को अभिव्यक्त किया है तथा तत्कालीन जन प्रतिनिधियों को स्वातंत्र्य–रक्षा के प्रति सन्नद्ध रहने का आवाहन किया है–

जिस स्वतंत्रता की पूजा में,
हमने निज शीश चढ़ाये थे।
माताओं ने जिस पर अपनी,
गोदी के लाल लुटाये थे।।

1– साहित्यिक निबंध (साहित्य और समाज)–डॉ.विजयपालसिंह, पृष्ठ 17

जिस आजादी के लिए उठे,

तूफान देश में बड़े–बड़े।

जिस आजादी के लिए हुये,

भारत माँ के टुकड़े–टुकड़े।।[1]

डॉ. आनन्द ने आजादी के निमित्त किये गये त्याग एवं समर्पण के प्रतिफल से उत्पन्न नैराश्य, आक्रोश युक्त वाणी में अभिव्यंजित किया है तथा तत्कालीन नेताओं के समक्ष प्रश्न भी अंकित किया है–

जिसकी खातिर कितनी कलियाँ,

खिलते–खिलते ही कुम्हलाईं।

कितनी बहिनें निज भाई के,

राखी तक बाँध नहीं पाईं।।

जिस आजादी पर बिस्मिल ने,

फाँसी पर चढ़कर पढ़े छन्द।

वह आजादी किस बँगले में,

बतलादो करली गई बंद।।[2]

कवि ने आजादी के जिस स्वरूप की परिकल्पना कीथी, वह कतिपय भ्रष्ट एवं स्वार्थी जननेताओं की दुर्नीतियों के फलस्वरूप कुंठित होकर अदृश्य हो गई। स्वतंत्रता इने–गिने पूँजीपतियों के गगनचुम्बी प्रासादों में आबद्ध होकर रह गई। बलिदानियों एवं समर्पणकारियों का स्वप्न साकार न हो सका। आजादी के लिए प्राणोत्सर्ग करने वाले बिस्मिल जैसे अप्रतिम वीर काव्य–पाठ करते हुए फाँसी पर झूल गये, माताओं की गोदें सूनी हो गईं तथा बहिनें अपने भाइयों को राखी भी नहीं बाँध पाईं।

'सन् अड़तालीस' में देश भक्ति की भावना से प्रेरित होकर कवि ने उस आजादी को तलाशा है, जिसका राग अलापते हुए अनगिनत

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 4

2– उपरिवत्, पृष्ठ 4–5

मस्तक एवं अगणिंत सुहाग बलिदान हो गये, देश वीरान हो गया तथा भारत माता खंड–खंड हो गई। कवि झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के त्याग और बलिदान को स्मरण करते हुये संघर्ष की बात करता है–

जिस स्वतंत्रता की वेदी पर,
मुस्काई झाँसी की रानी।
जिस आजादी के लिए हुई,
यह कुर्वानी पर कुर्वानी।।
जिस बँगले में यह कैद हुई,
उसके फाटक खुलवा देंगे।
यदि खुल न सके तो बँगले की,
ईटों से ईट बजा देंगे।।[1]

उक्त पंक्तियों में कवि ने तत्कालीन समाज में व्याप्त अन्याय, अराजकता तथा शोषण के विपरीत प्रतिवाद किया है। कवि–धर्म का परिमार्जित स्वरूप कभी राजनीति का अनुगमन नहीं करता, वह तो समाज का मार्गदर्शक होता है। समर्थ कवि सामाजिक सत्य को उद्घाटित करता है।

3– अराजक नेतृत्व

स्वातंत्र्योपरान्त देश का नेतृत्व कुछ भ्रष्ट जन प्रतिनिधियों के आधीन हो गया, जिनकी स्वार्थपरता एवं अराजक कार्यप्रणाली से उन देश भक्तों की भावनाओं को गम्भीर आघात पहुँचा, जिन्होंने देश के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया था। उन अमर शहीदों की आत्मायें बढ़ती अराजकता को देखकर तिलमिलाने लगीं, जिन्होनें देश के लिए प्राणोत्सर्ग करना अपना परम कर्तव्य माना था। किसान और मजदूर भुखमरी के शिकार होकर पतन के कगार पर थे। नेताओं के दुराचरण उत्तरोत्तर बढ़ रहे थे, उन्हें देश की प्रगति एवं मर्यादा तथा दिये गये आश्वासनों का किंचित भी ध्यान नहीं था।ऐसी दुरवस्था देखकर साहित्यिक प्रतिनिधि अपने आक्रोश

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 5

को बाधित नहीं कर सका। कवि डॉ. आनन्द ने सरकार को उपालम्भ देकर कहा है–

तुमको किसान के बल पर ही,
यह सिंहासन सरकार मिला।
तुमको मजूर ही के बल पर,
यह वेतन कई हजार मिला।।
तुम डाल रहे हो अब तुषार,
भारत माँ के अरमानों पर।
तुम करने अत्याचार लगे,
भूखे मजदूर किसानों पर।।[1]

'सन् अड़तालीस' में कवि ने जिस सामाजिक स्थिति का निरूपण किया है, उसे कुल मिलाकर अराजक स्थिति ही कहा जा सकता है। पराधीन देश में मजदूर और किसान अंग्रेजों के आधिपत्य में था, स्वतंत्र होने पर इन भ्रष्ट नेताओं के वश में है। यह वही मजदूर और किसान हैं, जिसने विप्लवकारी परिस्थितियों का सामना सिर पर कफन बाँधकर किया था, जिसकी श्वासों के अंतिम क्षणों की कुर्वानी इतिहास के पृष्ठों में आज भी अंकित है। स्वतंत्रता पूर्व और पश्चात् की स्थितियों में कोई अन्तर नहीं है–

पन्द्रह अगस्त के पहिले में,
केवल यह अन्तर हुआ आज।
तब रहा विदेशी ब्रिटिश राज,
अब हुआ स्वदेशी ब्रिटिश राज।।
हम अंग्रेजों से भी बदतर,
क्यों नेताओं को कहते हैं।
मत समझो हमें कि हम यों ही,
कवि के प्रवाह में बहते हैं।।[2]

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 8

2– उपरिवत्, पृष्ठ 11

वर्तमान स्वतंत्र भारत में दोषपूर्ण चुनाव–प्रक्रिया अराजक नेतृत्व की स्वार्थपरता का पुष्ट प्रमाण है। वोट और व्यापार दोनों पूर्णतः स्वतन्त्र नहीं हैं। कवि जन प्रतिनिधियों को चुनौती देकर कहता है कि यदि चुनाव प्रक्रिया अंग्रेज सरकार जैसी होती, तो तुम कभी निर्वाचित न हो पाते–

अब आप इलेक्शन लड़ते हैं,
लाठी बन्दूकों के बल पर।
अब आप इलेक्शन लड़ते हैं,
बेलट सन्दूकों के बल पर।।
लेकिन अंग्रेजों ने ऐसा;
अपराध आज तक किया नहीं।
अंग्रेजों ने बस वोट और;
व्यापार हमारा लिया नहीं।।[1]

तात्पर्य यह है कि **'सन् अड़तालीस'** में देश की पतनोन्मुख स्थिति का नैराश्यपूर्ण वर्णन है। कवि हृदय पर लगे आघातों की प्रतिक्रियात्मक अभिव्यक्ति है तथा नेताओं के अराजकत्व का निर्भय स्पष्टीकरण है।

4– दूषित राजनीति

'सन् अड़तालीस' में कवि ने राजनीतिक भ्रष्टाचार तथा भावनात्मक प्रदूषण को उजागर करते हुए तत्कालीन नेताओं की भर्त्सना की है। तुलनात्मक दृष्टि से नेताओं को विदेशी आक्रमणकारी अंग्रेजों से भी बदतर बताया गया है। उनकी कार्य प्रणाली को देश के लिए घातक तथा सामाजिक व आर्थिक प्रगति में अवरोधक सिद्ध किया है। जिस शासन के आधिपत्य में जनमत का कोई मूल्य न हो तथा रिश्वत का बाजार गर्महो, उसकी कठोर निन्दा निम्न पंक्तियों में की गयी है–

अंग्रेज टिकट पर कभी नहीं,
तब हुआ किये कोई चुनाव।
अब कांग्रेस का खास टिकट,
ऊँचा बजार है खुला भाव।।

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 13

बोलो है ऐसा कौन देश,
जिसमें न मूल्य हो जनमत का।
पद–पद पर लड़ने को चुनाव,
मिलता हो टिकट हुकूमत का।।[1]

डॉ. आनन्द ने इस रचना में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रतिनिधियों की शोषक प्रवृत्ति एवं तानाशाही कट्टरवादिता को स्पष्ट करते हुए तुलनात्मक दृष्टि से अंग्रेजी शासन को सामान्य जनता का शुभेच्छु बतलाया है। स्वातंत्र्य सुख की अपेक्षा पराधीनता को श्रेयस्कर बतलाया है–

अंग्रेज हुकूमत थीं तब थे,
हम पेट पालने में स्वतंत्र।
अंग्रेज हुकूमत थीं तब थे,
हम वोट डालने में स्वतंत्र।।
लेकिन अब तो लेसन्स बिना,
व्यापार हमारा बन्दी है।
लेसन्स बिना यह जन्म सिद्ध,
अधिकार हमारा बन्दी है।।[2]

कवि कहता है कि तत्कालीन काँग्रेस जन प्रतिनिधियों की तानाशाही के कारण उनकी अनुचित माँगों को भी मानना पड़ता था तथा सामान्य जन उनके विरोध में अपना मतदान भी नहीं कर सकता था। देश भुखमरी तथा बेरोजगारी से जूझ रहा था। अन्याय और अत्याचार चरम पर थे। ऐसी विषम स्थिति को देखकर कवि उन तथाकथित जन प्रतिनिधियों से प्रश्न करता है–

क्या नहीं देश मुहताज हुआ,
दाने–दाने के लिए आज?
क्या यही नीति बापू की थी,
क्या यही हुआ अपना स्वराज?
अपने स्वराज्य में अपनीं हीं,
लड़कियां सताई जातीं हैं।
अपने स्वराज्य में अपनों पर,
गोलियां चलाई जातीं हैं।।[3]

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 12

2– उपरिवत्, पृष्ठ 13

3– उपरिवत्, पृष्ठ 14–15

तात्पर्य यह है कि तत्कालीन दूषित राजनीति के कुप्रभाव ने बापू की स्वराज्य कामना को निष्फल एवं निराधार सिद्ध कर दिया था। जिस राज्य में नारियाँ कदाचार की शिकार हों तथा लूट–खसोट, गोली काण्ड जैसी निर्मम घटनायें होती हों और सामान्य जन दाने–दाने को मोहताज हों, उसे स्वराज्य कैसे कहा जा सकता है?

5– राजद्रोह की भावना

जब प्रशासनिक उत्पीड़न सीमातीत हो जाता है, अन्याय एवं अत्याचार सहन शक्ति से परे हो जाता है, तब जनता संगठित होकर विद्रोह के लिए सन्नद्ध हो जाती है। जब राज–शक्ति स्वेच्छाचारीहोकर नैतिक आदर्शों को तिलांजलि देदेती है, सामान्य जनता की सुख–सुविधाओं का उचित प्रबंधन नहीं होता तथा शोषण, उच्छृंखलता और अनियमितताओं का साम्राज्य छा जाता है, तब जनमत विद्रोह के लिए कटिबद्ध हो जाता है। स्वतंत्रता के पश्चात कांग्रेस प्रतिनिधियों ने सामान्य जनता को अपमानित, उपेक्षित और प्रताड़ित किया। परिणाम स्वरूप देश की जनता में बौखलाहट उत्पन्न हो गई। कवि के शब्दों में देखिये–

हम युग के निर्माता हैं तो,
इस युग में आग लगा देंगे।
हम भारतीय हैं भारत से,
एम.एल.ए. राज मिटा देंगे।।
एम.एल.ए. तो होंगे लेकिन,
एम.एल.ए. राज्य नहीं होगा।
उस दिन होगा सच्चा स्वराज्य,
कोई साम्राज्य नहीं होगा।।[1]

उक्त पंक्तियों में कवि के उग्र तेवर उसके आक्रोश को व्यक्त करते हैं। वस्तुतः जब जन प्रतिनिधियों में जन–सेवा का भाव न होकर प्रशासनिक अहम्मन्यता घर कर जाती है, तभी स्थिति असामान्य होकर

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 9

विघटनकारी स्वरूप ग्रहण कर लेती है। जन चेतना जाग्रत होती है और विरोधी स्वर मुखरित होने लगते हैं। उदाहरण प्रस्तुत है–

सुन लो अब चेत गये हम भी,
वह अलख जगाकर मानेंगे।
इसदूषित नेता शाही में,
हम आग लगाकर मानेंगे।।
तानाशाही बर्बरता का,
हम तख्त उलट दें जो न आज।
हम कवि ही नहीं कि दुनियां का,
इतिहास पलट दें जो न आज।।[1]

उपर्युक्त पंक्तियों में जनप्रतिनिधियों की तानाशाही को लक्ष्य करके विरोध दर्शाया गया है। वस्तुतः कवि समाज का सबसे संवेदनशील अंग होता है। एक संवेदनशील और भावुक कवि जब समाज में व्याप्त अन्याय, अराजकता तथा शोषण देखता है, तो येन–केन–प्रकारेण विरोध भी करता है।

'सन् अड़तालीस' कृति में डॉ. आनन्द ने जनप्रतिनिधियों के दुर्व्यवहार से समाज की शोचनीय स्थिति को रेखांकित किया है तथा सामान्य जनता का पक्ष लेकर विरोधी भावनाओं को अभिव्यक्त किया है।

ग- भाषा स्वरूप

भाषा भावाभिव्यक्ति एवं विचार–विनिमय का मुख्य साधन है। सृष्टि के आदिकाल से विचारों कीयह अभिव्यक्ति होती रही है तथा उसकी धारा अविच्छिन्न रूप से निरन्तर गति के साथ प्रवाहित होती रहेगी। प्राणी की भावाभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण अंग होने के कारण मानव के साथ उसका घनिष्ठ सम्बन्ध है। भाषा मानव के आन्तरिक भावों का बाह्य कलेवर है। भाव काव्य की आत्मा है तो भाषा है उसका शरीर। श्रेष्ठ काव्य–सृजन हेतु भाव और भाषा दोनों की उच्चता अपेक्षित है। इस दृष्टि से डॉ. आनन्द का

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 19–20

लघु काव्य **'सन् अड़तालीस'** निस्संदेह रूप से श्रेष्ठ रचना कहा जा सकता है। **'सन् अड़तालीस'** की भाषा भावानुगामिनी तो है ही, सरल, स्वाभाविक, ओजपूर्ण एवं आडम्बर रहित है। भाषा का प्रवाह एवं प्रभाव आकर्षक एवं अनूठा है। सम्पूर्ण रचना में खड़ी बोली का प्रयोग भावाभिव्यक्ति को सबल बनाने में समर्थ हैं।

'सन् अड़तालीस' में प्रयुक्त भाषा में भावाभिव्यक्ति के सफल निर्वाह तथा प्रवाह संयोजन की दृष्टि से डॉ. आनन्द ने उर्दू तथा अंग्रेजी शब्दों के बहुल प्रयोग किये हैं। एलान, गद्दार, तख्त, हजरत, शादी, तनख्वाह, गिलमाओं, हूरों, इन्साफ, मुहताज, हुकूमत, कफन, वेशक, कुर्वान, खातिर तथा रिश्वत जैसे उर्दू प्रयोग तथा बजट, प्लाट, ब्रिटिश, वोट, लेसन्स, पोलिंग, कन्वेसिंग, एलेक्सन, वेलट तथा टिकट जैसे अंग्रेजी भाषा के प्रयोगडॉ. आनन्द के विविध भाषा–ज्ञान तथा अन्य भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करने की क्षमता का द्योतन तो करते ही हैं, साथ ही इससेउनका विषयानुकूल शब्द–चयन–कौशल भी स्पष्ट होता है।

डॉ. आनन्द ने अपने इस काव्य में **'सन् बयालीस में लंदन से बिजली गिरने जब आई थी'**[1] तथा **'हम इस युग के निर्माता हैं तो इस युग में आग लगा देंगे'**[2] जैसे विलक्षण प्रयोग किये हैं। बिजली गिरना तथा युग में आग लगा देना जैसे प्रयोगों से कवि की उक्ति वैचित्र्य क्षमता का बोध होता है। वस्तुतः वक्रोक्ति काव्य का प्राण होती है तथा डॉ. आनन्द को इसमें महारत हासिल था। **'तब हम दोनों की आँखों से कुछ ढुलक पड़े थे गोल– गोल'** तथा **'पानी में खड़िया घोल–घोल वह बच्चों को बहलाती थी'** जैसे लाक्षणिक प्रयोग कवि की भाषा को सबल एवं पुष्ट बनाते हैं।

'सन् अड़तालीस' में यदि सफल लाक्षणिक प्रयोग उपलब्ध हैं, तो व्यंजना के चमत्कारिक प्रयोगों में भी कवि को दक्षता प्राप्त है। **'मुस्काता**

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 8

2– उपरिवत्, पृष्ठ 9

ही रह गया संत , 'उन पर लाठी बरसाने में', 'संगीनों पर जा मुस्काये' तथा **'इतिहास पलट दें जो न आज'** जैसे व्यंजनात्मक प्रयोग इस लघुकाव्य में यत्र तत्र बिखरे पड़े हैं। इन प्रयोगों से कवि की भाषा पाठक के अन्तर्मन पर स्थायी प्रभाव तो डालती ही है, विचारों तथा भावों को सम्प्रेषणीय भी बनाती है।

कवि ने ईंट से ईंट बजाना, छाती पर गोली खाना, लाठी बरसाना तथा बालाएँ ताक रखना जैसे मुहाबरों का प्रयोग किया है। इन प्रयोगों से कवि का भाषा–सामर्थ्य प्रकट होता है तथा सामाजिक ज्ञान भी उजागर होता है। डॉ. आनन्द अनुभवी एवं प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। उनका सांसारिक ज्ञान पर्याप्त था। गम्भीर से गम्भीर विषय कोसरल एवं सुबोध बनाकर व्यक्त करना उनकी विशेषता थी। मुहावरों एवं कहावतों द्वारा अभिव्यक्ति को बोधगम्य बनाने की कला में वे निपुण थे। डॉ. आनन्द की भाषा में मुहावरों के प्रयोग ने ऐसा निखार ला दिया है, जिससे पाठक अभिभूत हुए बिना नहीं रहता।

'सन् अड़तालीस' रचना में यमक, अनुप्रास, रूपक तथा पुनरुक्ति प्रकाश आदि अलंकारों के प्रयोगभी यत्र–तत्र उपलब्ध हैं। छलनी–छलनी कर छला गया, किसलय–कलि, सच्चा स्वराज्य, विप्लव–बादल, तथा सिंहासन–सरकार में छेकानुप्रास की छटा विद्यमान है तो प्रतिभा–माता, नर–नाहर, बालक–स्वराज्य तथा सौभाग्य–भानु में रूपक अलंकार अपना सौन्दर्य बिखेर रहा है। पद–पद, क्षण–क्षण, रात–रात, ढूँढ़–ढूँढ़, कब–कब, पन्ने–पन्ने, गोल–गोल, खिलते–खिलते, टुकड़े–टुकड़े, बड़े–बड़े, घोल–घोल तथा पल–पल में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है। डॉ. आनन्द की भाषा अलंकारों से युक्त होकर सुष्ठु एवं आकर्षक हो जाती है। कवि ने इस रचना में अलंकारों को मुख्यता प्रदान नहीं की वरन् स्वाभाविक रूप से आने वाले अलंकारों से कवि को कोई गुरेज भी नहीं है।

प्रवाह की दृष्टि से डॉ. आनन्द की भाषा पूर्ण सफल है। पद–मैत्री तथा छन्द योजना भी सराहनीय है। इस प्रकार कहा जा सकता

है कि डॉ. आनन्द की भाषा का स्वरूप अलंकारिक चमत्कार, विदेशी भाषाओं के शब्द प्रयोग, उक्ति वैचित्र्य, लाक्षणिक एवं व्यंजनात्मक प्रयोग, कहावतें तथा मुहावरे और प्रवाह–सभी दृष्टियों से सराहनीय है, पाठक के हृदय पर प्रभाव डालने में पूर्णतः सक्षम है। डॉ. आनन्द के लघु काव्य 'सन् अड़तालीस' की भाषा उर्दू तथा अंग्रेजी शब्दावली युक्त खड़ी बोली है और खड़ी बोली की समस्त लाक्षणिक विशेषताएँ उसमें मौजूद हैं।

घ- राजनीतिक संदर्भ

डॉ. आनन्द की रचनाओं में अधिकांशतः राष्ट्रीयता और स्वाधीनता की सफलतम अभिव्यक्ति है। उनके **'सन् अड़तालीस'** लघुकाव्य की नैसर्गिक आधार भूमि राष्ट्रीय भावना है। राजनीतिक प्रसंगों की सार्थक सम्पदा इस रचना में उपलब्ध है। राजनीतिक संदर्भों के वर्णन में विचारों को बार–बार दोहराया गया है। जन प्रतिनिधियों के प्रति डॉ. आनन्द की विरोधी मानसिकता निम्न पंक्तियों में देखने योग्य है–

तुम मुलक रहे थे सिकचों में,

आती तुमको जमुहाई थीं।

तब हमने तुम्हें छुड़ाने को,

छाती पर गोली खाई थीं।।

हम हैं किसान मजदूर वहीं,

अपना है अब भी वहीं नाम।

तब थे अंग्रेजों के वश में,

अब हैं नेताओं के गुलाम।।[1]

किसान और मजदूर वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हुए कवि ने यहाँ जनप्रतिनिधियों के दुष्कृत्यों की भर्त्सना की है। कवि कृषक वर्ग की आजादी के लिए नेताओं को बलिदानों की स्मृति दिलाता है तथा उन्हें खरी खोटी भी सुनाता है।

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 10

30 जनवरी सन् 1948 को महात्मा गाँधी की हत्या के उपरान्त देश में विभिन्न राजनीतिक दलों ने वर्गवाद और वैमनस्य को जन्म दिया। तत्कालीन कांग्रेस सरकार के भ्रष्ट प्रतिनिधियों ने स्वेच्छाचारी बनकर सामान्य जनमानस का विश्वास खो दिया। देश की राजनीति कुछ स्वार्थी तथा गैर अनुभवी लोगों के हाथ की कठपुतली बन गई। सामान्य जनता अराजकता का शिकार हो गई। देश की डावाँ डोल स्थिति ने कवियों को जाग्रति के लिए प्रेरित किया। फलस्वरूप कवि कह उठा—

हम समझ न पाये थे पहले,
अपने स्वराज्य की परिभाषा।
पहले न ज्ञात हो सकीं हमें,
नेताओं की यह अभिलाषा।।
बापू होते तो क्या कहते,
इसका भी तुमने किया ध्यान।
बापू के यह मजदूर प्रान,
बापू के यह जीवन किसान।।[1]

'सन् अड़तालीस' में कवि का मूल उद्देश्य तत्कालीन राजनीतिक संदर्भों को उजागर करना रहा है। स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पं. जबाहरलाल नेहरू को लक्ष्य मानकर कवि ने उन्हें समस्त ह्रासोन्मुख स्थितियों का जिम्मेदार ठहराया है। देश की अस्मिता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले चन्द्रशेखर आजाद की माँ की दयनीय स्थिति के लिए कवि ने तत्कालीन प्रधानमंत्री को फटकारा है—

उसके वह बीते दिवस कभी,
क्या याद नहीं आते होंगे।
उसके सपनों में क्या उसके,
आजाद नहीं आते होंगे।।

2— उपरिवत्, पृष्ठ 15

तुम कभी पूछ लेते आकर,

उसकी माँ को क्या कहती है।

क्या खाती है क्या पीती है,

कैसे खंडहर में रहती है।।[1]

यही नहीं, कवि यहाँ तक कह देता है कि अपने मक्खन–अंडे से कुछ बजट निकालकर तुम उस नर–नाहर की माँ को दो–दाने नहीं डाल सके। कवि पिछले राजनीतिक संदर्भों का स्मरण दिलाकर नेताओं के विश्वासघात एवं स्वार्थपरता को प्रमाणित करता है–

सन् बयालीस में जो कि रहे,

अंग्रेज हुकूमत के गुलाम।

सन् बयालीस में जिन्हें मिली,

अंग्रेज हुकूमत से इनाम।।

जो कभी जिन्दगी में अपने,

आ सके देश के काम नहीं।

जो कभी जिन्दगी में अपने,

ले सके राष्ट्र का नाम नहीं।।[2]

भारतीय काँग्रेसी नेताओं के प्रतिनिधि तत्कालीन प्रधानमंत्री पर कवि ने आक्षेप लगाकर यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि अंग्रेजी शासन की पराधीनता तथा काँग्रेस शासन की स्वाधीनता में कोई अन्तर नहीं है। पुष्ट प्रमाण देकर कवि ने यह सिद्ध कर दिया है कि स्वाधीनता से वह पराधीनता सुखकर थी। स्वाधीन भारत में देश का मजदूर तथा किसान भुखमरी के कगार पर खड़ा है, दाने–दाने को मोहताज है, जाने यह कैसा स्वराज्य है। पराधीनता में हम गुलाम अवश्य थे, लेकिन जीवन यापन तो सुखमय था–

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 18

2– उपरिवत्, पृष्ठ 20

हम थे गुलाम लेकिन हमको,

थे जीने के अधिकार सभी।

हम थे गुलाम लेकिन अपना,

कर सकते थे व्यापार सभी।।

अब कांग्रेसियों की अनुचित,

माँगों को टाल नहीं सकते।

अब काँग्रेसियों के विरुद्ध,

अपना मत डाल नहीं सकते।।[1]

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने तत्कालीन राजनीति के विकृत रूप का स्पष्ट रेखांकन किया है। कांग्रेसी प्रतिनिधियों की बर्बरता तथा तानाशाही को उजागर किया गया है। जन प्रतिनिधियों के अन्यायपूर्ण व्यवहार से असन्तुष्ट होकर सामान्य जनता क्रुद्ध होकर उलाहना देती है–

तुमने करने को अनाचार,

सचमुच पाई है आजादी।

तथा

तुमने न हाय डाली निगाह,

पीड़ित किसान की आहों पर।

तुम लम्बोदर बन फूल गये,

अपनी लम्बी तनख्वाहों पर।।[2]

कवि प्रतिनिधियों पर कटाक्ष करता है तथा उनके प्रति अशोभनीय सम्बोधन प्रस्तुत करता है। कवि देश की तत्कालीन राजनीतिक अव्यवस्थाओं का स्वरूप चित्रित करते हुए सामान्य जनता की बौखलाहट को रेखांकित करता है। सामान्य जनता शासन का तख्तउलटने पर उतारू है, दूषित राजनीति को आग लगाने को तैयार है–

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 14

2– उपरिवत्, पृष्ठ 19

सुन लो अब चेत गये हम भी,

वह अलख जगाकर मानेंगे।

इस दूषित नेता शाही को,

हम आग लगाकर मानेंगे।।[1]

उक्त उद्धरण में तत्कालीन राजनीतिक दुरवस्थाओं का स्वरूप स्पष्ट होता है। सारांशतः कहा जा सकता है कि **'सन् अड़तालीस'** डॉ. आनन्द की श्रेष्ठ रचना है। इस रचना में कॉंग्रेस जनप्रतिनिधियों का विक्षोभ युक्त विरोध अभिव्यक्त है। नेताओं के अन्यायों, अत्याचारों तथा दुर्व्यवहारों को रेखांकित किया गया है। कवि सामान्य जनता का प्रतिनिधित्व करके नेताओं की कटु आलोचना करता है और अपना आक्रोश व्यक्त करता है।

एम.एल.ए. राज

स्वातंत्र्योपरान्त उचित नेतृत्व के अभाव में तथा राजनीतिक पुरोधाओं के दलगत स्वार्थों के कारण चारित्रिक पवित्रता, प्रेमादर्श, धार्मिक विश्वास तथा निस्वार्थ सेवाभाव आदि शब्द अपना मूल्य एवं मान्यता खो चुके थे। देश में कॉंग्रेस शासन के उस युग को **'नेहरू युग'** नाम दिया गया। उस युग में जीवन मूल्यों को ध्वस्त होते देखकर तथा नैतिक पतन की विद्रूपताओं को लक्ष्यकर डॉ. आनन्द ने अपने लघु काव्य **'सन् अड़तालीस'** में तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू को दोषी ठहराते हुए कटूक्तियों का प्रयोग किया है।

कॉंग्रेस शासन में जनप्रतिनिधियों के भ्रष्टाचार एवं स्वार्थपरता के कारण देश में गॉंधी जी के 'रामराज्य' की कल्पना निर्मूल हो गई। भाई–भतीजा वाद, घूसखोरी, आदर्शहीनता, मंहगाई तथा बेकारी का साम्राज्य छा गया। मानवीय दृष्टिकोंण बदल गये, धर्म के प्रति विश्वास नहीं रहा, तथा राजनीतिक प्रदूषण भी परिव्याप्त हो गया। डॉ. आनन्द के अनुसार– 'भारत

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 19

के हजारों नहीं लाखों नर–नारी बेघरबार होकर आज सड़कों और पेड़ों के नीचे अपना नारकीय जीवन विताने के लिए मजबूर हैं। अगर ऐसा ही हाल रहा तो निकट भविष्य में ही हमारा राष्ट्र सदा के लिए मर जायगा, इसमें संदेह नहीं है।'[1]

देश की पतनोन्मुख स्थितियों ने कवि हृदय को झकझोर कर विवश कर दिया भावाभिव्यक्ति के लिए। कवि हृदय, तत्कालीन स्थितियाँ जैसे रक्तपात, उत्पीड़न, बलात्कार, आगजनी, भीषण नर–संहार तथा आकस्मिक दुर्घटनाओंसे पीड़ित होकर चीत्कार कर उठा और उन परिस्थितियों में डॉ. आनन्द को '**एम.एल.ए. राज**' लिखने की अन्तःप्रेरणा प्राप्त हुई। '**एम.एल.ए. राज**' रचना युगीन परिस्थितियों का रहस्योद्‌घाटन करती है तथा जनप्रति–निधियों के दुष्कृत्यों को अनावृत करती है। '**एम.एल.ए. राज**' का साहित्यिक मूल्यांकन निम्नवत् प्रस्तुत है।

क- कथावस्तु

डॉ. आनन्द ने अपनी रचना '**एम.एल.ए.राज**' में स्वतंत्र भारत में कांग्रेस सरकार के प्रतिनिधियों की तानाशाही, स्वार्थपरता एवं भ्रष्ट आचरणों को उजागर किया है तथा उन्हें देश के प्रति कर्त्तव्योन्मुख होने के लिए सचेत भी किया है। कवि कहता है कि स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात् देश की बिगड़ती स्थिति को सरकारी प्रतिनिधि नियंत्रित नहीं कर सके। पंचवर्षीय योजनायें देश का विकास नहीं कर सकीं। विद्युत परियोजना, सिंचाई, सड़कें, अस्पताल, रेलवेलाइन, शिक्षा योजनायें तथा वृक्षारोपण की समस्त योजनायें पतनोन्मुख स्थिति को नहीं सम्हाल सकीं। इन सभी असफलताओं का मुख्य कारण था जनप्रतिनिधियों की स्वेच्छाचारिता एवं उनकी शोषण की प्रवृत्ति। नेतागण एक ओर जयहिन्द का नारा लगाते रहे तथा दूसरी ओर पंचायत कानून, कण्ट्रोल व्यवस्था, रिश्वत, लाइसेन्स प्रथा तथा आपूर्ति विभाग के माध्यम से देश की असहाय एवं निरीह जनता का शोषण भी

1– एम. एल. ए. राज., अपनी बात, डॉ. आनन्द

करते रहे। कवि ने उन तानाशाहों को आगाह करते हुए कहा है कि यह अनाचार की स्थिति अधिक समय तक नहीं चलेगी। जैसे अंग्रेज सरकार नष्ट हो गई, उसी प्रकार काँग्रेस सरकार भी चली जायेगी।

'एम.एल.ए. राज' में डॉ. आनन्द ने तत्कालीन शासकीय प्रतिनिधियों के भ्रष्ट कारनामों का आकलन करते हुए कहा है कि मंहगाई का दानव कदम–कदम पर ललकार रहा है, उत्पादन पर कर–निर्धारण किया गया है, नारियों का क्रय–विक्रय खुलेआम हो रहा है, पशुओं की विक्री पर शुल्क निर्धारित है, शिक्षाशुल्क चरम सीमा पर है, छात्रावास का शुल्क अमेरिकनहोटल से भी मंहगा है तथा परीक्षा–प्रश्न पत्रों की गोपनीयता भंग हो चुकी है। किन्तु ध्यान रहे कि यहाँ के मंदिर, मस्जिद तथा गुरूद्वारों का कंकड़–कंकड़ काँप रहा है, गंगा–यमुना आँसू बहा रही हैं तथा भागवत और रोजा–नमाज अब भ्रष्ट हो गये हैं– यह पाप का किला शीघ्र ही ढह जायेगा, कोई सुभाष तथा झाँसी की रानी पुनः अवतरित होगी और अंग्रेजी शासन की तरह यह शासन भी नष्ट हो जायेगा।

कवि आगे कहता है कि देश के लाखों नर–नारी शीत, घाम और बर्षा सह रहे हैं, लाखों शिशु नंगे और भूखे रहते हैं और नेतागण राम राज्य की डींग मार रहे हैं। मन चाहा बजट बनाकर, छात्रों पर गोलीकाण्ड कराकर देशभक्तों को कारागार भेजा जा रहा है। बिहार, मध्यप्रदेश भुखमरी और अकाल से पीड़ित हैं। दोषपूर्ण पुलिस व्यवस्था से अराजकता दिन–प्रतिदिन बढ़ रही है। तथा नेतागण कागजी घोड़े दौड़ाकर लाखों की परियोजनायें हजम कर रहे हैं। सारा देश अन्तर में क्रोधाग्नि लिये बैठा है। जनता के हृदय में भैरव राग समाया है। वस्तुतः यह राम राज्य नहीं, यह तो रावण राज्य है।

नेताओं, तुमने न्याय पालिका को भी स्वतंत्र नहीं रहने दिया। सदैव वोट की भाषा पढ़कर गाँधी जी के रामराज्य को कलंकित करते रहे। विदेशी आकर्षण से आकर्षित होते रहे। देश में रेलमार्ग, सड़कें तथा कॉलेज सभी अस्त–व्यस्त हैं। भारत की शोषित जनता तुम्हें कभी माफ नहीं करेगी।

विप्लव की चिनगारी तुम्हें एक दिन भस्म कर देगी। देश का नागरिक गोली के समक्ष भी नहीं झुक सकता क्योंकि आजादी के दीवाने गोली खाकर मरने में ही आनन्द का अनुभव करते हैं। यहाँ कवि ने देश–द्रोही नेताओं की कमियों को स्पष्ट किया है तथा **'बड़े भेद हैं, बड़ी पोल है, बड़े राज हैं'** कहकर नेताओं के गुप्त रहस्यों को उद्घाटित किया है।

कांग्रेसी शासन मेंएक विभाग में कई मंत्री हैं, धन का दुरुपयोग हो रहा है, खुले रूप में पक्षपात है। नेताओं पर व्यंग्य करते हुए कवि ने कहा है कि तुम अपने को नेता कहते हो, मैं तो समझा था कि तुम रावण हो। कवि ने नेताओं का रावण से, स्वतंत्रता का सीता से तथा सुभाष चन्द्र बोस का लक्ष्मण से रूपक बाँधा है। नेतागण देश की गरीब जनता के प्रति न्याय नहीं कर सके, खादी के लिवास में अपने सारे दुर्गुण छिपाये रहे। अपने आपको सर्वोच्च सत्ता समझकर मनमानी करते रहे। कवि कहता है कि यदि शासन के हाथों में दुनाली बन्दूक है तो कवि के हाथों में कलम है। देश की जनता का संकल्प है कि नेताओं की सड़ी–गली व्यवस्था को बदलकर ही मानेंगे।

ख-सामाजिक प्रभाव

कवि युग दृष्टा होता है। जिस समाज में कवि रहता है, उस समाज की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा साहित्यिक परिस्थितियों के प्रभाव से अछूता नहीं रहता। युगानुरूप परिस्थितिजन्य अनुभूतियों को कवि अपने काव्य में रेखांकित करता है। सामाजिक प्राणी होने के कारण कवि का यह दायित्व होता है कि वह तत्कालीन समाज को अपने काव्य में चित्रित करे। डॉ. आनन्द ने भी अपने काव्य **'एम.एल.ए.राज.'** में तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों का आकलन किया है तथा कवि धर्म का निर्वाह करते हुए अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त की है।

स्वातंत्र्योपरान्त देश का शासन कांग्रेस सरकार के अधीन हो गया। कांग्रेस शासन के प्रतिनिधि गाँधी जी के रामराज्य के स्वप्न को

साकार नहीं कर सके। उनकी दुर्नीतियों के परिणाम स्वरूप देश में भुखमरी, बेकारी, चोर बाजारी, घूसखोरी आदि कुप्रवृत्तियाँ बलबती हो गईं। भारत के लाखों नर–नारी नारकीय जीवन व्यतीत करने को बाध्य हो गये, जिन्हें खाने को अन्न तथा पहनने को वस्त्र भी उपलब्ध नहीं थे।

कांग्रेस सरकार ने विकास की परियोजनायें बनाकर देश को विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में लाने के प्रयास किये, किन्तु शासन के प्रतिनिधियों के भ्रष्टाचरण के कारण असफलता और निराशा ही हाथ लगी। कवि ने नेताओं की भ्रष्टता का संकेत देते हुये कहा है–

कपड़े पर कण्ट्रोल लगाकर,
तुमने चोर बजार चलाये।
चावल, चीनी, शकर, तेल में,
हाथ सफाई के दिखलाये।।
रिश्वत, नजराना को तुमने,
इस युग में अनिवार्य बनाया।
खद्दर के कुरता धोती में,
जाने कितने पाप छिपाये।।[1]

उक्त पंक्तियों में तत्कालीन व्यथित एवं पीड़ित समाज का चित्र प्रतिबिम्बित है। खाद्यान्न पर नियंत्रण, रिश्वत तथा नजराने की अनिवार्यता, चोर बाजारी–इनसे सामान्य जन–जीवन अस्त–व्यस्त हो गया था। नेताओं की काली करतूतों से व्यवस्थायें छिन्न–भिन्न हो गईं थीं, देश त्राहि–त्राहि कर रहा था।

तत्कालीन समाज में व्याप्त अधिकारियों की अन्यायपूर्ण नीतियों को स्पष्ट करते हुए कवि कहीं रिश्वत का आरोप लगाता हैं, तो कहीं मंहगाई की व्यथा–कथा वर्णित करता है। कभी बढ़े हुए बिक्रीकर की संगीनों के आघातों की वेदना बतलाता है, तो कभी नारियों के खुलेआम विक्रय के

1– एम.एल.ए.राज, डॉ. आनन्द, आनन्द प्रकाशन–जालौन, पृष्ठ 2–3

प्रचलन की कहानी सुनाता है। थानेदारों की रिश्वत प्रथा को ग्रामीण जन–जीवन के लिए अभिशाप एवं अत्याचार घोषित करते हुये डेड़ मिनट में डेड़ हजार रूपयों की बात कहकर करारा व्यंग्य किया गया है– निम्न पंक्तियों में–

पता नहीं है किस लालच में
अत्याचार किया करते हैं।
देहातों में जाने क्या–क्या,
थानेदार किया करते हैं।।
इन माशूक हुसेनों के तुम,
वेतन देखो खरचे देखो।
डेड़ मिनट की डेड़ बात में,
डेड़ हजार किया करते हैं।।[1]

'एम.एल.ए.राज' में डॉ. आनन्द ने तत्कालीन त्रस्त एवं पीड़ित समाज की संकटापन्न स्थिति को चित्रित करते हुए जनप्रतिनिधियों को जिम्मेदार ठहराया है तथा सचेत किया है कि देश की जनता तुम्हारे अत्याचार अभी आँख बन्द करके देख रही है, वह कभी न कभी अवश्य प्रतिकार करेगी। सामान्य जनता के प्रति कवि के हृदय में संवेदना है। कवि जनता की पीड़ाओं से भावात्मक रूप से पीड़ित है। भुखमरी का पीड़ाजनक चित्र इन पंक्तियों में दृष्टव्य है–

भूखा पेट विहार दिखाकर,
संगीनें गोली खाता है।
भूखा विन्ध्य प्रदेश हमारा,
चीख रहा है चिल्लाता है।।
उस भूखी माता से पूछो,
जिसका सातसाल का बालक।
भूखा तड़प–तड़प कर रोटी,
माँग–माँग कर मर जाता है।।[2]

1– एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 8

2– उपरिवत्, पृष्ठ 14

यहाँ भारत के बिहार तथा विन्ध्य प्रदेश में फैली भुखमरी का यथातथ्य चित्रण प्रस्तुत है। 'सड़कों पर लाखों नर–नारी शीत, घाम, वर्षा सहते हैं। बालक भी सुकुमार हमारे नंगे हैं, भूखे रहते हैं' कहकर कवि देश की जर्जर स्थिति को अभिव्यक्त करता है। यहाँ लाखों आवास हीन नर–नारी तथा नंगे भूखे बालक देश की विपन्नता की झाँकी प्रस्तुत कर रहे हैं।

जनप्रतिनिधियों की बर्बरता पूर्ण तानाशाही एवं घोर अराजकता का स्पष्ट निदर्शन निम्न पंक्तियों में दृष्टव्य है–

जैसा चाहा बजट बनाया,
जो चाही योजना बनादी।
छात्रों की कोमल छाती पर,
जब चाहा गोली चलवा दी।।
देशभक्त भारत–वीरों को,
ठूँस–ठूँस कारागारों में।
फिर बापू के राम राज्य की,
गाँव–गाँव डुग्गी पिटवादी।।[1]

उक्त पंक्तियों में छात्रों पर गोली चलवाना, मनचाहा बजट बनाना तथा देश भक्तों को कारागारों में ठूँसना–तत्कालीन समाज में व्याप्त अराजकता का स्पष्ट चित्रांकन है। उस समय शासन के प्रतिनिधियों के निकम्मेपन से समाज का विकास पूर्णतः अवरूद्ध हो गया था, क्योंकि उनकी स्वार्थवादी संकुचित नीति विकास में बाधक बनी हुई थी। समाज की ह्रासोन्मुखी स्थिति दर्शनीय है–

लाख बजट मंजूरी पर भी,
कभी न रेल निकल सकती है।
कभी न कसमें खाने पर भी,
टूटी सड़क सम्हल सकती है।।
खुल सकते हैं कहीं न कालिज,
बन सकती है नहर न कोई।
पर शहीद की यादगार पर,
गोली फौरन चल सकती है।।[2]

1– एम.एल.ए.राज, डॉ. आनन्द, पृष्ठ 15

2– उपरिवत्, पृष्ठ 22

यहाँ रेल, सड़क, नहर तथा कॉलेज के विकासकी अवरोधक स्थिति को उजागर किया गया है। उस समय सरकार की ओर से खाद्यान्न पर कण्ट्रोल व्यवस्था लागू करने से सामान्य जनता के समक्ष तो खाद्यान्न संकट उपस्थित था, किन्तु नेताओं के भण्डार भरे रहते थे। जनता में एक व्यक्ति को छै छटाँक खाद्यान्न वितरित किया जाता था। जन प्रतिनिधियों के अत्याचार सहते–सहते सामान्य जनता में जाग्रति आ रही थी। जन सामान्य की सम्भावित प्रतिक्रिया व्यक्त करता हुआ कवि कहता है–

आज समूचा भारत अपने,
दिल में आग लिये बैठा है।
तुम क्या जानो कितने जलियाँ,
वाले बाग लिये बैठा है।।
अभी समय थोड़ा बाकी है,
कहीं भूलकर मत छू देना।
तार–तार युग के सितार का,
भैरव राग लिए बैठा है।।[1]

उक्त पंक्तियों में डॉ. आनन्द ने जनाक्रोश को अभिव्यंजित किया है। सहन शक्ति की चरम सीमा पार कर जनता आन्दोलन के लिए अग्रसर है। जनता का धन लूट–लूटकर, विकास के नाम पर नेता लोग हजम कर जाते हैं। कागजों में सभी विकास कार्य सम्पन्न होते हैं, किन्तु असलियत में कुछ नहीं होता। गरीब जनता और गरीब होती जा रही है, धनवान नेता और धनवान होते जा रहे हैं। शासकीय विभागों में व्याप्त भ्रष्टाचार को कवि ने इन पंक्तियों में दर्शाया है–

पी डब्लू डी के नाटक में,
अच्छा स्वांग रचा लेते हैं।
दौड़ धूप में नाप–जोख में,
पूरा बजट पचा लेते हैं।।
इनकी कलम कुदारों द्वारा,
कागज पर सड़के बनतीं हैं।
अपने मनी वेग में अपनी,
डामर रोड बना लेते हैं।।[2]

1– एम.एल.ए.राज, डॉ. आनन्द, पृष्ठ 15

2– उपरिवत्, पृष्ठ 16

डॉ. आनन्द ने शासन तंत्र को दोषी ठहराते हुये पी. डब्लू. डी. विभाग की भ्रष्टताओं को रूपायित किया है। कागजों पर सड़कों का निर्माण कराना, मनीवेग में डामर रोड बना लेना तथा नाप–जोख में पूरा बजट पचा लेना– यह सब भ्रष्ट नौकरशाही का स्पष्ट उल्लेख है।वरिष्ठ नेता ऐसे अधिकारियों को नियुक्त करते थे, जो हर दुष्कर्म में उनका सहयोग करने को विवश हो जाते थे–

अपढ़ गँवार झूँढ़ कर तुमने,
उनको मजिस्ट्रेट बनवाया।
फिर अपनी मरजी के माफिक,
जो चाहा जजमेंट लिखाया।।[1]

जब न्यायालयों की न्याय–प्रक्रिया की यह स्थिति थी, तो सामान्य जनता को उचित न्याय कहाँ से मिल सकता था। उचित न्याय के अभाव में शोषित जनता के उग्र तेवर सामाजिक वातावरण को भड़कीला बना रहे थे तथा जनता आन्दोलन के लिए सन्नद्ध हो उठी थी। नेताओं के विरोध में प्रदर्शन प्रारम्भ थे तथा सामान्य नागरिक भी आक्रोशित होकर बदले की भावना से व्यग्र हो उठा था–

यह भारत की शोषित जनता,
कभी न तुमको माफ करेगी।
चौराहे की खुली सड़क पर,
एक रोज इन्साफ करेगी।।
ठहरो, रुको समय आता है,
और सुलग जाने दो थोड़ी।
यह विप्लव की चिनगारी है,
अन्तरिक्ष तक साफ करेगी।।[2]

1– एम.एल.ए.राज, डॉ. आनन्द, 19

2– उपरिवत्, पृष्ठ 17–18

कवि कथन का तात्पर्य है कि सामान्य जनता तत्कालीन अन्याय एवं अत्याचारों के विरोध में कठोर कदम उठाने को तत्पर थी। सामाजिक वातावरण घुटन और निराशा के बावजूद उग्र एवं आक्रोशयुक्त था। नेतागण समाज–कल्याण को अपना उद्देश्य न बनाकर चुनाव और वोट की भाषा में सोच रहे थे तथा गाँधी जी के राम राज्य को कलंकित करने की कुचेष्टा कर रहे थे। कवि डॉ. आनन्द ने अपनी ओजस्वी एवं अनूठी कृति **'एम.एल.ए.राज'** में तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों को पारदर्शी बनाया है तथा सामान्य जनता की व्यथा को वाणी देने का सफलतम प्रयास किया है। कांग्रेस शासन के प्रतिनिधियों के अन्याय एवं अत्याचारों का खुलाशा करते हुये उनकी स्वेच्छाचारी प्रवृत्ति एवं बर्बर तानाशाही को अभिव्यक्त किया गया है। अन्त में कवि ने भारतीय जनता के उग्र तेवर दर्शाकर अपनी राष्ट्रीय भावना एवं देश भक्ति का पुष्ट प्रमाण भी प्रस्तुत किया है।

ग- भाषा स्वरूप

'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर वह परस्पर विचार–विनिमय करना चाहता है। आत्माभिव्यक्ति की यह इच्छा मनुष्य की स्वाभाविक इच्छा है। अपनी बात जहाँ वह दूसरों से कहना चाहता है, वहीं दूसरों के विचारों को ग्रहण भी करता है। आत्माभिव्यक्ति की इस इच्छा ने भाषा को जन्म दिया।'[1] इस प्रकार कहा जा सकता है कि वह माध्यम, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार व्यक्त करता है अथवा वह साधन, जिसके द्वारा पारस्परिक विचार विनिमय किया जाता है, भाषा कहलाता है।

डॉ. आनन्द के काव्य **'एम.एल.ए.राज'** में प्रयुक्त भाषा के स्वरूप पर विचार करने पर ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण काव्य में खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है। उसमें खड़ी बोली की समस्त विशिष्टतायें उपलब्ध

1— भाषा विज्ञान, डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, ग्रन्थम प्रकाशन, रामबाग—कानपुर, संस्करण 1990 ई., पृष्ठ 40

हैं। अतः यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि डॉ. आनन्द को खड़ी बोली–काव्य–सृजन में पूर्ण सफलता प्राप्त है। यद्यपि सामाजिक सम्पर्क के परिणाम स्वरूप यत्र–तत्र अन्य भाषाओं जैसे उर्दू, अंग्रेजी तथा बुन्देली के शब्द प्रयुक्त होकर कवि के भाषा–सौन्दर्य में अभिवृद्धि करते हैं तथा भाषा प्रवाह को सबल एवं पुष्ट बनाते हैं। कवि की भाषा भावों के अनुसार रूप ग्रहण करने में पूर्ण सक्षम है।

'एम.एल.ए.राज' में डॉ. आनन्द ने कुछ ऐसे विचित्र प्रयोग किये हैं, जिन्हें पढ़कर पाठक अभिभूत हुये बिना नहीं रहता। कांग्रेसी नेताओं पर आक्षेप आरोपित करते हुए कवि कहता है–

आकर्षित करने को गाँवों–गाँवों के भोले नर–नारी।
ओंठों की पटरी पर झट जिह्वा की रेल चला देते हो।।
यह माना कि गलेबाजी में आप बहुत कुछ गलेबाज हैं।
बड़े भेद हैं, बड़ी पोल है, बड़े राज हैं।।[1]

उक्त कथन में ओंठों की पटरी, जिह्वा की रेल तथा गलेबाजी में गलेबाज होना अनूठे प्रयोग हैं। इन प्रयोगों से नेताओं पर किया व्यंग्य सार्थक एवं सटीक हुआ है, साथ ही भाषा–प्रयोग में विलक्षणता भी आई है। इसी तरह थानेदारों की रिश्वत लेने की प्रवृति को रेखांकित करने में भाषा का विचित्र प्रयोग दृष्टव्य है–

इन माशूक हुसेनों के तुम वेतन देखो खरचे देखो।
डेड़ मिनट की डेड़ बात में डेड़ हजार किया करते हैं।।[2]

यहाँ पर डेड़ मिनट की डेड़ बात से कवि का मन्तव्य है कि थानेदार बात करने का भी शुल्क वसूल करता है। इस प्रयोग से भ्रष्टाचार की चरम सीमा अभिव्यक्त हुई है तथा भाषा प्रयोग के सौन्दर्य में निखार भी आया है। काव्यानुशीलन करने पर **'एम.एल.ए.राज'** में उक्ति वैचित्र्य के विविध प्रयोग दृष्टिगोचर होते हैं–

1– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 3

2– उपरिवत्, पृष्ठ 8

अन्नोत्पादन की बरसा में बँगले जमें कोठियां उपजीं।[1]

X X X

यह मत पूछो किस मशीन से किस नेता की हुई सगाई।[2]

X X X

फिर खद्दर का पासपोर्ट ले पाकिस्तान चले जाते हैं।[3]

X X X

तो दुनियां की दुनियां जाने।[4]

X X X

किसी–किसी को पानी देकर पानी में भी आग लगा दी।[5]

उपर्युक्त कथनों में बँगलों का जमना, कोठियों का उपजना, मशीन से नेता की सगाई होना, खद्दर का पासपोर्ट लेना, दुनियां की दुनियां जाने तथा पानी देकर पानी में आग लगाना विचित्र प्रयोग हैं। इन प्रयोगों से कुल मिलाकर नेताओं के अत्याचार, अनैतिक दुष्कृत्य तथा भ्रष्ट आचरणों का रेखांकन हुआ है। पाठकीय प्रभाव की दृष्टि से देखें तो कवि अपने विचित्र प्रयोगों में पूर्ण सफल हुआ है।

डॉ. आनन्द ने अपने काव्य में भाषागत सौष्ठव के लिए अलंकारिक चमत्कार का सफलतापूर्वक आयोजन किया है। अलंकारों के विविध प्रयोग भाषा में अतीव आकर्षण समुत्पन्न करके भाव–व्यंजना में तीव्रता एवं प्रखरता लाने में सहायक होते हैं। **'काव्य शोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते'** उक्ति के अनुसार अलंकार काव्य के शोभाकारक धर्म होते हैं। डॉ. आनन्द के काव्य में यत्र–तत्र अलंकारों के सुन्दर एवं सुष्ठु प्रयोग काव्य–भाषा की शोभा में अभिवृद्धि करते हैं। कुछ प्रयोग निम्नवत् हैं–

1– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 17

2– उपरिवत्, पृष्ठ 19

3– उपरिवत्, पृष्ठ 20

4– उपरिवत्, पृष्ठ 21

5– उपरिवत्, पृष्ठ 25

'सीता सी स्वतंत्रता' तथा **'सुरसा सा महसूल'** में उपमा अलंकार है। **'माना तुम कानून काल को पाटी से बंधवा सकते हो'** तथा **'माना तुम्हें कि तुम विधान का गिरि कैलाश उठा सकते हो'** में उत्प्रेक्षा अलंकार है। **'कलम–कुदारों'** तथा **'कानून काल'** में रूपक अलंकार की छटा विद्यमान है। **'जग–जाहिर, चटक–चुनाव**, तथा **मंदिर–मस्जिद'** में अनुप्रास अलंकार है। **गाँव–गाँव, नगर–नगर, गरज–गरज, किसी–किसी, कंकड़–कंकड़, कौंध–कौंध, बार–बार, घुमड़–घुमड़** तथा **अकुला–अकुला** में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है। **'प्रान्तीय रक्षा दल है या पंत मिनिस्ट्री रक्षा दल है'** में संदेह अलंकार मौजूद है तथा **'इसमें भी लाखों खा डाले धन्य–धन्य हे खद्दरधारी'** में व्याज स्तुति अलंकार विद्यमान है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि डॉ. आनन्द के काव्य **'एम.एल.ए.राज'** की भाषा अलंकृत तो है ही, साथ ही अलंकारों के विविध अनूठे प्रयोग उनके काव्य कौशल में चमत्कार उत्पन्न करके शैली को आकर्षक स्वरूप प्रदान करते हैं।

डॉ. आनन्द ने अपने काव्य में भाषा प्रवाह को सटीक एवं प्रभाव पूर्ण स्वरूप देने के लिए उर्दू, अंग्रेजी एवं बुन्देली भाषा के शब्दों के विविध प्रयोग किये हैं। अन्य भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करके कवि ने उन्हें भावानुकूल एवं विषयानुकूल बनाकर प्रयोग किया है। उर्दू भाषा के शब्दों जेसे– बंदिश, असमत, खुराफात, माशूक, हुसेंनों, नजारा, नजराना, मसीहा तथा महसूल आदि के विभिन्न आकर्षक प्रयोग इनके काव्य में मिलते हैं। इसके साथ ही डेरीफारम, सेलटेक्स, गजट, मिनिस्ट्री, आफिस, मिसप्रिन्ट, कालिज तथा होटल जैसे अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग **'एम.एल.ए.राज'** में आसानी से मिल जाते हैं। बुन्देली के शब्दों का प्रायः अभाव सा है। कहीं–कहीं पोल तथा सिधाये जैसे शब्द बुन्देली भाषा का आभास मात्र देते हैं।

कवि ने अपने काव्य में शब्द–युग्मों के बड़े ही अनूठे प्रयोग किये हैं। दौड़–धूप, नाप–जोख, रोजा–नमाज, राज–काज, कथा–भागवत, गंगा यमुना, दर–दीवारें, बोरिया–बिस्तर जैसे शब्द–युग्मों के सुष्ठु प्रयोग कवि की भावाभिव्यक्ति में विशेष सहायक सिद्ध हुये हैं।

'एम.एल.ए.राज' में डॉ. आनन्द ने अनेक व्यंजनात्मक प्रयोग किये हैं। व्यंजना के प्रयोग काव्य की भाषा में अनूठा चमत्कार सृजित करके अर्थ गाम्भीर्य उत्पन्न करते हैं। कतिपय उदाहरण प्रस्तुत करना अनुचित नहीं होगा।–

तुम कागज की ही फायल में।
रहे हजारों कुएँ खुदाते।।[1]

X X X

पैमायश के इन्द्रजाल में।
सात करोड़ कमाते खाते।।[2]

X X X

पर वह अच्छा बीज आपने,
खद्दर के खेतों में बोया।
दफ्तर के कागज पत्रों में,
बड़े–बड़े भुट्टे लटकाये।।[3]

X X X

बड़े मजे के नेता जी हो,
कागज पर खेती करते हो।।[4]

X X X

दफ्तर में बैठे ही बैठे
अपना खेत बना लेते हो।[5]

X X X

1– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 2

2– उपरिवत्, पृष्ठ 2

3– उपरिवत्, पृष्ठ 11

4– उपरिवत्, पृष्ठ 11

5– उपरिवत्,

भैंस बंधी गायें चरती हैं

इनकी सदरी की जेबों में।[1]

X X X

बयालीस का शिव धनु लखकर,

तुम हताश हो जेल सिधाये।

फिर युग के लक्ष्मण सुभाष की,

धनुरेखा तुम लांघ न पाये।।[2]

एम.एल.ए.राज. में प्रयुक्त व्यंजना शक्ति के उपर्युक्त उदाहरणों से कवि का भाषा–सौष्ठव एवं कलात्मक सौन्दर्य झलकता है। नेताओं की दूषित नीतियों का भंडाफोड़ करके डॉ. आनन्द ने इस कृति में तत्कालीन राजनीतिक प्रदूषण को साकार किया है। गाय–भैंस का नेताओं की सदरी की जेबों में चरना, दफ्तर में बैठकर खेत बना लेना, खद्दर के खेतों में अच्छा बीज बोकर कागजों में भुट्टे लटकाना तथा कागज पर खेती करना जैसे व्यंजनात्मक प्रयोग अत्यंत आकर्षक बन पड़े हैं।

इस प्रकार उक्ति वैचित्र्य, अलंकार–चमत्कार, शब्द–युग्म, भाषा–प्रवाह, पद–मैत्री तथा व्यंजनात्मक प्रयोगों की दृष्टि से डॉ. आनन्द की भाषा खड़ी बोली अत्यन्त प्रभावशाली, परिमार्जित एवं परिष्कृत बन पड़ी है। भाषा सौष्ठव की दृष्टि से यह काव्य कवि की प्रखर प्रतिभा का परिचायक है। कवि की भाषा में अखण्ड प्रवाह है तथा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करने की प्रबल सामर्थ्य है।

घ- राजनीतिक संदर्भ

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त देश में राजनीतिक अस्थिरता आ गयी थी। तत्कालीन कांग्रेस सरकार की अनियमितताओं एवं प्रदूषित गतिविधियों से असन्तुष्ट होकर अनेक राजनीतिक दल अस्तित्व में आ गये

1– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 11

2– उपरिवत्, पृष्ठ 26

थे। देश में उत्पन्न राजनीतिक परिस्थितियों ने उथल–पुथल मचा दी थी, जिसके परिणाम स्वरूप ऐसा प्रतीत होने लगा था कि जब तक कांग्रेस सरकार का वर्चस्व रहेगा तब तक देश से भुखमरी, बेकारी, चोर बजारी तथा घूस खोरी आदि कभी भी दूर न हो सकेगी। हत्याओं तथा आत्महत्याओं में अनवरत वृद्धि हो रही थी, शासन की कण्ट्रोल व्यवस्था से सामान्य जनता पीड़ित होकर त्राहि–त्राहि कर उठी थी। शासन के निकम्मेपन से हजारों–लाखों नर–नारी नारकीय जीवन व्यतीत करने को विवश हो गये थे। अन्न का भयावह संकट देश को जर्जर बना रहा था। ऐसा लग रहा था कि यदि यही स्थिति रही तो निकट भविष्य में हमारा राष्ट्र सदा के लिए निर्जीव हो जाएगा।

राष्ट्र के इस महान संकट के समय कवि ने देश की पतनोन्मुख स्थिति का जिम्मेदार जन प्रतिनिधियों को ठहराया है। जन प्रतिनिधियों के भ्रष्ट आचरणों एवं अनैतिक कार्यों का उल्लेख कवि ने निम्न पंक्तियों में किया है–

कपड़े पर कण्ट्रोल लगाकर,
तुमने चोर बजार चलाये।
चावल, चींनी, शकर, तेल में,
हाथ सफाई के दिखलाये।।
रिश्वत नजराना को तुमने,
इस युग में अनिवार्य बनाया।
खद्दर के कुरता टोपी में,
जाने कितने पाप छुपाये।।[1]

नेताओं की दुर्नीतियों ने देश की राजनीति को विकृत कर दिया था। अपने कूटनीतिक स्वार्थमय षड्यंत्रों के कारण जनप्रतिनिधि अपना विश्वास खो चुके थे। चुनाव के अवसर पर जनता को दिये गये आश्वासनों का उन्हें किंचिन्मात्र भी ध्यान नहीं था–

1– एम. एल.ए.राज., पृष्ठ 2–3

हर चुनाव के मौके पर तुम,

दरशा नई कला देते हो।

सड़के, नहरें, अस्पताल,

जाने क्या–क्या दिखला देते हो।।[1]

कवि आगे कहता है कि गाँवों की भोली जनता को आकर्षित करने के लिए '**ओंठों की पटरी पर जिह्वा की रेल चलाना**' उनके बांयें हाथ का काम था। ग्राम पंचायत राज्य शासन की इकाई होती है। पंचायत में पंचो और सरपंचों के चुनावी भ्रष्टाचार तथा रिश्वत को राजनीति का अंग मानने वाले नेतागण जयहिन्द का नारा लगाकर देश भक्ति का नाटक किया करते थे–

गाँव–गाँव में नगर–नगर में,

पंचायत के ढोंग रचाये।

फिर उन पंचों सरपंचों को,

इलेक्शनों के दाँव सिखाये।।

सौ दो सौ के नीचे हरगिज,

बातें पंच नहीं करते हैं।

पंचराज परमेश्वर बनकर,

पंतराज परमेश्वर आये।।[2]

देश की नंगी भूखी जनता की रक्त–शिराओं में जब विरोध का प्राबल्य होता था, अनेक आकुल ज्वालामुखी फट पड़ने को तत्पर होते थे, तो उन्हें अश्रुगैस तथा लाठी–डण्डे से दबाने की प्रक्रिया अपनाई जाती थी। कवि प्रश्न करता है कि नेतारूपी कालनेम को क्या जनता अधिक समय तक यती और तपस्वी कह सकती है तथा मारीच रूपी निशाचर अधिक समय स्वर्णमृग बना रह सकता है? जब जनजागरण होगा तो यह पाप का किला ध्वस्त हुये बिना नहीं रह सकेगा–

1– एम. एल.ए.राज., पृष्ठ 3

2– उपरिवत्, पृष्ठ 4

नवयुग के तूफान उठेंगे,
जनयुग की आँधी आयेगी।
युग–व्यापी बन लाल क्रान्ति की,
बिजली तड़प–तड़प जायेगी।।
अंग्रेजों की तरह आज यह,
जो अंग्रेजी काँगरेस है।
बाँधे हुये बोरिया–बिस्तर,
कभी भागती दिखलायेगी।।[1]

'एम.एल.ए.राज.' की उक्त पंक्तियों में डॉ. आनन्द ने तत्कालीन राजनीतिक संदर्भों को रेखांकित करते हुए भारतीय कांग्रेस को अंग्रेजी कांग्रेस बताया है तथा अंग्रेजी राज्य की तरह कांग्रेसी शासन को सर्वथा निर्मूल करने की धमकी भी दी है।

डॉ. आनन्द ने तत्कालीन भारतीय राजनीतिक प्रदूषण को अभिव्यक्त करने के लिए नेताओं के कूटनीतिक षड्यंत्र तथा क्रूरता की चरमावस्था को उद्घाटित करते हुए उन पर विश्वासघात का दोषारोपण किया है। राजनीतिक संघर्षों में लिप्तता के कारण बड़े–बड़े दंगे करवाना, हत्यायें एवं लूटपाट नेताओं के आदर्श में सम्मिलित था। उस अराजकता पूर्ण वातावरण में राजनीति की परिभाषा ही बदल गई थी। निम्न पंक्तियों में दोषपूर्ण राजनीति एवं नेताओं के दुष्कृत्यों को साकार किया गया है–

जबकि बरेली की आँखों के,
सूख नहीं आँसू पाते हैं।
फिर भी झाँसी की छाती में,
गहरे घाव दिये जाते हैं।।
जाने कितनी हत्याओं के,
फर्द जुर्म आयद हैं तुम पर।
तड़प–तड़प कर मरने वाले,
तुमको कातिल बतलाते हैं।।[2]

1– एम. एल.ए.राज., पृष्ठ 7

2– उपरिवत्, पृष्ठ 18

तत्कालीन कांग्रेस शासन के भ्रष्ट प्रतिनिधियों कीभ्रष्ट राजनीति के कारण बरेली तथा झाँसी के दंगों में हजारों निरपराध मृत्यु की गोद में सुला दिये गये। उन सारे अपराधों के मूल में थी नेताओं की स्वार्थपरता एवं शोषण की प्रवृत्ति। जनप्रतिनिधि, महात्मागाँधी के सत्य और अहिंसा के सिद्धान्तों को अपनाकर सामान्य वर्ग की अभिलाषाओं को पूरा नहीं कर सके, परिणाम स्वरूप सामान्य जनता में संघर्ष एवं विद्रोह की स्थिति उत्पन्न हो गई। नेताओं अथवा जनप्रतिनिधियों की भ्रष्ट राजनीति के कुछ उदाहरण निम्न हैं–

क्या जाने कितने करोड़ की,

कितने लाख मशीन मंगाई।[1]

X X X

अजब मशीनें हैं जो सब यह,

चलती हैं खादी की तह में।

इनके मोबिल आयल की भी,

कहीं किसी ने थाह न पाई।।[2]

X X X

जब सोचा तब सोचा तुमने,

सदा इलेक्सन की भाषा में।[3]

देश के विकास के नाम पर करोड़ों रूपयों की मशीनों का आयात तथा उनमें लाखों रूपयों का गोलमाल करके खादी के प्रभाव से स्वाभिमान पूर्वक रहना नेताओं के लिए सहज काम था। सदैव चुनाव के दृष्टिकोंण को सम्मुख रखकर गाँधी जी के रामराज्य को कलंकित करना उनके सिद्धान्तों में सम्मिलित था। कुछ ऐसे भी जनप्रतिनिधि थे जो स्वदेश प्रेम का ढोंग रचाकर विदेशों के ऐश्वर्य गीत गाया करते थे तथा भारतीय सम्पत्ति

1– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 19

2– उपरिवत्, पृष्ठ 19

3– उपरिवत्,

को विदेश ले जाया करते थे। उन पर आरोप लगाकर कवि कहता है–

कुछ भारत में ऐसे हैं जो,
गीत विलायत के गाते हैं।
भारत में अंग्रेजी शासन,
आज–आज भी पनपाते हैं।।
कुछ भारत में ऐसे भी हैं,
जो भारत की सम्पत्ति लेकर।
फिर खद्दर का पासपोर्ट ले,
पाकिस्तान चले जाते हैं।।[3]

तत्कालीन भारतीय राजनीति का गिरा हुआ स्तर नेताओं की कृतघ्नता ज्ञापित करता है। विदेशी साम्राज्य का प्रशस्ति गायन तथा भारतीय सम्पत्ति को विदेश ले जाने की क्रिया नेताओं के देशद्रोह का स्पष्ट उदाहरण है। डॉ. आनन्द ने राजनीतिक संदर्भों का उल्लेख करते हुए उस समय की सामाजिक तथा राजनीतिक अव्यवस्थाओं का जिम्मेदार नेताओं को ठहराया है। मनचाहा बजट बनाकर योजनायें निर्धारित करना, छात्रों पर गोली चलवाना तथा लैसन्सों के जाल बिछाकर देश के व्यापार को बुरी तरह प्रभावित करना नेताओं की कार्य प्रणाली बन गई थी। अविश्वसनीयता बात–बात में प्रकट होती है। नेताओं की शोषण प्रवृत्ति को निम्न पंक्तियों में व्यक्त किया गया है–

पहले तो स्वीकार बजट में,
कई हजार किया करते हैं।
फिर कागज के पन्ने पर हीं,
आधा पार किया करते हैं।।
सरल हृदय हैं, देशभक्त हैं,
नेता हैं खद्दर धारी हैं।
बड़े चाव से बड़ी लगन से,
देश सुधार किया करते हैं।।[2]

1– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 20

2– उपरिवत्, पृष्ठ 16–17

उक्त पंक्तियों में नेताओं पर व्यंग्य करते हुये कवि ने उन्हें खद्दरधारी देशभक्त कहा है, देश का कल्याण करने में तत्पर बताया है तथा सरल हृदय और सच्चा नेता भी घोषित किया है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि **'एम.एल.ए.राज.'** डॉ. आनन्द की वह रचना है जो स्वातंत्र्योपरान्त देश की वास्तविक स्थिति को उद्घाटित करती है और नेताओं तथा जनप्रतिनिधियों की दोषपूर्ण कार्य प्रणालियों का खुलाशा करती है। कवि ने अपनी बात कहीं तो सीधे–सादे तौर पर कही है, तो कहीं व्यंग्य के माध्यम से तथा कहीं करारी चोट करते हुये नेताओं के चरित्र को अनावृत किया है। समीक्षात्मक ढंग से यदि देखा जाये तो डॉ. आनन्द की **'सन् अड़तालीस'** तथा **'एम.एल.ए.राज'** दोनों रचनायें समानभाव भूमि पर आधृत हैं। दोनों रचनाओं का केन्द्रीय भाव तत्कालीन जनप्रतिनिधियों की भ्रष्ट कार्य पद्धतियों को अभिव्यक्त करना है। कवि अपने उद्देश्य में पूर्ण सफल हुआ है।

पंचम अध्याय :

अप्रकाशित कृतियों - दारूल शफा, पब्लिक इन्टरेस्ट, हिमालय सीमा तथा फौजी गठबंधन आदि का साहित्यिक मूल्यांकन

- विषय वस्तु
- डॉ. आनन्द की रचनाओं में हास्य एवं व्यंग्य
- राष्ट्र-प्रेम
- भाषा का स्वरूप
- राजनीतिक प्रभाव

पंचम अध्याय

डॉ. आनन्द की अप्रकाशित कृतियों का साहित्यिक मूल्यांकन

मुख्य कृतियाँ–

1- **साबरमती के तट पर**

2- **चीन से सम्बद्ध कृतियाँ-**

अ. हिमालय सीमा,

ब. बात आ गई है

३- **पाकिस्तान को सम्बोधित रचना**

फौजी गठबंधन

४- **पब्लिक इन्टरेस्ट**

1- साबरमती के तट पर

क– कथावस्तु

महात्मा गाँधी के संरक्षण में अखिल भारतीय काँग्रेस कार्य कारिणी समिति की बैठक साबरमती नदी के तट पर स्थित आश्रम में सम्पन्न हुई। इस बैठक में काँग्रेसी नेताओं द्वारा सर्वसम्मति से एकस्वर में देशहित का सर्वोदयी संकल्प पारित किया गया। साबरमती नदी की पावन लहरें

इसकी साक्षी हैं। गाँधी जी ने सर्वोदय के क्रियान्वयन की योजना यहीं से प्रारम्भ की तथा दांडी यात्रा का अभियान यहीं से प्रारम्भ हुआ।

कवि उन कांग्रेसी नेताओं से प्रश्न करता है कि तुमने कूटनीति का परित्याग कर सत्य और अहिंसा पर कितना विश्वास किया है तथा तुम्हारे सर्वोदय ने किसका कितना विकास किया है? तुमने तो सदैव कालाबाजारी और अनाचार का ही आश्रय लिया है। शोषितों और पीड़ितों की वाणी तो तुम्हें सहयोग देने को सदा ही तत्पर रही है, इनकी सहयोग रूपी पावन गंगा तुम्हारे लिये स्वच्छन्द रूप से प्रवाहित है। किन्तु तुम्हारे सर्वोदय के घुंघरू तो पूंजीपतियों की महफिल में बजते हैं और तुम्हारी सारंगी के स्वर टाटा के मिलों में सुनाई पड़ते हैं।

डॉ. आनन्द ने इस रचना में सर्वोदय पर तीखे प्रहार करते हुये कहा है कि जहाँ सच्ची मानवता का अरुणोदय होता है, वहाँ की धूलि का एक–एक कण लोक व्यापी सर्वोदय को जन्म देता है। लेकिन इन कांग्रेसी नेताओं के सर्वोदय के रथ के घोड़े अपनी स्वेच्छाचारिता का परिचय देते हुये खींचातानी कर रहे हैं। तात्पर्य यह है कि स्वार्थपरता के कारण इन जनप्रतिनिधियों में मतैक्य नहीं है। इसलिये ये जनकल्याणकारी निर्णय नहीं ले पाते। यदि ऐसे सर्वोदयी रथ को ठेल–ठाल के खींचा भी जाये तो वह एक इंच भी आगे नहीं बढ़ सकता, क्योंकि नब्बे प्रतिशत शोषितों और पीड़ितों की कराह उसे हिमालय के शिखर तक नहीं पहुंचने देगी।

आगे कवि प्रेरणात्मक परामर्श देते हुये कहता है कि यदि ये नेतागण सच्चे हृदय से मजदूरों को अपनाकर उनके दुःख–दर्द निवारण का संकल्प ले लें, उन्हें अपना समझलें तो उनकी सुषुप्त चेतना जाग्रत होकर देश के बहुमुखी विकास में सहयोगी भूमिका का निर्वाह करने लगेगी। उनके करघे और चरखे भले ही पुराने रहें, किन्तु उनमें विकास की चमक उत्पन्न हो जावेगी। निर्धन किसान के पाषाण जैसे कठोर और रूक्ष हाथ नवीन स्फूर्ति ग्रहण कर, संगठित होकर राष्ट्रोत्थान हेतु मचल पड़ेंगें तथा

उनके भोंथरे औजार रेगिस्तान में भी हरीतिमा उगलने लगेंगें, जो मध्यवर्ग आज निरुपाय होकर सिसकियाँ ले रहा है, वह घनघोर घटा के मानिन्द अर्थतंत्र में उत्तरोत्तर आशातीत विकास करने को आतुर हो उठेगा।

अरे नेताओ, तुम्हारा मनरूपी लोभी चातक तो चुनाव रूपी पावसी मेघों का प्यासा है और तुम्हारे अन्तर का पापी चकोर तो केवल चुनाव की चन्द्र—किरण के लिये आतुर है। तुमने अपने स्वयं के आर्थिक विकास को केन्द्र विन्दु बनाकर सर्वोदय पर केवल भाषण करना सीखा है। कवि सामान्य जनता की ओर से नोताओं को उपालम्भ देता हुआ कहता है कि हमसे भूल हुई जो तुम्हें समझने से पूर्व अपना मन रूपी माणिक्य समर्पित कर दिया और बदले में भुखमरी, गरीबी और बेरोजगारी ले ली। तुम जिसे रामराज्य कहते हो, वह अपाहिजों का, अकर्मण्यों का तथा सुविधा भोगी स्वार्थी प्रतिनिधियों का राज्य है।

उस अतीत को स्मरण करो, जब देश की जनता तुम्हें देवता के समान अर्ध्य समर्पित करती थी तथा राष्ट्र के करोड़ों प्राण तुम्हारे इंगित पर विह्वल होकर प्राणार्पण को प्रस्तुत हो जाते थे, किन्तु वर्तमान स्थिति का सूक्ष्मावलोकन करने पर तुम्हें विदित होगा कि तुम मानवता से जितना विलग होते गये, मानवता भी तुमसे उतनी ही दूर होती गई।

तुमने ढूँढ़—ढूँढ़ कर देश द्रोहियों को, गद्दारों को देशभक्त कहकर सम्मानित किया है तथा उन्हें भी आदर का पात्र बनाया है, जो विदेशियों के सहायक रहे और देश के लिये गुनहगार रहे। अन्त में डॉ. आनन्द यह रचना कांग्रेसी नेताओं को समर्पित करते हुये कहते हैं—

करता हूँ बस यही सोचकर तुम्हें समर्पण,
ताकि एक समुचित निर्णय श्रीमान् ले सकें।
मेरी कविता की यह केवल चार पंक्तियाँ,
शायद कोई नई प्रेरणा तुम्हें दे सकें।।[1]

1— पाण्डुलिपि— 1. साबरमती के तट पर, छन्द क्र. 23

ख- हास्य एवं व्यंग्य

प्रस्तुत कृति में कवि ने अभिव्यक्ति में तीव्रता लाने के लिए व्यंग्य का आश्रय लिया है। धारदार व्यंग्य के माध्यम से नेताओं की स्वार्थ परक नीतियों को रेखांकित करने का सफल प्रयास किया गया है। यहाँ हास्य का हल्कापन न होकर व्यंग्य का तीखापन दृष्टव्य है। कांग्रेसी नेताओं के सर्वोदय पर कटाक्ष करते हुये कहा गया है–

आये हो तो इस प्रवाहिनी के पानी में,
पहिले अपने ही चेहरे की ओर निहारो।
फिर अपने ही अन्तःपुर के न्यायालय में,
बनकर स्वयं गबाह न्याय भी स्वयं विचारो।।

फिर बतलादो कूटनीति को त्याग आपने,
सत्य अहिंसा पर कितना विश्वास किया है।
और तुम्हारे सर्वोदय के इस तिलिस्म ने,
बतलादो किसको कितना अभ्युदय दिया है।।[1]

उक्त पंक्तियों में कवि ने नेताओं को आत्मनिरीक्षण हेतु प्रेरित करते हुये कूटनीति को त्यागकर सत्य और अहिंसा पर विश्वास करने का प्रश्न उठाया है। सर्वोदय को तिलिस्म अर्थात् जादू कहने में कवि का सर्वोदय के प्रति अविश्वास अभिव्यक्त हुआ है। सर्वोदय को लक्ष्य मानकर नेताओं की कार्य प्रणाली के प्रति तीखा व्यंग्य दृष्टव्य है–

किन्तु तुम्हारे सर्वोदय के यह घुंघरू तो,
बजते हैं निश दिवस रईसों की महफिल में।
और तुम्हारी सारंगी की स्वर लहरी तो,
सुनता हूँ सुन पड़ती है टाटा के मिल में।।[2]

यहाँ कवि ने सर्वोदय को पूँजीपतियों से सम्बद्ध घोषित कर उसके अस्तित्व पर करारा प्रहार किया है। भाव यह है कि कांग्रेस में

1– पाण्डुलिपि– 1. साबरमती के तट पर, छन्द क्र. 5, 6

2– उपरिवत्, छन्द क्र. 24

पूँजीपतियों का ही वर्चस्व रहा है। उनका ध्यान देश की दीन–हीन जनता की समस्याओं पर जा ही नहीं सका। कांग्रेसी नेतागण सभी का सभी क्षेत्रों में विकास करने का दावा तो करते हैं, किन्तु असंगठन के कारण सर्वोदय की योजना असफल ही रहती है। प्रतिनिधियों एवं कार्यकर्ताओं में पारस्परिक सद्भाव के अभाव में तथा मत वैभिंन्र्य के कारण सर्वोदय की चेष्टा असफल ही रही। इस पर कवि ने व्यंग्य का प्रहार करते हुये लिखा है–

किन्तु तुम्हारे सर्वोदय के रथ के घोड़े,
आगे–पीछे अगल–बगल सब ओर लगे हैं।
अपनी–अपनी दिशा ओर खींचा तानी में,
एक साथ ही सभी लगाने जोर लगे हैं।।

सर्वोदय के ऐसे रथ को ठेल–ठेल कर,
क्या आगे की ओर इंच भर बढ़ा सकोगे।
नब्बे प्रतिशत की गंगा–यमुना को क्या तुम,
हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर चढ़ा सकोगे।।[1]

यहाँ वर्गवाद, वैमनस्य तथा पारस्परिक मतभेद के रहते हुये सर्वोदय रूपी रथ को आगे बढ़ाना असम्भव बताया गया है। इस तरह के सर्वोदयी विकास से भारत की नब्बे प्रतिशत जनसंख्या को चरमोन्नति पर पहुँचाना असम्भव नहीं तो दुष्कर अवश्य है।

नेताओं की दोषपूर्ण स्वार्थनीति को हेय सिद्ध करते हुये कवि ने उन्हें घोर स्वार्थी बतलाया है। एक व्यंग्यचित्र देखिये–

सर्वोदय के ढोल निरन्तर पीट–पीट कर,
केवल सर्वोदय का भाषण कर जाना है।
लेकिन अपने निज–निज के ही अर्थोदय को,
सर्वोदय का केन्द्र विन्दु तुमने माना है।।[2]

यहाँ नेताओं की निराधार एवं व्यर्थ की भाषणकला को रेखांकित करते हुये स्वयं के आर्थिक विकास में लिप्त होने का दोषारोपण

1– पाण्डुलिपि– 1. साबरमती के तट पर, छन्द क्र. 11, 12

2– उपरिवत्, छन्द क्र. 18

किया गया है। इस रचना में कवि ने व्यंग्य के माध्यम से काँग्रेसी नेताओं की दुर्नीतियों का पर्दाफाश किया है। नेतागण सर्वोदय के नाम पर भोली जनता को भ्रमित कर देश के विकास में अवरोधक तो बनते ही हैं, साथ ही विश्व–स्तर पर देश को पीछे रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करते हैं।

ग– राष्ट्र प्रेम

डॉ. आनन्द की प्रस्तुत रचना में राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति का अभूतपूर्व समन्वय है। राष्ट्रीय उत्थान की कामना कवि के अन्तर्मन में समाविष्ट प्रतीत होती है। काँग्रेसी प्रतिनिधियों की अनैतिक गतिविधियों का रेखांकन कवि ने राष्ट्रीय भावना से प्रभावित होकर ही किया है। जहाँ भी निश्चेष्टता एवं निष्क्रियता का आभास मिला है, कवि ने नेताओं को फटकार देकर अपने राष्ट्रीय कर्तव्य का भली भाँति निर्वाह किया है। कवि राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के पद–चिह्नों पर चलने की प्रेरणा देकर नेताओं को सचेत करता है–

जिस पुनीत सरिता के तट पर एक संत ने,
राष्ट्र देवता की पूजा के सुमन चुने थे।
जिस प्रवाहिनी की लहरों ने दो युग पहले,
बज्र प्रतिज्ञा के अविचल स्वर कभी सुने थे।।

जिसके तट पर कलाकार की बज्र उंगलियाँ,
कात चुकीं हों सर्वोदय का ताना–वाना।
उस पुनीत सरिता के गौरवमय अतीत को,
वर्तमान की चकाचौंध में भूल न जाना।।[1]

उक्त पंक्तियों में साबरमती नदी के तट पर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा सर्वोदय का संकल्प ग्रहण करने की ओर इंगित किया गया है। राष्ट्रोत्थान की दृढ़ प्रतिज्ञा करते हुये जिस संत ने सर्वोदय की नींव डाली थी, उस संत के अपूर्व त्याग, उत्साह एवं लगन को तथा साबरमती के

1– पाण्डुलिपि– 1. साबरमती के तट पर, छन्द क्र. 1, 2

गौरवमय अतीत को वर्तमान की चकाचौंध में न भूलने की बात कवि कहता है। इन शब्दों में कवि का राष्ट्र–प्रेम झलकता प्रतीत होता है।

'साबरमती के तट पर' रचना में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के **'दांडी यात्रा'** के कठोर संकल्प की ओर संकेत किया गया है। यह अभूतपूर्व राष्ट्रीय संकल्प इतिहास प्रसिद्ध घटना है। उसकी जटिल परियोजना निम्न पंक्तियों में दर्शनीय है–

जिसके तट पर राष्ट्रपिता ने सुसंगठित कर,
आयोजित कर एक नया अभियान किया था।
जिस सरिता के पावन तट पर उस योगी ने,
दांडी यात्रा का प्रकाण्ड प्रस्थान किया था।।

उस प्रयाण का आदि आज भी आदि बना है,
वह मंजिल तो बनी हुई अब तक मंजिल है।
उस पथ का तो सफर बना है सफर आज भी,
वह मुश्किल सी राह आज भी तो मुश्किल है।।[1]

दांडी यात्रा का पावन और दृढ़ संकल्प राष्ट्रीय जनजागरण तथा देशहित में किया हुआ साहसिक अभियान था। इस सुकृत्य की सराहना करते हुये कवि ने कांग्रेसी नेताओं को न्याय प्रियता के साथ दृढ़ संकल्पित होने की प्रेरणा प्रदान की है। महात्मा गाँधी के राष्ट्र–कल्याण हेतु किये गये अभियान आज भी ज्यों के त्यों कठिन एवं दुस्साध्य बने हुये हैं। कांग्रेसी प्रतिनिधियों ने राष्ट्रहित में कोई भी नया कार्य नहीं किया है।

कवि नेताओं तथा मजदूर किसानों के मध्य पारस्परिक प्रेम की अनिवार्यता पर बल प्रदान करता है'

भूले से भी एक बार यदि सच्चे दिल से,
अपने मजदूरों को अपना समझ सको तो।
लेकर फरियाद उपज की, उत्पादन की,
यदि टूटी झोपड़ियों तक तुम पहुँच सको तो।।[2]

1– पाण्डुलिपि– 1. साबरमती के तट पर, छन्द क्र. 3, 4
2– उपरिवत्, छन्द क्र. 13

इसका अवश्यम्भावी परिणाम कितना सुखद होगा, कहा नहीं जा सकता। इसका राजनीतिक एवं भावनात्मक प्रभाव मजदूरों, कृषकों तथा उत्पादकों के अन्तर्मन पर पड़ेगा और राष्ट्रहित में संगठनात्मक सद्‌भावना उत्पन्न हो सकेगी। श्रमिक वर्ग अत्यधिक सचेष्ट हो जायेगा–

श्रमिक वर्ग के अलसाये से सोये से कर,
विद्युत बनकर अकस्मात हीं जग जायेंगे।
यद्यपि अपने चरखे करघे यहीं रहेंगे,
किन्तु सभी के सभी चमकने लग जायेंगे।।[1]

मजदूरों एवं किसानों में राष्ट्र के प्रति सद्‌भावना जाग्रत होगी तथा उनके अथक परिश्रम से रेगिस्तान भी लहलहाते उपवन में परिवर्तित हो जायेगा। श्रमिकों के पत्थर जैसे कठोर और रूखे हाथ नवीन स्फूर्ति के लिये मचल पड़ेंगे तथा उनके हंसिया, खुरपी तथा काई लगे फाँवड़े हरियाली उगलने लगेंगे–

मध्यवर्ग जो पड़ा सिसकियाँ आज ले रहा,
वह होकर उन्मत्त घटा सा उमड़ पड़ेगा।
और तुम्हारे आगे हीं देखते देखते,
अर्थतंत्र में इन्कलाब सा उमड़ पड़ेगा।।[2]

संक्षेप में कहा जा सकता है कि "**साबरमती के तट पर**" रचना में कवि की राष्ट्रीय प्रेम भावना मुखरित तो हुई है किन्तु कवि की चेष्टा राजनेताओं तथा कांग्रेसी जन प्रतिनिधियों के विरोध करने की अधिक रही है। यह भी प्रयास रहा है कि नेतागण मजदूरों एवं किसानों के प्रति सहृदय हो जांय तो देश का उत्थान हो सकता है, सार्वजनिक कल्याण भी हो सकता है।

1– पाण्डुलिपि– 1. साबरमती के तट पर, छन्द क्र. 14

2– उपरिवत्, छन्द क्र. 16

घ- भाषा का स्वरूप

डॉ. आनन्द के जीवन की अनुभूतियाँ जीवन संघर्ष के साथ एकाकार होकर उनके काव्य में प्रतिबिम्बित हुई हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व की राजनीतिक उथल–पुथल ने आपकी साहित्य सर्जना को अत्यधिक प्रभावित किया है। उनकी अधिकांश कृतियों में राष्ट्रीयता के स्वर मुखरित हुये हैं। इनके साहित्य–सृजन में जहाँ राष्ट्रीय चेतना तथा राजनीतिक संस्पर्श अभिव्यक्त हुए हैं, इनकी भाषा स्वाभाविक रूप से ओजगुण सम्पन्न हो गई है तथा जहाँ हास्य एवं बुन्देली रचनाओं की अवतारणा हुई है, इनकी भाषा सरल, प्रवाहयुक्त तथा माधुर्य गुण प्रधान हो गई है। 'साबरमती के तट पर' रचना में राजनेताओं पर व्यंग्य के तीखे प्रहार हैं, तो राजनीतिक ऊहापोह के परिणामों की अभिव्यंजना भी है। भाषा सौष्ठव तथा अलंकार विधान का अपना अलग महत्व है। भाषा सरंचना एवं शब्द–विधान की दृष्टि से इस रचना का विश्लेषण निम्न प्रकार प्रस्तुत है–

उर्दू शब्दावली– आशिक, महफिल, फरियाद, मुश्किल, मंजिल आदि।

तत्सम शब्दावली– उत्तुंग, अभियान, प्रयाण, अभ्युदय, तथा पुनीत आदि।

तद्भव शब्द– बक्खल, उगल, अगल–बगल, अलसाये आदि।

शब्द युग्म– ताना–बाना, रोक–टोक, अगल–बगल, अपनी–अपनी,
ठेल–ठेल, पीट–पीट, निज–निज, जितने–जितने,
उतनी–उतनी, ढूँढ़–ढूँढ़, ऊँचा–ऊँचा तथा गंगा–यमुना आदि।

मानवीकरण–

– पूछ रहीं हैं पुण्य नदी की लहरें तुमसे।[1]
– प्रश्न कर रहा है तुमसे सरिता का कलरव।[2]
– किन्तु तुम्हारे सर्वोदय के रथ के घोड़े।[3]
– अलसाये से सोये से कर।[4]

1– पाण्डुलिपि– 1. साबरमती के तट पर, छन्द क्र. 7

2– उपरिवत्,

3– उपरिवत्, छन्द क्र. 11

4– उपरिवत्, छन्द क्र. 14

अलंकारिक वर्णन-

किन्तु तुम्हारे मन का यह लोभी चातक तो।
प्यासा है केवल चुनाव के सावन घन का।
और तुम्हारे अंतर का पापी चकोर तो।
आशिक है केवल चुनाव की चन्द्र–किरण का।।[1]

X X X

–सर्वोदय के ढोल निरन्तर पीट–पीट कर।[2]

अनुप्रास अलंकार-

प्रकाण्ड प्रस्थान, सहयोग सुधा, धराधूलि, कर किसान आदि।

कतिपय विशिष्ट भाषायी प्रयोग-

– चाहा तो सहयोग गया काले बजार का,
चाहा तो सहयोग गया है अनाचार का।[3]
उदय हो रहा है मानवता का अरुणोदय।[4]

घ- राजनीतिक प्रभाव

इस रचना में कवि ने राजनीतिक प्रभावों को रेखांकित करते हुये राजनेताओं को मजदूरों तथा किसानों से आत्मीय सम्बंध बनाने का परामर्श दिया है। राजनीतिक उथल–पुथल के कारण कवि मानसिक उद्विग्नता का अनुभव करता है। नेताओं के रहस्यपूर्ण कृतित्व को राजनीतिक प्रभाव का कारण स्वीकारने में कवि संकोच नहीं करता है–

भूल हुई हमसे कि तुम्हें हम समझ न पाये,
और तुम्हारे हाथों मन मानिक दे बैठे।
बदले में भुखमरी, गरीबी, बेकारी के,
जाने कितने रामराज्य तुमसे ले बैठे।।[5]

1– पाण्डुलिपि– 1. साबरमती के तट पर, छन्द क्र. 17
2– उपरिवत्, छन्द क्र. 18
3– उपरिवत्, छन्द क्र. 8
4– उपरिवत्, छन्द क्र. 10
5– उपरिवत्, छन्द क्र. 19

कवि का मन्तव्य है कि राजनीतिक प्रदूषण से प्रभावित नेताओं को सामान्य जनता ने अपना सर्वस्व अर्पण करके ही गरीबी, भुखमरी और बेकारी जैसी समस्याओं को भोगा है। रामराज्य की परिकल्पना मिथ्या सिद्ध हुई तथा नेता अपने राजनीतिक प्रभावों से सामान्य जनता को छल, कपट और अविश्वास की अग्नि में झौंकते रहे। कवि नेताओं को पूर्व परिस्थितियों का स्मरण दिलाता हुआ कहता है–

याद करो वह दिन कि देश की अनगिन आँखें,
जब कि चढ़ाती रहीं तुम्हें थीं अर्ध्य सुमन दल।
और तुम्हारे इंगित पर ही मर मिटने को,
उठ पड़ते थे प्राण राष्ट्र के होकर विह्वल।।[1]

यहाँ कवि ने कांग्रेस के उन कार्यकर्ताओं को तथा मुख्य अधिकारियों को फटकारा है, जिनके संकेत मात्र पर राष्ट्र की जनता अपने प्राण न्यौछावर करने को तत्पर हो जाती थी और देवता तुल्य मानकर अर्ध्य के रूप में अपना मन समर्पित करने को व्याकुल रहती थी। आज उन नेताओं की कार्यशैली एवं व्यावहारिक शिष्टता में विकृति उत्पन्न हो गई है, राजनीतिक प्रदूषण परिव्याप्त हो गया है।

किन्तु आज क्या हुआ खोलकर आँखें देखो,
तुममें मानव में है कितनी आज विषमता।
मानवता से दूर हुये तुम जितने–जितने,
उतनी–उतनी दूर हुई तुमसे मानवता।।[2]

उक्त पंक्तियों में कवि ने स्पष्ट किया है कि आज के नेताओं में मानवीय आचरण का सर्वथा अभाव हो गया है। सामान्य मानव से वे कितने भिन्न हो गये हैं, कितनी विषमता आ गई है उनके व्यवहार में, कहा नहीं जा सकता। स्वाभाविक नियम है कि जो मानवीयता से जितनी दूर होगा, मानवीयता भी उससे उतनी ही दूर होती जायेगी।

1– पाण्डुलिपि– 1. साबरमती के तट पर, छन्द क्र. 20

2– उपरिवत्, छन्द क्र. 21

'साबरमती के तट पर' रचना कवि की भावात्मक किन्तु विचारोत्तेजक रचना है। राजनेताओं की प्रदूषित गतिविधियों के प्रति आक्रोश अभिव्यक्त है। रचना की भाषा एवं शिल्प सहज बोधगम्य है। अलंकारिक चमत्कार काव्य सौन्दर्य की अभिवृद्धि करते हैं। व्यंग्य का आश्रय लेकर कवि ने राजनीतिक प्रदूषण को उजागर किया है। सम्पूर्ण रचना प्रसादगुण सम्पन्न है, कहीं–कहीं ओज भी झलकता है।

2– चीन से सम्बद्ध कृतियाँ–

अ. हिमालय सीमा

डॉ. आनन्द ने चीन से सम्बंधित दो कृतियों का सृजन किया है। एक कृति उस समय अवतरित हुई, जब चीन ने भारत पर आक्रमण करने का विचार किया। इस रचना का शीर्षक है– **'हिमालय सीमा'**। दूसरी रचना उस कालखण्ड को समाहित किये है जब चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया था और इस कृति का शीर्षक है– **'बात आ गई है'**। इनमें **'हिमालय सीमा'** का साहित्यिक मूल्यांकन निम्न प्रकार है–

क– विषयवस्तु

प्रस्तुत कृति में रचनाकार ने राष्ट्रीय गौरव का ओजस्वी वर्णन करते हुये चीन को उसका अस्तित्व बोध कराया है। मातृभूमि का हिमकिरीट हिमालय, जो गंगा, यमुना, सरस्वती तथा ब्रह्मपुत्र का उद्‌गम स्थल और शैलसुता की पावन साधना–भूमि रहा है, जहाँ चन्द्रगुप्त की कीर्तिलता प्रवहमान है और जो ऋषियों, मुनियों की त्यागभूमि, तपोभूमि तथा देवालय रहा है, हमारे देश की उत्तरी सीमा का प्रबल पहरेदार है। यह सतर्क पहरेदार हिमालय, भारत का है।

महाभारत काल में गाण्डीवधारी अर्जुन का चीन सल्तनत ने भरपूर सम्मान किया था। सन् अठ्ठारह सौ नब्बे में ब्रिटिश तथा चीन में जो संधि हुई थी, उसमें सिक्किम की रक्षा का भार भारत को सौंपा गया था।

प्राचीन समय में चीन पर भारत ने अपना विजय–ध्वज फहराया था। वही चीन आज भारत पर आक्रमण करने के लिये तत्पर है। चीन को चुनौती देता हुआ कवि कहता है कि हिमालय की चोटी से उठकर जब क्रान्ति के प्रबल झकोरे आयेंगे, तब तुम्हारा नकली मानचित्र उस भयंकर तूफान का सामना नहीं कर पायेगा। चीन का यह प्रयास उस टिटहरी पक्षिणी की तरह है, जो आकाश की ओर पैर करके सोती है तथा सोचती है कि यदि आकाश गिर पड़ा तो मैं पैरों से अपने बच्चों की तथा अपनी रक्षा कर लूंगी।

अरे चीन वासियो, तुमने हिटलर और मुसोलिनी का इतिहास पढ़ा होगा। जो भी उन विस्तारवादियों के कुकृत्यों को दोहरायेगा, उसके साथ वही हश्र होगा, जो उनके साथ हुआ था। डॉ. आनन्द चीन के तत्कालीन राष्ट्राध्यक्ष चाऊ–इन–लाई को युद्ध की विभीषिकाओं से परिचित कराते हुये कहते हैं कि युद्ध के दिनों में क्षण–क्षण में प्रलय की घनघोर घटायें घुमड़ती हैं, बेगुनाह मासूमों पर अंगार बरसते हैं, खेतों और खलिहानों में हर ओर कयामत की हवायें चलती हैं तथा समर भूमि में चलने वाली मौत की भयंकर आँधियाँ गरीबों की झोपड़ियों को भस्म कर देती हैं।

चूंकि चीन साम्यवाद का समर्थक रहा है। इसलिये कवि ने साम्यवाद पर टिप्पणी करते हुये कहा है कि यही तुम्हारा साम्यवाद है? जिसमें बेगुनाह इन्सानों को दमन की चक्की में पीसा जाता है। निरपराध गरीबों को रण की भट्टी में झोंका जाता है– साम्यवाद का यह अर्थ कदापि नहीं हो सकता है। मार्क्सवाद तथा लेनिन के साहित्य में जो साम्यवाद की व्याख्या है, चाऊ–इन–लाई का साम्यवाद उससे बहुत भिन्न है। तुम जिसे प्रगतिवाद का उद्‌गम कहते हो, वह तो अवनति के गहरे, गंदे नाले के समान है।

कवि ने चाऊ–इन–लाई को फटकारते हुये कहा है कि तुम कालनेमि तथा मारीच राक्षसों की तरह मायावी हो, घनघोर विषमतावाद फैलाकर केवल साम्यवाद का मुखौटा लगाये हो। यदि साम्यवाद के सच्चे

समर्थक होते तो हिमगिरि के नभ की शांत नीलिमा के नीचे अशान्ति का काला कदम न बढ़ाते तथा तिब्बत, फारमोसा, भारत और लद्दाख तक अपना अधिकार क्षेत्र न बतलाते।

हमारा देश भावुकता, उदारता और कोमलता की प्रतिमूर्ति है। हम नहीं चाहते कि अबोध शिशुओं की मृदु मुस्कानों को मसल डाला जाय तथा विश्व के सुन्दर हरे–भरे उद्यानों को श्मशान में परिवर्तित होने दिया जाय। हम नहीं चाहते कि उपवन के पुष्पों की आकर्षक छटा को वीरानों में बदल दिया जाय तथा माताओं का कोमल अनुराग और प्रियाओं का प्रणय–राग श्मशानों में सुला दिया जाय। क्या हमारे सद्ग्रन्थ, ज्ञान–विज्ञान, कला–कौशल आदि हमें छल, कपट तथा द्वेष ही सिखलाते हैं? क्या मानवता की पुस्तक से सभ्यता तथा शील आदि गुणों के परिच्छेद समाप्त कर दिये गये तथा क्या बौद्ध मठों के उपदेशों पर चीन का हड़ताली आतंक छा गया है? हम नहीं चाहते कि पिछले महायुद्धों की विभीषिका से प्रशान्त महासागर की जो लहरें अब तक उबल रही हैं, उनमें तृतीय महायुद्ध का दावानल अपनी भयंकरता उत्पन्न कर दे।

कवि कहता है कि यदि तृतीय विश्वयुद्ध छिड़ गया तो चीन का आने वाला आम चुनाव टल जायगा और चाऊ–इन–लाई की कुर्सी कुछ समय के लिये स्थायी हो जायगी। ऐसा प्रतीत होता है कि राष्ट्राध्यक्ष को केवल कुर्सी का मोह व्याप्त है, सीमा–विवाद तो बहाना मात्र है। जब चीन में कम्युनिष्ट सरकार आई, तब भी सीमा की बात उठाई जा सकती थी, भारत में अंग्रेजों का डेढ़ सौ बर्ष राज्य रहा, तब क्यों यह विवाद नहीं उठाया गया। पाकिस्तान विभाजन के अवसर पर, पंचशील के सिद्धान्तों पर हस्ताक्षर करते समय तथा जब भारत ने चीन को सर्वप्रथम मान्यता दी और जब नेहरू जी से प्रथम भेंट हुई, तब भी यह समस्या उठाई जा सकती थी। अरे, चाऊ! यह सीमा विवाद तथा अधिकार क्षेत्र घोषित करने वाला नक्शा कभी भी बतला सकते थे और यह भड़कीला भूगोल कभी भी छपवा सकते

थे। फारमोसा पर भी आपकी दृष्टि है, पर तुम उसे अपनी सीमा का नक्शा इसलिये नहीं समझा सके क्योंकि वहाँ अमेरिका का पहरा है।

भारत में सत्य, अहिंसा के पथ पर चलकर हंसते–हंसते वलिदान होने वाले अगर हुये हैं तो यह मत भूलो कि यहाँ सर–शैया पर सोने वाले भी होते रहे हैं। महाभारत के इतिहास में गाण्डीवधारी अर्जुन के तीखे वाणों की भयंकरता को तो सुना होगा। हमें अणुबम की भयंकरता से मत धमकाओ, हमारे यहाँ शब्द–भेदी वाण चलाने वाले तथा पानी में मछली के प्रतिबिम्ब को देखकर निशाना लगाने वाले भी होते रहे हैं।

जब से आपका सीमा–संवाद सुना, बुन्देलखण्ड की तीव्र त्योरियां चढ़ गईं, राजस्थान की पैनी कटारें मचल उठीं, पंजाब की कृपाणें चमक उठीं, बंगाल अंगारे उगलने लगा, मद्रास दुधारों पर धारें रखने लगा, बरछों पर नोंक–झोंक आने लगी, भालों पर पानी दौड़ने लगा तथा तीखी तलवारों पर ताव चढ़ने लगा। अब भारत की सीमा के आस–पास कोई यदि हिटलर बनकर मनमानी करने आता है तो चालीस करोड़ (तत्कालीन भारत की जनसंख्या) कदम एक साथ आगे बढ़ जायेंगे और चालीस करोड़ तलवारें लिये हाथ शत्रु को परास्त करने में सन्नद्ध हो जायेंगे।

ख– हास्य एवं व्यंग्य

'एक कलाकार के लिये अनुभूति की तीव्रता जितनी आवश्यक है, उतनी ही जरूरी है अभिव्यंजना के माध्यम का विलक्षण प्रयोग'[1] इस दृष्टि से डॉ. आनन्द का काव्य अनुभूति में भावोत्कर्ष का समर्थक है तो अभिव्यक्ति में शब्द सामर्थ्य का प्रतिपादक भी है। कवि ने इस रचना में सामान्यतः अभिधा शक्ति के माध्यम से अपने विचारों का प्रतिपादन किया है, किन्तु कहीं तीखी एवं कड़वी बात को हास्य के माध्यम से सरल बनाया है तो कहीं व्यंग्य के माध्यम से नुकीला एवं धारदार भी बनाया है।

---

1. जिन्दगी की आँच और रंग, सम्पादक–गुरुचरणसिंह, आलेख–कविता का रचनात्मक विश्लेषण–डॉ. राहुल, मंजूषा प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ 182

चीन के तत्कालीन राष्ट्राध्यक्ष चाऊ–इन–लाई का वास्तविक स्वरूप अनावृत करते हुये डॉ. आनन्द का चुटीला व्यंग्य दृष्टव्य है–

तुम कालनेमि मारीच निशाचर माया का,

अनुकरण किये हो अपना रूप छिपाये हो।

घनघोर विषमतावाद पाप के ढाँचे पर,

तुम साम्यवाद का चिहरा सिर्फ लगाये हो।।[1]

यहाँ कवि ने विपक्षी के अन्तर पर करारा–प्रहार किया है व्यंग्य वाण के माध्यम से। चाऊ–इन–लाई साम्यवाद का मुखौटा पहनकर पड़ौसी भारत देश के साथ सीमा–विवाद खड़ा कर रहा है। कवि ने कालनेमि एवं मारीच का उदाहरण देकर शत्रु के छद्म को स्पष्ट किया है, जिसमें भीतर है विषमतावादी भावना और वाह्य स्तर पर साम्यवादी विचार।

कवि ने शत्रु को दोषारोपित करते हुये अपनी बात प्रभावी माध्यम से प्रकट की है।

हिमगिरि के नभ की शान्त नीलिमा के नीचे,

किसने अशान्ति का काला कदम बढ़ाया है।

तिब्बत भारत लद्दाख फारमोसा तक पर,

किसने अपना अधिकार क्षेत्र बतलाया है।।[2]

कवि ने शत्रु के अधिकार–प्रदर्शन को अशान्ति का काला कदम बतलाया है। तात्पर्य यह है कि अनुचित अधिकार पूर्वक अबैध सीमा विस्तार ने कवि के अन्तर को विदीर्ण किया है। व्याकुल हृदय से कवि गंभीरता पूर्वक अपना शांत प्रत्युत्तर विपक्षी को समर्पित कर रहा है। कवि के प्रश्न का उत्तर स्पष्ट है कि इस अशान्ति का मूल विधायक विपक्षी शत्रु ही है।

प्रस्तुत रचना में हास्य मिश्रित व्यंग्य का एक उदाहरण देखने योग्य है–

1– पाण्डुलिपि–1. हिमालय सीमा, पृष्ठ 4

2. उपरिवत्,

तुमको चुनाव का ज्वर आया था सुनते हैं,

तब सन्निपात की बकझक में सोचा होगा।

रैकिट बम अणुबम तोप तमंचों का नक्शा,

तुमने अफीम की पीनक में सोचा होगा।।[1]

यहाँ कवि ने शत्रु को व्यंग्य के माध्यम से विदीर्ण करने के साथ हास्य का पुट भी प्रस्तुत किया है। चीन में अफीम का भरपूर उत्पादन होता है। सम्भव है चाऊ–इन–लाई अफीम का नशा भी करते होंगे, नहीं तो सामान्यतः कोई ऐसा अनुचित सीमा निर्धारण नहीं कर सकता है। कवि का आरोप है कि चाऊ–इन–लाई अपने देशवासियों को दिग्भ्रमित करने के उद्देश्य से इस प्रकार के विवाद खड़े करते हैं, वास्तविक मोह तो राष्ट्राध्यक्ष की कुर्सी का है। व्यंग्य के माध्यम से गंभीर आरोप रेखांकित है–

क्या इसीलिये तुम पाजामे के बाहर हो,

क्या इसीलिये यह महासमर छिड़जाना है?

लगता है तुमको मोह सिर्फ कुरसी का है,

चीनी सीमा तो केवल एक बहाना है।।[2]

कवि ने शत्रु की दुनीर्तियों को अनावृत करते हुये कहा है कि सीमा विवाद से चीनी चुनाव टल जायेंगे और राष्ट्राध्यक्ष का पद पूर्ण रूपेण सुरक्षित बना रहेगा। पाजामे से बाहर होने का तात्पर्य उखाड़–पछाड़ या आक्रोश प्रदर्शन से है। इस प्रकार इस कृति में कवि ने यदि अभिधा और लक्षणा का प्रयोग किया है तो कहीं–कहीं व्यंजना का भी भरपूर प्रयोग उपलब्ध है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि इस रचना में कवि को व्यंग्य विधान में पूर्ण सफलता मिली है। कवि के व्यंग्य नुकीले एवं धारदार हैं तथा विपक्षी को मर्माहत करने में पूर्ण सक्षम हैं।

1– पाण्डुलिपि– 1. हिमालय सीमा, पृष्ठ 4

2. उपरिवत्, पृष्ठ 6

ग– राष्ट्र-प्रेम

'राष्ट्रीय भावना का स्व–केन्द्र कवि के आत्मदर्शन को प्रभावित करता रहा है। भारत वर्ष की राजनीतिक स्वाधीनता के पश्चात् भी अनेक सामाजिक विसंगतियों और कुरीतियों के जाल में जकड़ा राष्ट्र अभी उबर नहीं पाया है। देशी और विदेशी कुदृष्टि भी हमारे सामाजिक परिवेश को विकृत कर रही है।'[1] उक्त कथन में डॉ. शुक्ल ने स्वातंत्र्योपरान्त राष्ट्र की विषमताओं एवं विदेशी कुदृष्टियों की ओर ध्यान आकर्षित किया है। डॉ. आनन्द की इस रचना में राष्ट्रप्रेम और सामाजिक आन्दोलनों का स्वर मुखरित हुआ है। चीन अपने वर्चस्व–प्रसार के लिये भारत पर दुर्दान्त आक्रमण करने की योजना बनाता है। कवि की लेखनी ने मचलकर चीन को चुनौती देते हुये वाक् प्रहार भी किया है–

ले एक हाथ में अमन एक में इन्कलाब,
हिमखण्ड शिखर अब अग्नि खण्ड बन जायेगा।
सुन सके न जो तुम कहीं शान्ति की शहनाई,
तो रणभेरी का बिगुल बजाया जायेगा।।

उत्तुंग हिमालय की चोटी से उठ–उठ कर,
निज समय क्रान्ति के प्रबल झकोरे आयेंगे।
तुम अपने फरजी मानचित्र पर मत गरजो,
इनसे आँधी तूफान न रोके जायेंगे।।[2]

कवि की राष्ट्रीय प्रेम–भावना यहाँ चीन के प्रति चुनौती के रूप में अभिव्यक्त है। अप्रत्यक्ष रूप से कवि का मन्तव्य स्पष्ट है कि यदि चीन भारत पर आक्रमण करेगा तो हिमालय की चोटी से क्रान्ति के तूफानों का वेग प्रारम्भ होगा, रणभेरी का बिगुल बज उठेगा, जिसे रोक पाना चीन के लिए असम्भव होगा।

1– गीतीतिहास में ये गीत, डॉ. सूर्यप्रसाद शुक्ल, पृष्ठ 17

2– पाण्डुलिपि–1. हिमालय सीमा, पृष्ठ 2

डॉ. आनन्द अपने जीवनकाल में राष्ट्र–प्रेम के घोर समर्थक रहे हैं। स्वातंत्र्य आन्दोलन में उनके वलिदान चिर स्मरणीय रहेंगे। राष्ट्र के लिए तन, मन तथा धन न्योछावर करने वाले कवि ने निर्भीक होकर कई बार राष्ट्रीय आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया। अपने देश का गौरवपूर्ण इतिहास व्यक्त करते हुये कवि की वाणी में राष्ट्र–प्रेम साकार हो उठा है–

क्या कभी महाभारत इतिहास पढ़ा तुमने,
दुनियां ने यह पैगाम सुना ही तो होगा।
जिसमें अर्जुन के तीखे वाण मचलते थे,
उस गाण्डीव का नाम सुना ही तो होगा।।

अणु बम की धमकी से मत हमको धमकाओ,
हम शब्द–भेद के वाण चलाना सीखे हैं।
नीचे पानी में परछाहीं को देख– देख,
ऊपर मछली का ठीक निशाना सीखे हैं।।[1]

उक्त पंक्तियों में कवि ने महाभारत की वीरत्व व्यंजक गाथा (अर्जुन का मत्स्यवेध) का संकेत देकर अपने देश के प्राचीन गौरव को व्याख्यायित किया है। यहाँ सदैव से राष्ट्र के प्रति तन–मन–धन न्योछावर करने वाले जन्मते रहे तथा देश के लिए हँसते–हँसते अपना प्राणार्पण करते रहे हैं–

माना कि यहाँ हम सत्य अहिंसा के पथ पर,
हँस–हँस कर बलि होने वाले भी होते हैं।
लेकिन यह भी तो मत भूलो इस भारत में,
शर–शैया पर सोने वाले भी होते हैं।।[2]

महाभारत में भीष्मपितामह जैसे आत्मसंयमी, इच्छामृत्यु मरने वाले तथा अखण्ड ओज और वीरता की साक्षात् प्रतिमूर्ति ने अवतरित होकर वाणों की शैया पर सोने का संकल्प निर्वाह किया। कवि का राष्ट्र–प्रेम

1– पाण्डुलिपि–1. हिमालय सीमा, पृष्ठ 7

2– उपरिवत्, पृष्ठ 6

प्रबल होकर कहीं–कहीं **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की झाँकी प्रस्तुत करता है। देश प्रेम के प्रतीक के रूप में कवि की भावुकता, उदारता तथा भावात्मक कोमलता दृष्टव्य है–

हम नहीं चाहते कि मसल डाला जाये,
छोटे–छोटे शिशुओं की मृदु मुस्कानों को।
हम मरघट में तबदील नहीं होने देंगे,
दुनियाँ के सुन्दर हरे भरे उद्यानों को।।[1]

उक्त पंक्तियों का आशय है कि कवि अपने देशप्रेम के कारण अकारण युद्ध की विभीषिका उपस्थित नहीं होने देना चाहता है। वह नहीं चाहता है कि नौनिहालों की असामयिक हत्यायें हों, माताओं की गोदें सूनी हो जायें तथा भारतीय नारियों की माँग का सिन्दूर पोंछ डाला जाय। कवि नहीं चाहता कि हरे–भरे उपवन वीरान हो जांय–

वन को उपवन को फूल फलों की शोभा को,
क्या बदल दिया जायेगा यह वीरानों में।
माताओं का अनुराग प्रिया का प्रणय राग,
क्या सुला दिया जायेगा कबरिस्तानों में।।[2]

कवि को अपने देश भारत से अखण्ड और अद्वितीय प्रेम है। चीन से संघर्ष लेकर वह नहीं चाहता कि तृतीय विश्वयुद्ध घटित हो। अतः शान्ति से, समझौते से तथा सहृदयता से विवादों को सुलझाने की प्रेरणा देता हुआ कहता है–

देखो प्रशान्त सागर की लहरों को देखो,
रण की विभीषिका से जो अब तक रहीं उबल।
हम नहीं चाहते हैं दुनियाँ पर फैलाना,
अब और तीसरे महायुद्ध का दावानल।।[3]

---

1. पाण्डुलिपि–1. हिमालय सीमा, पृष्ठ 5
2. उपरिवत्,
3– उपरिवत्, पृष्ठ 5

डॉ. आनन्द तृतीय विश्वयुद्ध की भयंकरता से अवगत कराते हुये शांति एवं अहिंसा का मध्यम मार्ग अपनाने की बात करते हैं। उक्त पंक्तियों में कटुता, वैमनस्यता तथा कुरूपता का निषेध रूपायित हुआ है। वैश्विक समरसता को आघात पहुँचाती प्रतिशोध की भावना का शांतिपूर्ण परिहार प्रतिबिम्बित है तथा गहन संवेदना सम्भूत देश–प्रेम का परिदृश्य समुस्थित है।

घ- भाषा का स्वरूप

'सूक्ष्म मानस संवेगों में ऐन्द्रिक संवेदनाओं के कारण जो मन पर प्रभाव होता है, उसे ही अनुभूति कहते हैं। अनुभूति इन्द्रियजन्य होती है। भाव का सम्बंध किसी सूचना बोध, स्मृति या कल्पना प्रसूत कारणों से होता है। मनोदशा, भावना, व्यक्तिगत स्वभाव तथा संस्कार एवं स्वभाव के संयोग से जब भावना में गम्भीरता, व्यापकता तथा कुछ क्षण के लिये ही सही, स्थिरता उत्पन्न होती है, तब साहित्यिक रचनात्मकता का आविर्भाव होता है।'[1] साहित्य का रचनात्मक स्वरूप भाषा के माध्यम से ही अस्तित्व में आता है। साहित्यकार के भाषा–सौष्ठव पर श्रेष्ठ साहित्य का सृजन आधारित रहता है। इस दृष्टि से डॉ. आनन्द के काव्य की भाषा भाव–बोध एवं अर्थ–बोध में पूर्ण सक्षम है। सरल, प्रवाहयुक्त एवं सादगी से पूर्ण भाषा कवि के गम्भीर भावों को सहज बोधगम्य बनाती है। कहीं–कहीं क्लिष्ट एवं परिमार्जित शब्दावली का प्रयोग कवि की भाषा को परिष्कृत स्वरूप प्रदान करता है। तत्सम शब्दावली की अपेक्षा तद्भव एवं देशज शब्दों का प्रयोग बहुलता से उपलब्ध है।

डॉ. आनन्द की इस रचना में खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है। यत्र–तत्र भावों को संवेद्य बनाने के लिए बुन्देली, उर्दू, फारसी तथा संस्कृत की प्रचलित शब्दावली व्यवहार में है। वस्तुतः आपकी भाषा में सार्थक शब्दों का व्यवस्थित विधान है। प्रसंगानुसार आपकी भाषा का स्वरूप बदलता रहा

1– गीतीतिहास में ये गीत, डॉ. सूर्यप्रसाद शुक्ल, पृष्ठ 25

है। बुन्देली गीतों में आपकी भाषा शुद्ध बुन्देली है। कहीं–कहीं खड़ी बोली में ग्रामीण अंचल के शब्दों का मिश्रण अधिक आकर्षक बन पड़ा है। यद्यपि डॉ. आनन्द भाषा के प्रति पूर्णतः सतर्क एवं सावधान दिखाई देते हैं फिर भी कहीं–कहीं तद्भव शब्दों के बाहुल्य से भाषा का परिमार्जित स्वरूप कुछ कमजोर सा दिखाई देता है।

शब्द विधान की दृष्टि से उनकी भाषा को निम्न रूपों में रखकर परखा जा सकता है–

1– देशज शब्दों का प्रयोग

2– उर्दू शब्दावली

3– अंग्रेजी शब्द

4– संस्कृत शब्दों का प्रयोग

1– देशज शब्दों का प्रयोग

डॉ. आनन्द का जन्म बुन्देलखण्ड में हुआ है, इसलिये ग्रामीण अंचल में व्यवहृत बुन्देली के देशज शब्दों के प्रयोग इनकी भाषा में सहजता से उपलब्ध हो जाते हैं। भीतर, परछाईं, उगलबौ, चंटभरी, पंछी, हिचकी, पन्ना, झौंका, झोंकबो, कुगतवाद तथा भभकना जैसी देशज शब्दावली के स्वाभाविक प्रयोग उपलब्ध हैं। इन शब्दों के प्रयोग से कहीं भी दुरूहता उत्पन्न नहीं होती।

डॉ. आनन्द की इस रचना की भाषा में बनावटीपन नहीं है। उसमें सहज प्रवाह है। न तो भाषा सम्बंधी कोई चमत्कार है और न अलंकार सम्बंधी विशेष आकर्षण।

2– उर्दू शब्दावली

अमन, शहनाई, फरजी, अरमान, कब्र, बे गुनाह, मासूम, क़यामत, दफनाया, सिर्फ, चिहरा, तब्दील, कबरिस्तान, मुश्किल, तकलीफ, गबारा, पैगाम तथा सवाल जैसे उर्दू के शब्द कवि की भाषा में इतने घुलमिल गये हैं कि उनके प्रयोग में कोई वैशिष्ट्य दृष्टिगत नहीं होता।

3- अंग्रेजी शब्दावली

आपकी इस रचना में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग अन्य कृतियों की अपेक्षा कम हुआ है। ब्रिटिश, लिटरेचर, ट्रेडमार्क, रैकिटबम तथा कम्युनिस्ट जैसे अल्प प्रयोग भावाभिव्यंजना में सहायक के रूप में प्रयुक्त हुये हैं। इस प्रकार के प्रयोग भाषा–प्रवाह में कोई व्याघात उपस्थित नहीं करते।

4- संस्कृत शब्दों के प्रयोग

हिमकिरीट, इलावृत, उत्तुंग, नीलाम्बर, उद्‌गम, कौटिल्य तथा गाण्डीव जैसे संस्कृत शब्द कवि के संस्कृत–ज्ञान का परिचय देते हैं। यदा–कदा इन शब्दों के प्रयोग से कवि की बौद्धिकता एवं विचार सम्पन्नता उजागर हुई है। ऐसे तत्सम प्रयोगों से विषय विवेचन में कहीं भी कोई बाधा अनुभूत नहीं होती।

5- युग्म शब्द

क्षण–क्षण, छोटे–छोटे, बड़े–बड़े, सोते–सोते, बतला–बतला, जहाँ–जहाँ, देख–देख, भीतर–भीतर, तीखी–तीखी, उठ–उठ, बड़ी–बड़ी, आस–पास, हरे–भरे तथा भभक–भभक आदि।

इन युग्म शब्दों के साथ ही कवि की भाषा में आगत कुछ विलक्षण प्रयोग इस कृति के प्रभाव में अभिवृद्धि करते हैं। जैसे– 'खेत खून बन जाते', 'कुरसी से चिपका रह जायेगा', 'कयामत की हवायें', 'शर–शैया पर सोने वाले', 'छाती में छेद करना', 'अपने हाथों अपनी कब्र बनाना', 'बेगुनाह इन्सानों को दफनाना', 'रण की लपटें', 'अशान्ति का काला कदम', तथा 'अशान्ति की क्यारी' आदि प्रयोग डॉ. आनन्द की कविता के अर्थ–सम्प्रेषण में तथा पाठक से सीधा सम्बंध जोड़ने में सहायक हुये हैं।

डॉ. आनन्द की इस रचना में अलंकारों के स्वाभाविक प्रयोग काव्य सौष्ठव में अभिवृद्धि करते हैं। यत्र–तत्र यमक, रूपक, वक्रोक्ति, अन्योक्ति तथा उपमा और अनुप्रास के उदाहरण मिल जाते हैं। अनुप्रास अलंकार के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं– मृदु मुस्कानों, फूल–फलों, छल–छिद्र, कपट–कौटिल्य, घन–घोर, सभ्यता–शील, चीनी–चुनाव,

भड़कीला–भूगोल, तीव्र–त्योरियाँ, कोटि कंठों, शैलसुता, गौरव गाथायें, सिंध सरिता, सादर सम्मान, गुण गौरव, बिगुल बजाया, बड़ी–बड़ी बलबती तथा घटा घुमड़ आदि।

भाषा सम्बंधी विवेचनोपरान्त कहा जा सकता है कि भारत पर चीनी आक्रमण से पूर्व डॉ.आनन्द द्वारा प्रणीत यह रचना **'हिमालय सीमा'** भाषा सौष्ठव की दृष्टि से पूर्ण सफल है। इस रचना की चुस्त–दुरुस्त भाषा, आकर्षक शब्द–चित्र, शब्दों के सजीव, सार्थक एवं पुष्ट प्रयोग पाठक के मानस पर अमिट प्रभाव छोड़ने में पूर्ण सफल हैं।

ङ- राजनीतिक प्रभाव

डॉ. आनन्द ने इस कृति में देश में व्याप्त तत्कालीन राजनीतिक गतिविधियों को साकार करते हुये विभिन्न परिस्थितियों का चित्रांकन किया है। देश के राजनीतिक विवादों एवं विभिन्न राजनीतिक दलों के सैद्धांतिक मतभेदों को देखकर पड़ौसी देश चीन ने अवसर का लाभ उठाने की कोशिश की और भारत पर आक्रमण करने की रणनीति को कार्यान्वित करने का प्रयास किया। चीन ने सीमा विवाद को मुद्दा बनाकर जैसे ही भारत पर अपना वर्चस्व स्थापित करने का विचार किया, कवि ने कड़े शब्दों में उसकी निन्दा करते हुये अपनी रचना में देश के विभिन्न प्रान्तों में होने वाली प्रतिक्रिया को व्यक्त किया है। सीमा का विवाद पूर्ण सम्वाद सुनकर एक ओर बुन्देलखण्ड युद्ध की विभीषिका से टकराने को सन्नद्ध हो उठा तो दूसरी ओर राजस्थानी वीरों की कटारें म्यानों के भीतर मचल उठीं–

पंजाब आब ले उठा कृपाणों पर अपनी,
बंगाल अभी से लगा उगलने अंगारे।
मद्रासी धारें रखने लगा दुधारों पर,
भारत भर में हुंकार उठीं गरजे नारे।।

बरछों पर आने लगीं अचानक नोक झोंक,
आवेश उछलकर आने लगा कटारों पर।
भालों पर पानी लगा दौड़ने एक साथ,
चढ़ गया ताव तीखी–तीखी तलवारों पर।।[1]

1– पाण्डुलिपि–1. हिमालय सीमा, पृष्ठ 7

चीनी आक्रमण के समय देश की रग–रग में खून खौलने लगा था। कवि अपनी ओजस्वी वाणी में जनता को उद्बोधित करते हुए भीषण रक्तपात की प्रेरणा दे रहा था। पंजाब, बंगाल, राजस्थान तथा मद्रास आदि सभी प्रान्तों में युद्ध की लहर दौड़ने लगी थी। कवि चीन को उपालम्भ देकर कहता है कि अभी तक सीमा विवाद का प्रश्न क्यों नहीं उठाया गया?–

जिस समय देश में कम्युनिस्ट सरकार हुई,
तब क्या सीमा की बात उठाई गई कभी।
अंग्रेज डेड़ सौ वर्ष रहा जब भारत में,
तब क्या लंदन से आँख मिलाई गई कभी।।

फिर पाकिस्तानी बटवारे के अवसर पर,
मुँह पर सीमा की बात आप ला सके नहीं।
फिर पंचशील पर हस्ताक्षर जब किये गये,
तब भी तुम अपनी सीमा बतला सके नहीं।।[1]

इस प्रकार कवि ने विभिन्न उदाहरण देकर चीन को करारी फटकार दी है। चीन को राजनीतिक दाँव–पेच का बोध कराते हुए कवि ने सीमा विवाद से पूर्व की परिस्थितियों का उद्घाटन किया है तथा उसकी कपटयुक्त चालाकी और कायरता को अभिव्यंजित किया है–

यह नक्शा चाऊ चंट भरी भाषा वाला,
क्या मुश्किल था तुम किसी रोज बनवा लेते।
जो आज बड़ी तकलीफ गबारा की तुमने,
वह भड़कीला भूगोल कभी छपवा लेते।।

तुम कभी फारमोसा को अपना कहते थे,
उस पर भी चीनी दाँत आपका गहरा है।
पर उसे न तुम सीमा समझाने को पहुँचे,
इसलिये कि उस पर अमेरिका का पहरा है।।[2]

1– पाण्डुलिपि–1. हिमालय सीमा, पृष्ठ 6

2– उपरिवत्, पृष्ठ 6

उक्त पंक्तियों में कवि ने विश्व राजनीति की झलक प्रस्तुत करके अमेरिका का वर्चस्व निरूपित किया है तथा चीन की राजनीतिक चालों को कूटनीति का जामा पहनाकर दोषपूर्ण सिद्ध किया है।

डॉ. आनन्द ने चीन के राजनीतिक स्तर को छल, दम्भ एवं द्वेषपूर्ण बतलाया है। चीन के राष्ट्राध्यक्ष चाऊ–इन–लाई की स्वार्थ परायण राजनीति को निम्न पंक्तियों में उकेरा गया है–

छिड़ गया तीसरा महासमर तो क्या होगा,
आने वाला चीनी चुनाव टल जायेगा।
फिर जो भी चीनी चाऊ होगा जहाँ–जहाँ,
सबका सब कुरसी से चिपका रह जायेगा।।[2]

तात्पर्य है कि चुनाव स्थगित करने के उद्देश्य से देश में युद्ध की भूमिका निर्मित करना–जैसी घटनायें विश्व के कई देशों में देखी जाती हैं। चीन के राष्ट्राध्यक्ष ने भी राजनीति के इस निकृष्टतम स्वरूप को स्वीकार कर देश को गुमराह करने का प्रयास किया था। कवि ने विकृत राजनीति को दोषारोपित करते हुये चीन के राष्ट्राध्यक्ष का अकौये के पेड़ से साम्य वर्णित कर उसके निकृष्टतम स्वरूप की झलक प्रस्तुत की है।

हैं जंगखोर जहरीले पेड़ अकौये के,
यह बढ़ते हैं केवल अशान्ति की क्यारी में।
पर इनका कुछ भी मूल्य नहीं हो सकता है,
अमनो अमान की हरी भरी फुलवारी में।।[2]

उक्त पंक्तियों में कवि ने अकौये का जहरीलापन तथा उसका अशान्ति की क्यारी में बढ़ना वर्णित कर चाऊ–इन–लाई की भ्रष्टतम राजनीति को उजागर करने का प्रयास किया है। तात्पर्य यह है कि इन्हें विश्व शांति रंचमात्र भी आकर्षित नहीं करती। जंगखोर से उसके लड़ाकू होने का संकेत दिया गया है।

1– पाण्डुलिपि–1. हिमालय सीमा, पृष्ठ 5

2– उपरिवत्, पृष्ठ 5

इस प्रकार कहा जा सकता है कि डॉ.आनन्द ने इस कृति में यदि भारत की शांतिपूर्ण राजनीति का स्वरूप रेखांकित किया है तो चीन की विकृत मानसिकता से उद्भूत भ्रष्टतम राजनीति को भी उद्घाटित किया है। जिस प्रकार समाज की परिस्थितियों, समस्याओं एवं अवस्थाओं का कवि के मानस पर प्रभाव पड़ता है, उसी प्रकार राजनीति भी कवि के मानसिक स्तर को प्रभावित किए बिना नहीं रहती। डॉ. आनन्द ने राजनीतिक प्रभाव को अपनी कृति में दर्शाने का सफलतम प्रयास किया है।

आ- बात आ गई है

क- विषय वस्तु

भारत पर चीनी आक्रमण के उपरान्त कवि के आक्रोश और उग्रतापूर्ण तेवर को सक्षम अभिव्यक्ति देने वाली प्रस्तुत कृति संघर्ष की अपेक्षा विचारोत्तेजना की ओर अधिक इंगित करती है। कवि के उग्र विचार ओजयुक्त वाणी के माध्यम से अभिव्यक्त हुये हैं। आक्रमण से पूर्व की रचना **'हिमालय सीमा'** में वर्णित वैचारिक द्वन्द्व इस रचना में व्यावहारिक होता सा प्रतीत होता है।

कवि ने चीन द्वारा चीन–भारत–संधिपत्रों की अवमानना एवं तिरस्कार की ओर संकेत किया है। देश वासियों की शांतिप्रियता एवं **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की भावना को त्याज्य बताकर कवि ने अहिंसा को उठाकर ताक में रखकर समर के दुधारों से युद्ध के संकल्प को दुहराया है। देश के पूँजीपतियों को इंगित किया है कि वे अपनी दौलत का उपयोग पहरेदारों अर्थात् युद्धभूमि में प्राणपण से जुटने वाले सिपाहियों के लिये करें।

डॉ. आनन्द ने कलाकारों से आग्रह किया है कि वे तम्बूरा लेकर बेसुरा राग न छेड़ें, वरन् देश का राग गायें। सरे आम भैरवी गाना त्याग दें। महिलाओं से कहा है कि तुम कोमलांगी ही नहीं वरन् दुर्गावती तथा पद्मिनी भी हो। युद्ध रूपी हवन कुण्ड में प्राणों की आहुति देने को

तत्पर रहें। देश के संरक्षकों का आवाहन किया है कि वे अब शान्त होकर न बैठें। चमन की बहारों पर पतझड़ की सम्भावना है अर्थात् देश की इज्जत लूटने पर विदेशी आमादा हैं।

कवि ने शायरों को सचेत किया है कि अभी तक तुमने मयकदों के अनगिनत गीत गाये, सुराही और जाम तथा मुहब्बत के पैगांम बहुत लिख डाले, किन्तु क्या वतन के लिये भी कुछ सोचा है। समय की पुकार है कि अपने देश के लिए भी, राष्ट्रहित चिन्तन करते हुए कुछ लिखें। अब मन्दिर और मस्जिद दोनों खतरे में हैं। मस्जिदों के कंगूरे काँप रहे हैं तथा मंदिरों की चोटियाँ चटखने लगी हैं। टेंकों की भयाबनी गम्भीर ध्वनि चारों ओर से आक्रान्त कर रही है। ऐसी स्थिति में देशवासियों को संगठित भावना से देशहित में कुछ कर गुजरना है। इस रचना में मूलतः यही संदेश प्रसारित है। कवि ने कहा है–

सफीना भँवर से निकल तो चुका पर,
नदी के किनारों पै बात आगई है।
अहिन्सा उठाकर धरो ताक में अब,
समर के दुधारों पै बात आगई है।।[1]

ख– राष्ट्र–प्रेम

डॉ. आनन्द ने अपने सम्पूर्ण सृजन में राष्ट्र–प्रेम की भावना को सर्वोपरि माना है। राष्ट्रीय भावनाओं से ओत–प्रोत रचनाओं में डॉ. आनन्द कहीं सेवा, त्याग एवं संघर्ष को प्रमुख मानकर देशहित की प्रेरणा देते चले हैं, तो कहीं ओजस्वी वाणी में युवकों का उत्साहबर्धन भी किया है। चीनी आक्रमण के समय कवि ने देश वासियो, कलाकारों, शायरों, महिलाओं तथा देश के संरक्षकों को देशहित में प्राणपण से जुटने की प्रेरणा दी है। मातृभूमि के प्रति अगाध श्रृद्धा उनकी रचनाओं का केन्द्रीय भाव रहा है। कवि ने देश पर मँडराती युद्ध की भीषण विभाषिकाओं से राष्ट्ररूपी उपवन

1– पाण्डुलिपि–1. बात आ गई है, छन्द क्र. 1

में अनायास पतझड़ आने की संभावनायें व्यक्त की हैं तथा संरक्षकों का आह्वान करते हुये कहा है—

न जाने कितनी गरम तीलियों से,
बनाया गया था नरम आशियाना।
मगर ना समझ बिजलियों को कहें क्या,
लगाने लगीं इस तरफ ही निशाना।।

कहो बागवाँ से न बैठे रहो अब,
उठो और देखो कि क्या हो रहा है।
खिजां की फिजायें मचलने लगी हैं,
चमन की बहारों पै बात आ गई है।।[1]

कवि अपने देश रूपी चमन के संरक्षकों का संरक्षण के लिए आवाहन करता है कि इस चमन की बहारों पर पतझड़ की संकट कालीन स्थिति सम्भावित है, उठकर देखो, कि क्या हो रहा है। त्याग, तपस्या एवं सेवा से सज्जित चमन पर तुषारापात होने वाला है। बागवाँ का उत्तरदायित्व है कि वह अपने बाग की सर्व विधि रक्षा करे।

कवि का राष्ट्रभक्ति से आन्दोलित ह्रदय देश की नारियों की चेतना को झकझोरता हुआ कहता है कि तुम अबला ही नहीं किन्तु सबला भी हो। कोमल ही नहीं कठोर भी हो। तुम्हीं दुर्गावती, सती एवं पद्मिनी जैसी महान हो। नूपुरों के स्वर, करधनी अथवा किंकिणी की मधुर झनकार को त्यागकर पायलों की भैरवी गाने का समय आ गया है तथा समय आ गया है कमर की कटारों के दारुण प्रहारों का—

समझते रहे हम तुम्हें कोमलांगी,
तुम्हीं हो कि दुर्गावती तुम बनी थीं।
हवन कुण्ड में प्राण की आहुती से,
सती पद्मिनी सी सती तुम बनी थीं।।

1— पाण्डुलिपि—1. बात आ गई है, छन्द क्र. 4, 5

नये नूपुरों के स्वरों को बदल दो,

सुनादो वही भैरवी पायलों की।

न बातें करो करधनी किंकिणी की,

कमर की कटारों पै बात आ गई है।।[1]

इसी क्रम में कवि कलाकारों में राष्ट्रीय प्रेम भावना का संचार करके उनके बेसुरे तमूरों की भर्त्सना करता है तथा उन्हें देश का राग छेड़ने की प्रेरणा देता है। जब देश का अस्तित्व ही खतरे में है, तब तबला और सारंगी वाद्ययंत्रों से मनोरंजन औचित्यपूर्ण नहीं है। इस समय प्राणों की बाजी लगाकर युद्ध के नगाड़ों का गम्भीर घोष करना कलाकारों का कर्तव्य होना चाहिए। संगीत कला का परित्याग कर युद्ध कला का प्रदर्शन अपेक्षित है–

न जाने कलाकार को क्या हुआ जो,

तमूरा लिये बेसुरा आ रहे हैं।

किसी ने नहीं देश का राग छेड़ा,

सरेआम ही भैरवी गा रहे हैं।।

घुसे आ रहे चोर डाकू घरों में,

मगर यह लगे महिफिलों के जशन में।

करो बन्द तबला, सरंगी, मजीरे,

जुझारू नकारों पै बात आ गई है।।[2]

इस कृति के अंतिम चरण में कवि ने शायरों को उद्‌बोधन देते हुये युगीन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में लेखनी चलाने का आग्रह किया है। समय की पुकार के अनुसार जो वांछित है, वही लिखा जाय। युद्ध की भीषण विभीषिकाओं के भयावने वातावरण में मयकदों, सुराही और जाम तथा मुहब्बत भरे पैगाम लिखना देशहित के प्रतिकूल है। मातृभूमि की रक्षा के

1– पाण्डुलिपि–1. बात आ गई, छन्द क्र. 8, 9

2– उपरिवत्, छन्द क्र. 12, 13

निमित्त सर्वार्पण करके देश के पहरेदारों को प्रेरणात्मक सन्देश देना चाहिए। देश की मर्यादा एवं सम्मानार्थ शायरों की कलम शोले उगलने लगे तथा क्रान्ति का आवाहन करने लगे–

बहुत गीत गाये गये मयकदों के,
सुराही लिखी जाम तुमने लिखे हैं।
लिखा रोज का रूठ जाना किसी का,
मुहब्बत के पैगाम तुमने लिखे हैं।।[1]

संक्षेप में कहा जा सकता है कि कवि ने देशवासियों, कलाकारों, महिलाओं, शायरों तथा संरक्षकों को अपनी कृति के माध्यम से देश के लिये कुछ कर गुजरने का परामर्श दिया है। समय की पुकार के अनुसार युग की परिस्थितियों एवं वातावरण को दृष्टि में रखते हुए कवि ने आह्वान किया है कि यह समय सरेआम भैरवी गाने, मुहब्बत के तराने लिखने तथा नूपुरों की झनकार में तन्मय होने का नहीं है। इस समय देश के लिये मर मिटने का प्रश्न है। अपनी मातृभूमि को विदेशी दरिंदों से सुरक्षित रखने की आवश्यता है। इस रचना में कवि का राष्ट्रप्रेम सर्वोपरि है। देशभक्ति की भावना प्रत्येक छन्द में साकार हो उठी है।

ग– भाषा का स्वरूप

डॉ. आनन्द की भाषा सामान्यतः खड़ी बोली है। भावाभिव्यंजना में सहायक के रूप में उर्दू तथा अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। यत्र–तत्र तत्सम और तद्भव शब्द भी उपलब्ध हैं। 'बात आ गई है' रचना में चीन के प्रति आक्रोश व्यक्त हुआ है इसीलिये भाषा स्वभावतः ओजगुण युक्त हो गई है तथा भाषा प्रवाह में भी तीव्रता समाविष्ट हो गई है।

इस कृति का रचनात्मक विश्लेषण करने पर निम्नवत् शब्दों के प्रयोग उपलब्ध होते हैं।

1– पाण्डुलिपि–1. बात आ गई, छन्द क्र. 14

उर्दू शब्दावली

सफीना, इशारा, आशियाना, निशाना, बागवाँ, खिजां, फिजायें, चमन, जमीं, आसमां, मासूम, तराने, सरेआम, महिफिलों, जशन, मयकदों, जाम, मुहब्बत, पैगाम, वतन, शायरों, कयामत, बुजुर्गों, रूहें, मजारों आदि।

अंग्रेजी शब्द टेंक

तत्सम शब्दावली

अहिंसा, समर, लौह, वर्फ, कोमलांगी, किंकिणी

तद्भव शब्द

आहुती, चन्दा, तमूरा, जुझारू

भाषा की दृष्टि से यह रचना विशेष महत्वपूर्ण नहीं है किन्तु इसकी भाषा भावों को अभिव्यक्त करने में पूर्ण समर्थ है। पाठक अथवा श्रोता के हृदय में रसोद्रेक करने में भी सक्षम है।

घ- राजनीतिक प्रभाव

प्रस्तुत रचना में कवि ने चीनी आक्रमण के राजनीतिक कारणों एवं दुष्परिणामों का आंशिक वर्णन किया है। विश्व राजनीति से प्रभावित चीन गुटबन्दी आन्दोलन में पड़कर भारत पर आक्रमण करता है तथा दोनों देशों के शांति–प्रयासों के अन्तर्गत लिखे संधि–पत्रों को भी ठुकरा देता है। इसके लिये कवि उसे सचेत करता हुआ कहता है–

समझ बूझकर संधि के पत्र लाखों,
लिखे जा चुके हैं फिके जा चुके हैं।
पिता–पुत्र के साथ में बन्धु बान्धव
कुरुक्षेत्र के क्षेत्र में आ चुके हैं।।[1]

तात्पर्य है कि जिस प्रकार महाभारत के युद्ध में कुरुक्षेत्र के मैंदान में निकटतम सम्बंधी कौरव एवं पाण्डव एक दूसरे के सामने युद्ध के

1– पाण्डुलिपि– 1. बात आ गई है, छन्द क्र.2

लिये सन्नद्ध थे, उसी प्रकार पड़ौसी देश चीन आज भारत के साथ की गई संधियों को ठुकराकर युद्ध के लिये तैयार है। कवि अपने देशवासियों को उनके शौर्य एवं गौरव गाथाओं का स्मरण दिलाता हुआ कहता है–

ये माना कि हो शान्ति के देवता तुम,
मगर दानवों पर दयादान कैसा।
उठो शंख फूंको इशारा करो अब,
तुम्हारे इशारों पै बात आ गई है।।[1]

यहाँ कवि ने राजनीति का तथ्यात्मक चित्रण करते हुये कहा है कि शान्ति कर्मियों के लिये दया एक अनुपम गुण है, किन्तु दुराचारियों पर दया करना राजनीतिक दृष्टिकोंण से अवांछित है। डॉ. आनन्द ने अति संक्षेप में राजनीतिक सिद्धान्तों का स्वरूप उदारता के साथ उद्घाटित किया है साथ ही देश के भावी कर्णधारों को शंख फूंककर सामरिक कर्तव्य निर्वाह के प्रति सचेत भी किया है।

3- फौजी गठबंधन

क– विषय वस्तु

डॉ. आनन्द की यह उत्कृष्ट कृति **'फौजी गठबंधन'** पाकिस्तान को सम्बोधित करके उन भयावह परिस्थितियों में लिखी गई, जब भारत के विरोध में अमेरिका और पाकिस्तान के बीच फौजी गठबंधन हुआ था। इस गठबंधन को अनुचित एवं दोनों देशों (भारत और पाकिस्तान) के लिये अहितकर घोषित करते हुए कवि ने कहा है कि जब अमेरिका के जंगी जहाज लाहौर, करांची, दिल्ली और कश्मीर पर मंडरायेंगे, आगरा में ताजमहल के कंगूरे क्षत–विक्षत हो जायेंगे तथा उसमें दफन मुमताजमहल के घूंघट को लूटा जावेगा, तब देश को विषम परिस्थितियों से गुजरना पड़ेगा। अजमेर स्थित ख्वाजा साहब का मज़ार युद्ध की भीषण लपटों में छार–छार होकर हिचकियाँ भरेगा, मुगलकालीन आकर्षक कला कृतियों के

1– पाण्डुलिपि–1. बात आ गई, छन्द क्र. 3

भग्नावशेष रह जायेंगे तथा कुतुबमीनार, जामा मस्जिद के खण्डहर शेष रह जायेंगे, तब देश का नक्शा ही बदल जायेगा।

कवि कहता है कि समझौता कोई बुरा नहीं होता, किन्तु उसमें मानव–मानव का मिलन होने के साथ मानवता का भी मिलन होना चाहिए तथा उसका तौर–तरीका कुछ अलग ही होता है। इस फौजी समझौते की कटु निन्दा करते हुये कहा है कि युद्ध की भीषण विभाषिकाओं के परिणाम स्वरूप जब पृथ्वी पर मानव ही शेष नहीं रहेगा तो गंजशकर स्थित बाबा फरीद की मज़ार पर तथा रुड़की में प्रसिद्ध साविर साहब के कलियर वाले मज़ार पर चिराग कौन जलायेगा। जब समझौता क्रियान्वित होगा और युद्ध की अथाह सरिता उमड़ेगी तो इकबाल, मीर, गालिब तथा अनीस के कलाम कौन सुनेगा।

अनुपम सुन्दरी साम्राज्ञी नूरजहां, जिसके चरणों पर बड़े–बड़े राजमुकुट झुक जाते थे, जिसकी पद–रज को महान सम्राटों के किरीट चूमा करते थे, उसकी कब्र अभी तक गीली है, उसका कफन अभी तक मैला नहीं हुआ और जब युद्ध की तोपें उसका कफन जलाने को गरजेंगीं, तब क्या मौत के लिये जिन्दगी नहीं रोयेगी। जो कब्र उसने जान देकर पाई थी, उसमें भी वह चैन से नहीं सो पायेगी।

जब युद्ध की भयंकरता साकार होगी, तब तरुण विटपों एवं पुष्पित तलाओं का, कमल, कुन्द एवं कचनार के उपवनों का सौन्दर्य नष्ट हो जावेगा। सुनसान अटारी पर पायल की झनकार नहीं सुनाई देगी तथा सावन की रिमझिम में झूलों पर कजरी गीत लुप्त हो जायेंगे। जब मौत की हवा आँधी बनकर चलेगी, तब चमन में बुलबुल का नाम–निशान भी नहीं होगा तथा बगीचे में आम की डाल पर कोयल मीठे बोल भी नहीं बोलेगी। जब फौजी गठबंधन का प्रभाव अपने चरम पर होगा तो चारों ओर पतझड़ ही पतझड़ दिखाई देगा तथा पूनम का चाँद किसी के घर–आँगन में उजाला नहीं कर सकेगा।

अन्त में कवि हिन्दू–मुसलमान अथवा हिन्दुस्तान और पाकिस्तान ऐक्य भावना को उजागर करता हुआ कहता है कि यदि सामरिक दुष्परिणामों का प्रभाव बढ़ता ही गया, तो भगवान शंकर अपना तीसरा प्रलयंकारी नेत्र खोलेंगे और हिमालय की पर्वत श्रृंखलायें अंगार उगलेंगी तथा धरती और आकाश एक साथ कम्पायमान होंगे। अद्यतन इतिहास से यही घोषित है कि जब–जब ऐसे संकट आये हैं, तब–तब भारतीय मानव चेतना अपने पूर्ण वैभव के साथ उभरी है और देश को संकट कालीन स्थिति से छुटकारा मिला है। एटम बम चलाने वाली विदेशी शक्तियाँ सावधान होकर सुनलें कि हम हिन्दुस्तान और पाकिस्तान अथवा हिन्दू और मुसलमान मिलकर फौजी गठबंधन को गहरी कब्र में दफना देंगे तथा मिलकर मरसिया पढ़ेंगे।

ख– ऐतिहासिक सन्दर्भ

डॉ. आनन्द की इस कृति में कथनों की पुष्टि हेतु ऐतिहासिक संदर्भों का सार्थक एवं सटीक चयन किया गया है। भारत के विरूद्ध अमेरिका एवं पाकिस्तान में सैन्य गठबंधन स्वयं एक ऐतिहासिक घटना है जो विश्व के इतिहास में विशिष्ट संदर्भों के अन्तर्गत परिगणिंत है। कवि उस फौजी समझौते को नकारता हुआ कहता है–

ऐसे फौजी गठबंधन कोई लाख करे
पर आयेगा वह एक जमाना आयेगा।
जब दानवता की छाती पर चढ़कर कोई,
मानवता के मासूम तराने गायेगा।।[1]

यहाँ दानवता अर्थात् पाश्चात्य देशों पर भारत की विजय का सुनहरा स्वप्न कवि देखता है और मानवता की विजय कामना के प्रति पूर्ण आशान्वित प्रतीत होता है। अपनी प्रिय मुमताज महल की स्मृति को साकार स्वरूप प्रदान करने एवं उसे चिर स्मरणीय बनाने के उद्देश्य से सम्राट

1– पाण्डुलिपि– 1. फौजी गठबंधन, पृष्ठ 15

शाहजहाँ विश्व प्रसिद्ध मकबरा **'ताजमहल'** का निर्माण कराता है, यह एक भावनात्मक ऐतिहासिक संदर्भ है।

कवि ने समझौते को पाकिस्तान की विकृत मानसिकता का परिणाम बतलाया है क्योंकि अमेरिकी आक्रमणों से मुमताजमहल का जीता जागता प्रतीक **'ताजमहल'** जब ध्वस्त होगा, तब पाकिस्तानियों के दिल पर क्या बीतेगी?—

इस जगह पहुँचकर समझौते का वायुयान,
मुमताज परी के घूँघट को जब लूटेगा।
कोई क्या जाने किस दिल पर क्या गुजरेगी,
जब ताजमहल का एक कंगूरा टूटेगा।।[1]

अजमेर में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की प्रसिद्ध दरगाह, दिल्ली में जामा मस्जिद एवं कुतुब मीनार, गंजशकर में बाबा फरीद की दरगाह तथा रुड़की में साविर साहब का कलियर वाला प्रसिद्ध मजार है, जहाँ पर महान पीर और पैगम्बर दफनाये गये हैं, जहाँ पर हजारों मुसलमान प्रतिवर्ष माथा टेककर मुराद माँगने जाते हैं, अमेरिकी आक्रमणों से ये इतिहास प्रसिद्ध पवित्र स्थान ध्वस्त हो जायेंगे—

है जहाँ पीर पैगम्बर अपने दफन आज,
इस जगह कि जब इन्सान नहीं रह जायेगा।
मैं पूछ रहा हूँ आप सोचकर दें जबाब,
इनके मजार पर कौन चिराग जलायेगा।।[2]

उक्त पंक्तियों में कवि श्रद्धा समन्वित सहानुभूति अभिव्यक्त करता है। जब युद्ध की भीषण लपटों से इन पवित्र स्थानों को क्षत—विक्षत कर दिया जावेगा, प्रमुख स्थल वे—चिराग होकर वीरान हो जायेंगे, फिर इन मजारों पर कौन दीपक जलायेगा? जब इन्सान ही नहीं होंगे तो इकबाल, मीर, गालिब औ अनीस के कलाम कौन सुनेगा?—

1— पाण्डुलिपि— 1. फौजी गठबंधन, पृष्ठ 15

2— उपरिवत्, पृष्ठ 16

फिर यह भी सोचा होगा तुमने किसी रोज,

जब समझौते की सरिता उमड़ेगी अथाह।

यकबाल, मीर, गालिब, अनीस के यह कलाम,

क्या अटलांटिक सागर में पायेंगे पनाह।।[1]

विश्व के इतिहास में साम्राज्ञी नूरजहाँ का अनुपम सौन्दर्य एवं उसका शासन काल प्रसिद्ध है। नूरजहाँ के कदमों में बड़े—बड़े नबाब सिर झुकाते थे, राजाओं के राजमुकुट झुक जाते थे। कवि युद्ध के परिणामों की कल्पना करता है कि विश्व—सुन्दरी नूरजहाँ कब्र में चैन से नहीं सो पायेगी। उसका कफ़न युद्ध की लपटों से जब जलेगा, तब कैसी विषम स्थिति होगी? अपनी रचना में इस विशिष्ट ऐतिहासिक सन्दर्भ को रेखांकित कर डॉ. आनन्द ने अमेरिका और पाकिस्तान के फौजी गठबंधन का वैचारिक प्रतिरोध किया है—

वह नूरजहाँ की कब्र अभी तक गीली है,

है इस दुनियां का नूर कि जिसमें हुआ दफन।

मिट्टी में सोते—सोते सदियाँ बीत गईं,

पर अब तक जिसका नैक न मैला हुआ कफन।।[2]

नूरजहाँ की बात कहकर कवि भावुक हो जाता है। भावुकता से प्रेरित एवं उद्भूत विचारों को कवि ने इस तरह लिपिबद्ध किया है—

वह कफ़न जलाने को जब तोपें गरजेंगीं,

तब क्या न मौत के लिये जिन्दगी रोयेगी।

जो कब्र जान देकर के पाई थी उसने,

फिर उसमें भी वह नहीं चैन से सोयेगी।।[3]

1— पाण्डुलिपि— 1. फौजी गठबंधन, पृष्ठ 16

2— उपरिवत्, पृष्ठ 16

3— उपरिवत्, पृष्ठ 16

ग- राष्ट्र-प्रेम

डॉ. आनन्द का सम्पूर्ण रचना संसार राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत है। उनके भावों एवं विचारों में राष्ट्रप्रेम कूट–कूटकर भरा है। **'झाँसी की रानी'** महाकाव्य हो, चाहे **'एम.एल.ए.राज'** तथा **'सन् अड़तालीस'** जैसे लघुकाव्य हों, सभी का केन्द्रीय भाव राष्ट्रप्रेम से सम्बद्ध है। अमेरिका और पाकिस्तान के सैन्य गठबंधन को आधार मानकर लिखी गई 'फौजी गठबंधन' रचना कवि के राष्ट्रप्रेम का प्रत्यक्ष उदाहरण है। यदि अमेरिका पाकिस्तान के समर्थन में भारत पर आक्रमण करता है तो यह निश्चित है कि हमारे देश का अद्भुत प्राकृतिक सौन्दर्य विनष्ट हो जायेगा। यहाँ प्रकृति प्रेम कवि के अन्तर्मन मेंएक कचोट उत्पन्न करता है। राष्ट्र के अनुपम सौन्दर्य के नष्ट होने की कल्पना मात्र से व्यथित होकर कवि कहता है–

यह तरुण विटप यह फूली–फूली लतिकायें,
यह कमल, कुन्द, कचनार काली के वन उपवन।
यह पायल की रुनझुन सुनसान अटारी पर,
यह सघन कुन्तलों वाले काले सावन घन।।[1]

उक्त कथन में कवि की यह अन्तर्वेदना अभिव्यक्त है कि यदि भारत युद्ध क्षेत्र बन गया तो यह विलक्षण प्राकृतिक आकर्षण विलुप्त हो जायगा। राष्ट्र सुषमा विहीन हो जायगा। काले–काले सावन–घन शोभाहीन हो जायेंगे तथा पुष्पित पल्लवित लतिकायें उदास और बेचैन हो जायेंगी। कवि रसीली रिमझिम तथा सुरीले कजरी गीतों की स्मृति में खिन्न प्रतीत होता है–

यद्यपि जुगनू बन चमक उठेगी चिनगारी
माना कि धुयें बम के बादल बन जायेंगे।
पर हरे–भरे संगीत सुरीली रिमझिम के,
झूले पर कजरी गीत न गाये जायेंगे।।[2]

2– उपरिवत्, पृष्ठ 17

3– उपरिवत्,

इसके अतिरिक्त कवि कल्पना करता है कि युद्ध की भयंकरता सर्वनाश भी कर सकती है। जब हवा मौत की आँधी बनकर चलेगी, तब कहाँ चमन होंगे और कहाँ बुलबुल तथा कोयल के मीठे रसयुक्त स्वर–

बुलबुल का होगा नाम चमन में कहीं नहीं,
जब हवा मौत की आँधी बनकर डोलेगी।
बगिया के कोने में अमुआ की डाली पर,
फिर कभी न मीठे बोल कोयलिया बोलेगी।।[1]

इन पंक्तियों में कवि के मन का अगाध राष्ट्रप्रेम अभिव्यंजित है। कवि पाकिस्तान को परामर्श दे रहा है कि उस विप्लव का, उस नर–संहार का तथा उस वैभव–विनाश का कोई खेल न खेला जाय तथा अपने देश को भयावह संकट कालीन परिस्थितियों से किसी तरह भी बचा लिया जाय। इस रचना में कवि ने देश प्रेम से प्रभावित होकर अपने भावुक संकल्पों को मूर्तस्वरूप प्रदान किया है।

घ– भाषा का स्वरूप

भाषा भावाभिव्यक्ति का प्रमुख साधन है। डॉ.आनन्द ने इस दृष्टि से अपनी रचना में भावानुकूल भाषा का प्रयोग कियाहै। यह रचना भाषायी दृष्टि से पुष्ट एवं सार्थक है। रचना में बिम्ब–विधान, प्रतीक विधान तथा अलंकारों के सफल प्रयोग उपलब्ध होते हैं। उसमें सहज प्रवाह है तथा रचना में कहीं भी बनावटीपन तथा दिखावा नहीं है।

शब्द विधान की दृष्टि से कृति की भाषा को निम्न रूपों में विभाजित किया जा सकता है–

तत्सम शब्दावली :– भ्रू–इंगित, किरीट, तरुण, विटप, कुन्तल, प्रलयंकर, अम्बर आदि।

तद्भव शब्द :– नद्दी, अड्डों, बगिया, अमुआ, कुइलिया, नैक।

उर्दू शब्दावली :– मासूम, तराने, तर्ज, तरीका, तौर, निगाहें, फ़कीर, दुनियां,

---

1– पाण्डुलिपि– 1. फौजी गठबंधन, पृष्ठ 17

कयामत, ख्वाजा, मज़ार, दरगाह, पीर, पाक, नापाक, पैगम्बर, दफ़न, इन्सान, जवाब, चिराग, कलाम, पनाह, नूरजहाँ।

अंग्रेजी शब्द :– बम, एटम, अटलांटिक।

शब्द युग्म :– नष्ट–भ्रष्ट, रंग–ढंग, मानव–मानव, उड़–उड़, दो–दो, गीली–गीली, छार–छार, सोते–सोते, फूली–फूली, रुन–झुन, हरे–भरे, साथ–साथ।

अलंकारिक प्रयोग

–यद्यपि जुगनू बन चमक उठेगी चिनगारी।[1]

–माना कि धुंये बम के बादल बन जायेंगे।[2]

–जब हवा मौत की आँधी बनकर डोलेगी।[3]

–एटम बम वाले दानव सुनलें खोल कान।[4]

–हम फौजी गठबंधन की गहरी कब्र खोद।[5]

–यह कमल कुन्द कचनार कली के वन उपवन।[6]

–तब क्या न मौत के लिये जिन्दगी रोयेगी।[7]

शैली की दृष्टि से **'फौजी गठबंधन'** रचना सहज सम्प्रेषणीय है। इनका शब्द चयन अनूठा एवं स्पृहणीय है। भाषिक संरचना की दृष्टि से इस रचना को उत्कृष्ट कहा जा सकता है। शब्दयुग्मों तथा पुनरुक्त शब्दों के प्रयोग डॉ. आनन्द के काव्यार्थ को संप्रेषित करने में सक्षम हैं।

1– पाण्डुलिपि– 1, फौजी गठबंधन, पृष्ठ 17

2– उपरिवत्, पृष्ठ 17

3– उपरिवत्, पृष्ठ 17

4– उपरिवत्, पृष्ठ 17

5– उपरिवत्, पृष्ठ 17

6– उपरिवत्, पृष्ठ 17

7– उपरिवत्, पृष्ठ 16

ड.– राजनीतिक प्रभाव

यह रचना भारत के विरुद्ध अमेरिका तथा पाकिस्तान के मध्य हुये फौजी गठबंधन का परिणाम है। यह समझौता विश्व राजनीति से प्रेरित था, जिससे भारत के विकास को अवरुद्ध कर विकसित राष्ट्र बनने से रोका जा सके। अमेरिका इस पक्ष में था कि भारत और पाकिस्तान के आन्तरिक संघर्ष निर्मूल न हों तथा भारत की तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रगति बाधित हो। पाकिस्तान से सैन्य समझौता करने में अमेरिका के राजनीतिक दाँव को चुनौती देता हुआ कवि कहता है– **'ऐसे फौजी गठबंधन कोई लाख करे, पर आयेगा वह एक जमाना आयेगा'** जब अन्याय पर न्याय की विजय होगी तथा दानवता पर मानवता का वर्चस्व स्थापित हो जायगा। कवि फौजी गठबंधन की भर्त्सना करता हुआ कहता है–

मानव मानव का मिलना है कुछ बुरा नहीं,
पर मानवता का मिलन और ही होता है।
मानवता के मिलने का तो वह रंग–ढंग,
वह तर्ज, तरीका, तौर और ही होता है।।[1]

यहाँ कवि सामान्य सद्व्यवहार एवं कूटनीतिक षडयंत्रों में सूक्ष्म अन्तर बतलाकर फौजी गठबंधन को अमेरिका की राजनीतिक चाल घोषित करता है। राजनीति कूटनीति का संस्पर्श पाकर मानवता का तथा मानवीय सद्धर्म का उन्मूलन कर देती है। राजनीतिक प्रभाव कवि कर्म को लेखन के लिए उकसाता है तथा कूटनीतिक समझौतों के दुष्परिणामों को उजागर करता है–

इस समझौते में समझौते के अड्डों पर,
जंगी जहाज उड़–उड़कर जिस दिन आयेंगे।
लाहौर, करांची क्या दिल्ली क्या काशमीर,
हर ओर गगन में समझौते मँडरायेंगे।।[2]

1– पाण्डुलिपि– 1, फौजी गठबंधन, पृष्ठ 15

2– उपरिवत्,

पाकिस्तान तथा अमेरिका के मध्य हुई दुरभि संधि का राजनीतिक प्रभाव निम्न पंक्तियों में दृष्टव्य है–

इस समझौते के लिये आगरा दूर नहीं,

दो–दो दिल की जिस जगह कि आहें सोती हैं।

चिर निद्रा लेने को प्रशान्ति की गोदी में,

गीली–गीली मासूम निगाहें सोती हैं।।[1]

उक्त पंक्तियों में जिन राजनीतिक संदर्भों को रूपायित किया गया है, उनमें कवि के हृदय पर पड़े राजनीतिक प्रभावों का प्रतिबिम्ब झलकता है। कवि का मन्तव्य है कि अमेरिका और पाकिस्तान का सैन्य गठबंधन एक प्रकार का राजनीतिक प्रदूषण है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि डॉ. आनन्द की यह रचना अपनी क्रोड़ में विविध राजनीतिक संदर्भों को समाहित किय है।

4– पब्लिक इन्टरेस्ट

स्वातंत्र्योपरान्त भारतीय जनता की आशायें निराशाओं में परिवर्तित हो गईं, क्योंकि आर्थिक और सामाजिक स्तर पर जो कल्पनायें की गईं थीं, वे शासन के प्रतिनिधियों की अक्षमता के कारण पूरी न हो सकीं। परिणामतः सामान्य जनता में आक्रोश की भावना व्यंजित हो उठी। काँग्रेस शासन की अनियमितताओं और शोषण की राजनीति से व्यग्र सामान्य जन–मानस त्राहि–त्राहि कर उठा। सामाजिक प्राणी होने के नाते तत्कालीन साहित्यकारों ने इस विषय को गम्भीरता पूर्वक ग्रहण किया और उनके दिल तथा दिमाग में शासन विरोधी स्वर गूँज उठे। शासन के प्रति लोगों के हृदयों में अनेक प्रश्न उठने लगे। सत्ताधीशों को अविश्वास तथा हीन–भावना से देखा जाने लगा।

क्रमशः स्वतंत्र भारत के नैतिक मूल्यों में गिरावट आई तथा देश की ह्रासोन्मुखी स्थिति ने तत्कालीन कवियों को प्रेरित कर भावाभिव्यंजना

1– पाण्डुलिपि– 1, फौजी गठबंधन, पृष्ठ 15

के लिये विवश कर दिया। कवियों के ह्रदय उद्वेलित हो उठे। परिणाम स्वरूप विविध ओजस्वी साहित्यिक कृतियाँ हिन्दी साहित्य जगत में अवतरित हुईं। जनपद जालौन के अखिल भारतीय कवि डॉ. आनन्द की **'पब्लिक इन्टरेस्ट'** ऐसी ही रचना है जो शासन की अनैतिक धारणाओं एवं मदान्ध स्वार्थपरता को चाक्षुष कराती है। इस लघु कृति का साहित्यिक मूल्यांकन निम्नानुसार प्रस्तुत है :–

क– विषय वस्तु

डॉ. आनन्द की **'पब्लिक इन्टरेस्ट'** तत्कालीन भारतीय शासन पर एक हास्य मिश्रित प्रखर व्यंग्य है। सन् 1962 के आम चुनाव में काँग्रेस दल बहुमत से विजयी हुआ। देश पर एक छत्र शासन स्थापित होने के पश्चात् शासन के भ्रष्ट प्रतिनिधियों ने भारतीय जनता की समस्त आशाओं एवं अभिलाषाओं पर बज्रापात कर दिया। सन् 1965 में काँग्रेस सरकार ने भारतीय रेल्वे के तृतीय श्रेणी का किराया आकस्मिक रूप से बढ़ाया तथा इस अनायास किराया वृद्धि को **'पब्लिक इन्टरेस्ट'** में बढ़ाने का प्रचार करके सामान्य जनता को इस तरह दिग्भ्रमित किया कि इससे रेलगाड़ियों में पंखे लगाये जायेंगे और नई बोगियाँ (डिब्बे) प्रचलन में आयेंगीं।

डॉ. आनन्द ने शासन की इस दुर्नीति का खण्डन करते हुये कृति के प्रारम्भ में कहा है कि अभी चुनावी वायदे भी पूरे नहीं हुये। विशाल भवनों पर चुनावी प्रचार के झंडे अभी लगे हुये हैं। काँग्रेस के चुनाव चिन्ह 'बैलों की जोड़ी' के चिह्न अभी दीवालों पर मिटे नहीं हैं और अभी से शासन ने करों की वृद्धि करके भ्रष्टाचार का उत्कृष्ट नमूना प्रस्तुत किया है, वह भी जनहित के नाम पर।

कवि ने हास्य युक्त, तीखा एवं सरस व्यंग्य प्रस्तुत करते हुये कहा है कि यदि प्रत्येक स्टेशन पर यात्रियों के पाँच–पाँच जूते भी जनहित में लगाने की व्यवस्था शासन करे, तो इसके अनगिनत लाभ हैं। कवि कहता है कि प्रत्येक स्टेशन पर बारह–बारह व्यक्तियों को नियुक्त किया

जाय जूता प्रहार के लिये, तो सर्वप्रथम तो देश की बेकारी समस्या कम होगी। तड़ातड़ की आवाज से लोगों के कान खुल जायेंगे, गर्दनें मुड़ जायेंगी, धूल झड़ जायगी और टोपियाँ उड़ जायेंगी। 'पब्लिक इन्टरेस्ट' में क्या–क्या नहीं हो सकता है।

अनवरत उपयोग से जूते अधिक टूटेंगे तो चमड़ा उद्योग पनपेगा। चर्मकारों की प्रगति होगी। चमड़े की बड़ी–बड़ी कम्पनियाँ खुलेंगीं। देश की आय बढ़ेगी तथा नेताओं को विभिन्न कम्पनियों एवं संस्थानों का उद्घाटन करने का अवसर प्राप्त होगा। यात्रा करते लोग सो नहीं पायेंगे तो गन्तव्य तक पहुंचने में कोई भूल नहीं होगी। जूता प्रहार से बाल झड़ जायेंगे, तो केश–कर्तन के व्यय की बचत होगी। बालों में कभी– कभी जूं आदि कीड़े पनप जाते हैं, वे स्वाभाविक रूप से नष्ट हो जायेंगे। जब बाल ही नहीं रहेंगे तो साबुन तथा तेल का व्यय भी नहीं होगा।

रेल यात्रा में रात्रि में अधिकतर लोग सो जाते हैं, उनका सामान चोरी चला जाता है। शासन के इस कृत्य से लोग निरालस्य होकर सचेत रहेंगे तो सुरक्षा बनी रहेगी। यात्री मन्दगामी रेलों में न बैठकर तीव्रगति वाली रेलों में ही बैठेंगे, क्योंकि उनके अवरुद्ध स्थल कम होने के कारण यात्री **'पब्लिक इन्टरेस्ट'** के इस कृत्य से बच सकेंगे।

कवि अन्त में अपना सुझाव प्रस्तुत करते हुये कहता है कि जूते की बात का कोई बुरा नहीं मानेगा। न कहीं थाना होगा, न कोई रिपोर्ट होगी और न जूता प्रहार सम्बंधी कोई न्यायालय होगा। महात्मा गाँधी की तरह लोगों में सहन शक्ति आ जायेगी। कवि का यह सुझाव केवल तृतीय श्रेणी यात्रियों के लिये है। प्रथम तथा द्वितीय श्रेणी के डिब्बे तो गद्दों से सजे होंगे तथा उनका किराया भी नहीं बढ़ाया गया है। यदि संयोगवश कोई नेता तृतीय श्रेणी में किसी दिन आ गया, तो शासन उस दिन का **'पब्लिक इन्टरेस्ट'** का कानून भी बदल सकता है। वह तो सर्वोच्च शक्ति है, जो चाहे करे।

उपर्युक्त मन्तव्य कवि ने हास्य–व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इस लघु कृति में शासन की शोषण एवं दमन की प्रवृत्ति को अनावृत किया गया है। कवि ने अपनी साहित्यिक जिम्मेदारी का सफल निर्वाह किया है। कटु एवं तीखी बात को सरल, सरस एवं प्रभावशाली ढँग से प्रस्तुत किया है।

ख– हास्य एवं व्यंग्य

डॉ. आनन्द मूलतः वीर रस के कवि थे, किन्तु वे जब सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में व्याप्त अन्याय एवं अनुचित संदर्भों पर दृष्टिपात करते थे तो उनकी रचना में हास्य एवं व्यंग्य साकार हो उठता था। इस लघु कृति में देश की राजनीतिक बिडम्बनाओं तथा काँग्रेस शासन की दलगत स्वार्थी प्रवृत्तियों का हास्य–व्यंग्य के माध्यम से उभारने का प्रयास किया गया है। कवि का व्यंग्य श्रोता या पाठक के मानस पर अपना गहरा प्रभाव डालने में पूर्ण सक्षम है तथा हास्य किसी गम्भीर प्रकरण को श्रोता के अन्तर्मन पर सरलता से अमिट छाप छोड़ने में सफल है।

डॉ. आनन्द का जीवनानुभव विशाल था। वे अनुभव सम्पदा के धनी थे। अपने लेखन में उन्होंने इस सम्पदा को जी भर लुटाया। समकालीन जीवन से रचनाकार की सम्पृक्ति स्वाभाविक होती है। काँग्रेस शासन ने रेल के तृतीय श्रेणी का किराया सामान्य वर्ग की आर्थिक व्यवस्था को अनदेखा करते हुये अचानक बढ़ा दिया। इस प्रकरण पर कवि अपनी तीखी प्रतिक्रिया व्यंग्य के माध्यम से व्यक्त करता है–

आपके लिक्खे हुये तार अभी रक्खे हैं,
और फोटो छपे अखवार अभी रक्खे हैं।
झंडिया भी तो चढ़ी हैं अभी मीनारों पर,
आज भी बैल बने हैं कई दीवारों पर।।[1]

देश का दर्द मिटाने लगे क्या कहना है।
टेक्स पर टेक्स बढ़ाने लगे क्या कहना है।।

1– पाण्डुलिपि :1. पब्लिक इन्टरेस्ट, छन्द क्र. 2

यहाँ कवि ने तत्कालीन काँग्रेस प्रशासन के भ्रष्ट कारनामों को रेखांकित करते हुये अपना विरोध दर्शाया है। 'पब्लिक इन्टरेस्ट' में कवि ने प्रत्येक रेल्वे स्टेशन पर तृतीय श्रेणी यात्रियों के पाँच–पाँच जूते लगाने का सुझाव देकर उसके लाभों को हास्य के माध्यम से स्पष्ट किया है। जहाँ व्यंग्य की पैनी धार श्रोता के अन्तर को विदीर्ण कर देती है, वहीं हास्य उस पर मृदुल आलेपन का काम करता है–

गाड़ी आई जहाँ फौरन ये वहाँ डिब्बों में,
ये न देखेंगे कि है कौन कहाँ डिब्बों में।
गो मुसाफिर तो इन्हें टालने लग जायेंगे,
पर ये वह हों कि वहीं घालने लग जायेंगे।।[1]

इस कृत्य का परिणाम कवि की दृष्टि में कितना प्रभावी होगा, देखिये–

रोने चिल्लाने की हर ओर गराजें होंगीं,
साथ हीं साथ तड़ातड़ की अबाजें होंगीं।
कान खुल जायेंगे कुछ गरदने मुड़ जायेंगीं,
धूल झर जायगी कुछ टोपियाँ उड़ जायेंगीं।।
कौन कहता है कि ऐसा कहीं हो सकता है,
पब्लिक इन्टरेस्ट में क्या–क्या नहीं हो सकता है।।[2]

डॉ. आनन्द जन तांत्रिक सरकार पर आक्षेप लगाकर अपना मन्तव्य घोषित करते हैं कि इस जनतंत्र में सरकारी तंत्र जन पर हावी रहता है। सरकार भले ही जनता के द्वारा, जनता के हित के लिए बनाई गई है किन्तु प्रशासन की मनमानी के कारण जनहित को अपेक्षित महत्व नहीं मिल पाता है। इस बात को कवि ने व्यंग्य और हास्य के समवेत स्वर में इस प्रकार अभिव्यक्त किया है–

1– पाण्डुलिपि :1. पब्लिक इन्टरेस्ट, छन्द क्र. 9

2– उपरिवत्, छन्द क्र. 16

लोग कहते हैं कि सरकार तो जनता की है।
नेता बैठेंगे मगर कार तो जनता की है।।
किराया रेल का जनहित में बढ़ाया होगा।
और जनता की समझ में नहीं आया होगा।।
यहाँ तो देश के हित में सभी कुछ होता है।
रेल में कौन है ऐसा जो नहीं सोता है।।[1]

रेल यात्रा में यात्रियों द्वारा असावधानियों के कारण घटित परिणामों को उजागर करते हुये कवि ने कहा है कि–

सोने वालों की अटैची भी चली जाती है।
पास में एक भी कौड़ी नहीं रह जाती है।।
पाँच घल जायँ तो आलस नहीं आ सकता है।
कोई सामान भी चोरी नहीं जा सकता है।।[2]

उक्त कथन में कवि ने कटु एवं तीखी भाव–व्यंजना को सरस ढँग से प्रस्तुत किया है। वस्तुतः कवि का उद्देश्य सरकार की तानाशाही का उद्घाटन करना है। वह इसके लिये कहीं व्यंग्य का आश्रय लेता है, तो कहीं हास्य का। कवि इन दोनों माध्यमों से अपने मन्तव्य की पुष्टि करता है। जब 'पब्लिक इन्टरेस्ट' में प्रत्येक अवरुद्ध स्थल पर पाँच–पाँच जूतों का प्रहार होगा तो तृतीय श्रेणी–यात्री तीव्रगामी गाड़ियों पर ही यात्रा करेंगे, जो कम स्थानों पर रुकती हैं–

लोग फिर मेल में तूफान में भर जायेंगे।
फिर कभी कोई पसींजर से नहीं आयेंगे।।
क्योंकि हर ठौर पंसीजर को ठहरना होगा।
पब्लिक इन्ट्रेस्ट भी सरकार को करना होगा।।
इसलिये मेल टिकिट लेके निकल जायेंगे।
चार छै ठौर पै दस बीस ही घल पायेंगे।।[3]

1– पाण्डुलिपि :1. पब्लिक इन्टरेस्ट, छन्द क्र. 13

2– उपरिवत्, छन्द क्र. 14

3– उपरिवत्, छन्द क्र. 17

यहाँ कवि ने हास्य के माध्यम से यात्रियों की स्वाभाविक मनोवृत्ति को स्पष्ट किया है। डॉ. आनन्द स्वच्छन्द विचारों के कवि थे। शासन विरोधी मानसिकता के कारण आपने जेल यात्रायें कीं तथा अज्ञातवास भी किया। आप स्वतंत्रता सेनानी भी रहे। अपनी विचारधारा को सशक्त ढंग से प्रस्तुत करने में आपको महारत हासिल था। शासन विरोधी कवितायें पढ़कर मंचों पर धूम मचाने वाले अखिल भारतीय जनप्रिय कवि डॉ. आनन्द अपने युग के विलक्षण कवि थे। इस लघुकृति में कवि ने शासन के प्रतिनिधियों की खुलकर भर्त्सना की है। रेल के तृतीय श्रेणी यात्रियों का किराया बढ़ने पर कवि ने अपना सुझाव दिया है। प्रथम तथा द्वितीय श्रेणी के यात्रियों को तो पूर्व से ही समस्त सुविधायें प्राप्त रहती थीं। कानून शासन के हाथ में था– जब चाहे परिवर्तन किया जा सकता था। इस प्रकरण को कवि ने इस तरह वर्णित किया है–

फस्ट सैकेण्ड तो गद्दों से सजाया तुमने।
थर्ड में ही तो बढ़ाया है किराया तुमने।।
फस्ट सैकेण्ड का मैं नाम कहाँ लेता हूँ।
थर्ड के ही लिये अपना सुझाव देता हूँ।।
थर्ड में भी कभी नेता जो अगर आयेगा।
क्या है उस रोज का कानून बदल जायेगा।।[1]

उक्त उदाहरण की अंतिम पंक्तियों में कवि ने शासन की उद्दण्ड नीतियों का खुलासा किया है। शासन मनमाने ढंग से जब चाहे कानून में फेरबदल कर सकता है, नवीन नीतियाँ निर्धारित कर सकता है तथा अनावश्यक करारोपण भी कर सकता है। इस रचना का मूल उद्देश्य शासन की स्वेच्छा–चारिता का नग्न प्रदर्शन मात्र है। शासन की स्वार्थ–नीतियों को उजागर करना भी कवि का अभीष्ट रहा है।

1– पाण्डुलिपि :1. पब्लिक इन्टरेस्ट, छन्द क्र. 20

ग– राष्ट्रप्रेम

डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त के अनुसार– **'विगत इतिहास से सिद्ध है कि राष्ट्रीयता भी एक प्रबल भाव है। अपने ही देश में हमने अनेक युवकों एवं महापुरुषों को राष्ट्रीयता की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व समर्पित करते देखा है। इसकी प्रबलता तो इसी से सिद्ध है कि कई बार राष्ट्रीयता की प्रेरणा के सम्मुख अन्य स्थाई भाव–वात्सल्य, रति, शोक आदि फीके पड़ गये हैं।'**[1] डॉ. आनन्द ने राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित होकर झाँसी की रानी, एम.एल.ए.राज., तथा सन् अड़तालीस जैसी रचनाओं का सृजन किया। आपकी अधिकांश रचनाओं में राष्ट्रप्रेम की मूल भावना स्पष्ट दृष्टि गोचर होती है। **'पब्लिक इन्टरेस्ट'** लघु कृति में शासन के भ्रष्ट आदेशों का प्रबल विरोध तथा हास्य–व्यंग्य के माध्यम से दिये गये सुझावों के मूल में राष्ट्र प्रेम की भावना ही है।

किसी राष्ट्र के लोग जब सुखी एवं सम्पन्न होते हैं, तभी वह राष्ट्र प्रगतिशील माना जाता है। काँग्रेस शासन के अनावश्यक करारोपण से देश की सामान्य जनता को विपदग्रस्त देखकर कवि ने शासन की अवमानना करते हुये कहा है–

बाढ़ सी आ रही इस देश में बेकारों की।
नौकरी रोजी न लगती कहीं बेचारों की।।
जो हैं बेकार उन्हें नौकरी मिल जायेगी।
भीड़की भीड़ इसी पोल में पिल जायेगी।।[2]

इन पंक्तियों में अप्रत्यक्ष राष्ट्रप्रेम की भावना मौजूद है। कवि को देश में व्याप्त बेकारी की समस्या का पूरा–पूरा ध्यान है। इसी तरह देश की औद्योगिक व्यवस्था पर कवि का सुझाव है–

1– साहित्यिक निबंध– डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त, पृष्ठ 585

2– पाण्डुलिपि :1. पब्लिक इन्टरेस्ट, छन्द क्र. 7

मारकिट में कभी जूता न कहीं कम होगा।
रोज टूटेंगे बनेंगे यहीं आलम होगा।।
माना हमने कि जियादा न चलेंगे जूते।
क्योंकि रेलों में दिनोंरात चलेंगे जूते।।
चमड़ा उद्योग का पूरा हिसाब इसमें है।
चर्मकारी की तरक्की जनाब इसमें है।।
बात जूते की जो व्यापार में घुल जायेगी।
हर जगह एक बड़ी कम्पनी खुल जायेगी।।[1]

भाव स्पष्ट है कि 'पब्लिक इन्टरेस्ट' की प्रतिक्रिया स्वरूप यदि कवि का सुझाव शासन को मान्य हो तो चमड़ा उद्योग एवं चर्मकारों की प्रगति की सम्भावनायें बढ़ सकती हैं। भले ही कवि का व्यंग्य रेल के किराया वृद्धि को लेकर है किन्तु यह सुनिश्चित है कि कवि को देश की औद्योगिक व्यवस्था के प्रति चिन्ता है। कवि ऐन–केन–प्रकारेण देश की औद्योगिक प्रगति के प्रति सचेष्ट एवं सावधान सा लगता है। राष्ट्र की प्रगति के प्रति कवि की मानसिकता उपर्युक्त उद्धरण से स्पष्ट हो रही है।

घ– भाषा का स्वरूप

'भाषा' साहित्य में भावाभिव्यक्ति का एकमात्र माध्यम है। यदि यह माध्यम रूपी शरीर कुरूप, अशक्त और बेढंगा होगा तो उसमें निवास करने वाली भाव रूपी आत्मा का प्रकाशन कभी उचित ढंग से नहीं हो सकेगा।'[2] डॉ. आनन्द की लघु कृति **'पब्लिक इन्टरेस्ट'** की भाषा भावानुगामिनी है। कवि की जिन रचनाओं में राजनीतिक संस्पर्श अभिव्यक्त हुये हैं, उनकी भाषा में ओज एवं प्रखरता का समावेश है। इस रचना में हास्य एवं व्यंग्य का आधार लेकर शासन की भ्रष्टताओं का पर्दाफाश करके चेतावनी देने का संकल्प मुखरित हुआ है। अतः इसकी भाषा सरल एवं प्रसादगुण युक्त है।

1– पाण्डुलिपि :1. पब्लिक इन्टरेस्ट, छन्द क्र. 12

2– साहित्यिक निबंध, डॉ. विजयपालसिंह, पृष्ठ 35

डॉ. आनन्द का काव्य हृदय से उद्भूत भावनाओं की सजीव अभिव्यक्ति है। अनुभूतियों का विलक्षण सामंजस्य इनकी कविता में दृष्टिगोचर होता है। आपकी अनुभूतियाँ चिन्तन परक होते हुये राष्ट्रीय जन–जागरण की प्रेरणा से युक्त हैं। जागरण का तीव्र स्वर इनकी रचनाओं में परिव्याप्त होकर राष्ट्रीय चिंतन का स्वरूप ग्रहण कर लेता है। आपके काव्य का अनुभूति पक्ष जितना सबल एवं पुष्ट है, अभिव्यक्ति पक्ष भी उतना ही अद्वितीय एवं प्रभावपूर्ण है।

आपके काव्य के अभिव्यक्ति पक्ष पर विचार करने पर सर्व प्रथम आपकी भाषा का स्वरूप, भाषा को उचित ढंग से भावानुसार संगठित करना, अलंकारों से सजाना, गुण युक्त बनाना आदि पहलुओं पर बिचार करना अपेक्षित है।

आपकी इस कृति की भाषा खड़ी बोली है, किन्तु इसमें बुन्देली के शब्दों का प्रसंगानुसार मिश्रण भावाभिव्यक्ति को सफल एवं मार्मिक बनाता है। बुन्देली का प्रयोग कवि की व्यक्तिगत स्थानीय विशेषता के कारण प्रतीत होता है। **ठौर, घलबौ, कढ़बौ, बढ़बौ, पिलबौ, पन्हा (जूता) तथा पोल** जैसे स्थानीय शब्द स्वाभाविक रूप से आकर कविता में सरसता उत्पन्न करते हैं। रचना में अन्य भाषाओं के शब्दों के प्रयोग कवि के विविध भाषायी ज्ञान को द्योतित करता है।

डॉ. आनन्द को उर्दू का पर्याप्त ज्ञान था। इनके समय में उर्दू शिक्षा अनिवार्य थी। आप प्रारम्भ में उर्दू में ही लिखा करते थे। इस रचना में आपने उर्दू शब्दावली का साधिकार प्रयोग किया है। **महसूल, मुसाफिर, ज़रूरी, फर्ज़, क़ायदे, बे–रोजी, रुजुक, दर्द, पोशाक, फ़कत, गो, आलम, जियादा, तरक्की, ज़नाब, शरारत, कयामत, सिलसिला तथा फौरन आदि** उर्दू शब्द इस कृति में आकर घुलमिल गये हैं और भावाभिव्यंजना में सहायक सिद्ध हुये हैं।

प्रस्तुत कृति का अंग्रेजी नाम **'पब्लिक इन्टरेस्ट'** तत्कालीन शासन पर किया हुआ प्रखर व्यंग्य है। इसमें अंग्रेजी भाषा के उन प्रचलित शब्दों का भरपूर प्रयोग किया गया है, जो सामान्य बोलचाल में स्वाभाविक

रूप से घुल मिल गये थे। **पिटीशन, फोटू, टेक्स, रेल, सजेशन, टेशन, फेशन, मारकिट, कम्पनी, ओपनिंग सेरीमनी, चार्ज, डबल, कटिंग, रेट, मेल, पसींजर, टिकट, फस्ट, सैकेण्ड, थर्ड तथा कार** जैसे अंग्रेजी शब्द अर्थ—द्योतन में कहीं भी व्याघात उपस्थित नहीं करते हैं वरन् अर्थ क्षमता में अभिवृद्धि ही करते हैं।

इस कृति में कवि की भाषाशैली मार्मिक तथा चमत्कार पूर्ण है। कवि के गम्भीर अनुभवों के कारण इनकी भाषा में व्यवस्था, प्रेषणीयता, सहजता, वास्तविकता तथा यथार्थ आदि विशेषताओं का समायोजन स्वाभाविक रूप से हुआ है। शब्दों और छन्द विधान पर आपका पूरा आधिपत्य रहा है। कथन की वक्रता का एक उदाहरण प्रस्तुत है—

स्याहियाँ सूख न पाई हैं वायदों की अभी।
घंटियाँ बजने न पाई हैं कायदों की अभी।।
झंडियाँ भी तो चढ़ी हैं अभी मीनारों पर।
आज भी बैल बने हैं कई दीवारों पर।।
देश का दर्द मिटाने लगे क्या कहना है।
टेक्स पर टेक्स बढ़ाने लगे क्या कहना है।।[1]

उपर्युक्त छन्द में कवि ने अपना मन्तव्य प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया है और तत्कालीन समस्याओं को सामाजिक पटल पर विदग्धता पूर्ण वाक्शैली में प्रस्तुत किया है।

'पब्लिक इन्टरेस्ट' में कवि की भाषा चित्रमयी कल्पनाओं तथा लाक्षणिक प्रयोगों से युक्त होकर पाठक पर अमिट प्रभाव डालने में समर्थ है। निम्न पंक्तियों में कल्पना के माध्यम से प्रस्तुत किया एक शब्द चित्र दर्शनीय है—

सो गया रेल में कोई तो कढ़ गया आगे।
छोड़कर गाँव की टेशन को बढ़ाया आगे।।
चार्ज होता है डबल जेल में आ जाता है।
दूसरे दिन कहीं फिर लौट के घर आता है।।
पर कहीं पाँच पन्हा चाँद पै पड़ने लग जायँ।
दूसरे डिब्बों में जो सोये हों तो वे भी जग जायँ।।[2]

1— पाण्डुलिपि :1. पब्लिक इन्टरेस्ट, छन्द क्र. 2

2— उपरिवत्, छन्द क्र. 15

उक्त छन्द पढ़कर मस्तिष्क में एक चित्र निर्मित होता है। यही कवि की चित्रात्मक शब्दावली का वैशिष्ट्य है। **'पाँच कस–कस के जहाँ चाँद पै पड़ जायेंगे, बाल कैसे भी हों मजबूत तो झड़ जायेंगे'** में कवि ने आकर्षक लाक्षणिक प्रयोग किया है। इस तरह के विविध उदाहरण इस रचना में उपलब्ध हैं। कवि ने बुन्देली में प्रयुक्त स्थानीय मुहावरों का प्रयोग किया है। जैसे– धूल झड़ जाना, टोपियां उड़ जाना, चाँद पर पड़ना, कान खुल जाना तथा स्याहियां सूखना आदि।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि डॉ. आनन्द का भावपक्ष जितना जागरूक है, भाषा उतनी ही सक्षम है। आपके प्रतीक मधुर, सटीक एवं रसात्मक हैं, कल्पनायें उदात्त हैं तथा भाषा भावानुगामिनी होकर विविध रूपिणी है। आपके भाव जितने प्रभावशाली हैं, उनकी अभिव्यंजना तथा शिल्प उतना ही उत्कृष्ट है।

ड.– राजनीतिक प्रभाव

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में जिस कल्पनातीत पतनोन्मुख स्थिति का आविर्भाव हुआ, उसका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व तत्कालीन राष्ट्रीय काँग्रेस का था। परतंत्र भारत में सामाजिक व्यवस्था की जो स्थिति थी, लगभग वही स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी रही। समाज में स्वार्थपरता, अनीति एवं भ्रष्टाचार पनप रहा था। युवकों को उचित नेतृत्व नहीं मिल पा रहा था। त्याग, सेवा जनहित, धार्मिक आस्था एवं विश्वास, पारस्परिक प्रेम आदि निर्मूल हो चले थे। शासन की भ्रष्ट नीतियों के कारण विभिन्न राजनीतिक दलों ने खुलेआम विरोध प्रदर्शन आरंभ कर दिया था। विभिन्न आन्दोलनों ने अशान्ति उत्पन्न कर दी थी। शासन ने जनता पर करों का अतिरिक्त एवं असहनीय बोझ डालकर जन–संकट उत्पन्न कर दिया था। जनता त्राहि–त्राहि करने लगी थी। राजनीतिक प्रतिनिधियों की मनमानी तथा वोट की राजनीति से देश की परिस्थितियाँ ह्रासोन्मुख हो गईं थीं।

चूँकि कवि सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित रहता है। समाज का जागरूक पहरेदार होने के नाते कवि उसके उत्थान–पतन का चित्रांकन अपने साहित्य में करता रहता है। डॉ. आनन्द तत्कालीन प्रभावों से अछूते नहीं रहे। समसामयिक परिस्थितियों एवं समस्याओं को अपने सृजन में रूपायित करके कवि ने अपने साहित्यिक दायित्व का सफल निर्वाह किया है। **'पब्लिक इन्टरेस्ट'** उनके इसी दायित्व का परिणाम है।

भारतीय आम चुनाव में विजयी होने के तुरन्त बाद काँग्रेस सरकार ने रेल के तृतीय श्रेणी का किराया अप्रत्याशित रूप से बढ़ा दिया। इस अनावश्यक करारोपण से खिन्न होकर कवि ने नेताओं की राजनीतिक चालों का व्यंग्य के माध्यम से पर्दाफाश किया है।

अभी चुनाव के चरचे खतम न हो पाये।

सिलसिलेवार पिटीशन भी कम न हो पाये।।

देश का दर्द मिटाने लगे क्या कहना है।

टेक्स पर टेक्स बढ़ाने लगे क्या कहना है।[1]

देश के राजनीतिक वातावरण से प्रभावित होकर कवि ने नेताओं को करारी फटकार लगाई है। इस प्रकार के सक्रिय विरोध के कारण डॉ. आनन्द को कई बार जेल यात्रायें करनी पड़ीं तथा अज्ञातवास भी करना पड़ा। कवि ने इस रचना में देश की जनता की करुण पुकार को रेखांकित किया है। राजनीतिक प्रदूषण से क्षुब्ध होकर कवि ने प्रशासन को अपना सुझाव उग्रतापूर्वक न देकर हास्य एवं व्यंग्य के माध्यम से दिया है।

रेल महसूल मुसाफिर पै चढ़ा आता है।

पर ये कानून अधूरा ही रहा जाता है।।

इसमें थोड़ी सी कमी है इसे पूरा कर दो।

तीसरे क्लास में इतना तो जरूरी कर दो।।

1— पाण्डुलिपि :1. पब्लिक इन्टरेस्ट, छन्द क्र. 1

तीसरी क्लास के यात्री को इस सजेशन पर।
पाँच जूते भी लगा दीजिये हर टेशन पर।।
मैं विधायक हूँ विधाने के लिये आता हूँ।
'पब्लिक इन्टरेस्ट' के कुछ फायदे समझाता हूँ।।[1]

उक्त छन्द में काँग्रेसी विधायकों को व्यंग्य पूर्वक दिशा निर्देश देने की चेष्टा की गई है। तात्पर्य है कि विधायक समस्याओं को न सुलझाकर बिधाने अर्थात् उलझाने का काम किया करते हैं। इस प्रक्रिया से नेताओं के दायित्व निर्वहन का कार्य अधूरा ही रह जाता है। कवि उन्हें अपने कर्तव्यों के प्रति सचेष्ट रहने एवं समाज के प्रति निष्ठावान होने के लिये दिशा निर्देश करता है।

1— पाण्डुलिपि :1. पब्लिक इन्टरेस्ट, छन्द क्र. 5

षष्ठम् अध्याय :

डॉ. आनन्द की काव्य-भाषा

- काव्य-भाषा का सामान्य स्वरूप
- काव्य-भाषा की शब्द सम्पदा - तत्सम्, तद्भव, देशज, स्थानीय तथा बुन्देली शब्द
- काव्य-भाषा में अनुप्रासमयता
- काव्य-भाषा में चित्रमयता एवं नादात्मकता
- काव्य-भाषा में व्याकरणिक कोटियो का मूल्यांकन

षष्ठम अध्याय

डॉ. आनन्द की काव्य भाषा

क– काव्य भाषा का सामान्य स्वरूप

डॉ. आनन्द साहित्य जगत में प्रखर प्रतिभा सम्पन्न एक सशक्त हस्ताक्षर थे। आपकी रचना प्रक्रिया कविता से होती हुई बुन्देली गीतों, उर्दू गज़ल, व्यंग्य लेख तथा नाटक तक फैली हुई है। किन्तु वे मूलतः कवि थे। उनके **'झाँसी की रानी'** (महाकाव्य), **'सन् अड़तालीस'**, **'एम.एल.ए.राज.'**, **'पब्लिक इन्टरेस्ट'** तथा **'दारुल शफा'** रचनाओं में तत्कालीन राजनीतिक संदर्भों, सामाजिक विसंगतियों तथा काँग्रेसी शासन के दमन और दलन का व्यापक स्वरूप रेखांकित हुआ है। **'शक्ति निदान'** आयुर्वेदिक ग्रन्थ **'माधव निदान'** का हिन्दी भावानुवाद है। **'वैश्या सती'** नाटक में स्त्री चरित्र की महानता अपने चरम रूप में रूपायित है। परिवहन विभाग पर **'पाप के किले पर गोला'** शीर्षक से प्रकाशित कतिपय व्यंग्य लेख युगीन भ्रष्टाचार के सफल निदर्शन हैं। इस तरह अपने सम्पूर्ण सृजन में डॉ. आनन्द भाषा के प्रति पूरी तरह सचेत व सतर्क दिखाई देते हैं। आपकी भाषा सार्थक शब्दों की व्यवस्थित रूप रेखा, भावाभिव्यक्ति की प्राणशक्ति तथा भावानुगामिनी है। कहीं रचनाओं में शैल्पिक वैशिष्ट्य झलकता है, तो कहीं लोकोक्तियों और मुहावरों की सहज सृष्टि हुई है।

आपके काव्यों में कहीं–कहीं काव्यात्मकता के साथ भावाभिव्यक्ति की सहजता तथा प्रवाह गम्यता है। भाषा में कहीं बनावटीपन नहीं है। भाषायी चमत्कार एवं अलंकारिकता अप्रधान है। काव्य क्षेत्र में आपकी भाषा साहित्यिक रही है, जिसमें हिन्दी खड़ी बोली का प्राधान्य है। कहीं–कहीं खड़ी बोली के साथ बुन्देली प्रयोग भी उपलब्ध हैं। आपकी रचना में शुद्ध बुन्देली का एक प्रयोग दृष्टव्य है–

जो कउँ हम पढ़ जायें।
नांव न लें फिर जुड़ई चना को, भूरी पिसिया खायें।।
समझन लगें हमउँ सब बातें, चपरासी चच्चा की घातें।
खाँय न कानींगो की लातें, जो कागद पै रहे लगाउत।।
सो हम सबै दिखायें, जो कउँ हम पढ़ जायें।।[1]

उक्त पंक्तियों में शुद्ध बुंदेली का प्रयोग परिलक्षित है। किन्तु कहीं–कहीं खड़ी बोली और बुन्देली शब्द रूपों का मिला–जुला स्वरूप इनकी भाषा को एक नई रंगत प्रदान करता है।

घोर–घोर घन घिर–घिर आते।
प्रलयंकर बरषा बरसाते।।
गरज गरज गढ़ के गढ़ ढाते।
हा! अब तो भीतरी भवन की,
लगीं टूटने करियाँ
पावस रैन अँधिरियाँ।।[2]

यहाँ '**करियाँ**' और '**अँधिरियाँ**' बुन्देली शब्दों का खड़ी बोली समन्वित प्रयोग एक नये सौन्दर्य की सृष्टि करता है।

''चिन्तन, प्रयोग और लेखन से ही भाषा की क्षमता बढ़ती है और यही कारण है कि शब्दावली, शैली और कलेवर सम्बंधी अनेक मत–मतान्तरों के बीच हिन्दी अपना रास्ता खोजते हुये आगे आई है।'[3] यह बात डॉ. आनन्द के लेखन

1– पाण्डुलिपि :2. जो कउँ हम पढ़ जायें, पृष्ठ क्र. 11

2– पाण्डुलिपि :2. पावस रैन अँधिरियाँ, पृष्ठ क्र. 3

3– भाषा, त्रैमासिक, विश्वहिन्दू सम्मेलन, अंक 1976, सम्पादकीय, पृ. 6

पर अक्षरसः सिद्ध होती है। आपके अनवरत अध्ययन, मनन और लेखन से यदि एक ओर आपकी भाषा का साहित्यिक स्वरूप पाठकों को आकर्षित करता है तो दूसरी ओर आपकी व्यंग्यात्मक भाषा–शैली पाठकों के हृदय को झकझोर देती है और चिन्तन के लिये विवश कर देती है। आपकी शुद्ध साहित्यिक भाषा का एक उदाहरण दर्शनीय है–

यह तो है गतिमान चेतना सदा समय की,
जो न कभी रुक सकी न आगे रुक सकती है।
अनाचार दानवता के, पशुता के आगे,
कभी न कवि की लौह लेखनी झुक सकती है।।[1]

साहित्यिक भाषा शैली के साथ आपकी भाषा विषय के अनुरूप व्यंग्यात्मक भी हो गई है। नमूना दृष्टव्य है–

खाने का सहारा है तो दारुलशफा में है।
पीने का इशारा है तो दारुलशफा में है।।
किस्मत का सितारा है तो दारुलशफा में है।
हूरों का नजारा है तो दारुलशफा में हैं।।[2]

उक्त पंक्तियों में **दारुलशफा** (लखनऊ का विधायक निवास) में विधायकों की कार्यशैली को व्यंग्य के माध्यम से उकेरा गया है। डॉ. आनन्द की **'पाप के किले पर गोला'** शीर्षक व्यंग्य लेख से परिवहन मंत्री के नाम खुली चिट्ठी 19 अक्टूबर 1961 के 'साप्ताहिक हलचल' में प्रकाशित हुई थी। तदनुसार उनकी व्यंग्यात्मक गद्यशैली का उदाहरण प्रस्तुत है– **''दफ्तर कामदारी हर तीन महीने में एकबार परमिटबाजी का खेल करता है और किसी रूट पर वह अपनी विकेन्सी की गुड़गुड़िया बाँसुरी बजाकर दूर–दूर से हजार दोहजार आदमी इकट्ठा कर लेता है। कमेटी में आर. टी. ओ. साहब के**

1– पाण्डुलिपि :1. दमन, पृष्ठ क्र. 18

2– दारुल शफा (अप्रकाशित), पृष्ठ 1

सहयोग के लिये दो एम. एल. ए. भी बैठते हैं। यह बहुत जरूरी है क्योंकि मदारी के खेल में अगर दो एक जमूड़े न रक्खे जाँय तो खेल में मजा ही क्या मिलेगा। यह मदारी एन्टीकरेप्शन डिपार्टमेन्ट की निगाहों से अपने आपको हमेशा बचाकर रखता है। बस यही इसकी सबसे बड़ी होाशियारी है।''[1]

इस उदाहरण में डॉ. आनन्द की व्यंग्यात्मक भाषा–शैली का नमूना प्रस्तुत है। कथन के अन्तर्गत परिवहन विभाग के भ्रष्ट अधिकारियों की भ्रष्ट कार्यशैली को उजागर किया गया है। डॉ. आनन्द को प्रतीकात्मक ढँग से अपनी बात कहने में दक्षता प्राप्त थी। उनकी रचनाओं में प्राकृतिक उपादानों को प्रतीक मानकर बात कहने का आकर्षक ढँग विद्यमान है। अपने ग्रामीण परिवेश से प्रतीकों का चयन करके कथन को प्रभावी बनाने का नैपुण्य उन्हें प्राप्त था। निम्न पंक्तियों में कवि प्रभावी प्रतीकों के माध्यम से अपना मन्तव्य प्रकट करता है–

ये क्या लोक परलोक में संग देंगीं,
नई जो ऋचायें गढ़ी जा रही हैं।
जहाँ रात–दिन बोलियाँ गीदड़ों की,
कि गीता बताकर पढ़ी जा रही हैं।।

अकउए धतूरे हटाकर यहाँ से,
खिलाना गुलाबी सुमन चाहता हूँ।।[2]

उक्त पंक्तियों में ऋचायें, गीदड़ों, गीता, अकउए, धतूरे तथा गुलाबी सुमन आदि प्रतीकों का सार्थक प्रयोग कवि की भाषा को नवीन स्फूर्ति एवं अर्थवत्ता प्रदान करता है।

स्वातंत्र्योपरान्त काँग्रेसी प्रतिनिधियों की काली करतूतें देखकर कवि आश्चर्य चकित होता है कि जिन नेताओं को देश का कर्णधार समझा था, चमन का रक्षक माना था, वे अपने हाथों ही अपना सब्जबाग नष्ट करने

1— साप्ताहिक हलचल, 19 अक्टूबर 1961 ई., पाप के किले पर दूसरा गोला, पृष्ठ 4

2— पाण्डुलिपि : 2. पृष्ठ 45

पर तुले हैं। नेताओं की अनैतिक चेष्टाओं को रेखांकित करते हुये कवि का आक्रोश निम्न पंक्तियों में व्यक्त है। आक्रोश अभिव्यंजक भाषा का स्वरूप दृष्टव्य है—

आज समूचा भारत अपने दिल में आग लिये बैठा है।

तुम क्या जानो कितने जलियाँ वाले बाग लिये बैठा है।।

अभी समय थोड़ा बाकी है कहीं भूलकर मत छू देना।

तार—तार युग के सितार का भैरव राग लिये बैठा है।।[1]

डॉ. आनन्द की काव्य भाषा के सामान्य स्वरूप में उस समय सहजता भरी सादगी उत्पन्न होती है, जब वे लेखन शैली में अत्यंत भावुक हो जाते हैं। चूँकि भावुकता में स्पष्टता बाधित हो जाती है, इसलिये कवि के मन्तव्य का निर्णयात्मक विवेचन कठिन हो जाता है। अतिशय भावुकता से सम्पृक्त निम्न पंक्तियों में कवि का भाषायी स्वरूप देखिये—

क्या जाने क्या चीज तुम्हारी जल्दी जल्दी में रह जाये।

क्या है ठीक चढ़ी नदिया में किसकी नाव कहाँ बह जाये।।

यों ही मन बहलाकर अपना यह दो दिन का मेला करके।

किसे खबर है छोड़ चलेगा किसको कौन अकेला करके।।[2]

आपकी भाषा भाव—सम्प्रेषण में तो सक्षम है ही, कथ्य को बोधगम्य बनाने में भी सफल है। गम्भीर व्यंग्य को हास्य के माध्यम से प्रस्तुत करने में आपको पूर्ण सफलता प्राप्त है। हास्यपूर्ण रचनाओं में भाषा की प्रांजलता का स्तर कुछ कम अवश्य हो जाता है किन्तु उनका हास्य मिश्रित व्यंग्य श्रोता को सरलता से अभिभूत कर देता है। **'मैं तो लीडर कहलाता हूँ'** रचना में नेताओं की कार्य पद्धतियों एवं राजनीतिक गतिविधियों को हास्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। हास्य को प्रभावपूर्ण बनाने में भाषा का संरचनात्मक गठन दृष्टव्य है।

1— एम. एल. ए. राज., पृष्ठ 15

2— पाण्डुलिपि : 1. याद किसी की आ जायेगी, पृष्ठ 27

मैने न कभी मज़हब सीखा,

कुछ भी न दीन ईमान पढ़ा।

देखा न फ़्लासफी लिटरेचर,

इंजील पढ़ा न कुरान पढ़ा।।

गो कभी न वेद पुरान पढ़ा,

पर कोकशास्त्र का ज्ञाता हूँ।

मैं तो लीडर कहलाता हूँ।।[1]

निष्कर्ष रूप मे डॉ. आनन्द की काव्य–भाषा के सम्बंध में सियाराम शर्मा का अभिमत प्रस्तुत है– 'आपकी भाषा में स्वाभाविक प्रवाह है, ओज है और श्रोताओं पर राष्ट्रप्रेम की अमिट छाप छोड़ने की क्षमता है। बुन्देलखण्ड क्या सारा देश कवि का ऋणी है।'[2] आपकी भाषा विषयक टिप्पणी करते हुये डॉ. सेवक वात्स्यायन ने लिखा है– 'डॉ. आनन्द की भाषा अत्यन्त सरल, स्वाभाविक, ओजपूर्ण और निराडम्बर है, उसके प्रवाह और प्रभाव अनूठे हैं।'[3]

ख– काव्य भाषा की शब्द–सम्पदा

'भाषा केवल शब्दों का जमघट नहीं और न मात्र शब्दों की गुंफित कुंजिका है। वह सार्थक शब्दों की व्यवस्थित कड़ी है। वस्तुतः भाषा भावाव्यक्ति की प्राणशक्ति है।'[4] कथन से तात्पर्य यह है कि भावों की सफलतम अभिव्यक्ति सार्थक शब्दों के प्रयोग से ही सम्भव है। डॉ. विद्यानिवास

1– पाण्डुलिपि : 2. मैं तो लीडर कहलाता हूँ, पृष्ठ 41

2– समीक्षा–झाँसी की रानी, समीक्षक सियारामशरण शर्मा, दैनिक जागरण झाँसी– 26 मई 1968ई.

3– झाँसी की रानी (राष्ट्रीय ऐतिहासिक काव्य) की समीक्षा, डॉ. सेवक वात्स्यायन, आनन्द प्रकाशन, जालौन, 1969ई., पृष्ठ 15

4– जिन्दगी की आँच और रंग– कविता का रचनात्मक विश्लेषण। डॉ. राहुल, सम्पादक–गुरुचरणसिंह, मंजूषा प्रकाशन, नई दिल्ली। प्रथम संस्करण, 2002ई., पृष्ठ 85

मिश्र 'शब्द को भाषा की लघुतम इकाई स्वीकार करते हैं।[1] इस लघुतम इकाई की रचना सार्थक ध्वनियों के सम्मिलन से होती है। इसी से शब्द सार्थक ध्वनियों का संघटन है।[2]

डॉ. आनन्द की रचनाओं में व्यवहृत तत्सम, तद्‌भव, देशज तथा स्थानीय शब्दों का वर्गीकरण निम्नवत् प्रस्तुत है–

तत्सम रूप

तत्सम शब्द–रूप से तात्पर्य **'उसके समान'** शब्द रूप से है। इन शब्द रूपों की समानता संस्कृत शब्दरूपों से मिलाई जाती है। इसी से तत्सम रूप मूलरूप हैं।[3] डॉ. आनन्द की रचनाओं में व्यवहृत तत्सम शब्दावली निम्नवत् है–

1– **झाँसी की रानी –** व्योम, बंक, उद्वेलित, प्रमत्त, विराट, धवल, दत्तक, श्रृगाल, श्वान, लुण्ठित, उड्‌गन, अक्षय, भव्य, अरि, शोणित, कृपाण, वितुण्ड, प्रभंजन, चंचला, विप्लव, रुधिर, प्रलयंकर, विज्जु, समरांगण, संज्ञाहत, पराभव, धूम्र, वेष्टित, कूटपत्र, स्वाधिपत्य, झंकृत, दुर्धर, भग्नावशेष, प्रासाद, विचुम्भी, विसर्जन, प्लावित, आब, सामरिक, मरणोन्मुख, मुक्ताहल, प्रणीत, अन्त्येष्टि, नूतनोध्याय, कलिन्दजा।

2– **एम. एल. ए. राज–** कर्णधार, अनिवार्य, सर्वोदय, वनोत्सव, रक्त, कंचन, अश्रु, प्रगति, धन्वंतरि, लंकाधिराज, दिग दिगन्त, शपथ, प्रभंजन, व्योम, विप्लव, अन्तरिक्ष, कारागार।

1– भारतीय भाषा शास्त्रीय चिन्तन–सम्पादक डॉ. विद्यानिवास मिश्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1976ई., पृष्ठ 40

2– नालन्दा विशाल शब्द सागर, सम्पादक नवलजी, आदर्श बुक डिपो, 38 यू. ए. जवाहर नगर, बंगला रोड, देहली–7, पृष्ठ 159

3– भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन– डॉ. श्यामसुन्दर सौनकिया, आराधना ब्रदर्स, गोविन्दनगर कानपुर, 1996ई., पृष्ठ 159

3– **सन् अड़तालीस–** वसुन्धरा, दिग्दिगंत, नृशंसता, किशलय, खण्डहर तिमिराच्छादित, त्राण, विप्लव, मक्खन, कारागृह, गौरांग, प्रस्थान, हस्तक्षेप।

4– **शक्ति निदान–** तन्द्रा, स्वेद, मूत्र, कृश, कण्टक, सन्निपात, सुश्रुत, श्लेष्मा, अस्थि, वात्याधिक, कृमि, वमन, रुधिर, कुष्ट, पक्वाशय, विष्टा, मन्दाग्नि, रोमांच, गर्धव, अर्श, निषिद्ध, आस्तिक, साध्य, विषमाग्नि, समाग्नि, अजीर्ण, आमादिक, विष्टब्ध, मलाधीन, शोथ।

5– **फौजी गठबंधन–** प्रशान्ति, भ्रूइंगित, किरीट, तरुण, विटप, कुन्द, कुन्तल, प्रलयंकर, अम्बर, अभ्युदय।

तद्‌भव रूप

संस्कृत से विकसित विकृत शब्द तद्‌भव की श्रेणी में आते हैं।[1] ऐसे शब्द, जो संस्कृत और प्राकृत से विकृत होकर हिन्दी में आये हैं, तद्‌भव कहलाते हैं।[2] तद्‌भव का आशय **'उससे उत्पन्न'** है। तद्‌भव शब्दों में 'सरलीकरण की प्रवृत्ति' अधिक रहती है।[3]

डॉ. आनन्द की रचनाओं में व्यवहृत तद्‌भव शब्दावली निम्न प्रकार है–

1– **झाँसी की रानी –** गरदन, बाकी, दीवार, दूला, जालवन, खीज, पहिरा, लासानी, कनगूरों, मारग, पुरान, रिषि, पतिनी, प्रविश, माटी, रसम, मारतण्ड, आहुती, नव्वाब, गरमी, कबरों,

---

1– भाषा विज्ञान– डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृष्ठ 454

2– आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना– डॉ. वासुदेवनंदन प्रसाद, भारती भवन (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स) ठाकुरबाड़ी रोड, कदमकुआँ, पटना, 2002ई., पृष्ठ 147

3– भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन–डॉ.श्यामसुन्दर सौनकिया पृष्ठ 161

करेजों, शाँश, धूर, बन्दुकिया, कृपान, सपना, काँधे, प्रगट, दिश (दिशा)

2– **एम. एल. ए. राज–** दुपहर, चद्दर, वादे, गरम, काँगरेस, तीरे, कछारे, आमाल, मरजी, फरजी, फारम।

3– **सन् अड़तालीस–** कलि, होशियार, सुहाग, छत्रालय, स्वास, मजूर, वादे, कृषिकों, सिकचों, जमुहाई, टिकट, मुहताज, प्रान, सुराज, योधा, आग।

4– **शक्ति निदान–** नींद, हाड़, खुरदरी, जीभ, पीरा, धीरा, दुखावै, स्वेत, उनमत्तता, मास, धूर, धुआँ, पसवाड़ों, प्रकटी, चालिस, विध, प्रवीन।

5– **फौजी गठबंधन–** नद्दी, कासमीर, दीपावलि, नाव।

देशज

'देशज' वे शब्द हैं, जिनकी व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता।[1] ये अपने ही देश में बोलचाल से बने हैं, इसलिये इन्हें देशज कहते हैं। डॉ. कृष्णलाल 'हंस'[2] ने देशज शब्दों का जन्म देश में ही होना स्वीकार किया है। यहाँ देश शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में नहीं वरन् स्थानीय अर्थ में किया गया है। अतः ये शब्द हैं, जिनका विकास किसी आर्य अथवा समृद्ध आर्येतर भाषा से नहीं बतलाया जा सकता, वरन् जिनका निर्माण क्षेत्र अथवा प्रदेश विशेष की जनता द्वारा उसकी मनोवैज्ञानिक अन्तःप्रेरणा से होता रहा है।[3] डॉ. आनन्द की रचनाओं में प्रयुक्त देशज शब्द निम्न प्रकार हैं–

1– **झाँसी की रानी :** कौंधा, साका, मुकने से, तलक, पतरी, कोट, दपट, दूजा, छूँछे, सिकचों में, इक, चोब, कोर, दुलत्ती,

---

1– आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना–डॉ.वासुदेवनन्दन प्रसाद,पृष्ठ148

2– बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप–डॉ. कृष्णलाल 'हंस', पृष्ठ 103

3– भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन–डॉ.श्यामसुन्दर सौनकिया, पृष्ठ 163

तिलंगे, तुपक, पलटन, बिजन, झूप–झूप, पोथी, ररंकार, दुधारे, गाय–गाय, लासानी, आड़ा, घाम, हलाडोल, लोहू, ताव, कस–कस के, किस्सा, पुरा, सेजरिया, अँगरा, बयरिया।

2– **एम. एल. ए. राज. :** दरशा, भीतर, रिवाज, अड़ा, चटक, घाम, चाव, गाज, डामर, आन, ठूँस, सगाई, गवाँर, ऐलान।

3– **सन् अड़तालीस :** नेंक, गुलाम, बजार, मजे, होड़, कसम, टुकड़े, मुलक।

4– **शक्ति निदान :** बड़बड़ाना, ओंठ, थुकथुकी, प्रगटता, जांघ, पीर, पहिरे, डबिया, सवाई, उबकाई, आधे, चौथाई।

5– **फौजी गठबंधन :** अटारी, हिचकियाँ, नेंक।

स्थानीय

डॉ. आनन्द की कृतियों में स्थानीय शब्दावली का व्यवहार उनका सामान्य जन–जीवन से सम्पृक्त होना सिद्ध करता है। 'क्षेत्रीय बोलियों का प्रतिनिधित्व करने वाले स्थानीय शब्दों में अर्थद्योतन की आश्चर्य जनक क्षमता होती है। इस वर्ग के शब्द स्थानीय विशिष्टता रखते हैं।[1] सामान्य जन–जीवन, आचार, व्यवहार, रीतिरिवाज, सांस्कृतिक और धार्मिक गतिविधियों को सहज स्वाभाविक अभिव्यक्ति प्रदान करने वाले स्थानीय शब्द बोलियों की अपनी सम्पत्ति होते हैं।[2] डॉ. सीताकिशोर ने देशज और स्थानीय शब्दों की अलग–अलग पहचान निर्धारित की है। डॉ. आनन्द की कृतियों में स्थानीय शब्दावली का प्रयोग निम्नवत् उपलब्ध होता है–

1– **झाँसी की रानी :** झट, हिलकी, अकेली, हिचकी, सनन्, खनन्, बड़ाई, खोहों, बहू, पुजारिन, सराँय, सुनतइखन, जंगी,

---

1– बुन्देली क्षेत्र के स्थान अभिधानों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन–डॉ. कामिनी, आराधना ब्रदर्स, 124/152सी. गोविन्दनगर, कानपुर, पृ.248

2– सर्वनाम, अव्यय और कारक चिह्न–डॉ. सीताकिशोर, पृष्ठ 59

कुइलिया, आय (आने के अर्थ में प्रयुक्त), जानें (अविदित के अर्थ में), पाँव, कढ़ना, अँगरखा, ठेल–ठेल, धुआँ–धार, खाँद–खाँद, हाल, रँगाई,खर से।

2– **एम. एल. ए. राज.:** विचकना, भरमाते, भेद, बोरिया–विस्तर, मुठिया, बखर, होड़, फोड़, पार, फर्द, दुनाली, उड़ाबौ, भुट्टे।

3– **सन् अड़तालीस :** पाँव, लाज, लाठी, उलट, बोल।

4– **शक्ति निदान :** बास (दुर्गन्ध), अफरा, झराता, कूँख, फुटनी, खरदरे, दबाइ, उखड़, हड़ फूटन।

5– **फौजी गठबंधन :** डग, जुगनू, कजरी, अमुआँ, कुइलिया, कंडा।

डॉ. आनन्द की रचनाओं में प्रयुक्त शब्द–भंडार में तत्सम, तद्भव, देशज तथा स्थानीय शब्दों के अतिरिक्त विपुल मात्रा में बुन्देली शब्दों का व्यवहार किया गया है। ये बुन्देली शब्द निम्नलिखित हैं–

पिछाड़ी, अगाड़ी, बीहड़, गार, करियाँ, अँधिरियाँ, दबकायें, बदरियाँ, नजरियाँ, हिराने, एरी, हेरी, लरकावारे, बादर, कँगरिसिया, कइयो, करदइ, गुजारौ, सारौ, पूरौ, बंटाढार, चौबिस, रकम, ईंटन, पुरखा, गिट्टी, कंकर, एका, अँसुवा, बौरी, काह, भयोरी, पर्‌यो, जर्‌यो, विछावन, लगावन, दौरी, हिंडोल, चलाय, बढ़ावन, पपीहरा, जभैतें, बूँदन, पटक, लीन्ह, बिसराई, बतराई, नसाई, वैस, लरकाई, बिला, मचला, पोल, सुरत, बाढ़त, कभूँ, हुती, गरवीली, अँगुरीन, चुरियाँ, सामरे के, ढिंग, कसक।

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि चूँकि डॉ. आनन्द बुन्देलखण्ड में जन्मे, पले और बड़े हुये हैं, इन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा से हिन्दी साहित्य को विभिन्न महत्वपूर्ण कृतियाँ प्रदान की हैं, इनकी रचनाओं में प्रयुक्त बुन्देली शब्दावली अर्थवत्ता एवं अभिव्यक्ति क्षमता की दृष्टि से सराहनीय है। इनकी बुंदेली रचनायें काव्य मंचों पर प्रतिष्ठित रहकर बहुपठित एवं बहुश्रुत रही हैं।

ग– काव्य भाषा में अनुप्रास मयता

अलंकारों का सहज और स्वाभाविक प्रयोग काव्य में सौन्दर्य सृष्टि में सहायक होता है। शब्दालंकारों में शब्दों के माध्यम से सौन्दर्य एवं चमत्कार उत्पन्न किया जाता है तथा अर्थालंकारों में अर्थ के माध्यम से। शब्दालंकारों में अनुप्रास प्रमुख माना जाता है। 'वर्णों की आवृत्ति को अनुप्रास कहते हैं।[1] काव्य में शब्दिक धरातल पर चमत्कार की सृष्टि करके अनुप्रास का आयोजन किया जाता है। शब्दों में स्वरों की विषमता होने पर भी व्यंजनों की समता अथवा आवृत्ति होने पर अनुप्रास अलंकार होता है।[2] यह आवृत्ति शब्द के आदि, मध्य तथा अन्त तीनों स्थितियों में होती है। इस प्रकार अनुप्रास के आदि, मध्य तथा अन्त्यानुप्रास रूप बनते हैं। डॉ. रामशंकर शुक्ल 'रसाल'[3] ने अनुप्रास शब्द को **–अनु+प्र+आस–** में विच्छेद करके वर्णों की आवृत्ति की अनिवार्यता को स्वीकार किया है।

अतः निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि अनुप्रास में वर्णों की आवृत्ति प्रमुख है। यह आवृत्ति यमक, पुनरुक्त पदाभास तथा पुनरुक्त प्रकाश में भी होती है। अतः इन्हें भी अनुप्रास के अन्तर्गत स्वीकार किया जा सकता है।

अनुप्रास अलंकार के पाँच भेद किये गये हैं। छेकानुप्रास, वृत्यानुप्रास, अन्त्यानुप्रास, लाटानुप्रास और श्रुत्यानुप्रास।[4] जबकि आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने अनुप्रास के तीन भेद ही स्वीकार किये हैं– छेकानुप्रास, वृत्यनुप्रास तथा लाटानुप्रास।[5]

1– आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना–डॉ.वासुदेवनन्दन प्रसाद, पृ.321

2– अलंकार प्रकाश, आर्येन्द्र शर्मा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पृ.9

3– अलंकार पीयूष, डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल', पृष्ठ 187

4– अलंकार प्रकाश, आर्येन्द्र शर्मा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पृ.9

5– काव्यांग कौमुदी, तृतीय कला–विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पृष्ठ 77

डॉ. आनन्द के काव्य में उक्त अनुप्रासों के प्रयोग सहज और स्वाभाविक रूप से हुए हैं, उनमें कहीं भी कृत्रिमता का आभास नहीं मिलता।

1– छेकानुप्रास

एक वर्ण की दो बार आवृत्ति होने पर छेकानुप्रास अलंकार होता है। समस्त पुनरुक्तियों में छेकानुप्रास की स्वभावतः सृष्टि हो जाती है। डॉ. आनन्द की रचनाओं में छेकानुप्रास के प्रयोग निम्नवत् दृष्टव्य हैं–

–देखी झाँसी की समर सेज
सोया देखा निज शूरों को[1]
–जब जब मौका मिल गया इसे
तब तब देश द्रोही निकला[2]
–हो उठा इसी क्षण अकस्मात
आक्रमण ब्रिटिश बलधारी का
बज उठे खड्ग सज उठे शूर
बज उठा बिगुल तैयारी का[3]
–प्रलंकर की संहार शक्ति
हो साक्षात साकार उठी
था शोर बचो भागो भागो
तलवार उठी तलवार उठी[4]
–खाकी टोपों से टपक टपक
बस टाप सुनाई देती थीं[5]
–कंकड़ कंकड़ काँप उठा है[6]

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 146
2– उपरिवत्, पृष्ठ 169
3– उपरिवत्, पृष्ठ 210
4– उपरिवत्, पृष्ठ 116
5– उपरिवत्, पृष्ठ 113
6– एम. एल. ए. राज., पृष्ठ 9

–चिल्ला चिल्ला कर कहती हैं

मंदिर मस्जिद की मीनारें[1]

–जिसकी खातिर कितनी कलियाँ

खिलते खिलते ही कुम्लाईं[2]

–ईंटों से ईंट बजा देंगे, यह कुर्बानी पर कुर्बानी[3]

प्रथम उदाहरण में 'स' वर्ण, द्वितीय में 'ज', 'त' तथा 'द' वर्ण, तृतीय में 'ब' तथा 'स' वर्ण, चौथे में 'स', 'भ' तथा 'त' वर्ण, पाँचवे में 'ट' वर्ण, छटवें में 'क' वर्ण, सातवें में 'च' और 'म' वर्ण, आठवें में 'क' और 'ख' वर्ण तथा नवमें उदाहरण में 'ई' तथा 'क' वर्ण की आवृत्तियों में छेकानुप्रास अलंकार की स्थिति है।

2– वृत्यनुप्रास

जहाँ एक व्यंजन की आवृत्ति एक या अनेक बार हो, वहाँ वृत्यनुप्रास होता है।[4] विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने वृत्यनुप्रास को उपनागरिका वृत्ति, परुषा वृत्ति और कोमला वृत्ति– तीन भागों में विभाजित किया है। उपनागरिका वृत्ति– श्रृंगार, हास्य और करुण रसों में, परुषा वृत्ति– वीर, रौद्र और भयानक रसों में तथा कोमला वृत्ति– शांत, अद्भुत एवं बीभत्स रसों में व्यवहृत होती है।[5]

डॉ. आनन्द की रचनाओं में वृत्यनुप्रास के कतिपय उदाहरण निम्नवत् हैं–

1– एम. एल. ए. राज., पृष्ठ 8

2– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 4

3– उपरिवत्, पृष्ठ 5

4– आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना– डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद, पृष्ठ 322

5– काव्यांग कौमुदी–तृतीय कला, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पृष्ठ 79

–काले काले थे केश किन्तु
अरि डसने को विषधर कराल
ज्वाला सी जलती थी जिनके
मस्तक पर रोली लाल लाल[1]
–तिलमिला उठे जल जीव जन्तु[2]
–जिन जाउ मले भरतार कुइलिया
कुहू कुहू कूकन लागी[3]
–कौन कौन से काम किये हैं
कहाँ किये कुछ तो समझादो[4]
–डेड़ मिनट की डेड़ बात में
डेड़ हजार किया करते हैं[5]
–जिसका सुहाग संगीनों से
छलनी छलनी कर छला गया[6]
–कमल कुन्द कचनार कली[7]
–कृमि क्लेश कुष्ट[8]
–व्यर्थ बकवाद बढ़ावे[9]
–बम के बादल बन[10]

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 101
2– उपरिवत्, पृष्ठ 90
3– उपरिवत्, पृष्ठ 202
4– एम. एल. ए. राज., पृष्ठ 5
5– उपरिवत्, पृष्ठ 8
6– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 23
7– पाण्डुलिपि :1. फौजी गठबंधन, पृष्ठ 17
8– शक्ति निदान, पृष्ठ 5
9– उपरिवत्, पृष्ठ 9
10– पाण्डुलिपि :1. फौजी गठबंधन, पृष्ठ 17

पहले उदाहरण में क, ज और ल वर्ण की, दूसरे में ज वर्ण की, तीसरे तथा चौथे उदाहरण में क वर्ण की, पाँचवे में ड वर्ण की, छटवें में छ वर्ण की, सातवें और आठवें में क वर्ण की तथा नवमें और दसवें उदाहरण में ब वर्ण की आवृत्तियों का चमत्कार है। अतः वृत्यनुप्रास की स्थिति बनती है। पाँचवें उदाहरण– 'डेड़ मिनट की डेड़ बात में डेड़हजार किया करते हैं' में 'डेड़' शब्द की पुनरावृत्ति करके कवि ने नेताओं की भर्त्सना की है। छटवें उदाहरण में 'छलनी–छलनी कर छला गया' कहकर कवि ने वृत्यनुप्रास की मनोरम सृष्टि की है।

3– अन्त्यनुप्रास

छन्दबद्ध काव्य पंक्ति के अंतिम वर्ण में अधिकांशतः तुकबन्दी का आयोजन सुनिश्चित होता है, यही तुकबन्दी अन्त्यनुप्रास के सृजन में सहायक होती है। छन्द की पंक्तियों में सौन्दर्य–समायोजन के उद्देश्य से अंतिम वर्ण में तो अनुप्रास होता ही है, साथ ही यदा–कदा काव्य पंक्ति के मध्य में व्यवहृत शब्दों के अंतिम वर्ण में समान स्थिति होने पर भी अन्त्यनुप्रास की स्थिति निर्मित होती है।

अन्त्यनुप्रास के कुछ उदाहरण निम्न प्रकार हैं–

–थीं तोप कड़क बिजली बिजली
बिकराल काल थीं नाल दार
घन गर्ज भवानी शंकरादि
प्रलयंकर थे जिनके प्रहार[1]
–यह मौत चली या प्रलय चला
या कोई काली बला चली
शोणित की करने महावृष्टि
या चमक चमक चंचला चली[2]

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 101

2– उपरिवत्, पृष्ठ 115

–थे रुण्ड कहीं थे मुण्ड कहीं
गिर पड़े झुन्ड के झुन्ड कहीं
हो गये धराशायी पल में
कट कट कर बाज वितुण्ड कहीं[1]

–भ्रष्ट हुई है कथा भागवत
नष्ट हुये रोजा नमाज़ हैं
बड़े भेद हैं बड़ी पोल है
बड़े राज हैं[2]

–खुलता है तो एक मुहकमा
पर बनते हैं चार मिनिस्टर
अगर मुहकमा नहीं बना तो
बना दिया बेकार मिनिस्टर[3]

–बोलो किसान मजदूरों ने
कब कब न राष्ट्र सम्मान किया
जब जब युग ने अँगड़ाई ली
तब तब हमने वलिदान किया[4]

–चुपके चुपके डाली निगाह
उनने चलते चलते मुझको[5]

प्रथम उदाहरण में बिजली–बिजली में 'ली', विकराल–काल में 'ल', नालदार–प्रहार में 'र', दूसरे उदाहरण में चली–काली–चली–चली में 'ली', चला–बला–चंचला में 'ला', चमक–चमक में 'क', तीसरे उदाहरण

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 116

2– एम. एल. ए. राज., पृष्ठ 9

3– उपरिवत्, पृष्ठ 24

4– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 10

5– उपरिवत्, पृष्ठ 23

में रुण्ड—मुण्ड—झुण्ड—झुण्ड—वितुण्ड में 'ड', कहीं—कहीं—कहीं—कहीं में 'हीं', चौथे उदाहरण में भ्रष्ट—नष्ट में 'ट', रोज़ा—नमाज़—राज़ में 'ज', बड़े—बड़ी—बड़े में 'ड़', पाँचवें उदाहरण में मुहकमा—मुहकमा में 'मा', चार—मिनिस्टर—बेकार—मिनिस्टर में 'र', छटवें उदाहरण में किसान—सम्मान—बलिदान में 'न', कब—कब, जब—जब, तब—तब में 'ब', मजदूरों ने— युग ने—हमने में 'ने' तथा सातवें उदाहरण में चुपके—चुपके में 'के' और चलते—चलते में 'ते' वर्णों में अन्त्यानुप्रास की स्थिति तुकान्त के साथ स्पष्ट है।

4– लाटानुप्रास

'जहाँ समान शब्दों की आवृत्ति होती है, परन्तु उनके विषयीभूत तात्पर्य में भिन्नता होती है, वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है।'[1] जब एक शब्द या वाक्य—खण्ड की आवृत्ति उसी अर्थ में हो, पर तात्पर्य या अन्वय में भेद हो, वहाँ लाटानुप्रास होता है।[2] तात्पर्य मात्र के भेद से शब्द और अर्थ दोनों की पुनरुक्ति को लाटानुप्रास कहते हैं।[3] उक्त तीनों कथन लगभग समान अर्थ का ही द्योतन करते हैं। इसमें शब्द और अर्थ तो एक जैसे ही होते हैं, पर कर्ता—कर्म—सम्बंध के स्तर पर उनका तात्पर्य भिन्न हो जाता है।

डॉ. आनन्द की रचनाओं में लाटानुप्रास का व्यवहार अपेक्षाकृत कम हुआ है। कतिपय उदाहरण दृष्टव्य हैं—

—यह था पानी में आसमान

या आसमान में पानी था[4]

1— बुंदेलखण्ड की रासो रचनाओं की काव्य भाषा का अनुशीलन— डॉ. मुकेशकुमार श्रीवास्तव, अप्रकाशित शोध प्रबंध, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, 1976ई., पृष्ठ 111

2— आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, डॉ. वासुदेव नन्दन प्रसाद, पृ.322

3— मानक हिन्दी व्याकरण और रचना, डॉ. हरिवंश तरुण, प्रकाशन संस्थान दयानन्द मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 2003ई., पृष्ठ 312

4— झाँसी की रानी, पृष्ठ 179

– लग रहा आग में पानी है
या पानी में लग रही आग[1]

– अपने तन की छाया तक भी
अपने तन में छिप गई आन[2]

– लाशें थीं पहाड़ों पे कि लाशों के थे पहाड़[3]

– यह माना कि बना सकते हो
तुम अपनी सोने की लंका
किन्तु न इतने पर भी अपना
लंका काण्ड बचा सकते हो[4]

– रक्षा दल का बड़ा भरोसा
रक्षा दल का भारी बल है
बड़ी कला है रक्षा दल में
रक्षा दल में छाया छल है[5]

– मानव में कितनी नृशंसता,
मानव में कितना क्षमादान।
मानव है कितना पतित और,
मानव ही है कितना महान।[6]

प्रथम उदाहरण में 'पानी' और 'आसमान' शब्द दो बार प्रयुक्त हुये हैं। प्रथम पानी जलाशय में भरे पानी का तथा दूसरा आकाश में जलपूर्ण मेघ का अर्थ द्योतन करते हैं। इसी प्रकार प्रथम आसमान जलाशय

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 188

2– उपरिवत्, पृष्ठ 188

3– उपरिवत्, पृष्ठ 198

4– एम. एल. ए. राज., पृष्ठ 26

5– उपरिवत्, पृष्ठ 12

6– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 1

में प्रतिबिम्बित आकाश का तथा द्वितीय आसमान गगन का अर्थवाची है। दूसरे उदाहरण में आग और पानी शब्द की आवृत्ति में लाटानुप्रास है। इन शब्दों के अर्थ का विवेचन करने पर इनमें अर्थ वैभिन्न्य प्रतीत होता है। तीसरे उदाहरण में तन की छाया का तन में ही अन्तर्निहित हो जाना वर्णित है। यहाँ प्रथम तन का बाह्य आकार से तथा द्वितीय तन का आभ्यन्तर से प्रयोजन सिद्ध है। अतः लाटानुप्रास की स्थिति निर्मित होती है। चौथे उदाहरण में एक ओर पहाड़ों पर लगा लाशों का ढेर तथा दूसरी ओर लाशों के ढेर में पहाड़ की प्रतीति अलग–अलग अभिव्यक्तियाँ हैं। यहाँ लाटानुप्रास है।

पाँचवें उदाहरण में लंका तथा लंकाकाण्ड में लंका शब्द की आवृत्ति से लाटानुप्रास की स्थिति निर्मित होती है। छठवें उदाहरण में रक्षादल तथा सातवें उदाहरण में मानव शब्द की पुनरावृत्ति तो है, किन्तु तात्पर्य की दृष्टि से पर्याप्त भिन्नता है। सारांशतः कहा जा सकता है कि उपरोक्त उदाहरणों में शब्द और अर्थ का साम्य व्यक्त करने वाले शब्दों की आवृत्ति होने पर भी उनके विषयीभूत तात्पर्य भिन्न हैं।

5– श्रुत्यनुप्रास

श्रुति से तात्पर्य सुनने से है। श्रोत्रिन्द्रिय को सुखानुभूति कराने वाली काव्य पंक्ति में प्रयुक्त अनुप्रास श्रुत्यनुप्रास कहलाता है। तालु, कण्ठ, मूर्धा तथा दन्त आदि में से किसी एक स्थान पर उच्चारित होने वाले व्यंजनों की समता जब किसी काव्य पंक्ति में होती है तब श्रुत्यनुप्रास अलंकार होता है।[1]

डॉ. आनन्द की रचनाओं में व्यवहृत श्रुत्यनुप्रास के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं–

–तब डगमग डगमग डोल उठा[2]

–स्वर्ग की सोपान सीमा को समेटे[3]

1– बुन्देलखण्ड की रासो रचनाओं की काव्यभाषा का अनुशीलन, पृ.112

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 200

3– उपरिवत्, पृष्ठ 221

–फिर निकल पड़ी फिर मचल पड़ी
चल पड़ी विज्जु सी कोंध–कोंध
कोंधा में लेकर कड़क कड़क में
चमक चमक में चकाचोंध[1]
–वह कवि ही कैसा कवि जिसकी
कविता का प्रकट भाव न हो[2]
–यह कमल कुन्द कचनार
कली के वन उपवन[3]
–सदाचार के गीत संसार को हम
सुनाते रहे हैं सुनाते रहेंगे[4]

पहले उदाहरण में डगमग, डगमग और डोल शब्दों में मूर्धन्य व्यंजन 'ड' की आवृत्ति से श्रुति माधुर्य की स्थिति उत्पन्न होती है। दूसरे तथा छठवें उदाहरण में 'स' की आवृत्ति द्वारा श्रुति मधुरता उत्पन्न हुई है। तीसरे उदाहरण में कण्ठ्य 'क' और तालव्य 'च' की आवृत्ति में श्रुत्यनुप्रास है। चौथे तथा पाँचवे उदाहरण में कण्ठ्य 'क' की आवृत्ति से श्रुत्यनुप्रास की स्थिति निर्मित है।

अनुप्रासमयता में ध्वनिगत संयोजन का सौन्दर्य भी डॉ. आनन्द की रचनाओं में विलक्षणता उत्पन्न करता है। इस प्रकार की विशिष्ट शब्दावली श्रोताओं एवं पाठकों को चमत्कृत तो करती ही है, मानस पर स्थायी प्रभाव भी छोड़ती है। आपकी रचनाओं में ध्वनिगत अनुप्रास मयता के कतिपय उदाहरण, जो शब्द के आदि, मध्य और अन्त में व्यवहृत हैं, निम्न लिखित हैं–

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 117

2– उपरिवत्, पृष्ठ 129

3– पांण्डुलिपि :1. फौजी गठबंधन, पृष्ठ 17

4– उपरिवत् : यही देश है वह, पृष्ठ 9

आदि

—कितना कल्पित वादा—विवाद
कल्पित विहर्ष कल्पित विषाद
केवल कोरा कल्पना वाद[1]
—कितनी कहाँ कतार लगा दी
कहाँ कहाँ रोटी लटका दी[2]
—चन्दू चन्दू कह कह कर
वह रात रात भर रोती है[3]
—घनघोर प्रलय की घटा
घुमड़ कर आती है[4]

प्रथम उदाहरण में 'कितना कल्पित', कल्पित विहर्ष, कल्पित विषाद तथा केवल कोरा कल्पनावाद' में 'क' की आवृत्ति से जीवन की अस्थिरता एवं क्षण भंगुरता का भाव अभिव्यंजित है तथा ध्वनिगत चमत्कार भी दृष्टव्य है। दूसरे उदाहरण में 'क' की समता द्वारा नेताओं के चरित्रका उदघाटन है। तीसरे उदाहरण में च, क तथा र की आवृत्ति द्वारा चन्द्रशेखर आजाद की माँ की व्यथा को चमत्कारिक ढंग से व्यक्त किया गया है। चौथे उदाहरण में चीनी प्रधानमंत्री चाऊ—इन—लाई को घ वर्ण की आवृत्ति द्वारा युद्ध की विभीषिका को प्रलय कालीन घन—घोर कहकर आश्चर्य चकित करने की प्रवृत्ति परिलक्षित है—

मध्य

—घड़याल मगर क्या कच्छ—मच्छ[5]
—फिर खद्दर की चद्दर पर वह[6]

1— झाँसी की रानी, पृष्ठ 223

2— एम. एल. ए. राज., पृष्ठ 6

3— सन् अड़तालीस, पृष्ठ 17

4— पाण्डुलिपि :1. हिमालय सीमा, पृष्ठ 3

5— झाँसी की रानी, पृष्ठ 90

6— एम. एल. ए. राज., पृष्ठ 2

–जिसके खातिर कितनी कलियां खिलते–खिलते ही कुम्हलाईं[1]

–जिसकी तड़पन जिसकी तेजी

जिसकी चढ़ान जिसकी उड़ान

जिसकी टापों से उलट–पलट

हो जाता था विधि का विधान[2]

उपरोक्त उदाहरणों में से प्रथम और द्वितीय उदाहरण के मध्य द्वित्व वर्ण 'च्छ' तथा 'द्द' की समता है। तृतीय उदाहरण में कलियां, खिलते, खिलते में 'ल' वर्ण तथा खातिर और कितनी में 'त' वर्ण द्वारा मध्य में ध्वनि साम्य प्रकट है। अंतिम चौथे उदाहरण में तड़पन तथा उड़ान में 'ड़' वर्ण, उलट, पलट में 'ल' वर्ण तथा पाँच बार, व्यवहृत 'जिसकी' शब्द के मध्य 'स' वर्ण की आवृत्ति रानी लक्ष्मीबाई के घोड़े का अप्रतिम सौन्दर्य व्यक्त करते हुये ध्वनिगत चमत्कार उत्पन्न करती है–

अन्त

–अंतिम दर्शन अंतिम प्रणाम

सुरपुर तक सारा धाम धाम[3]

–घर घर फैला यह समाचार

क्या डगर–डगर क्या गली–गली

दर्शन करलो दर्शन करलो

झाँसी की जीवन ज्योति चली[4]

–खिले फूल से धूल में खेलते हैं[5]

–अकुला–अकुला कर क्षण–क्षण पर

बिजली कौंध–कौंध उठती है

बार–बार विप्लव का बादल

ऊपर घुमड़–घुमड़ जाता है[6]

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 4

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 19

3– उपरिवत्, पृष्ठ 150

4– उपरिवत्, पृष्ठ 149

5– पाण्डुलिपि–1. बात आ गई है, छन्द क्र. 10

6– एम. एल. ए. राज., पृष्ठ 28

—लेकिन अब तो लैसन्स बिना

व्यापार हमारा बन्दी है

लैसन्स बिना यह जन्म सिद्ध

अधिकार हमारा बन्दी है[1]

उपरोक्त प्रथम उदाहरण में अंतिम, अंतिम, प्रणाम, धाम, धाम शब्दों में अंतिम 'म' वर्ण पर, सुरपुर, सारा शब्दों में अंतिम 'र' वर्ण पर अनुप्रासयुक्त ध्वनि संयोजन है। दूसरे उदाहरण में घर, घर, समाचार, डगर, डगर शब्दों में अंतिम वर्ण 'र' तथा फैला, गली, गली, करलो, करलो तथा चली शब्दों में अंतिम वर्ण 'ल' की आवृत्ति द्वारा अनुप्रासिक चमत्कार अभिव्यक्त है। तीसरे उदाहरण में खिले, फूल, धूल तथा खेल शब्दों में अंतिम वर्ण 'ल' की आवृत्ति है तथा चौथे उदाहरण में अकुला, अकुला, बिजली तथा बादल में 'ल' वर्ण , क्षण, क्षण में 'ण' वर्ण अनुनासिक व्यंजन, कौंध, कौंध में 'ध' वर्ण तथा घुमड़, घुमड़ में 'ड़' वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास आयोजित है। अंतिम पाँचवें उदाहरण में लैसन्स, लैसन्स में 'स', व्यापार, अधिकार, हमारा, हमारा में 'र', बन्दी, बन्दी में 'द' तथा बिना, बिना में 'न' वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रासयुक्त ध्वनि संयोजन किया गया है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शब्दालंकारों में शब्दों के माध्यम से काव्य पंक्तियों में चमत्कार का सायास सृजन पाठकों एवं श्रोताओं को चमत्कृत करने के उद्देश्य से किया जाता है, भले ही अर्थ—पक्ष निर्बल हो गया हो। अलंकारों की सृष्टि पाठक को चमत्कृत तो कर सकती है, किन्तु सौन्दर्य बोध उत्पन्न नहीं कर सकती। वस्तुतः अनुप्रासयुक्त काव्य—पंक्ति द्वारा कवि श्रोता या पाठक में एक लयात्मक संवेदन उत्पन्न करने का प्रयास करता है। वर्णों की आवृत्ति को अनुप्रास आयोजन में प्राथमिकता दी जाती है।

1— सन् अड़तालीस, पृष्ठ 13

घ- काव्य-भाषा में चित्रमयता एवं नादात्मकता

डॉ. आनन्द की काव्य भाषा सहज, सरल होते हुए भी अर्थ–गाम्भीर्य से पुष्ट है। भावात्मक साहित्यिक गरिमा तथा युग सापेक्ष्य चिंतन उनकी भाषा को हृदयग्राही स्वरूप प्रदान करताहै। उनकी भाषा में अनुभूतियों को बिम्बों में प्रस्तुत करने का नैपुण्य झलकता है। आपकी काव्य–भाषा में भाव–सुषमा है, शब्द–चातुरी है तथा चित्रमयता एवं नादात्मकता भी है। जहाँ वे शब्दों के सुघर शिल्पी की तरह शब्द–चित्र निर्मित करते हैं, वहीं ओजपूर्ण रचनाओं में नादात्मकता का संयोजन भी सुलभ कराते हैं। आपकी रचनाओं की भाषा में शब्द–सौन्दर्य, भाव–सौन्दर्य के साथ ध्वनि–सौन्दर्य तथा नाद–सौन्दर्य भी विद्यमान है।

चित्रमयता

काव्य में चित्रमयता की सृष्टि के लिए बिम्ब विधान आवश्यक होता है। 'इस प्रक्रिया में कवि बिम्बों और प्रतीकों का आश्रय ग्रहण करता है, क्योंकि प्रतीक और बिम्ब अप्रस्तुत रूप में प्रस्तुत के स्थानापन्न होते हैं।'[1] बिम्ब और प्रतीक से ही कविता में सौन्दर्य की सृष्टि होती है। बिम्ब रहित कविता को या तो वक्तव्य कहा जा सकता है या फिर सपाट बयानी। डॉ. नगेन्द्र भी काव्य–भाषा में चित्रमयता के लिए बिम्ब योजना को अपरिहार्य मानते हैं। 'बिम्ब कल्पना कवि वर्ण्य का मनसा साक्षात्कार कराती है, तत्पश्चात् भाषा में चित्रमयता का समावेश कर श्रोता के मनःचक्षु के समक्ष उसे प्रत्यक्ष भी कर देती है।'[2]

'कवि बिम्बों के माध्यम से अपने भावों को संप्रेष्य बनाता है। कविता ही नहीं समस्त कला–सृजन में बिम्बात्मक चिंतन को अंगीकार किया गया है। बिम्बों के द्वारा ही कलाकार अथवा साहित्यकार अपने भाव–

1– मध्यकालीन हिन्दी काव्य भाषा, रामस्वरूप चतुर्वेदी, पृष्ठ 29

2– काव्य में उदात्त तत्व, डॉ. नगेन्द्र, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1961ई. पृष्ठ 19

अनुभवों का मूर्तिकरण करता है।'[1] डॉ. आनन्द की रचनाओं में वस्तु बिम्ब, रूपबिम्ब, दृश्य बिम्ब, शब्द बिम्ब तथा अलंकृत बिम्ब यत्र–तत्र बिखरे पड़े हैं। आपकी रचनाओं में व्यवहृत शब्द विविध अर्थ एवं चित्रों की अनुपम सृष्टि करते हैं। इनके द्वारा निर्मित शब्द–चित्र अत्यंत आकर्षक, सहज और सजीव होते हैं। आपकी रचनाओं की भाषा में प्रकृति चित्रण, शारीरिक गठन, भावुकता, अन्याय, सामरिक–सन्नद्धता, पराजय तथा वैराग्य भावना से सम्बंधित चित्रमयता उपलब्ध होती है।

1– प्रकृति चित्रण

कविवर डॉ. आनन्द संवेदनात्मक सहज भावनाओं के कुशल चितेरे हैं। प्राकृतिक उपादानों के माध्यम से वे अपनी रचनाओं में प्राकृतिक दृश्यों को रूपायित करते हैं। उनके प्राकृतिक चित्रण मार्मिक एवं हृदयाकर्षक हैं। आपकी रचनाओं में समायोजित कतिपय प्राकृतिक चित्रण निम्नवत् प्रस्तुत हैं–

–रवि को अस्ताचल में निहार,
चकवी अकुलाई जाती थी।
या एक मानसर की सरोजनी
सी कुम्हलाई जाती थी।।[2]

–रवि की प्रचंड किरनें तपकर,
भू पर बरसाने लगीं आग।
कोमल कलियों की क्या बिसात,
जल उठा आम्रवन का पराग।।[3]

1– जिन्दगी की आंच और रंग, सम्पादक गुरुचरण सिंह, आलेख– कविता का रचनात्मक विश्लेषण, डॉ. राहुल, पृष्ठ 178

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 32

3– उपरिवत्, पृष्ठ 187

– फूल फूलने लगे –पात झूमने लगे,
क्यारियाँ महक उठीं – बुलबुलें चहक उठीं।
ताकने लगा गगन –झांकने लगी किरन,
मंद मंद डोलने लगा प्रभात का पवन।।[1]

– एक मचलता हुआ प्रभंजन देखो इधर चला आता है।
धरती डगमग डोल रही है व्योम–व्योम पर थर्राता है।।
अकुला–अकुला कर क्षण–क्षण पर बिजली कौंध–कौंध उठती है।
बार–बार विप्लव का बादल ऊपर उमड़ घुमड़ जाता है।।[2]

– सूखे धान खेत सब सूखे,
सूख गई युग की हरियाली।
तुम कागज की ही फायल में,
रहे हजारों कुएँ खुदाते।।[3]

– जिसके कि हाथ किसलय कलि से।
जिसके कि पाँव कोंपल समान।।[4]

– जिसकी खातिर कितनी कलियाँ खिलते–खिलते ही कुम्हलाईं।
कितनी बहिनें निज भाई के राखी तक बाँध नहीं पाईं।।[5]

– बिहँस रही होंगी कानन में रंग बिरंगी कलियाँ भोली।
जिन पर बलि–बलि जाती होगी मत्त हुई मधुपों की टोली।।
चलते–चलते तुम्हें राह में वह मंजिल भी आ जायेगी।
किसी डाल पर कुहू–कुहू जब गीत कोइलिया गा जायेगी।।[6]

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 179

2– एम. एल. ए. राज., पृष्ठ 28

3– उपरिवत्, पृष्ठ 2

4– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 2

5– उपरिवत्, पृष्ठ 4

6– पांडुलिपि :1. याद किसी की आ जायेगी, पृष्ठ 27

उपर्युक्त प्राकृतिक चित्रण के अन्तर्गत प्रथम उदाहरण में झाँसी नरेश गंगाधर राव की मरणासन्न स्थिति को, अस्ताचल गामी रवि को देखकर व्याकुल चकवी तथा मानसरोवर की कुम्हलाई सरोजनी द्वारा चित्रांकित किया गया है। यहाँ सूर्य, चकवी तथा सरोजनी के अप्रस्तुत बिम्बों द्वारा नरेश की आसन्न मृत्यु से वेदनाग्रस्त रानी का चित्र अंकित है। द्वितीय उदाहरण में ग्रीष्म ऋतु के भयंकर आतप एवं प्रचण्ड वायु–वेग को कोमल कलियों एवं आम्रवन के पराग के दग्ध होने से चित्रित किया गया है।

प्राकृतिक उपादानों द्वारा काव्य में हर्ष विषाद तथा संयोग–वियोग के आरेखन की परम्परा बहुत प्राचीन है। तृतीय उदाहरण में **'झाँसी की रानी'** महाकाव्य में डॉ. आनन्द ने शत्रु के निकट आने पर योद्धाओं के हर्षोत्साह को पुष्पों का पुष्पित होना, पातों का झूलना, क्यारियों का महकना, बुलबुलों का चहकना, गगन का ताकना, किरन का झाँकना तथा प्रभात कालीन पवन का मंद–मंद डोलना कहकर एक दृश्य प्रस्तुत किया है।

चौथे उदाहरण में कवि ने प्रभंजन, धरती, व्योम, बिजली तथा बादल की अप्रस्तुत बिम्ब योजना द्वारा विधायकों अथवा नेताओं की दूषित एवं घृणित गतिविधियों से त्रस्त मानवता का दृश्य प्रस्तुत किया है। पाँचवें उदाहरण में भी नेताओं की शोषण प्रवृति को यह कहकर रेखांकित किया गया है कि आप फाइलों में हजारों कुएँ खुदवाते रहे और धान के खेत तथा सारी हरियाली सूख गई। यह पढ़कर ग्रामीणों की विदीर्ण कृषि व्यवस्था का करुण चित्र नेत्रों के सम्मुख उपस्थित हो जाता है।

छठवें उदाहरण में **'किसलय कलि'** के समान कोमल हाथ तथा कोंपल के समान कोमल पाँव बतलाकर कवि ने सद्यः उत्पन्न स्वराज रूपी बालक का चित्र खींचा है। सातवें उदाहरण में आजादी के लिए नवयुवकों द्वारा दी गई कुर्वानी को दर्शाने की चेष्टा की है। यहाँ कलियों का खिलते–खिलते ही कुम्हला जाना तथा बहिनों का भाई के हाथ में राखी न बाँध पाना, भारतीय युवतियों की विवशता एवं दयनीयता का कारुणिक

दृश्यांकन किया गया है। इसी तरह अंतिम आठवें उदाहरण में कवि ने प्राकृतिक उपादानों– जैसे : कलियाँ, मधुप तथा कोयल के अप्रस्तुत बिम्बों द्वारा उद्दीपन का चित्र प्रस्तुत किया है। कानन में बिहँसती रंग–बिरंगी कलियाँ, कलियों पर मँडराती मत्त मधुपों की कतार तथा डाल पर बैठी कुहू–कुहू करती कोयल देखकर किसी युवती के मन में अपने प्रिय की मादक स्मृति व्यथित करने लगेगी।

2– शारीरिक सौष्ठव

शरीर के आंगिक सौन्दर्य वर्णन की मनोवृत्ति रीतिकालीन कवियों की विशिष्टता रही है। नायिका के अंग–प्रत्यंगों की मनोहारी छवि का चित्रांकन रीति काव्य में भरा पड़ा है। राज्याश्रय से कवियों की इस मनोवृत्ति को पर्याप्त पोषण मिलता रहा। डॉ. मुकेश श्रीवास्तव के मतानुसार– 'साज–सज्जा एवं शारीरिक सौन्दर्य–निरूपण की परम्परा साहित्य में पूर्व से ही रही है, जिसे मध्यकालीन काव्य में विशेष पोषण मिला।'[1] आधुनिक काल के कवियों में भी कमोवेश रूप में यह प्रवृत्ति पाई जाती है। श्रृंगारिक वर्णन में शारीरिक अंग–सौष्ठव के अनगिनत चित्र उपलब्ध हैं। संयोग तथा वियोग दोनों वर्णनों में आंगिक सौन्दर्य महत्वपूर्ण है।

डॉ. आनन्द की रचनाओं में शारीरिक सौन्दर्य–निरूपण के आकर्षक एवं मनोहारी चित्र यत्र–तत्र मिलते हैं। आप मूलतः ओज के कवि हैं, फिर भी यदा–कदा श्रृंगार पर भी आपकी लेखनी चली है। शारीरिक सौन्दर्य के चित्र आपकी कृतियों में निम्नवत् उपलब्ध हैं–

–तुम देख किसी का नव यौवन,
मन ही मन भरने लगे आह।
नेता होकर भी युवती पर,
चुपके–चुपके डाली निगाह।।[2]

1– बुन्देलखण्ड की रासो रचनाओं की काव्य भाषा का अनुशीलन, पृ.128

2– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 18

—बैस लरकाईं के कहाँ हैं वह हाव—भाव,
भृकुटि—कमान, नैन—वान क्या बिला गये।
क्या हुई वो मोतियों से सौ—गुनी दसन दुति,
गोल गोल कोमल कपोल कुम्हला गये।।
आज वो कहाँ हैं अनयारे मतवारे दृग,
ओज भरे शंभु से उरोज वो कहाँ गये।।[1]

—चितवन में गोरे गात लिये,
टापों में झंझावात लिये।
घोड़ा निकला घोड़ा निकला,
खूनी—खूनी बरसात लिये।।[2]

अबरू न रही न वो आँख रही,
न वो हुश्न रहा न निशानी रही।
न वो नाज़ रहा न वो बात रही,
न वो झूमती मस्त जवानी रही।[3]

—कल फूले कपोल गुलाब से थे।
वही आज पड़े कुम्हला रहे हैं।।
शशि, दाड़िम, कीर अनंद से अंग।
न जाने कहाँ को बिला रहे हैं।।[4]

प्रथम उदाहरण में युवती के आकर्षक यौवन का मनोहारी चित्र अंकित कर कवि ने नेताओं की कामुक दृष्टि का वर्णन किया है। द्वितीय उदाहरण उम्र की ढलान पर गत युवावस्था के अनुपम सौन्दर्य का स्मृति चित्र है। इस चित्र में युवावस्था के हाव—भाव, भौंह, नेत्र, दसन—द्युति,

---

1— पांण्डुलिपि :2. , पृष्ठ 27

2— झाँसी की रानी, पृष्ठ 19

3— पांण्डुलिपि :2. , पृष्ठ 34

4— उपरिवत्, पृष्ठ 36

कपोल तथा पीन उरोजों का रेखांकन किया गया है। तीसरे उदाहरण में रानी लक्ष्मीबाई के घोड़े का शरीर–सौष्ठव वर्णित है। उसकी चितवन का, टापों का तथा उसकी अप्रतिम वीरता का अनुपम चित्र रेखांकित किया गया है। चौथे उदाहरण में प्रेमिका के अंग–प्रत्यंगों– अबरू (भौंह), आँख, सौन्दर्य, आकर्षक चेष्टायें तथा मादक युवावस्था के ह्रास का वर्णन है। युवावस्था में जो आंगिक सौन्दर्य पराकाष्ठा पर था, वही वृद्धावस्था में परिवर्तित या आकर्षण रहित हो गया। अंतिम पाँचवें उदाहरण में शारीरिक सौष्ठव का ह्रासोन्मुखी वर्णन है। युवावस्था के गुलाब सदृश फूले कपोल वृद्धावस्था में झुर्रियों वाले हो गये। चन्द्रमा जैसा मुख, अनारदाना जैसे दाँत तथा तोते जैसी नासिका अब न जाने कहाँ विलुप्त हो गये हैं।

3– भावानुकूलता

साहित्य के प्रति डॉ. आनन्द की अनन्य अभिरुचि थी। इनके काव्य में अनुभूति की गहराई से उत्पन्न विविध भाव–चित्रों का आयोजन हुआ है। कहीं हर्षोल्लास है, सहानुभूति है तो कहीं आक्रोश, क्षोभ एवं करुणा रूपायित हुई है। कहीं राष्ट्रप्रेम चित्रित है तो कहीं सामाजिक सद्भावना परिलक्षित है। डॉ. आनन्द के काव्य में भाव–चित्रों का छायांकन निम्न प्रकार प्रस्तुत है–

–मेरे सिर पर छाया करदे जो वीर भूमि निज कर पसार।
करती है तेरे चरणों पर अबला नत मस्तक नमस्कार।।
दिन भर का यह भूखा बालक मैं जिसे दिखाने लाई हूँ।
वह स्वतंत्रता छिप गई कहाँ मैं उसे ढूँढ़ने आई हूँ।।[1]

–रानी इधर से आ गई बनकर कराल काल।
तो डगमगा उठे सभी आकाश क्या पताल।।
भृकुटी हुई थीं बंक बिखरने लगे थे बाल।
माथे पै बल पड़े हुये आँखें थीं लाल–लाल।।[2]

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 178

2– उपरिवत्, पृष्ठ 197

–भूखा पेट बिहार दिखाकर संगीनें गोली खाता है।

भूखा बिन्ध्यप्रदेश हमारा चीख रहा है चिल्लाता है।।

उस भूखी माता से पूछो जिसका सात साल का बालक,

भूखा तड़प–तड़प कर रोटी माँग–माँग कर मर जाता है।।[1]

–सुन लो अब चेत गये हम भी।

वह अलख जगाकर मानेंगे।।

इस दूषित नेता शाही को।

हम आग लगाकर मानेंगे।।

ताना शाही बर्बरता का हम।

तख्त पलट दें जो न आज।।

हम कवि ही नहीं कि दुनियाँ का।

इतिहास पलट दें जो न आज।।[2]

–फिर सुना कि वे आजादी की।

संगीनों पर जा मुस्काये।।

आजादी तो आ गई किन्तु।

बाबू जी लौट नहीं पाये।।[3]

प्रथम उदाहरण में करुणा विगलित हृदय से वीर–बुन्देल भूमि को नत मस्तक होकर प्रणाम करती हुई महारानी लक्ष्मीबाई का कारुणिक चित्रांकन है। द्वितीय उदाहरण में लक्ष्मीबाई की क्रोधाविष्ट स्थिति का चित्र है, जिसमें उनके अरुणिम नेत्र एवं वंकिम भृकुटि की भयंकरता एवं विकरालता दर्शाई गई है। तृतीय उदाहरण में दरिद्रता का भावमय चित्र है, इसमें बिन्ध्य प्रदेश एवं बिहार प्रान्त में भुखमरी के कगार पर खड़ी जनता का प्राणान्तक अत्याचार सहना तथा स्वराज्य रूपी सात वर्ष के बालक का

3– एम. एल. ए. राज., पृष्ठ 14

4– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 19–20

5– उपरिवत्, पृष्ठ 23

भूख के कारण तड़प–तड़प कर मर जाना रेखांकित है। चौथे उदाहरण में नेताओं के प्रदूषित आचरण एवं तानाशाही बबर्रता के विरुद्ध क्रान्तिकारी आन्दोलन को आरेखित करते हुए कवि का इतिहास पलट देने का संकल्प चित्रांकित है। अंतिम पाँचवें उदाहरण में वीरों का राष्ट्रीय प्रेम भावना से ओत–प्रोत होकर हँसते–हँसते फाँसी के तख्ते पर झूल जाना रेखांकित है।

4– विविध चित्र

डॉ. आनन्द के काव्य में शब्द चित्र, भावचित्र, व्यंग्य चित्र, वस्तुचित्र तथा रूपचित्र आदि विविध प्रकार के चित्रों का संयोजन उपलब्ध है। उनमें कतिपय चित्र निम्न हैं–

–जैसा चाहा बजट बनाया,
जो चाही योजना बनादी।
छात्रों की कोमल छाती पर,
जब चाहा गोली चलवादी।।
देशभक्त भारत वीरों को,
ठूँस–ठूँस कारागारों में।
फिर बापू के रामराज की,
गाँव–गाँव डुग्गी पिटवादी।।[1]
–रण छोड़–छोड़ कर भागे,
क्या मिकलीजन क्या बाकर।
बैठे निज–निज खोहों में,
सब के सब प्राण बचाकर।।[2]
–हम तुम मारग के साथी थे,
मारग में ही हो बिलग चले।
मारग के ही नियमानुसार,
तुम अलग चलीं हम अलग चले।।[3]

1– एम. एल. ए. राज., पृष्ठ 15

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 124

3– उपरिवत्, पृष्ठ 33

प्रथम उदाहरण में कवि ने अन्याय को चित्रांकित किया है, जिसमें काँग्रेसी नेताओं की अमानुषिकता एवं भारत की भोली भाली जनता के प्रति उनकी क्रूरता एवं नृशंशता चित्रित है। दूसरे उदाहरण में पराजय का भाव–चित्र है, जिसमें रानी लक्ष्मीवाई के युद्ध कौशल से पराजित होकर अंग्रेज सेन्याधिकारियों का पलायन दर्शाया गया है। अंतिम तृतीय उदाहरण में वैराग्य भावना का रेखाचित्र अंकित है। इसमें राजा गंगाधर राव अपनी मरणासन्न स्थिति में रानी को निर्वेद का ज्ञानार्जन कराते हैं।

नादात्मकता

'कथन को प्रभावी बनाने के लिए कवि नादात्मकता या नाद–व्यंजना का आश्रय लेते हैं। एक ही पटरी पर चलते–चलते भाषा की सरसता और शक्ति में कमी आ जाती है, तब नाद गुण द्वारा भाषा में प्रभावात्मकता और सम्प्रेषण की विशेष शक्ति उत्पन्न की जाती है।'[1] डॉ. आनन्द की रचनाओं में नादात्मकता के विपुल उदाहरण उपलब्ध हैं। जहाँ–जहाँ युद्ध की भीषणता, क्रान्तिकारी आन्दोलन एवं नेताशाही के विरुद्ध संघर्ष का वर्णन है, वहाँ नाद–योजना द्वारा कवि ने ओजयुक्त संदर्भों की सृष्टि की है। जहाँ कहीं वातावरण को, योद्धाओं को तथा युद्धकालीन परिस्थितियों को उत्तेजक बनाने के लिए कवि ने काव्य–भाषा को प्रखरता एवं कठोरता मूलक शब्दों से सवाँरा है, वहाँ सहज रूप से नादात्मकता का आविर्भाव हो गया है।

डॉ. आनन्द के काव्य में नादात्मकता के निम्नलिखित प्रकार उपलब्ध हैं–

1– प्राकृतिक नाद योजना

युद्ध की भयंकरता, हथियारों की कठोरता एवं सैन्य संचालन के समय योद्धाओं की कर्कश ध्वनि को प्रकृति की भीषणता के साथ सम्बद्ध

1– बुन्देलखण्ड की रासो रचनाओं की काव्यभाषा का अनुशीलन, डॉ. मुकेश कुमार श्रीवास्तव, पृष्ठ 131

करके कवि ने कठोर ध्वन्यात्मक शब्दावली का प्रयोग कर नादात्मकता का आयोजन किया है। इस प्रकार के युद्ध वर्णनों की एक प्राचीन परम्परा है। डॉ. आनन्द की रचनाओं में प्राकृतिक नादात्मकता निम्नवत् उपलब्ध है–

–सागर जल थर–थर काँप उठा,
जब यह जंगी जलयान चला।
डग–मग,डग–मग हिल उठा गगन,
आँधियाँ चलीं तूफान चला।।[1]

–दल पर दल सेना पर सेना,
सरिता सी आई उमड़–घुमड़।
या दैव कोप से प्रलय मेघ,
आ गये घिर गये घुमड़–घुमड़।।[2]

–रवि की प्रचण्ड किरनें तपकर,
भू–पर बरसाने लगीं आग।
कोमल कलियों की क्या बिसात,
जल उठा आम्रवन का पराग।।[3]

–एक मचलता हुआ प्रभंजन देखो इधर चला आता है।
धरती डगमग डोल रही है व्योम व्योम पर थर्राता है।।
अकुला अकुला कर क्षण–क्षण पर बिजली कौंध–कौंध उठती है।
बार–बार विप्लव का बादल ऊपर घुमड़ घुमड़ जाता है।।[4]

–चिल्ला चिल्लाकर कहती हैं मंदिर, मस्जिद की मीनारें।
अन्यायों से चीख रहे हैं गुरुद्वारों के दर दीवारें।।
आज देश में गिरजाघर का कंकड़–कंकड़ काँप रहा है।
आँसू बनकर बह निकली है वह गंगा यमुना की धारें।।[5]

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 90

2– उपरिवत्, पृष्ठ 102

3– उपरिवत्, पृष्ठ 187

4– एम. एल. ए. राज., पृष्ठ 28

5– उपरिवत्, पृष्ठ 8–9

प्रथम उदाहरण में ब्रिटिश युद्धपोत के वेगपूर्ण प्रस्थान से सागर जल का थर–थर काँपना, आकाश का डगमग–डगमग हिल उठना तथा आँधी और तूफान का चल पड़ना चित्रित करके कवि ने प्राकृतिक उपादानों में नादात्मकता का आयोजन किया है। द्वितीय उदाहरण में युद्ध के मैदान में एकत्रित सैन्य–समूह का घुमड़ती नदी से तथा प्रलय कालीन मेघों के घुमड़–घुमड़ कर घिरने से साम्य स्थापित किया गया है। तीसरे उदाहरण में सूर्य के प्रचण्ड आतप से पृथ्वी पर आग बरसना तथा कोमल कलियों के साथ आम्रवन का पराग जल उठना चित्रित करके युद्ध की भीषणता का नादात्मक चित्र प्रस्तुत किया है। चौथे उदाहरण में काँग्रेसी नेताओं के विरोध में जनसमूह के उमड़ने को प्रभंजन के मचलने, धरा के डोलने, व्योम के काँपने, बिजली के बार–बार कौंधने तथा विप्लव–बादलों के घुमड़ने से साम्य चित्रित करके नादात्मक सौन्दर्य का सृजन हुआ है। अंतिम पाँचवें उदाहरण में काँग्रेसी जनप्रतिनिधियों के दमन एवं शोषण से मंदिर–मस्जिद की मीनारों, गुरूद्वारों तथा गिरजाघरों के काँपने का और निर्धन जन समूह के कारुणिक रुदन का चित्र उपस्थित हुआ है। उपरोक्त समस्त उदाहरणों में नादात्मक सौन्दर्य विद्यमान है।

चौथे तथा पाँचवें उदाहरण में व्योम–व्योम, अकुला–अकुला, क्षण–क्षण, कौंध–कौंध, बार–बार, घुमड़–घुमड़, चिल्ला–चिल्लाकर तथा कंकड़–कंकड़ आदि प्रयुक्त द्विरुक्तियाँ अर्थाभिव्यक्ति को सबल बनाती हैं।

2– अस्त्र–शस्त्र सम्बंधी नाद

डॉ. आनन्द ने अपने काव्य में जहाँ भी युद्ध को रूपायित किया है, वहाँ अस्त्र–शस्त्र सम्बंधी वर्णनों में नादात्मकता का आयोजन अनिवार्य रूप से हुआ है। कतिपय उदाहरण दृष्टव्य हैं–

–थी झपट कहीं झंकार कहीं,
प्रतिबिम्ब कहीं था वार कहीं।
था एक प्रलय का चमत्कार,
थी मार कहीं तलवार कहीं।।[1]

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 14

–थीं तोप कड़क बिजली बिजली,

विकराल काल थीं नालदार।

घन गर्ज, भवानी शंकरादि,

प्रलयंकर थे जिनके प्रहार।।[1]

–थीं गिरीं कहीं तेगा बनकर,

तो कहीं छुरीं सी फूट पड़ीं।

घनगर्ज तोप के साथ–साथ,

रानी बिजली सी टूट पड़ी।।[2]

–तब लगे बरसने लाल–लाल,

गोले पर गोले धुआँधार।[3]

प्रथम उदाहरण में प्रलय का चमत्कार उत्पन्न करने वाली रानी लक्ष्मीबाई की तलबार का नादयुक्त गतिचित्र प्रस्तुत है। द्वितीय उदाहरण में तोप की कड़क का नादात्मक सौन्दर्य विद्यमान है। तृतीय उदाहरण में रानी की तीव्र गति का तेगा, छुरी, तोप तथा बिजली से साम्य वर्णित कर नादात्मकता की सृष्टि की गई है। अंतिम चौथे उदाहरण में गोलों की धुआँधार वर्षा का चित्रण किया गया है।

3– युद्ध क्षेत्र की नादात्मकता

युद्ध क्षेत्र में वीर योद्धा युद्ध प्रारम्भ की घोषणा बिगुल बजाकर करते हैं तथा कभी–कभी शत्रु को अपने से हीन बतलाकर ललकारते हैं। युद्ध के नगाड़ों की भीषण ध्वनि से भी नादात्मकता का सृजन होता है। अस्त्रों, शस्त्रों के प्रहार की ध्वनियाँ भी नाद उत्पन्न करती हैं। योद्धाओं के शरीर क्षत–विक्षत होने पर युद्ध भूमि में करुण चीत्कार होता है, जिससे नादात्मकता उत्पन्न होती है।

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 101

3– उपरिवत्, पृष्ठ 110

4– उपरिवत्, पृष्ठ 109

डॉ. आनन्द के काव्य में नादात्मकता के कतिपय उदाहरण निम्न लिखित हैं–

–जाग–जाग टोलियाँ – बोल उठीं बोलियाँ।
जय कराल कालिके– जयति मुण्ड मालिके।।
राष्ट्र के घमण्ड जय– तेज मारतण्ड जय।
चण्डिके प्रचण्ड जय–जयति जय बुन्देलखण्ड।।[1]

–चलती कटारियाँ थीं करेजों को फाड़–फाड़।
घोड़ों के सिर गिरे कटे हाथी उठे चिंघाड़।।
कट–कट के शूर सैकड़ों गिरते थे ताड़–ताड़।
लाशें थीं पहाड़ों पै कि लाशों के थे पहाड़।।[2]

–फिर लगी नाचने रण चण्डी,
खप्पर भरने रण प्रांगण में।
ले–लेकर प्राण हथेली पर,
आ गये शूर समरांगण में।।[3]

प्रथम उदाहरण में योद्धाओं द्वारा टोलियाँ बनाकर विजय–ध्वनि की गम्भीर गर्जना करना नादात्मकता का आयोजन है। द्वितीय उदाहरण में कलेजों के फटने की, हाथियों के चिंघाड़ने की तथा शूरवीरों के युद्ध भूमि में गिरने की ध्वनियों ने नादात्मकता उत्पन्न की है। अंतिम तृतीय उदाहरण में युद्ध के दृश्य की भयंकरता दर्शनीय है, जिसमें योद्धा लोग अपने प्राणों को हथेली पर रखकर युद्ध–क्षेत्र में प्राणोत्सर्ग हेतु सन्नद्ध हैं।

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 181

2– उपरिवत्, पृष्ठ 198

3– उपरिवत्, पृष्ठ 211

ड.– काव्य भाषा में व्याकरणिक कोटियों का मूल्यांकन :

व्याकरण, भाषा का विश्लेषण करके उसके स्वरूप को स्पष्ट करता है।[1] व्याकरण से भाषा नियंत्रित होती है।[2] भाषा का आधार वाक्य हैं, वाक्यों का गठन शब्दों के माध्यम से होता है तथा शब्द मूल ध्वनियों से निर्मित होते हैं। इस तरह व्याकरण की सीमा में ध्वनि, शब्द, पद, वाक्यांश तथा वाक्य रहते हैं। यहाँ डॉ. आनन्द के काव्य की भाषा की व्याकरणिक कोटियों का मूल्यांकन शब्द से लेकर वाक्य गठन तक प्रस्तुत है।

रूपान्तर की दृष्टि से शब्द के दो भेद हैं। विकारी तथा अविकारी। विकारी शब्दों में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया–रूप, लिंग, वचन तथा कारक के अनुसार परिवर्तित रहते हैं। अविकारी शब्दों में क्रिया विशेषण, सम्बंध बोधक, समुच्चय बोधक तथा विस्मयादि बोधक– रूप, लिंग, वचन तथा कारक के अनुसार अपरिवर्तित रहते हैं।

विकारी शब्दों का विवेचन निम्नवत् प्रस्तुत है–

संज्ञा– संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते हैं, जिससे किसी विशेष वस्तु, भाव और जीव के नाम का बोध हो। यहाँ 'वस्तु' शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में हुआ है, जो केवल प्राणी और पदार्थ का वाचक नहीं वरन् उनके ध र्मों का भी सूचक है।[3]

पाणिनि पद्धति में नाम संज्ञा का पर्याय है। हिन्दी में जाति, व्यक्ति तथा भाव संज्ञा के भेद हैं।[4]

1– अभिनव हिन्दी व्याकरण तथा निबंध रचना, श्रीमती सुमित्रादेवी गुप्ता, आशा प्रकाशन गृह, करोल बाग, नई दिल्ली, 1964ई., पृष्ठ 4

2– आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, डॉ.वासुदेवनन्दन प्रसाद, पृ.3

3– उपरिवत्, पृष्ठ 68

4– हिन्दी शब्दानुशासन, आचार्य किशोरीदास बाजपेयी, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सन् 1966, पृष्ठ 173

इस तरह संज्ञा के तीन भेद—व्यक्ति वाचक, जाति वाचक तथा भाव वाचक हैं। डॉ. आनन्द के काव्य में संज्ञाओं की उपलब्धि निम्न प्रकार है—

1– व्यक्ति वाचक

किसी प्राणी, वस्तु, व्यक्ति या स्थान के नाम को व्यक्ति वाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे— घनगर्ज (तोप) वीरजा (पुस्तक), बिसमिल, कालपी, बेतवा, हिमालय आदि।

उपर्युक्त नामों द्वारा किसी विशेष वस्तु, विशेष नाम, विशेष नदी तथा विशेष स्थान का बोध हो रहा है। अतः ये व्यक्ति वाचक संज्ञायें हैं।

डॉ. आनन्द की रचनाओं में व्यक्ति वाचक संज्ञा के उक्त सभी रूप उपलब्ध हैं।

अ– **वस्तु :** (तोप) घनगर्ज, भवानी, शंकर, कड़क, बिजली[1]

ग्रन्थ : वीरजा[2]

ब– **व्यक्ति : पुरुष–** गुरू बख्श, बख्शिस अली [3], चन्द्रशेखर 'आजाद'[4], यकबाल, मीर, गालिब, अनीस[5], मोरोपंत,

---

1— झाँसी की रानी, पृ.101— **'थीं तोप कड़क विजली, बिजली'**
'घनगर्ज, भवानी, शंकरादि'

2— पांडुलिपि—1. याद किसी की आजायेगी, पृ.28
'जो कि वीरजा तुम्हें सुनाकर तुमको वीर बना जायेगा'

3— झाँसी की रानी, पृ.70, **'गुरूबख्श नाम का नायक था'**
'झाँसी में बख्शिस अली एक'

4— सन् अड़तालीस, पृ.17, **'आजाद चन्द्रशेखर ही था'**
'जो उस दल का सम्राट बना'

5— पांडुलिपि—1. फौजी गठबंधन, पृ.16, **'यकबाल, मीर, गालिब, अनीस के यह कलाम'**

नरसिंहराव, लाहौरीमल[1], चन्द्रगुप्त[2], हिटलर, मुसोलिनी[3], भगतसिंह[4]

स्त्री– लक्ष्मीबाई[5], सुन्दरा[6], मुमताजपरी[7], नूरजहाँ[8]

स– स्थान : जालवन (जालौन)[9], कालपी[10], गोपालपुर[11], आगरा[12], भाण्डेर[13], झाँसी[14], गोरखपुर[15]

द– नदियाँ : गंगा, यमुना[16], बेतवा[17], सावरमती[18], गोमती[19]

1– झाँसी की रानी, पृ.36, **'लाहौरीमल, नरसिंहराव, श्री तांबेमोरोपन्त आदि'**

2– पांडुलिपि–1. हिमालय सीमा, पृ.1 **'वह चन्द्रगुप्त की कीर्तिलता लहराती है'**

3– उपरिवत्, पृ.2, **'हिटलर मुसोलिनी का तो नाम सुना होगा'**

4– सन् अड़तालीस,पृ.16,**'उस भगतसिंह की फाँसी का कब फाँसी दिवस मनाया है'**

5– झाँसी की रानी, पृ.52, **'यों रानी लक्ष्मीबाई का दत्तकसुत ना मंजूर किया'**

6– उपरिवत्, पृ.154, **'सहचरी सुन्दरा का घोड़ा अरि के गज–मस्तक फाड़–फाड़'**

7– पांडुलिपि–1. फौजी गठबंधन, पृ.15 **'मुमताज परी के घूंघट को जब लूटेगा'**

8– उपरिवत्, पृ.16, **'वह नूरजहाँ का नाम सुना होगा तुमने'**

9– झाँसी की रानी, पृ.139, **'जालवन जिला कुछ दूर नहीं'**

10– उपरिवत्, पृ.139, **' कालपी केन्द्र है वीरों का'**

11– उपरिवत्, पृ.194, **'गोपालपुर में आके जो बैठा यह सब समाज'**

12– उपरिवत्, पृ. 199, **'पहुँचे कहाँ जहाँ कि रहा आगरा प्रदेश'**

13– उपरिवत्, पृ. 173, **'कृत कृत्य किया भांडेर ग्राम'**

14– एम. एल. ए. राज., पृ.6 **'वह झाँसी की रानी आई'**

15– सन् अड़तालीस, पृ.7, **'तुम गोरखपुर में बोले थे'**

16– झाँसी की रानी, पृ.157,**'जबतक है गंगा यमुना में बूँद–बूँद भर पानी**

17– उपरिवत्, पृ.120, **'कलि गंगा नदी बेतवा का जल बोल उठा रानी कीजय'**

18– पांडुलिपि–1.सावरमती के तट पर, पृ.22, **'सावरमती पुनीत सरित के तट पर जिसने'**

19– उपरिवत्, दमन, पृ.21, **'बिखर रहीं हैं आज गोमती के तट पर जो'**

य– **पर्वत :** कैलाश[1], हिमालय[2], अस्ताचलगिरि[3], प्राची पहाड़[4]

र– **दुर्ग :** सागरगढ़, गढ़कोटा[5], शाहगढ़[6], झाँसीगढ़[7], कालपीदुर्ग[8], नरवलगढ़[9], ग्वालियर दुर्ग[10]

ल– **घाट :** नारुत, मदनपुर, धामौनी[11]

व– **तोपची :** सबाई, सिकन्दर[12], गुलामगौस खाँ[13]

2– जाति वाचक

किसी प्राणी अथवा वस्तु की पूरी जाति का बोध कराने वाली संज्ञा को जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।[1] एक ही प्रकार की वस्तुओं अथवा व्यक्तियों को इस वर्ग में रखा जाता है। जैसे– घड़ियाल, मंदिर, बँगला, कँगूरा, चुनाव, योजना आदि।

5– एम.एल.ए.राज., पृ.26, **'गिरि कैलाश उठा सकते हो'**

6– पांडुलिपि–1.,हिमालय सीमा, पृ.2,**'उत्तुंग हिमालय की चोटी से उठ-उठकर'**

7– झाँसी की रानी, पृ.60, **'अस्ताचल गिरि की चोटी पर'**

8– उपरिवत्, पृ.64, **'रच सिंहासन प्राची पहाड़'**

9– उपरिवत्, पृ.94, **'सागर गढ़ पर अधिकार जमा'**

'फिर गढ़कोटा पर चढ़ आये'

10– उपरिवत्, पृ. 95, **'कढ़ चले शाहगढ़ सीमा से'**

11– उपरिवत्, पृ. 95, **'झाँसी गढ़ का सीधा सुराग'**

12– उपरिवत्, पृ.177, **'तो दुर्ग कालपी का देखा'**

13– उपरिवत्, पृ.200, **'नरवलगढ़ पहुँची शरण हेतु'**

14– उपरिवत्, पृ.194, **'पहिले ग्वालियर का किला हस्तगत करो'**

15– उपरिवत्, पृ.95, **'नारुत, मदनपुर, धामौनी घाटियाँ बड़ी कठिनाई थी'**

16– उपरिवत्, पृ.197, **'फिर तोपची सबाई सिकन्दर से होशियार'**

17– उपरिवत्, पृ.136,**'योद्धा गुलामगौस खाँ वहीं था गोलन्दाजों में प्रधान'**

1– मानक हिन्दी व्याकरण और रचना, डॉ.हरिवंश तरुण, पृष्ठ 72

डॉ. आनन्द की रचनाओं में उपलब्ध जाति वाचक संज्ञाओं के कतिपय उदाहरण निम्नांकित हैं–

'घड़ियाल मगर क्या कच्छ–मच्छ'[1]

'गोलों की भीषण मारों से प्रासाद पुरातन टूट गये'[2]

'चिल्ला–चिल्लाकर कहती हैं मंदिर मस्जिद की मीनारें'[3]

'जो बापू के रामराज्य का कुछ भी राग अलाप न पाये'[4]

'वह आजादी किस बँगले में बतलादो करली गई बंद'[5]

'माताओं ने जिस पर अपनी गोदी के लाल लुटाये थे'[6]

'जब ताजमहल का एक कंगूरा टूटेगा'[7]

'मरसिया पढ़ेंगे मिलकर हिन्दू मुसलमान'[8]

'सब का सब कुरसी से चिपका रह जायेगा'[9]

'है जो कि हमारी मातृभूमि का हिम किरीट'[10]

'बिजली की योजना जो बनाई गई तो खूब'[11]

'कण्ट्रोल के दफ्तर में भी जाती है काँग्रेस'[12]

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 90

2– उपरिवत्, पृष्ठ 135

3– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 8

4– उपरिवत्, पृष्ठ 1

5– सन् अड़तालीस, पृष्ठं 5

6– उपरिवत्, पृष्ठ 4

7– पांडुलिपि–1. फौजी गठबंधन, पृष्ठ 15

8– उपरिवत्, पृष्ठ 17

9– उपरिवत्, हिमालय सीमा, पृष्ठ 5

10– उपरिवत्, पृष्ठ 1

11– दारुल शफा (अप्रकाशित) पृष्ठ 4

12– उपरिवत्, पृष्ठ 5

उपर्युक्त उदाहरणों में घड़ियाल, कच्छ, मच्छ, प्रासाद, मंदिर, मस्जिद, राग, बँगला, लाल, कँगूरा, हिन्दू, मुसलमान, कुरसी, किरीट, योजना तथा दफ्तर जातिवाचक संज्ञायें हैं। ये संज्ञायें गुणों और धर्मों से युक्त होकर निश्चित अर्थ का बोध कराती हैं। जैसे – घड़ियाल शब्द एक विशेष गुण धर्म युक्त खूँख्वार जलजन्तु का अर्थ देता है। गुणों और धर्मों की निश्चितता के कारण ये संज्ञायें एक दूसरे से भिन्नता रखती हैं। जैसे– हिन्दू मुसलमान, मंदिर, मस्जिद तथा बँगला, दफ्तर आदि जाति बोधक संज्ञायें भिन्न और निश्चित अर्थ देती हैं।

साधारणतः जाति वाचक संज्ञायें प्रायः एक वचन और बहुवचन दोनों में प्रयुक्त होती हैं। जैसे– मंदिर–मंदिरों, योजना–योजनाओं।

3– भाव वाचक

जिन संज्ञाओं से पदार्थों के धर्म, गुण, दोष, अवस्था, व्यापार (चेष्टा) आदि भाव जाने जाते हैं, वे भाव वाचक संज्ञायें कहलाती हैं।[1] जैसे– चढ़ान, गठबंधन, चुनाव तथा दानवता आदि।

डॉ. आनन्द के काव्य में भाव वाचक संज्ञायें निम्नवत् उपलब्ध हैं–

'जिसकी तड़पन जिसकी तेजी, जिसकी चढ़ान जिसकी उड़ान'[2]

'बालापन की रीति–नीति का नाता लगे निभाने'[3]

'जन जागरण नहीं रुकने का'[4]

'वह समझौता तो दिखलादो'[5]

'जिस आजादी पर विसमिल ने फाँसी पर चढ़कर पढ़े छन्द'[6]

1– अभिनव हिन्दीव्याकरण तथा निबंधरचना, श्रीमती सुमित्रादेवी गुप्ता,पृ.41

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 19

3– उपरिवत्, पृष्ठ 41

4– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 7

5– उपरिवत्, पृष्ठ 5

6– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 22

'जिन छात्रों ने होकर शहीद तुमको स्वतंत्रता दिलवाई'[1]

'हम फौजी गठबंधन की गहरी कब्र खोद'[2]

'जब दानवता की छाती पर चढ़कर कोई'[3]

'भारत की गुण गौरव गाथायें बोल रहा'[4]

'आने वाला चीनी चुनाव टल जायेगा'[5]

'है चार सौ छत्तीस पै छत्तीसपन सवार'[6]

'क्या–क्या करूँ बड़ाइयाँ आजी़ ज़नाब की'[7]

उपर्युक्त उदाहरणों में तड़पन, चढ़ान, बालापन, जागरण, समझौता, स्वतंत्रता, आजादी, गठबंधन, दानवता, चुनाव, गौरव, छत्तीसपन तथा बड़ाई भाव वाचक संज्ञायें हैं। ये भाव वाचक संज्ञायें किसी भाव–विशेष की अनुभूति कराती हैं।

सर्वनाम

जो शब्द संज्ञा के बदले में बोले जाते हैं, उन्हें सर्वनाम कहा जाता है। सर्वनाम का सरलार्थ **'सब के नाम'** है। यह पद दो शब्दों के योग से बना है। प्रथम सर्व तथा द्वितीय नाम। सर्व का अर्थ है सब और नाम का अर्थ संज्ञा है। इस तरह सर्वनाम अपनी व्यापकता के कारण उन सब संज्ञाओं के बदले में बोला जाता है, जिन संज्ञाओं का वाक्य में पूर्व में उल्लेख हो चुका है। पं. कामता प्रसाद गुरू ने सर्वनाम को विकारी शब्द माना है जो पूर्व पर सम्बंध के कारण किसी संज्ञा के बदले में आता है।[8]

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 5

2– पांडुलिपि–1. फौजी गठबंधन, पृष्ठ 17

3– उपरिवत्, पृष्ठ 15

4– पांडुलिपि–1. हिमालय सीमा, पृष्ठ 1

5– उपरिवत्, पृष्ठ 5

6– दारुल शफा (अप्रकाशित), पृष्ठ 6

7– उपरिवत्, पृष्ठ 7

8– हिन्दी व्याकरण, कामताप्रसाद गुरू, पृष्ठ 72

आचार्य किशोरीदास बाजपेयी ने सभी नामों के बदले आने वाले शब्दों को सर्वनाम कहा है।[1] डॉ. कैलाशचन्द्र अग्रवाल ने भी संज्ञा के स्थान पर आने वाले शब्दों को सर्वनाम बतलाया है।[2] डॉ. सीताकिशोर ने सर्वनाम शब्द को परिभाषित करते हुये कहा है कि 'इतना तो मानना ही पड़ेगा कि वह सब का नाम है और संज्ञा के बदले में आता है।[3]

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि संज्ञायें निश्चित नाम की बोधक होती हैं और सर्वनाम इस निश्चित सीमा को तोड़ देता है।

डॉ. आनन्द की काव्य भाषा में व्यवहृत सर्वनाम रूपों का वर्गीकरण निम्न प्रकार है—

1— **पुरुष वाचक :—** पुरुष वाचक सर्वनाम में व्याकरणविदों ने तीन पुरुष स्वीकार किए हैं। उत्तम पुरुष, मध्यमपुरुष तथा अन्य पुरुष। व्यक्तिवाची होने के कारण इसे व्यक्ति वाचक सर्वनाम भी कहा जाता है।

उत्तम पुरुष –

'मैं सब कुछ दूँगी निज कर से'[4]

'हम ने समझा यह चोरी है'[5]

'आजाद करो या फाँसी दो कुछ हमें शिकायत खास नहीं'[6]

'मैं पूछ रहा हूँ आप सोचकर दें जवाब'[7]

1— हिन्दी शब्दानुशासन, आचार्य किशोरीदास बाजपेयी, पृष्ठ 231

2— आधुनिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना, डॉ.कैलाशचन्द्र अग्रवाल, रंजन प्रकाशन, आगरा, 1974ई., पृष्ठ 42

3— सर्वनाम, अव्यय और कारक चिह्न, डॉ. सीताकिशोर, आराधना ब्रदर्स, कानपुर, पृष्ठ 74

4— झाँसी की रानी, पृष्ठ 55

5— एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 20

6— सन् अड़तालीस, पृष्ठ 11

7— पाण्डुलिपि—1, फौजी गठबंधन, पृष्ठ 16

'हम पर भी है सत्य अहिंसा'[1]

'यह तर्क हमारा व्यर्थ नहीं हो सकता है'[2]

'ले जाओ यह रत्नाभूषण, किंचित मुझको परवाह नहीं'[3]

उपर्युक्त उदाहरणों में– मैं, हमने, हमें, मैं, हम, हमारा तथा मुझको उत्तम पुरुष सर्वनाम के रूप हैं।

मध्यम पुरुष –

'स्वीकार आपका मंत्र नहीं'[4]

'तुमने अपनी सारंगी के जाने कैसे तार मिलाए'[5]

'नृत्यकला के कर्णधार बन जब तुम रंगमंच पर आये'[6]

'तुमसे तो यह उम्मीद न थी,

तुमने क्या से क्या किया हाय।'[7]

'वह गंज शकर भूले तो होंगे नहीं आप'[8]

उपरोक्त उदाहरणों में – आपका, तुमने, तुम, तुमसे, तुमने तथा आप मध्यम पुरुष सर्वनाम के उदाहरण हैं।

अन्य पुरुष–

'सब खौल रहे थे नर नारी'[9]

'वह वायु वेग से दौड़ पड़ी'[10]

1– एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 28

2– पाण्डुलिपि–1, हिमालय सीमा, पृष्ठ 3

3– झाँसी की रानी, पृष्ठ 54

4– उपरिवत्, पृष्ठ 54

5– एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 1

6– उपरिवत्, पृष्ठ 1

7– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 15

8– पाण्डुलिपि–1, फौजी गठबंधन, पृष्ठ 16

9– झाँसी की रानी, पृष्ठ 67

10– उपरिवत्, पृष्ठ 214

'पर भारत में रहकर यदि वे'[1]

'वे बोले राष्ट्र परीक्षा है'[2]

'वह चन्द्रगुप्त की कीर्तिलता लहराती है'[3]

'अब काँग्रेस में न वो ईमान रह गया'[4]

उपर्युक्त उद्धरणों में – सब, वह, वे, वे, वह तथा वो अन्य पुरुष सर्वनाम रूप हैं।

2– **संकेत वाचक :–** जिन शब्दों के व्यवहार से पास अथवा दूर स्थित प्राणी या पदार्थों की ओर संकेत पाया जाता है, उन्हें संकेत वाचक सर्वनाम कहते हैं–

'उन भू–लुण्ठित कनगूरों को'[5]

'उस भूखी माता से पूछो'[6]

'इस आजादी के लिए हाय'[7]

'हैं जो कि मुगलकालीन कला कृतियाँ सुन्दर'[8]

'शीश जिसका था गया निशदिन सजाया'[9]

'हो उठा इसी क्षण अकस्मात्'[10]

'एक मचलता हुआ प्रभंजन देखो इधर चला आता है'[11]

1– एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 21

2– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 22

3– पाण्डुलिपि–1, हिमालय सीमा, पृष्ठ 1

4– दारुलशफा (अप्रकाशित), पृष्ठ 7

5– झाँसी की रानी, पृष्ठ 146

6– एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 14

7– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 24

8– पाण्डुलिपि–1, फौजी गठबंधन, पृष्ठ 16

9– झाँसी की रानी, पृष्ठ 220

10– उपरिवत्, पृष्ठ 210

11– एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 28

उपर्युक्त उदाहरणों में उन, उस, इस, जो, जिसका, इसी तथा इधर संकेत वाचक सर्वनाम रूप हैं।

3– **प्रश्नवाचक :–** प्रश्न करने के उद्देश्य से जिन सर्वनाम शब्दों का व्यवहार किया जाता है, उन्हें प्रश्न वाचक सर्वनाम कहा जाता है। प्रश्नवाचक सर्वनाम के उदाहरण निम्नलिखित हैं–

'यह दिन आया क्या होने को, क्या खोने को यह वर्ष चला'[1]

'ओ आजादी तू आई तो लेकिन आकर छिपगई किधर'[2]

'सचमुच क्या जाना ही होगा'[3]

'बोलो कब–कब पीठ दिखाई'[4]

'इन्हें मसीहा से क्या मतलब'[5]

'इनके मजार पर कौन चिराग जलायेगा'[6]

उपर्युक्त उद्धरणों में क्या, क्या, किधर, क्या, कब–कब, क्या तथा कौन प्रश्नवाचक सर्वनाम के रूप में व्यवहृत हैं।

4– निज वाचक :– जहाँ वक्ता 'आप' या 'अपने आप' शब्द का प्रयोग स्वयं के लिए करे, वहाँ निज वाचक सर्वनाम होता है। उदाहरण निम्नवत् हैं–

'इस समझौते से तो अपना रण में मर जाना ही अच्छा'[7]

'अपना प्यारा वह राजमहल रानी ने जी भर कर देखा'[8]

'तुम पर है बन्दूक दुनाली अपने कवि के पास कलम है'[9]

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 90

2– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 24

3– उपरिवत्, पृष्ठ 22

4– एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 22

5– उपरिवत्, पृष्ठ 23

6– पाण्डुलिपि–1, फौजी गठबंधन, पृष्ठ 16

7– झाँसी की रानी, पृष्ठ 129

8– उपरिवत्, पृष्ठ 146

9– एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 28

'ताना शाही बर्बरता का हम तख्त उलट दें जो न आज'[1]

'हम थे गुलाम लेकिन अपना कर सकते थे व्यापार सभी'[2]

उपर्युक्त उदाहरणों में अपना, अपना, अपने, हम तथा अपना प्रयुक्त शब्द निजवाचक सर्वनाम रूप हैं।

5– **सम्बन्ध वाचक** – जहाँ एक सर्वनाम का दूसरे सर्वनाम के साथ सम्बन्ध प्रकट हो, वहाँ सम्बन्ध वाचक सर्वनाम होता है। प्रधान वाक्य और आश्रित उपवाक्य को जोड़ने वाले सर्वनाम रूप सम्बन्ध वाचक सर्वनाम कहे जाते हैं। निम्नलिखित उदाहरण दृष्टव्य हैं–

'यों तो जो आता है जग में वह एक रोज मरजाता है'[3]

'जब तक न अपने हाथ में कोई किला है आज,
तब तक न बन सकेगा लड़ाई का साज–बाज।'[4]

'जैसा चाहा बजट बनाया जो चाही योजना बनादी'[5]

'यह तो वह मस्ताने हैं जो फाँसी पर भी मुसकाते हैं'[6]

'जिस आजादी के लिए हाय हो गई देश की बर्बादी'[7]

'जिसके बेटे ने भारत का सौभाग्य भानु जगमगा दिया'[8]

'जिसके उन्नत मस्तक से हा सिन्दूर सदा को चला गया'[9]

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 20

2– उपरिवत्, पृष्ठ 14

3– झाँसी रानी, पृष्ठ 108

4– उपरिवत्, पृष्ठ 194

5– एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 15

6– उपरिवत्, पृष्ठ 23

7– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 5

8– उपरिवत्, पृष्ठ 17

9– उपरिवत्, पृष्ठ 23

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि डॉ. आनन्द की रचनाओं की भाषा में व्यवहृत सम्बन्ध वाचक सर्वनाम पद– जो, जबतक, जैसा, जो, जो, जिस, जिसके तथा जिसके आदि हैं। ये सर्वनाम वाक्यों को जोड़ते हैं।

6– **निश्चय वाचक :–** जिन सर्वनाम रूपों से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध हो, वे निश्चय वाचक सर्वनाम कहे जाते हैं।

'जो ख्याति प्राप्त नर्तकियाँ थीं वह सब इस महफिल में आईं'[1]

'जिस पर स्वराज का महल उठे यह ज्ञान आज कर पाया है'[2]

'वे बोले राष्ट्र परीक्षा है कर्तव्य निभाना हीं होगा'[3]

'उसकी माँ अब भी जीवित है जो क्षण–क्षण व्याकुल होती है।[4]

'आँख–मूँद कर देख रही है यह दुनियाँ आमाल तुम्हारे'[5]

'यह तो वह मस्ताने हैं जो फाँसी पर भी मुस्काते हैं'[6]

'इसी समय दक्षिण फाटक से लगा छूटने गोला'[7]

'इन पर समझौते की बिजली छा जायेगी।[8]

'अब तक का तो इतिहास यही बतलाता है।'[9]

उपर्युक्त पद्य पंक्तियों में जो, जिस, वे, उसकी, जो, यह, यह, जो, इसी, इन तथा यही निश्चय वाचक सर्वनाम रूप हैं।

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 201

2– उपरिवत्, पृष्ठ 210

3– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 22

4– उपरिवत्, पृष्ठ 17

5– एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 14

6– उपरिवत्, पृष्ठ 23

7– झाँसी की रानी, पृष्ठ 157

8– पाण्डुलिपि–1, फौजी गठबंधन, पृष्ठ 17

9– उपरिवत्, पृष्ठ 215

7— अनिश्चय वाचक :—जिनसे किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध न हो वे अनिश्चय वाचक सर्वनाम होते हैं। अनिश्चित और अज्ञात व्यक्ति वस्तु के संकेतक अनिश्चय बोधक सर्वनाम कहलाते हैं। उदाहरण निम्न लिखित हैं—

'थी गिरी कहीं तेगा बनकर,

तो कहीं छुरी सी छूट पड़ी'[1]

'इस नालायक नाले पर ही,

कुछ से कुछ होने वाला था'[2]

'शरबत, हलुआ, फल—फूल आदि,

जो कुछ भी है सब आने दो,[3]

'खद्दर के कुरता टोपी में जाने कितने पाप छिपाये'[4]

'वन उत्सव करके पेड़ों की कितनी कहाँ कतार लगा दी'[5]

'पता नहीं हैं किस लालच में अत्याचार किया करते हैं'[6]

'वह कैसी किस बँगले में है कहाँ आज वह आजादी'[7]

उपर्युक्त पंक्तियों में कहीं, कहीं, कुछ, जोकुछ, जाने, कितनी, कहाँ, किस, कैसी तथा कहाँ सर्वनाम पद अनिश्चय वाचक सर्वनाम के उदाहरण हैं।

विशेषण

जिस शब्द से संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता (गुण, दोष, संख्या, परिमाण आदि) का बोध हो, उसे 'विशेषण' कहते हैं।[8] विशेषण

1— झाँसी की रानी, पृष्ठ 110

2— उपरिवत्, पृष्ठ 215

3— उपरिवत्, पृष्ठ 210

4— एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 3

5— उपरिवत्, पृष्ठ 6

6— उपरिवत्, पृष्ठ 8

7— सन् अड़तालीस, पृष्ठ 4

8— अभिनव हिन्दी व्याकरण तथा निबंध रचना, पृष्ठ 78

विकारी शब्द होते हैं। ये अपने विशेष्य संज्ञा अथवा सर्वनाम की स्थिति में कुछ न कुछ अन्तर उपस्थित कर देते हैं।[1] जैसे 'इसी भूमि पर रानी की तीखी तलवार चली थी'। इस उदाहरण में तलवार विशेष्य है, तीखी विशेषण। तलवार के पूर्व 'तीखी' विशेषण लगा देने पर 'तीखी तलवार' पद निर्मित हुआ।

डॉ. आनन्द की काव्य–भाषा में उपलब्ध विशेषणों का वर्गीकरण निम्नप्रकार है–

1– **गुण वाचक** – संज्ञा अथवा सर्वनाम के गुण, दशा, आकार, स्थान तथा रंग आदि का बोध कराने वाले विशेषण को गुण वाचक विशेषण कहते हैं। जैसे–

गुण–दशा **'थी क्रोधान्वित कर में कृपाण'**[2]

'कौंधा में लेकर कड़क, कड़क,
में चमक, चमक में चकाचौंध'[3]

'अति शोक मग्न ले हृदय भग्न'[4]

'हम कफन बाँध हो गए खड़े'[5]

आकार **'घूम कर सेना घटा सी छा गई है,**
धूल उड़कर व्योम तक मँडरा गई है'[6]

'देखो प्रशान्त सागर की लहरों को देखो'[7]

1– ग्वालियर संभाग के बोली रूपों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन– डॉ. सीताकिशोर, आराधना ब्रदर्स, कानपुर, पृष्ठ 149

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 110

3– उपरिवत्, पृष्ठ 117

4– उपरिवत्, पृष्ठ 148

5– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 9

6– झाँसी की रानी, पृष्ठ 183

7– पाण्डुलिपि–1, हिमालय सीमा, पृष्ठ 5

'धरती अम्बर सब साथ–साथ ही डोलेंगे'[1]

स्थान 'देखा निज उजड़ा हुआ बाग डाली निगाह फुलवाड़ी पर'[2]

'सप्लाई आफिस में बोलो क्या–क्या पाप नहीं होते हैं'[3]

रंग 'गोली लगते ही रानी का सर्वांग हो गया लाल–लाल'[4]

'रण की धरती को लाल–लाल कर दिया ताँतिया टोपे ने'[5]

2– **परिमाण बोधक** – जो विशेषण किसी पदार्थ की मात्रा, वजन तथा नाप–तौल को बतलाते हैं, उन्हें परिमाण बोधक विशेषण कहा जाता है।

डॉ. आनन्द की रचनाओं में अति, बहु, बड़ा, बहुत, बड़े, बड़ी, अधिक, नैंक, गहरी तथा छोटे–छोटे परिमाण बोधक विशेषण व्यवहृत हुए हैं। जैसे–

अति 'अति शोक मग्न ले हृदय भग्न'[6]

बहु 'यह तो बहुमूल्य तिजारत है'[7]

बड़ा 'कुछ रखती थीं विश्वास बड़ा'[8]

बहुत 'यह माना कि गले बाजी में आप बहुत कुछ गलेबाज हैं'[9]

बड़ी–बड़े 'बड़े भेद हैं, बड़ी पोल है, बड़े राज हैं'[10]

अधिक 'अधिक दिनों मारीच निशाचर कंचन का मृग रह न सकेगा'[11]

1– उपरिवत्, फौजी गठबंधन, पृष्ठ 17

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 146

3– एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 4

4– झाँसी की रानी, पृष्ठ 216

5– उपरिवत्, पृष्ठ 212

6– झाँसी की रानी, पृष्ठ 148

7– उपरिवत्, पृष्ठ 149

8– उपरिवत्, पृष्ठ 166

9– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 3

10– उपरिवत्, पृष्ठ 5

11– उपरिवत्, पृष्ठ 7

नैंक — **'पर अब तक जिसका नैंक न मैला हुआ कफन'**[1]

गहरी — **'हम फौजी गठबंधन की गहरी कब्र खोद'**2

छोटे–छोटे — **'युद्ध के दिनों में छोटे–छोटे बालक भी'**3

3– **संख्या बोधक–** जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या प्रकट होती हो, उन्हें संख्या बोधक विशेषण कहा जाता है। डॉ. आनन्द के काव्य में संख्या बोधक विशेषण निम्नवत् व्यवहृत हैं–

'बह चली रुधिर की एक धार'[4]

'झाँसी का दूजा दगाबाज'[5]

'धारायें मिलकर तीन–तीन, बह उठी त्रिवेणी झाँसी में'[6]

'चौथी शोणित सरिता अपार पाँचवीं तीक्ष्ण तलवार धार'[7]

'छै छटाँक रासन जनता को'[8]

'कवि के नव रस्त चल पड़े साथ'9

'फिर उस चौरासी गुम्बज में'[10]

'सौ दो सौ के नीचे हरगिज बातें पंच नहीं करते हैं'[11]

'डेड़ मिनट की डेड़ बात में डेड़ हजार किया करते हैं'[12]

1– पांण्डुलिपि–1, फौजी गठबंधन, पृष्ठ 16

2– उपरिवत्, पृष्ठ 17

3– उपरिवत्, हिमालय सीमा, पृष्ठ 3

4– झाँसी की रानी, पृष्ठ 118

5– उपरिवत्, पृष्ठ 133

6– उपरिवत्, पृष्ठ 151

7– उपरिवत्, पृष्ठ 151

8– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 13

9– झाँसी की रानी, पृष्ठ 154

10– उपरिवत्, पृष्ठ 176

11– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 4

12– उपरिवत्, पृष्ठ 8

'जब दस हजार की मीटिंग में तुम गोरखपुर में बोले थे'[1]

'चालिस हजार मीलों धरती के दावे पर

चालीस कोटि के पग बढ़ जायेंगे आगे'[2]

4– **निश्चय वाचक**– जो विशेषण निश्चित मात्रा का बोध कराते हैं, उन्हें निश्चय वाचक विशेषण कहते हैं। जैसे–

बूँद–बूँद भर– **'जब तक है गंगा यमुना में बूँद–बूँद भर पानी'**[3]

दाने–दाने– **'क्या नहीं देश मुहताज हुआ दाने–दाने के लिए आज'**[4]

छै–छै माह– **'छै–छै महिने का दिया गया वेतन प्रत्येक सिपाही को'**[5]

खप्पर भर– **'फिर लगी नाचने रणचण्डी खप्पर भरने रण प्रांगण में'**[6]

पाई–पाई– **'यूँ लूट लिया अंग्रेजों ने झाँसी की पाई–पाई को'**[7]

सौगुना– **'विषमज्वर से सौगुना बढ़ा धरती का तीक्ष्ण तापमान'**[8]

5– **अनिश्चय वाचक**– जो विशेषण शब्द निश्चित मात्रा या संख्या का बोध नहीं कराते हैं, उन्हें अनिश्चय वाचक विशेषण कहा जाता है। जैसे–

कई **'यह वेतन कई हजार मिला–**[9]

अनगिन **'अनगिन मस्तक अनगिन सुहाग'**[10]

कितनी **'जिसकी खातिर कितनी कलियाँ'**[11]

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 7

2– पांडुलिपि–1, हिमालय सीमा, पृष्ठ 7

3– झाँसी की रानी, पृष्ठ 157

4– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 14

5– झाँसी की रानी, पृष्ठ 58

6– उपरिवत्, पृष्ठ 211

7– उपरिवत्, पृष्ठ 169

8– उपरिवत्, पृष्ठ 188

9– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 8

10– उपरिवत्, पृष्ठ 6

11– उपरिवत्, पृष्ठ 4

कितना 'मानव है कितना पतित और मानव ही है कितना महान'[1]

कितने 'कितने खिल जाते कमल और कितने कुमोद कुम्हलाते हैं'[2]

सबने 'इस शोकाकुल उत्सव में भी सबने आमोद–प्रमोद लिया'[3]

कुछ 'कुछ दिन बीते इसी तरह अकुलाई विधवा नारी'[4]

कई 'पहले शिक्षा फीस बढ़ाकर कई लाख ले लिये आपने'[5]

यहाँ कई, अनगिन, कितनी, कितना, कितने, सबने, कुछ तथा कई शब्द निश्चित संख्या या मात्रा का बोध नहीं कराते हैं।

6– **क्रिया मूलक**–धातुओं के योग से बनने वाले विशेषण क्रिया मूलक विशेषण कहलाते हैं। डॉ. आनन्द की रचनाओं में ऐसे उदाहरण प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं–

'नभ बोल उठा'[6]

'जलते अंगारों के समान'[7]

'सोया देखा निज शूरों को'[8]

'जेठ की गर्मी कही जातीं नहीं थीं'[9]

'कभी भूलकर मत छू देना'[10]

'देश–सुधार किया करते हैं'[11]

'जो सजा मुझे देना चाहो'[12]

'खिलते–खिलते ही कुम्हलाई'[13]

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 1

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 31

3– उपरिवत्, पृष्ठ 37

4– उपरिवत्, पृष्ठ 42

5– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 10

6– झाँसी की रानी, पृष्ठ 17

7– उपरिवत्, पृष्ठ 20

8– उपरिवत्, पृष्ठ 146

9– उपरिवत्, पृष्ठ 187

10– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 15

11– उपरिवत्, पृष्ठ 17

12– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 14

13– उपरिवत्, पृष्ठ 14

उपर्युक्त पंक्तियों में व्यवहृत बोल जलते, सोया, कही, भूलकर, सुधार, देना तथा खिलते–खिलते विशेषण क्रिया मूलक विशेषण हैं।

7– **सार्वनामिक–** यह विशेषण रूप सर्वनामों के अंशों से बनते हैं। अपने, वह, यह, इसी, इनकी, कितनी तथा जिनके जैसे रूप सार्वनामिक विशेषण बनाते हैं। उदाहरण निम्न प्रकार हैं–

अपने **'अपने तन की छाया तक भी**
अपने तन में छिप गई आन'[1]

वह **'वह दृश्य था कि तोप के गोलों की मार धाड़'**[2]

इसी **'इसी भूमि पर वीरों ने अपना वलिदान किया है'**[3]

इनकी **'इनकी सदरी की जेबों में भैंस बँधी गायें चरती हैं'**[4]

कितनी **'खेतों में पानी देने को कितनी नींव नहर की डाली'**[5]

कितनी **'कितनी बहिनें निज भाई के राखी तक बाँध नहीं पाईं'**[6]

डॉ. आनन्द की रचनाओं में उपर्युक्त विशेषणों के अतिरिक्त द्विरुक्तियों का व्यवहार भी उपलब्ध है। ये द्विरुक्तियाँ जैसे– लाल–लाल, खास–खास, बड़े–बड़े, गोल–गोल, दो–दो, तथा तीन–तीन आदि विशेषण के रूपमें व्यवहृत होती हैं।

क्रिया

वाक्य में जिस शब्द या पद से कार्य के करने अथवा होने का बोध हो, उसे **'क्रिया'** कहते हैं। डॉ. वासुदेव नन्दन प्रसाद के मतानुसार– 'क्रिया विकारी शब्द है, जिसके रूप लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार बदलते रहते हैं।[7]

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 188

2– उपरिवत्, पृष्ठ 197

3– उपरिवत्, पृष्ठ 28

4– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 11

5– उपरिवत्, पृष्ठ 5

6– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 4

7– आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद, पृ.122

क्रिया का मूल **'धातु'** है। डॉ. कैलाशचन्द्र अग्रवाल का अभिमत है कि 'क्रियाओं के प्रातिपदिक अंश को धातु कहते हैं।[1] उदाहरण के लिये उठना, बैठना, दौड़ना तथा लड़ना आदि क्रियायें हैं तो क्रमशः उठ, बैठ, दौड़ तथा लड़ इनके प्रातिपदिक रूप हैं। धातु रूप में 'ना' प्रत्यय लगाकर जो शब्द बनता है, उसे क्रिया कहा जाता है।

कार्य, व्यापार और फल के आधार पर क्रिया को 1—सकर्मक तथा 2—अकर्मक दो भागों में विभक्त किया गया है।[2]

सकर्मक क्रिया– जिस क्रिया के सम्पादन में वाक्य में कर्म की आवश्यकता होती है, उसे सकर्मक क्रिया कहा जाता है। जैसे–

'चढ़ गई झपट झाँसी की
ऊँची सी एक पहाड़ी पर।'[3]

अकर्मक क्रिया– अकर्मक क्रिया में वाक्य में कर्म छिपा रहता है। जैसे–

'प्यासे कण्ठ कुम्हलाने लगे थे।'[4]

उपर्युक्त उद्धरणों में से प्रथम में 'चढ़ाई' क्रिया पद के साथ 'एक पहाड़ी' कर्म के रूप में व्यवहृत है तथा द्वितीय उदाहरण में कर्म का लोप है।

डॉ. आनन्द की रचनाओं में क्रिया के सकर्मक रूप अधिकाँशतः उपलब्ध हैं। अकर्मक क्रिया रूपों का व्यवहार अपेक्षाकृत कम हुआ है।

व्यवहारिक धरातल पर क्रियायें चार प्रकार की होती हैं– 1—संयुक्त क्रिया, 2—प्रेरणार्थक क्रिया, 3—पूर्वकालिक क्रिया तथा 4—नाम धातु क्रिया।

1— आधुनिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना, डॉ.कैलाशचन्द्र अग्रवाल, पृ.67
2— दतिया जिले की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन – डॉ.नसीम फरहत, पृष्ठ 156
3— झाँसी की रानी, पृष्ठ 146
4— उपरिवत्, पृष्ठ 187

संयुक्त क्रिया–

जब दो या अधिक क्रियायें एक साथ व्यवहृत होती हैं, तब वे संयुक्त क्रियायें कहलाती हैं। उनमें एक मुख्य क्रिया तथा अन्य सहायक क्रियायें होती हैं। जैसे– **'बुन्देलों की उस वीर भूमि झाँसी को फिर–फिर कर देखा'**[1] इस उदाहरण में 'फिर–फिर कर देखा' वाक्यांश में 'देखा' मुख्य क्रिया है तथा 'फिर–फिर कर ' सहायक क्रिया है। इस तरह 'फिर–फिर कर देखा' संयुक्त क्रिया–रूप है।

डॉ. आनन्द की रचनाओं में संयुक्त क्रियाओं के कतिपय उदाहरण दृष्टव्य हैं–

'माझी ने लंगर छोड़ दिया'[2]

'कहाँ–कहाँ रोटी लटकादी'[3]

'गोलियाँ चलाई जाती हैं'[4]

उक्त पंक्तियों में 'छोड़ दिया', 'लटका दी' तथा 'चलाई जाती हैं' संयुक्त क्रिया रूप के उदाहरण हैं।

प्रेरणार्थक क्रिया–

जब वाक्य में कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य को कार्य करने की प्रेरणा दे, वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया होती है। जैसे–

'रानी ने सुझाया कि यहाँ देर मत करो
पहिले ग्वालियर का किला हस्तगत करो'[5]

'उस भूखी माता से पूछो जिसका सात साल का बालक
भूखा तड़प–तड़प कर रोटी माँग–माँग कर मर जाता है'[6]

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 146

2– उपरिवत्, पृष्ठ 91

3– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 6

4– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 15

5– झाँसी की रानी, पृष्ठ 194

6– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 14

'यह बच्चे अब तक भूखे हैं ओ नेताओ लो देख इधर'[1]

उपर्युक्त उदाहरणों में मत करो, हस्तगत करो, पूछो, तथा देख इधर प्रेरणार्थक क्रियायें हैं। क्रिया सम्पन्न करने की प्रेरणा किसी अन्य के द्वारा दी गई है।

पूर्व कालिक क्रिया–

वाक्य में मुख्य क्रिया से पूर्व व्यवहृत क्रिया को पूर्व कालिक क्रिया कहते हैं। जैसे–

'कौंध कर बिजली धरा पर आ गई है'[2]

'रानी ने लिख भेजा उत्तर'[3]

'हम तुम दोनों मिलकर एक नया इतिहास बना लें'[4]

'लेकिन आकर छिप गई किधर'[5]

यहाँ कौंधकर, मिलकर, लिख, तथा आकर पूर्वकालिक क्रियायें हैं। ये सभी क्रियायें मुख्य क्रिया से पूर्व व्यवहृत हुई हैं।

नाम धातु क्रिया–

जब संज्ञा या सर्वनाम प्रत्यय युक्त होकर क्रिया का कार्य भी संपादित करते हैं तो नाम धातु क्रिया होती है। जैसे–

'बड़े चाव से बड़ी लगन से देश सुधार किया करते हैं।'[6]

'कृश्चियन धर्म से उनका अंतिम संस्कार कराकर'[7]

'कुछ दिन बीते इसी तरह अकुलाई विधवा नारी'[8]

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 24

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 183

3– उपरिवत्, पृष्ठ 129

4– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 28

5– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 24

6– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 17

7– झाँसी की रानी, पृष्ठ 170

8– उपरिवत्, पृष्ठ 42

उक्त उदाहरणों में 'सुधार' तथा 'संस्कार' संज्ञा पद क्रिया की भाँति व्यवहृत हुये हैं, अतः ये नाम धातु क्रिया के उदाहरण हैं। कहीं–कहीं क्रियायें भी संज्ञा का रूप ग्रहण कर लेती हैं। जैसे–तृतीय उदाहरण में **'अकुलाना'** क्रिया में **'ई'** प्रत्यय लगाकर **अकुलाई'** संज्ञा पद निर्मित हुआ है। इन क्रियाओं का प्रयोग सामान्यतः भाव वाचक संज्ञाओं की भाँति किया जाता है।

काल

काल एक व्याकरणिक कोटि है, क्योंकि इसका बोध व्याकरणिक संरचना से होता है। यह विधान (कार्य) के समय का बोध कराती है। यह कार्य क्रिया–रूपों द्वारा संपादित होता है। इसलिये प्रत्येक क्रिया–रूप किसी न किसी प्रकार कालवाची अवश्य रहता है।[1]

काल के मुख्यतः तीन भेद हैं। भूतकाल, वर्तमानकाल तथा भविष्यकाल।

डॉ.आनन्द की रचनाओं में कालों के उदाहरण निम्नवत् उपलब्ध हैं।

1. भूतकाल–

वाक्य में व्यवहृत जिस क्रिया से भूतकाल (बीते समय) में क्रिया का सम्पन्न होना वर्णित हो, उसे भूतकाल कहते हैं। जो कार्य गत समय में हो चुका होता है, उसे भूतकाल की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। जैसे–

'चक्रवाक का वियोग योग में बदल गया'[2]

'विटपों पर पंछी बोल उठे'[3]

'उस दिन हमने सब कुछ खोकर झंडे की लाज बचाई थी'[4]

1– आधुनिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना, डॉ.कैलाशचन्द्र अग्रवाल, पृ.74

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 180

3– उपरिवत्, पृष्ठ 179

4– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 8

'तुम मुलक रहे थे सिकचों में'[1]

'क्या जाने कितने करोड़ की कितने लाख मशीन मँगाई'[2]

'अन्न समस्या भी हल होती'[3]

वाक्य क्र.1 में 'गया' क्रियापद सामान्य भूतकाल का है। वाक्य क्र. 2 में 'बोल उठे' क्रिया आसन्न भूतकाल की है। इससे वृक्षों पर निकट समय में ही पक्षियों के कलरव करने का बोध होता है। क्र.3 के अन्तर्गत 'बचाई थी' क्रिया से यह सिद्ध होता है कि झंडे की लाज बचाने का कार्य बहुत समय पूर्व हो चुका था, अतः यहाँ पूर्ण भूतकाल का निर्देश है। क्र.4 में 'मुलक रहे थे' क्रियापद से यह सुनिश्चित होता है कि भूतकाल में क्रिया हो रही थी। उसकी समाप्ति का कोई संकेत नहीं है। अतः यहाँ अपूर्ण भूतकाल है। क्र.5 में क्रिया की निश्चितता संदिग्ध होने के कारण संदिग्ध भूतकाल है। अन्तिम वाक्य क्र. 6 में व्यवहृत क्रिया किसी अन्य क्रिया पर अवलम्बित है। अतः इसमें हेतु हेतु मद्भूतकाल निश्चित होता है।

2– वर्तमान काल–

इसमें वर्तमान में घटित घटनाओं की निरंतरता का निर्देश होता है तथा क्रिया व्यापार पूर्व से प्रारंभ होकर गतिमान होने का बोध कराता है।

डॉ. आनन्द के काव्य में वर्तमान काल के क्रिया रूप निम्न प्रकार उपलब्ध हैं–

1– **'अब तक जिसकी वीर कथा केन का नीर कहता है**
जिसके कण–कण पर अणु–अणु पर समर चढ़ा रहता है'[4]

2– **'यहाँ आज भी होता है नित प्रकृति नटी का नर्तन'[5]**

1– उपरिवत्, पृष्ठ 10

2– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 19

3– उपरिवत्, पृष्ठ 25

4– झाँसी की रानी, पृष्ठ 25

5– उपरिवत्, पृष्ठ 26

3– कुछ भारत में ऐसे भी हैं गीत विलायत के गाते हैं'[1]

4– 'डगमगा रही है जो नौका उस नौका के पतवार बनो'[2]

5– 'माँ सीता सी स्वतंत्रता का धोखा देकर हरण किया है'[3]

6– 'गो की सूकर की चर्बी लग हर कारतूस में आई है'[4]

7– 'वे बोले राष्ट्र परीक्षा है कर्तव्य निभाना ही होगा'[5]

8– 'इस समय संधि होने से हर ओर बड़ाई होगी'[6]

उद्धरण क्र.1 और 2 में 'कहता' है, 'रहता है' तथा होता है' क्रियायें सामान्य वर्तमान काल की हैं। इनमें रानी लक्ष्मीबाई की वीर–गाथा तथा केन नदी की महत्ता का वर्णन है और बुन्देलखण्ड में प्रकृति नटी का नर्तन भी दर्शाया गया है। क्र.3 में विलायत के गीत गाने वालों की भारत में उपस्थिति वर्णित है। अतः सामान्य वर्तमान काल है। क्र.4 तात्कालिक वर्तमान काल का उदाहरण है। क्र.5 तथा 6 के अन्तर्गत 'किया है' तथा 'आई है' क्रियायें वर्तमान में कार्य की पूर्णता को अभिव्यक्त करती हैं। अतः इनमें पूर्ण वर्तमान काल है। क्र.7 और 8 में संदिग्ध वर्तमान काल है। इनमें राष्ट्र परीक्षा में कर्तव्य निर्वाह के प्रति तथा संधि के कारण यशार्जन में संदेह अभिव्यक्त हुआ है।

3– भविष्य काल –

वाक्य में क्रिया के जिस रूप से भविष्य में होने वाले कार्य का निर्देश हो, उसे भविष्य कालिक क्रिया कहा जाता है।

1– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 20

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 47

3– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 26

4– झाँसी की रानी, पृष्ठ 67

5– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 22

6– झाँसी की रानी, पृष्ठ 126

भविष्यकाल की क्रियाओं के निम्न उदाहरण डॉ. आनन्द के काव्य में उपलब्ध हैं–

1– **'पर झाँसी है स्वातंत्र्य राज्य,**
इसलिये नहीं झाँसी दूँगी'[1]

2– **'तो दुनियाँ की दुनियाँ जाने**
हम तो देख नहीं पायेंगे'[2]

3– **'यह कुछ न समझ में आता था,**
विधि के विधान का राग–बाग।
लग रहा आग में पानी है,
या पानी में लग रही आग।।'[3]

4– **'या हमारे मौलाना जी**
रोजा और नमाज़ सिखाते'[4]

उपर्युक्त उद्धरणों में क्र.1 और 2 के अन्तर्गत 'दूंगी' और 'पायेंगे' क्रियायें सामान्य भविष्यकाल की हैं। इनमें क्रिया के सामान्यतः भविष्य में होने का संकेत है। क्र.3 में अनिश्चित तथा अपूर्ण भविष्य उद्घाटित है। अंतिम पंक्ति क्र.4 में भावार्थ स्पष्ट है कि यदि मौलाना जी रोजा़ और नमाज़ की शिक्षा प्रदान करते, तो अन्न की समस्या और इबादत का मसला दोनों हल हो जाते। हेतु हेतु मद्‌भविष्यकाल की ओर स्पष्ट निर्देश है।

अव्यय

अव्यय वे अविकारी शब्द हैं, जिनमें लिंग, वचन, पुरुष तथा कारक के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता। ये शब्द प्रत्येक स्थिति में अपने मूलरूप में ही बने रहते हैं।

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 55

2– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 21

3– झाँसी की रानी, पृष्ठ 188

4– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 25

सामान्यतः अव्यय के 4 प्रकार हैं–

1– **क्रिया विशेषण**

2– **सम्बंध बोधक**

3– **समुच्चय बोधक**

4– **विस्मयादि बोधक**

1- क्रिया विशेषण

जिस शब्द से क्रिया, विशेषण या दूसरे क्रिया विशेषण की विशेषता प्रकट हो, उसे क्रिया विशेषण कहते हैं।[1] क्रिया विशेषण शब्दों के 4 प्रकार हैं। काल वाचक, स्थान वाचक, परिमाण वाचक तथा रीति वाचक।

डॉ. आनन्द के काव्य में क्रिया विशेषण के चारों प्रकार व्यवहृत हुए हैं।

1–'जब आई कुछ चेतनता तो'[2]

2–'रानी ने फिर देखीं अपने'[3]

3–'कब–कब गोली नहीं चलाई'[4]

4–क्या ही अच्छा था गुप्ता जी बैठे कहीं दुकान चलाते'[5]

5–'बार–बार विप्लव का बादल ऊपर उमड़–घुमड़ जाता है'[6]

6–'दायें से कर्नल पेली तो वायें कर्नल रेन्स बढ़े'[7]

7–'कुछ ललनायें चल पड़ीं संग'[8]

8–'पीने के साथ–साथ पिलाई गई तो खूब'[9]

1– आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, डॉ.वासुदेवनन्दन प्रसाद, पृ.135

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 53

3– उपरिवत्, पृष्ठ 146

4– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 22

5– उपरिवत्, पृष्ठ 25

6– उपरिवत्, पृष्ठ 28

7– झाँसी की रानी, पृष्ठ 215

8– उपरिवत्, पृष्ठ 150

9– दारुल शफा (अप्रकाशित), पृष्ठ 2

9–'अभी समय थोड़ा बाकी है कहीं भूलकर मत छू देना'[1]

10–'सुनकर लगी विचकने महफिल

तो तुमने झट गज़ल सुनादी'[2]

11–'मंद–मंद डोलने लगा प्रभात का किरन'[3]

12–'आज कोलाहल अचानक हो उठा क्यों'[4]

वाक्य क्र.1 से 3 तक उदाहरणों में प्रयुक्त जब, फिर, कब–कब काल वाचक क्रिया विशेषण अव्यय हैं। इन शब्दों से क्रिया में समय सम्बंधी विशेषता प्रकट हो रही है। क्रमांक 4 से 6 तक उदाहरणों में स्थान वाची क्रिया विशेषण अव्यय शब्द प्रयुक्त हुये हैं। कहीं, ऊपर, दायें तथा वायें अव्यय शब्दों से क्रिया की स्थान सम्बंधी विशेषता स्पष्ट हो रही है। क्रमांक 7 से 9 तक के वाक्यों में कुछ, तथा थोड़ा अव्यय शब्द न्यूनता बोधक हैं तथा 'खूब' शब्द अधिकता बोधक है। अतः इन उदाहरणों में परिमाण वाचक क्रिया विशेषण अव्यय व्यवहृत हुआ है। अंतिम वाक्य क्र.10 से 12 तक के उदाहरण रीतिवाचक क्रिया विशेषण अव्यय के हैं। इनमे प्रयुक्त झट, मंद–मंद तथा अचानक अव्यय शब्द नापतौल की इकाइयों की ओर इंगित करते हैं।

कुछ क्रिया विशेषण अव्ययों की रचना शब्दों में प्रत्यय लगाकर की जाती है। इन्हें यौगिक क्रिया विशेषण कहा जाता है। जैसे– क्रिया के द्वारा, शब्दों की द्विरुक्ति से तथा विपरीतार्थक शब्दों के योग से।

क्रिया द्वारा

लड़ते–लड़ते : **'लड़ते–लड़ते मर जाओ तुम'[5]**

चिल्ला–चिल्लाकर : **'चिल्ला–चिल्लाकर कहती हैं मंदिर मस्जिद की दीवारें'[6]**

1– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 15

2– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 1

3– झाँसी की रानी, पृष्ठ 181

4– उपरिवत्, पृष्ठ 182

5– उपरिवत्, पृष्ठ 139

6– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 8

माँग–माँगकर : 'माँग–माँग कर मर जाता है'[1]

चलते–चलते : 'रानी के चलते–चलते ही'[2]

हँसते–हँसते : 'हँसते–हँसते वलिदान किया'[3]

शब्दों की द्विरुक्ति से

काले–काले, लाल–लाल : 'काले–काले दृग लाल–लाल'[4]

गीली–गीली : 'गीली–गीली पलकें थीं'[5]

गाँव–गाँव, नगर–नगर : 'गाँव–गाँव, नगर–नगर में पंचायत के ढोंग रचाये'[6]

कहाँ–कहाँ : 'कहाँ–कहाँ से रेल निकाली'[7]

तड़प–तड़प : 'बिजली तड़प–तड़प जायेगी'[8]

घर–घर : 'घर–घर फैला यह समाचार'[9]

गली–गली : 'क्या डगर–डगर क्या गली–गली'[10]

मानस–मानस : 'मानस–मानस में जाग पड़ी'[11]

ताड़–ताड़ : ''गिर पड़े तिलंगे ताड़–ताड़'[12]

कंकड़–कंकड़ : 'कंकड़–कंकड़ काँप उठा है'[13]

1– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 14

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 152

3– उपरिवत्, पृष्ठ 166

4– उपरिवत्, पृष्ठ 140

5– उपरिवत्, पृष्ठ 142

6– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 4

7– उपरिवत्, पृष्ठ 5

8– उपरिवत्, पृष्ठ 7

9– झाँसी की रानी, पृष्ठ 149

10– उपरिवत्, पृष्ठ 149

11– उपरिवत्, पृष्ठ 150

12– उपरिवत्, पृष्ठ 154

13– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 9

धन्य–धन्य : 'धन्य–धन्य हे खद्दरधारी'[1]

पग–पग : 'पग–पग पर ललकार रहा है'[2]

विपरीतार्थक शब्दों के योग से

नर–नारी : 'गाँवों के भोले नर–नारी'[3]

मुर्दा–जीवित : 'मुर्दा–जीवित सा बोल उठा'[4]

अस्त्र–शस्त्र : 'सब अस्त्र–शस्त्र बेकार हुये'[5]

हिन्दू–मुस्लिम : 'हिन्दू मुस्लिम की एक जान'[6]

गंगा–यमुना : 'वह गंगा–यमुना की धारें'[7]

कुंज–कछारे : 'यमुना तीरे कुंज कछारे'[8]

न, नहीं तथा मत के प्रयोग से

न : 'मेरी भी बात न जाये'[9]

: 'तब तक न बन सकेगा लड़ाई का साज–बाज'[10]

नहीं : 'थी नहीं काल की भी शंका'[11]

पता नहीं है किस लालच में अत्याचार किया करते हैं'[12]

1– एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 10

2– उपरिवत्, पृष्ठ 8

3– उपरिवत्, 3

4– झाँसी की रानी, पृष्ठ 155

5– उपरिवत्, पृष्ठ 158

6– उपरिवत्, पृष्ठ 164

7– एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 9

8– उपरिवत्, पृष्ठ 11

9– झाँसी की रानी, पृष्ठ 127

10– उपरिवत्, पृष्ठ 194

11– उपरिवत्, पृष्ठ 84

12– एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 8

मत : 'मत समझो हमें कि हम यों ही'[1]

: 'यह मत पूछो किस मशीन से'[2]

: 'इससे कोई यह मत समझे'[3]

2– सम्बंध बोधक

जो अव्यय किसी संज्ञा के बाद व्यवहृत होकर उसका सम्बंध वाक्य के अन्य शब्दों से प्रकट करता है, सम्बंध बोधक कहलाता है।

डॉ. आनन्द की रचनाओं में सम्बंध बोधक अव्यय निम्न प्रकार उपलब्ध हैं–

1. आगा–पीछा : 'आगा–पीछा सब देख–भाल अंग्रेजी कर्त्तव्यानुसार'[4]
2. पहिले : 'वैसे ही रानी ने मुड़कर पहिले अपना कर दिया बार'[5]
3. भीतर : 'लेकिन कहीं जवाब नहीं है भीतर की हिचकी का'[6]
4. तरह : 'अंग्रेजों की तरह आज यह जो अंग्रेजी काँगरेस है'[7]
5. बाहर : 'रानी को भी निज किला छोड़ बाहर जाने का हुक्म हुआ'[8]
6. ऊपर : 'जिसके ऊपर फहराता था झण्डा विद्रोही का देखा'[9]
7. सम्मुखः 'कुछ हो सचेत फिर बैठ गई पति सम्मुख पति भक्ता नारी'[10]
8. ओर : 'चल पड़ी मौत चट उसी ओर'[11]
9. द्वारा : 'इनकी कलम कुदारों द्वारा कागज पर सड़कें बनती हैं'[12]
10. तक : 'यह विप्लव की चिनगारी है अंतरिक्ष तक साफ करेगी'[13]

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 11
2– एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 19
3– झाँसी की रानी, पृष्ठ 51
4– उपरिवत्, पृष्ठ 49
5– उपरिवत्, पृष्ठ 174
6– उपरिवत्, पृष्ठ 40
7– एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 7
8– झाँसी की रानी, पृष्ठ 58
9– उपरिवत्, पृष्ठ 177
10– उपरिवत्, पृष्ठ 35
11– उपरिवत्, पृष्ठ 112
12– एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 16
13– उपरिवत्, पृष्ठ 18

सम्बन्ध बोधक अव्ययों के उपर्युक्त उदाहरणों में वाक्य क्र. 1 तथा 2 के अन्तर्गत 'आगा–पीछा' तथा 'पहिले' काल वाचक अव्यय हैं। 'आगा–पीछा' से तात्पर्य भूतकाल और भविश्य काल से है। 'पहिले' का सम्बनध 'कर दिया' क्रिया से जोड़ा गया है। वाक्य क्र. 3 तथा 5 में व्यवहृत 'भीतर' तथा 'बाहर' अव्यय स्थानवाची हैं। इनके सम्बन्ध क्रमशः शरीर और किले से जोड़े गए हैं। क्र. 4 में व्यवहृत 'तरह' अव्यय सादृश्य मूलक है। क्र. 6 तथा 8 में प्रयुक्त 'ऊपर' तथा 'ओर' दिशावाची अव्यय हैं, जिनके सम्बन्ध क्रमशः किला और मृत्यु से है। क्र. 7 में व्यवहृत 'सम्मुख' अव्यय स्थान का बोध कराता है, जो 'पति' संज्ञा से सम्बद्ध है। क्र. 9 में 'द्वारा' अव्यय शब्द साधन वाचक है, जो 'कलम–कुदारों' से सम्बंधित होकर 'बनती हैं, 8 क्रिया की विशेषता बतलाता है। वाक्य क्र. 10 मे 'प्रयुक्त' 'तक' अव्यय रूप अनुबद्ध सम्बन्ध बोध अव्यय है, जिसका सम्बन्ध अन्तरिक्ष से है।

3– समुच्चय बोधक

जो अव्यय दो शब्दों, वाक्यांशों, पद–बन्धों अथवा वाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें समुच्वय बोधक अव्यय कहा जाता है। जैसे– और, अथवा, जबतक, तबतक, यदि......तो, इसलिए, जिस, यद्यपि तथा ताकि आदि।

डॉ. आनन्द की रचनाओं में समुच्च बोधक अव्यय निम्नवत् उपलब्ध हैं।

1.और : **'मानव है कितना पतित और मानव ही है कितना महान'**[1]

2.अथवा : **'अथवा करुणा का कोष लिए उठ मूर्तिमान करुणा आई'**[2]

3.जबतक...तवतक :**'जबतक न अपने हाथ में कोई किला है आज'**
तब तक न बन सकेगा लड़ाई का साज बाज'[3]

4. यदि...तो : **'यदि नहीं दूसरा उदाहरण तो तू ही है तेरे समान'**[4]

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 1

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 151

3– उपरिवत्, पृष्ठ 194

4– उपरिवत्, पृष्ठ 10

5.इसलिए : 'पर झाँसी है स्वातंत्र राज्य इसलिए नहीं झाँसी दूँगी'[1]

6.जिस : 'था बापू का परिवार यही जिस पर तुमने अन्याय किया'[2]

7.यद्यपि : 'यद्यपि जुगनू बन चमक उठेगी चिनगारी'[3]

8.ताकि : 'ताकि जनहित में कमी कोई न रहने पाये'[4]

वाक्य क्र. 1 में प्रयुक्त समुच्च बोधक अव्यय 'और' दो वाक्यों को जोड़ता है। क्र. 2 में व्यवहृत 'अथवा' अव्यय विभाजन की रूपरेखा प्रस्तुत करता है। प्रजा की आँखों से प्रवाहित अश्रुधारा एक नई बेतवा है। अथवा मूर्तिमान करुणा। अतः यहाँ 'अथवा' समुच्च बोधक अव्यय है। ठीक इसी तरह क्र. 4 में 'यदि......तो' व्यवहृत है। क्र. 5 के अन्तर्गत 'जिस' अव्यय का प्रयोग प्रथम वाक्य से जोड़ने के संदर्भ में किया गया है। अतः यहाँ समुच्चय बोधक अव्यय का स्वरूप बोध भेद है। क्र. 7 में व्यवहृत 'यद्यपि' अव्यय पद संकेत वाचक समुच्च वाचक समुच्चय है। अंतिम वाक्य क्र. 8 में 'ताकि' अव्यय पद उद्देश्य सूचक समुच्चय बोधक अव्यय का उदाहरण है।

4– विस्मयादि बोधक

जिन अव्ययों के व्यवहार से हर्ष, शोक, आश्चर्य, अनुमोदन, तिरस्कार तथा सम्बोधन संकेतित हों, उन्हें विस्मयादि बोधक अव्यय कहते हैं।

डॉ. आनन्द के काव्य में जो विस्मयादि बोधक अव्यय उपलब्ध है, वे निम्नलिखित हैं–

1.हर्ष : 'इस मुल्क में अल्लाह रे दारुलशफा की शान
क्या बात है बल्लाह रे दारुलशफा की शान'[5]

2.शोक : 'इस आजादी के लिए हाय
जिसने विधवापन पाया है'[6]

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 55

2– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 15

3– पाण्डुलिपि–1, फौजी गठबंधन, पृष्ठ 17

4– उपरिवत्, पब्लिक इंटरेस्ट, पृष्ठ 32

5– दारुलशफा (अप्रकाशित), पृष्ठ 3

6– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 24

3.तिरस्कार : 'इसमें भी लाखों खा डाले
धन्य–धन्य हे खद्दर धारी'[1]

4.आश्चर्य : 'वह वायु वेग से दौड़ रही,
जो दृष्टि किसी के आ न सकी।
रवि की सहस्र किरण बलि भी,
जिसकी छाहीं छू पा न सकी।।[2]

5.स्वीकारोक्ति : 'यह माना कि गले बाजी में
आप बहुत कुछ गले बाज हैं'[3]

6.सम्बोधन : 'ओ नेताओं! अब होशियार
लीडरों ! रहो अब सावधान'[4]

उपर्युक्त विस्मयादि बोधक अव्यय के उदाहरणों में वाक्य क्र. 1 से हर्ष व्यंजित है। इसमें दारुलशफा (विधायक निवास–लखनऊ) की शान–शौकत के वर्णन से हर्षातिरेक अभिव्यक्त हो रहा है। क्र. 2 के अन्तर्गत शोक का भाव व्यक्त है। चन्द्रशेखर आजाद की पत्नी के वैधव्य से शोक प्रकट हो रहा है। क्र. 3 में तिरस्कार अभिव्यक्त है। इसमें नेताओं की घूसखोरी को लेकर विस्मय प्रकट किया गया है। क्र. 4 के अन्तर्गत रानी लक्ष्मीबाई की वेगपूर्ण गति से आश्चर्य प्रकट हो रहा है। क्र.5 में स्वीकारोक्ति का भाव दर्शाया गया है। अंतिम वाक्य क्र. 6 में नेताओं तथा लीडरों के प्रति सम्बोधन व्यक्त किया गया है।

1– एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 10

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 214

3– एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 3

4– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 3

सप्तम् अध्याय :

डॉ. आनन्द के साहित्यिक कृतित्व का समग्र मूल्यांकन

- रस
- राष्ट्रीयता
- आँचलिकता
- निष्कर्ष

सप्तम अध्याय

डॉ. आनन्द के साहित्यिक कृतित्व का समग्र मूल्यांकन

डॉ. आनन्द के रचना संसार को आधार मानकर उनके साहित्यिक कृतित्व का समग्र मूल्यांकन इस अध्याय का मुख्य प्रतिपाद्य है। उनकी रचनाओं में राजनीतिक उथल–पुथल से प्रभावित भाव–सृष्टि, तत्कालीन सामाजिक स्थिति, मामिर्कक स्थलों की हृदयस्पर्शिता, भाषा सामर्थ्य छन्द विधान, बिम्ब विधान, गुण योजना तथा उक्ति वैचित्र आदि का सम्मिलित प्रभाव इनके काव्य सौन्दर्य को द्विगुणित करता है। राष्ट्रीय चेतना के स्वर इनके काव्य में ओज की सृष्टि करते हैं, अलंकार इनके काव्य की शोभा में अभिवृद्धि करते हैं, रसयोजना से इनके काव्य में अनिर्वचनीय भाव–संचार होता है तथा आंचलिकता का पुट इनकी रचनाओं को सामान्य पाठक की भावानुभूति से जोड़ता है।

डॉ. आनन्द के साहित्यिक कृतित्व का समग्र मूल्यांकन निम्न बिन्दुओं के आधार पर प्रस्तुत है :

क– रस

रस को **'ब्रह्मानंद सहोदर'** कहा गया है। अर्थात् रस ब्रह्मानंद के निकट होते हुये उसका पर्याय नहीं है। रस को **'लोकोत्तर चमत्कार प्राण'** भी कहा गया है। अर्थात रस का प्राण है चित्त का विस्तार और उससे

उद्भूत आह्लाद। यह आनन्द लौकिक अनुभवों–स्वादिष्ट भोजन, ताश खेलने आदि से प्राप्त आनन्द से भिन्न होता है। चमत्कार का अर्थ है ऐसा सौन्दर्यास्वाद, जिसमें हम अपने अस्तित्व तक को भूल जाते हैं।[1] आनन्द बुद्धि जनित भी हो सकता है और हृदय के आन्दोलन से प्रसूत भी। आनन्द में विभोर करने की, आत्म विस्मृत करने की शक्ति होती है।[2] जिस कवि की कविता में यह शक्ति होती है, वह स्थायी प्रभाव छोड़ने में समर्थ होती है। डॉ. आनन्द की कविता इस कसौटी पर खरी उतरती है। उनके काव्य में रस–योजना निम्नवत् उपलब्ध होती है।

1– श्रृंगार रस

श्रृंगार रस का स्थायी भाव रति है। इसमें आलम्बन नायक या नायिका होता है, उद्दीपन बादल की घटायें, बसन्त की सुहानी ऋतु तथा कोयल की मधुर ध्वनि आदि होते हैं। प्रियजन की स्मृति से अश्रुपात होना, रोमांच होना आदि अनुभाव होते हैं तथा मोह, जड़ता, गर्व, दीनता, निर्वेद तथा आवेग आदि संचारी भाव श्रृंगार रस की स्थिति उत्पन्न कर स्वयं विलीन हो जाते हैं। संयोग श्रृंगार का एक उदाहरण देखिये–

'जिन मारौ नजरियाँ लग जैहैं।
रसियन की सूधी छतियन पै
बन्दुकियाँ सीं दग जैहैं।।'

X X X

'का घर का आँगन बौराये
बगिया वन उपवन बौराये
नस–नस में दुपहरिया लहकी
तन बौराये मन बौराये
बौराई आम की डार– कुइलिया कुहू–कुहू कूकन लागी।'[3]

1– पाश्चात्य काव्य शास्त्र के सिद्धान्त, डॉ.शान्तिस्वरूप गुप्त, अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली, पृष्ठ 255

2– हिन्दी साहित्य :अतीत के झरोखे से, डॉ. इन्द्रपालसिंह 'इन्द्र', वागीश्वरी प्रकाशन, लायर्स कॉलोनी आगरा, पृष्ठ 74

3– झाँसी की रानी, पृष्ठ 203

उक्त उदाहरण में संयोग श्रृंगार आकर्षक छटा विद्यमान है। बगिया, वन, उपवन, दुपहरिया, तन–मन, आम्र के झौंर में खिला हुआ बौर तथा कोयल की मधुर ध्वनि आदि उद्दीपन हैं। प्रियतम की अभिसार कामना से उत्साहित युवतियाँ आलम्बन हैं। कामिनियों की कामुक दृष्टि से 'रसियन' की 'छतियन' पर अर्थात् रसिक प्रेमियों के वक्षस्थल पर बन्दूक जैसा घाव हो जाना तथा तन और मन का बावला हो जाना अनुभाव हैं। इस तरह उक्त उद्धरण में संयोग श्रृंगार की निष्पत्ति स्पष्ट है।

डॉ. आनन्द की रचनाओं में विप्रलंभ श्रृंगार के अनूठे उदाहरण भी उपलब्ध हैं।

बिरहीन के आँगन में जब तें बरखा की घला–घली माचन लागीं।
छतियाँ चिपकाय वियोगिनियाँ पतियाँ पति की लिखी बाँचन लागीं।।
सगुनौती मनाय मनाय कोऊ पिय आवन की घड़ीं जाँचन लागीं।
बदरा लगे नाचन बादर में बुंदियाँ इतै भूमि पै नाचन लागीं।।[1]

यहाँ विरहिणी युवतियाँ आलम्बन हैं। गगनाच्छादित मेघ, पृथ्वी पर थिरकती हुई वर्षा की बूँदें तथा पति की लिखी हुई चिट्ठियाँ आदि उद्दीपन हैं। पति के प्रेमपत्र को वक्ष में छिपाकर बाँचना, सगुनौती मनाकर प्रिय के आगमन की प्रतीक्षा करना आदि अनुभाव हैं। उक्त उदाहरण में विप्रलंभ श्रृंगार भली प्रकार चित्रित हुआ है।

2– करुण रस

किसी प्रिय व्यक्ति के चिर–विरह अथवा मरण से उत्पन्न शोक आदि भावों के परिपाक को करुण रस कहते हैं।[2] श्रीमती सुमित्रादेवी गुप्ता के मतानुसार–'**प्रिय या मनचाही वस्तु के नष्ट होने या उसका कोई अनिष्ट होने पर हृदय का संवेदनामय होने का वर्णन करुण रस है।**'[3]

1– पांडुलिपि–1, पावस, पृष्ठ 46

2– मानक हिन्दी व्याकरण, डॉ. पृथ्वीनाथ पाण्डेय, पृष्ठ 254

3– अभिनव हिन्दी व्याकरण तथा रचना, श्रीमती सुमित्रादेवी गुप्ता, पृ.253

डॉ. आनन्द की रचनाओं में उपलब्ध कतिपय संवेदना युक्त उद्धरण निम्न लिखित हैं–

इस आजादी के लिये हाय,
जिसने विधवापन पाया है।
सच पूछो तो आजादी का,
उसने ही मूल्य चुकाया है।।

अब आज वही होकर अनाथ,
मिल के फाटक पर जाती है।
पानी में खड़िया घोल–घोल,
वह बच्चों को बहलाती है।।[1]

यहाँ बाबू सुभाषचन्द्र वोस के देश की स्वतंत्रता के लिये वलिदान हो जाने पर उनकी विधवा पत्नी के ह्रदय में व्याप्त करुण संवेदना का मर्म स्पर्शी वर्णन होने के कारण करुण रस की निष्पत्ति हो रही है। दूध के विकल्प के रूप में पानी में खड़िया घोलकर बच्चों को बहलाने का कारुणिक वर्णन कवि की अद्भुत कल्पना का परिचायक है। एक अन्य उदाहरण दृष्टव्य है–

और वह बालक चिता के पास बैठा,
सिसकियाँ भरता बिलखता रह गया जो।
बेतवा के बाँध पलकों में दबाये,
बस चिता की ओर लखता रह गया जो।।[2]

इस उद्धरण में झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई के निधनोपरान्त उनके दत्तक पुत्र के ह्रदय की कारुणिक झाँकी प्रस्तुत होने के कारण करुण रस की स्थिति है। एक अन्य उदाहरण में कवि ने विन्ध्य प्रदेश तथा

1– सनृ अड़तालीस, पृष्ठ 24

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 221

बिहार प्रान्त की भुखमरी का चित्रांकन किया है, जिसे पढ़कर पाठक का हृदय कारुण्य से आपूरित हो जाता है।

भूखा पेट बिहार दिखाकर संगीनें गोली खाता है।
भूखा विन्ध्य प्रदेश हमारा चीख रहा है चिल्लाता है।।
उस भूखी माता से पूछो जिसका सात साल का बालक।
भूखा तड़प–तड़प कर रोटी माँग–माँग कर मर जाता है।।[1]

यहाँ भूख के कारण सात साल के मृत बालक की माँ के हृदय की मर्मान्तक पीड़ा का संवेदनामय चित्र साकार हुआ है। करुण रस की स्थिति पूर्णतः स्पष्ट है।

3– शान्त रस

इस असार संसार के प्रति विरक्ति तथा ईश्वर में अनुरक्ति के कारण उपलब्ध मानसिक शांति के वर्णन में शांत रस की निष्पत्ति होती है। जैसे–

जाने का निकट मुहूर्त लिये आते देखे आने वाले।
रोने वाला निष्कर्ष लिये गाते देखे गाने वाले।।
यह दुनियाँ के बाजीगर हैं या है बाजीगर की दुनियां।
पड़ती कानों में आ–आकर जाने किस–किस की पग ध्वनियां।।

अब किस पग–ध्वनि से बच निकलूँ,
किस पग–ध्वनि का सम्मान करूँ।
मैं किससे क्या पहिचान करूँ।।[2]

यहाँ कवि ने संसार के आवागमन से निराश होकर संसार को बाजीगर की दुनियाँ कहा है। इस अनस्तित्व पूर्ण जगत में किसी से मधुर सम्बंध क्यों स्थापित किये जायँ, यहाँ किससे क्या पहिचान की जाय। वर्णन में निर्वेद की झलक विद्यमान है। अतः शान्त रस की स्थिति है।

1– एम. एल. ए. राज., पृष्ठ 14

2– पांडुलिपि–1, मैं किससे क्या पहिचान करूँ, पृष्ठ 41–42

पर तुम तो मरने जीने की कोई बात न जान सके हो।

खुद अपने को भूल रहे हो इन्हें नहीं पहिचान सके हो।।

अपने को समझे हो राजा अपने को समझे हो ईश्वर।

पर अपनी भूखी जनता को समझ नहीं इन्सान सके हो।।[1]

उक्त उद्धरण में कवि ने जन प्रतिनिधियों को इस असार संसार की मिथ्या परिकल्पना का आभास कराते हुये कहा है कि स्वयं को राजा अथवा ईश्वर मानने वाले, भूखी एवं त्रस्त जनता को कम से कम इन्सान तो समझो और अहंकार त्याग कर स्वयं के वास्तविक स्वरूप को पहिचानने का प्रयास करो। यहाँ कवि ने शान्त रस की सुन्दर सृष्टि की है।

जीवन निद्रा में प्राणी को लगता अपना अपना।

देखा तो कुछ तत्व नहीं है केवल सपना सपना।।[2]

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के महाप्रयाण के उपरान्त पुरजनों तथा परिजनों की निराशा अभिव्यक्त करते हुये यहाँ कवि ने जीवन तथा संसार को स्वप्नवत् चित्रित किया है। उक्त पंक्तियों में शान्त रस का सफल आयोजन है।

4– रौद्र रस

रौद्ररस का स्थायी भाव क्रोध होता है। क्रोधाविष्ट होकर की गई चेष्टाओं तथा विपक्षी को हानि पहुँचाने के उपक्रमों के वर्णन में रौद्र रस की स्थिति निर्मित होती है। जैसे–

रानी इधर से आ गई बनकर कराल काल।

तो डगमगा उठे सभी आकाश क्या पताल।।

भृकुटी हुई थीं बंक बिखरने लगे थे बाल।

माथे पै बल पड़े हुये आँखें थीं लाल–लाल।।

रण रोष जिस समय महारानी पै आ गया।

तो ग्वालियर का युद्ध जवानी पै आ गया।।[3]

1– एम. एल. ए. राज., पृष्ठ 24

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 41

3– उपरिवत्, पृष्ठ 197

यहाँ क्रोध स्थायी भाव है। रानी लक्ष्मीबाई आलम्बन है। जवानी पर आया ग्वालियर का युद्ध उद्दीपन है। बंक भृकुटी, बिखरे हुये बाल, माथे पर पड़े बल, लाल आँखें आदि अनुभाव हैं। रानी की उग्रता आदि संचारी भाव हैं। अतः यहाँ रौद्र रस की सफल निष्पत्ति मानी जा सकती है।

फिर लगी नाचने रण चण्डी,
खप्पर भरने रण प्रांगण में।
ले–लेकर प्राण हथेली पर,
आ गये शूर समरांगण में।।

वह तेजपुंज वह चमक–दमक,
वह शौर्य सिंधु वह वीर वेश।
बरछी कटार से रानी का,
शोभित इस क्षण था कटि प्रदेश।।[1]

उक्त उदाहरण में युद्ध के पूर्व योद्धाओं की तत्परता एवं सन्नद्धता के वर्णन में रौद्र रस है। यहाँ समर के लिए कटिबद्ध शूरवीर तथा रानी लक्ष्मीबाई आलम्बन हैं, अंग्रेजी सेना से छिड़ने वाला युद्ध उद्दीपन है तथा रानी के मुख–मंडल की चमक–दमक, तेज तथा हथियारों से सज्जित कटि प्रदेश आदि अनुभाव हैं। एक अन्य उद्धरण में रौद्र रस की स्पष्ट स्थिति दृष्टव्य है।

आज प्रतिज्ञा है हम अपनी हीन अवस्था को बदलेंगे।
नेताओं की खद्दर वाली कुटिल संस्था को बदलेंगे।।
गूँज उठे है दिग दिगंत में अब तो इन्क्लाब के नारे।
हमें शपथ है हम इस गंदी सड़ी व्यवस्था को बदलेंगे।।[2]

यहाँ जनप्रतिनिधियों की शोषण प्रवृत्ति एवं तानाशाही के विरुद्ध जन सामान्य द्वारा छेड़े गये अभियान के वर्णन में रौद्र रस है। जन सामान्य का क्रोध अनुभावों के माध्यम से अभिव्यक्त हो रहा है।

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 211

2– एम. एल. ए. राज., पृष्ठ 27

5– वीर रस

वीर रस का स्थायी भाव उत्साह है। जब यह उत्साह विभावादि के संयोग से परिपक्व होकर रसरूप में परिवर्तित होता है, तब वहाँ वीर रस की निष्पत्ति होती है। उत्साह, युद्ध, दया, दान तथा समर्पण आदि विविध प्रकार का हो सकता है। इसी से वीर रस के कई प्रकार हो सकते हैं। एक उदाहरण दृष्टव्य है–

चल रहे सीना उठा ऐंठे हुये हैं,
रण कुशलता में पले पैठे हुये हैं।
देख इनके राष्ट्र का ध्वज लग रहा यह,
इनके झण्डे पर गरुड़ बैठे हुये हैं।।

घूम कर सेना घटा सीं छा गई है,
धूल उड़ कर व्योम तक मँड़रा गई है।
इस तरह से आ गई रानी कि जैसे,
कौंध कर बिजली धरा पर आगई है।।[1]

इन पंक्तियों में वीर रस है। रानी लक्ष्मीबाई तथा सेना के उद्भट योद्धा आलम्बन हैं, सेना का बादलों की तरह उमड़ना, धूल का गगनाच्छादित कर लेना तथा युद्ध हेतु उत्कट सन्नद्धता आदि उद्दीपन विभाव हैं। वीरों का सीना तानकर चलना तथा रानी का विद्युत वेग के समान तीव्रगति से आना आदि अनुभाव हैं। इस तरह उक्त उदाहरण में वीर रस की सफल अभिव्यक्ति हुई है। डॉ. आनन्द मूलतः ओज के कवि थे। अतः उनकी रचनाओं में वीर रस का चरमोत्कर्ष दर्शनीय है–

सुन लो अब चेत गये हम भी,
वह अलख जगाकर मानेंगे।
इस दूषित नेताशाही में,
हम आग लगाकर मानेंगे।।

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 183

तानाशाही बर्बरता का हम,

तख्त उलट दें जो न आज।

हम कवि ही नहीं कि दुनियाँ का,

इतिहास पलट दें जो न आज।।[1]

यहाँ पर देश के स्वार्थी नेताओं की दूषित नेताशाही के विरुद्ध अभियान छेड़ने का उत्साह व्यंजित है। निरंकुश जन प्रतिनिधियों की तानाशाही को समूल उन्मूलित करने का दृढ़ संकल्प अभिव्यक्त हो रहा है तथा विभावादि के संयोग से कवि का उत्साह पूर्ण परिपक्वावस्था को प्राप्त है। अतः यहाँ वीर रस का सफल निदर्शन है।

6– हास्य रस

जब काव्य में विचित्र आकृति, अनौखी वेश–संरचना तथा अटपटी चेष्टाओं के वर्णन से हास्य की परिपक्वता उत्पन्न होती है, वहाँ हास्य रस होता है। डॉ. आनन्द ने यदा–कदा अपनी रचनाओं में ऐसे हास्य की सृष्टि की है जो श्रोताओं के हृदय गुदगुदाने में अभूतपूर्व सफल रहा। निम्न उदाहरण में उनकी परिपक्व हास्य–सृष्टि प्रस्तुत है।

यह समझो ओबर एज मुझे।

है तरुणाई का तेज मुझे।।

सब जान गये सब मान गये।

हर वायस्कोप स्टेज मुझे।।

चरणामृत से परहेज मुझे।

केवल पंचामृत पाता हूँ।।

मैं तो लीडर कहलाता हूँ।।[2]

यहाँ अँग्रेजी शब्दों के प्रयोग से वर्णन में विचित्रता उत्पन्न हुई है। कवि चरणामृत से परहेज तथा पंचामृत की चाह वर्णन कर नेताओं के स्वार्थी स्वभाव एवं विचित्र चेष्टाओं द्वारा हास्य रस का आयोजन करने में सफल हुआ है–

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 19–20

2– पांडुलिपि–2, मैं तो लीडर कहलाता हूँ, पृष्ठ 41

कुछ राम सुमिरते जाते थे,

कुछ अल्ला अल्ला गाते थे।

कुछ देवी देव मनाते थे।।

हम बोल रहे नारियल धजा।

मोटर का मजा मोटर का मजा।।[1]

उक्त उद्धरण में बस यात्रा की विचित्र अनुभूतियों को हास्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। बस में यात्रियों की अधिकता से उत्पन्न व्याकुलता एवं बेचैनी के कारण देवी–देवताओं को मनाना, अल्ला–अल्ला गाना, रामनाम स्मरण करना तथा नारियल–ध्वजा चढ़ाने का संकल्प लेना आदि का वर्णन हास्य की अद्भुत सृष्टि करता है।

7– भयानक रस

जिस वर्णन को पढ़कर पाठक के मन में भय का भाव जाग्रत हो, उसकी कल्पना मात्र से ही मानव मन भयभीत हो जाये, वहाँ भयानक रस की निष्पत्ति मानी जाती है। जैसे–

अश्रु, गैस, लाठी, गोली से,

जन जागरण नहीं रुकने का।

कैसा भी हो किला पाप का,

यह मत समझो ढह न सकेगा।।

नव युग के तूफान उठेंगे,

जनयुग की आँधी आयेगी।

युग व्यापी बन लाल क्रान्ति की,

बिजली तड़प–तड़प जायेगी।।[2]

उक्त पंक्तियों को कवि ने भयंकरता का ऐसा जामा पहनाया है कि उक्त दृश्य की कल्पना मात्र से श्रोता रोमांचित होकर भय की भावनानुभूति से व्याकुल हो जाते हैं। भयानक रस की भयानकता शीघ्रता से उद्भूत हो जाती है–

1– पांडुलिपि–2, मोटर का मजा, पृष्ठ 42

2– एम. एल. ए. राज., पृष्ठ 7

आया कुछ ऐसा हलाडोल,

जब रण में योद्धागण मचले।

रूहें मुर्दों की काँप उठीं,

कब्रों के भीतर कफन तले।।

तोपों की भीषण मारों से,

फौजें भागीं मुँह मोड़ मोड़।

भय से यमुना का पानी भी,

हट गया किनारा दूर छोड़।।[1]

यहाँ कवि ने युद्ध क्षेत्र का भयावह वर्णन करके भयानक रस की सृष्टि की है। कब्रों के अन्दर तथा कफ़न के नीचे मुर्दों की रूहें काँपना, पृथ्वी कम्पायमान होना तथा भय की अधिकता से यमुना जल का किनारा छोड़कर दूर हट जाना आदि वर्णन मानवीय मन को भयाक्रान्त करने के लिये पर्याप्त हैं। यहाँ कवि भयानक रस के आयोजन में पूर्णतः सफल हुआ है।

8- वीभत्स रस-

जुगुप्सा (घृणा) वीभत्स रस का स्थायीभाव है। वर्णन पढ़कर पाठक के मन में घृणा का भाव उत्पन्न हो, वहाँ वीभत्स रस होता है। शरीर के अंगों का कटना, रक्त स्राव तथा माँस के लोथड़ों का जानवरों द्वारा नोंच नोंच कर खाना आदि वर्णनों में वीभत्स रस की सृष्टि होती है। उदाहरण दृष्टव्य है-

धड़ से गरदन, गरदन से,

गिर पड़े मुण्ड मुकने से।

शोणित सरिता-धारा में,

बह चले टोप टुकने से।।[2]

यहाँ शरीर से कटकर सिर का अलग होना तथा रक्त की धारा प्रवाहित होना वर्णित है। इन दृश्यों की कल्पना मात्र से हृदय में घृणा

1- झाँसी की रानी, पृष्ठ 189-190

2- उपरिवत्, पृष्ठ 123

का भाव जाग्रत होकर वीभत्स रस की सृष्टि करता है। डॉ. आनन्द के **'झाँसी की रानी'** काव्य में युद्ध के वर्णनों में घृणित दृश्यों का सफल आयोजन हुआ है–

रानी की रण सहचरियों ने,
की एक भयानक मार काट।
ले माँस गिद्ध उड़ चले, चला,
वीभत्स रूप रण का विराट।।

सहचरी सुन्दरा का घोड़ा,
अरि के गज मस्तक फाड़ फाड़।
उड़ चला दुलत्ती झाड़–झाड़,
गिर पड़े तिलंगे ताड़–ताड़।।[1]

उक्त छन्द में कवि ने युद्ध की भयानक मारकाट, गिद्धों द्वारा माँस के लोथड़ों का ले उड़ना तथा हाथियों के मस्तकों का विदीर्ण हो जाना आदि घृणित दृश्यों को चित्रित किया है। इन दृश्यों की कल्पना से ही मन में जुगुप्सा उत्पन्न हो जाती है। अतः यहाँ वीभत्स रस है।

9– अद्‌भुत रस–

विस्मय इसका स्थायीभाव है। जब किसी आश्चर्य जनक वस्तु, अलौकिक दृश्य तथा असाधारण घटना देखकर मन आश्चर्य चकित या विस्मित हो जाय, वहाँ अद्‌भुत दृश्य होता है। उदाहरण दृष्टव्य है–

अद्‌भुत गुण अद्‌भुत रण कौशल,
अद्‌भुत कृपाण की मार लिये।
रक्तिम दृग बंक भृकुटियों में,
थी रौद्र रूप साकार लिये।।[2]

उक्त पंक्तियों में रानी लक्ष्मीबाई के आश्चर्य चकित करने वाले अप्रतिम रण कौशल का अद्‌भुत वर्णन है। रानी में समाहित विभिन्न

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 154

2– उपरिवत्, पृष्ठ 152

विस्मयकारी गुण तथा अनौखा तलवार–संचालन पाठक को विस्मय–विमुग्ध कर देता है। रानी के रक्तिम वर्ण नेत्र एवं बंक भृकुटियाँ देखकर शत्रुपक्ष स्तम्भित सा रह जाता है। अतः यहाँ अद्‌भुत रस का सफल आयोजन माना जा सकता है–

यह कुछ न समझ में आता था,
विधि के विधान का राग–बाग।
लग रहा आग में पानी है,
या पानी में लग रही आग।।

सह सके ग्रीष्म का ताप न जब,
सूरज तक ऊपर अम्बर में।
व्याकुल हो नभ से भाग चले,
गिरने को पश्चिम सागर में।।[1]

उपर्युक्त पंक्तियों में विस्मयकारी दृश्य अंकित करते हुये कवि ने **'आग में पानी या पानी में आग'** कहकर पाठक को आश्चर्य चकित कर दिया है। ग्रीष्म ऋतु के भयंकर ताप से संतप्त सूर्य पश्चिमी सागर में अपनी तपन बुझाने को जाता है– ऐसे अलौकिक दृश्यों की सृष्टि कर डॉ. आनन्द ने यहाँ पर अद्‌भुत रस का सफल आयोजन किया है–

माना तुम्हें कि तुम विधान का,
गिरि कैलाश उठा सकते हो।
माना तुम कानून काल को,
पाटी से बँधवा सकते हो।।

यह माना कि बना सकते हो,
तुम अपनी सोने की लंका।
किन्तु न इतने पर भी अपना,
लंका काण्ड बचा सकते हो।।[2]

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 188

2– एम. एल. ए. राज., पृष्ठ 26

प्रस्तुत उद्धरण में कवि ने जन प्रतिनिधियों द्वारा कानून का कैलाश उठाना, कानून रूपी काल को पाटी से बाँधना तथा अपनी सोने की लंका निर्मित करना जैसी अलौकिक घटनाओं का संयोजन किया है। अतः यहाँ कवि अद्‌भुत रस की सुन्दर सृष्टि करने में पूर्णतः सफल हुआ है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि डॉ. आनन्द के साहित्य में सभी रसों का सफल आयोजन है। श्रृंगार, वीर, करुण, रौद्र, हास्य, वीभत्स, भयानक, शान्त और अद्‌भुत रसों के पर्याप्त उदाहरण उपलब्ध हैं। कवि ने कहा भी है–

कवि के नव रस चल पड़े साथ,
जब साथ वीर मय हास चला।
वलिदान चले आगे आगे,
पीछे–पीछे इतिहास चला।।[1]

ख– राष्ट्रीयता

आधुनिक हिन्दी काव्य में राष्ट्रीयता का प्रदुर्भाव ब्रिटिश शासन की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ था। भारतेन्दु युगीन कवियों ने राष्ट्र की दयनीय स्थिति का चित्रण करके सामान्य जनता को संगठित होकर ब्रिटिश शासन के बिरुद्ध आन्दोलन के लिये उकसाया था। मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान तथा सोहनलाल द्विवेदी आदि कवियों ने राष्ट्र के प्रति समर्पित भाव से अपना काव्य–सृजन किया तथा लोगों को स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये प्रेरित किया।

डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त का मत है– **'हमारे विचार से राष्ट्रीयता के मूल में आत्मगौरव एवं जाति की रक्षा के उत्साह का भाव रहता है, अतः इसे 'वीर रस' के अन्तर्गत लिया जाना चाहिए। इसमें कोई सन्देह नहीं कि राष्ट्रीयता वीर रस का ही एक रूप है।'**[2]

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 154

2– साहित्यिक निबंध–हिन्दी काव्य में राष्ट्रीयता की भावना, डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त, लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद, पृष्ठ 586

उक्त अभिमत का निष्कर्ष यह है कि वीर रसात्मक काव्य में राष्ट्रीय भावना अन्तर्निहित रहती है। किन्तु कतिपय विद्वान देश–प्रेम विषयक काव्य–सृजन को राष्ट्रीय काव्य के अन्तर्गत मानते हैं। देश–प्रेम से प्रभावित होकर राजनेताओं ने राष्ट्रीय आन्दोलन भी किये हैं तथा कवियों ने देश–प्रेम से सम्बंधित राष्ट्रीय काव्य भी लिखे हैं। जब राष्ट्र संकटापन्न स्थिति से आक्रान्त होता है, तब कवि हृदय में राष्ट्रीय भावना का प्रादुर्भाव स्वाभाविक रूप से होता है।

डॉ. आनन्द की रचनाओं में राष्ट्रीय भावना के प्रेरक प्रसंग पर्याप्त रूप में उपलब्ध हैं। वीर रसात्मक काव्य के रूप में तथा देश प्रेम से प्रभावित रचनाओं के रूपमें भी। आपने अँग्रेज शासकों के विरुद्ध प्राणपण से स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने वाली झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरता का उत्कृष्ट वर्णन राष्ट्रीय भावना से प्रभावित होकर किया तथा स्वातंत्र्योपरान्त स्वार्थी एवं पद–लोलुप भारतीय शासकों एवं जनप्रतिनिधियों के विरुद्ध अपनी प्रतिक्रिया अभिव्यक्त की।

डॉ. आनन्द की रचनाओं में राष्ट्रीयता का विवेचन उदाहरण सहित प्रस्तुत है।

1– झाँसी की रानी

सर्वोदयी नेता श्री जयप्रकाश नारायण के मतानुसार– **'झाँसी की रानी' एक उत्कृष्ट राष्ट्रीय महाकाव्य है, जो कि हिन्दी साहित्य में अमर होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।'**[1] हिन्दी जगत के प्राण पं. श्री नारायण चतुर्वेदी 'श्रीवर' का अभिमत है कि–'**डॉ. आनन्द ने झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई पर एक श्रेष्ठ काव्य की रचना की है। यह कोरी कल्पना पर आश्रित न होकर ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है। काव्य की दृष्टि से रचना सर्वांगीण सुन्दर है, इसमें वीर रस का विशेष रूप से परिपाक हुआ है।**'[2] डॉ. सेवक वात्सायन लिखते हैं कि–'**श्रद्धा धर्म से जोड़ी जाती है, तब उसे भक्ति कहते हैं और देश से जुड़ी होने पर उसकी संज्ञा राष्ट्रीयता हो जाती है। 'झाँसी की रानी' काव्य इसी राष्ट्रीयता का पांचजन्य है।**'[3]

1– झाँसी की रानी– संस्तुति–श्री जयप्रकाश नारायण (सर्वोदयी नेता)

2– उपरिवत्, संस्तुति–श्री नारायण चतुर्वेदी'श्रीवर'(सरस्वती सम्पादक)

3– झाँसी की रानी–राष्ट्रीय ऐतिहासिक काव्य की समीक्षा, डॉ.सेवक वात्स्यायन

डॉ. रामकुमार वर्मा **'झाँसी की रानी'** को वीर काव्य के नाम से अभिहित करते हुये कहते हैं कि– **'मैं कवि को ऐसे सुन्दर काव्य पर बधाई देता हूँ और भविष्य में इसी प्रकार अन्य वीर काव्य लिखने का आग्रह करता हूँ।'**[1]

उक्त अभिमतों के अनुसार डॉ. आनन्द की रचना **'झाँसी की रानी'** को उत्कृष्ट राष्ट्रीय महाकाव्य, वीर रसात्मक श्रेष्ठ काव्य, राष्ट्रीयता का पांचजन्य तथा वीर काव्य माना गया है। यह काव्य वीर रस प्रधान है, इस कारण राष्ट्रीयता के प्रचुर उदाहरण प्रभूत मात्रा में सरलता से उपलब्ध हो जाते हैं।

डॉ. आनन्द बुन्देल भूमि के प्रति अतिशय श्रद्धा समन्वित भाव व्यक्त करते हैं–

वीर जननि यह कहलाती है अविचल आन यहाँ की।
इसी भूमि से मिली हमें सन् सत्तावन की झाँकी।।
बार अनेकों इसी भूमि पर रण चण्डी मचली थीं।
इसी भूमि पर रानी की तीखी तलवार चली थी।।[2]

उक्त पंक्तियों में सन् सत्तावन की झाँकी, बुन्देलखण्ड की धरती पर रणचण्डी का मचलना तथा लक्ष्मीबाई की तीखी तलवार का चलना आदि वर्णन कवि की राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत हैं। इस वीर भूमि का वीरत्व व्यंजक वर्णन करने में कवि पूर्णतः सफल है–

मातृभूमि तुझसे मैंने कब–कब क्या–क्या न लिया है।
बतला इस याचक जग को तूने क्या–क्या न दिया है।।
ओ बुन्देल भूमि जननी रख ले स्वदेश का पानी।
एक बार फिर देदे लक्ष्मीबाई सी रानी।।[3]

यहाँ कवि मातृभूमि से पुनः लक्ष्मीबाई जैसी रानी देकर स्वदेश की लाज रखने की याचना करता है।

1– झाँसी की रानी– संस्तुति, डॉ. रामकुमार वर्मा

2– उपरिवत्, पृष्ठ 26

3– उपरिवत्, पृष्ठ 28

कवि ने '**जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी**' का उत्कृष्ट उदाहरण निम्न पंक्तियों में चित्रित किया है–

ले जाओ सारा राज्य–कोष इसकी मुझको कुछ चाह नहीं।
ले जाओ यह रत्नाभूषण किंचित मुझको परवाह नहीं।।
मैं सब कुछ दूँगी निज कर से चाहे निज की फाँसी दूँगी।
पर झाँसी है स्वातंत्र्य राज्य इसलिये नहीं झाँसी दूँगी।।[1]

रानी लक्ष्मीबाई उत्सर्ग की भावना से अभिभूत होकर अपने स्वतंत्र राज्य के लिए सम्पूर्ण राज्य–कोष तथा समस्त रत्नाभूषण त्यागने को तत्पर हैं। कवि ने उक्त पंक्तियों में देश–प्रेम के लिये अपूर्व त्याग और बलिदान की अनुपम अभिव्यक्ति की है।

मातृभूमि के लिये सर्वस्व समर्पण करने वालों के प्रति कवि की सहानुभूति तो है ही, प्रकृति का संवेदनात्मक स्वरूप भी यत्र–तत्र उपलब्ध है। प्रकृति देश–प्रेमियों के दुख से अवसाद ग्रस्त है। कवि प्रकृति के साथ स्वर मिलाकर अपनी राष्ट्रीय भक्ति–भावना का सफल निरूपण करता है–

रो उठा हिमालय फूट–फूट दुख किया प्रदर्शित झरनों ने।
अस्ताचल गिरि की चोटी पर संदेश दिया रवि किरणों ने।।
सम्पुटित हो गये कमल सभी मुख बन्द कर लिया कलियों ने।
कोहराम मचाया एक साथ विटपों पर विहँगावलियों ने।।[2]

राजमहल त्यागने की अतिशय वेदना से व्याकुल रानी को निराहार देखकर प्रकृति भी विविध रूपेण अपनी अवसन्न स्थिति को उजागर करती है। हिमालय का फूट–फूट कर रोना, रवि किरणों का अस्ताचल गमन, कोमल कलियों एवं कमलों का सम्पुटित होना तथा वृक्षों पर पक्षियों का करुण चीत्कार– यह सब प्रकृति का संवेदनशील स्वरूप ही है। प्रकृति राष्ट्रीय दुख से खिन्न प्रतीत होती है–

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 54–55

2– उपरिवत्, पृष्ठ 60

कटि किंकिणि ,कर कंकण, पहुँची,

यह न थे अमौलिक अलंकार।

यदि थे कोई आभूषण तो,

तो थे भाला, बरछी, कटार।।

यद्यपि थे काले नेत्र किन्तु,

वीरोन्मद में थे लाल–लाल।

जिनके भ्रू–इंगित पर रण में,

नाचा करता था प्रलय काल।।[1]

उक्त छन्द में कवि ने रानी लक्ष्मीबाई का युद्ध विषयक उत्साह चित्रित किया है। भाल, बरछी तथा कटार आदि आभूषणों से सज्जित, वीरोन्मत्त अरुण नेत्रों वाली रानी के भृकुटि विलास पर प्रलयकाल नृत्य करने लगता था। यहाँ वीर रस की निष्पत्ति में राष्ट्रीय विचारधारा अन्तर्निहित है–

झाँसी का शोणित समरांगण डगमग डगमग कर डोल उठा।

पत्थर–पत्थर, कण–कण, अणु–अणु रानी की जय–जय बोल उठा।।

नभ बोल उठा रानी की जय थल बोल उठा रानी की जय।

कलि गंगा नदी बेतवा का जल बोल उठा रानी की जय।।[2]

यहाँ कवि ने रानी लक्ष्मीबाई के अप्रतिम शौर्य को व्यंजित किया है। इसका लक्ष्य मातृभूमि को पराधीनता से मुक्त कराना था। अतः इसे राष्ट्रीयता की श्रेणी में माना जा सकता है। रानी के वीरत्व से हर्षित होकर प्रकृति जय–जय कार कर उठी है–

ओर वीर वंश के गढ़ प्रचण्ड,

ओ मुझ अबला के धवल धाम।

अपनी प्रिय आदि पुजारिन का,

ले लेना यह अंतिम प्रणाम।।[3]

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 100

2– उपरिवत्, पृष्ठ 120

3– उपरिवत्, पृष्ठ 148

स्वातंत्र भावना से अभिभूत रानी को विवश होकर जब झाँसी को छोड़ना पड़ा, तो अवसाद ग्रस्त रानी का हृदय विह्वल होकर अपने ही अजेय दुर्ग को अंतिम प्रणाम करता है। मातृभूमि के प्रति अतिशय श्रद्धा और भक्ति कवि की राष्ट्रीय भावना का प्रमाण है।

'झाँसी की रानी' महाकाव्य में रानी लक्ष्मीबाई की देशभक्ति तथा राष्ट्रप्रेम यद्यपि चरमोत्कर्ष पर रहा, तथापि रानी के अन्य सहायक वीरों का वीरता पूर्ण चरित्र तथा देश पर प्राण निछावर करने का दृढ़ संकल्प किसी तरह कम नहीं था। तातिया टोपे की राष्ट्रभक्ति निम्न पंक्तियों में दृष्टव्य है–

धंस पड़ी तातिया की पलटन धरती पर करती मार काट।
शोणित सरिता पर लोथों के अनगिन पुल के पुल दिये पाट।।
रण की धरती को लाल–लाल कर दिया तातिया टोपे ने।
शोणित से काली का खप्पर भर दिया तातिया टोपे ने।।[1]

उक्त छन्द को पढ़कर तात्या टोपे की राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना साकार हो जाती है। कवि ने देश–प्रेम में आबद्ध तातिया टोपे की राष्ट्रीय संवेदना को उद्घाटित किया है। ऐसे महान वीरों के त्याग और वलिदान से हमारा राष्ट्र आज भी गौरवान्वित है। उनमें राष्ट्रीय भावना कूट–कूट कर भरी थी।

अन्त में रानी अँग्रेजों से युद्ध में परास्त हो जाती है, उसके प्राण–पखेरू उड़ने को तत्पर हैं, फिर भी जीवन की अंतिम श्वांस के साथ जो वचन रानी के मुँह से निकलते हैं, उनमें देश–प्रेम एवं राष्ट्रभक्ति की अटूट भावना देखने योग्य है–

जन्म लेकर आज इस नश्वर जगत से,
ले चली हूँ मैं यही बस ले चली हूँ।
अब उठेगा जो महल स्वाधीनता का,
नींव को मैं ईंट पहली दे चली हूँ।।[1]

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 212

2– उपरिवत्, पृष्ठ 229

उक्त पंक्तियों में कवि ने रानी लक्ष्मीबाई के मुख से स्वाधीनता की भविष्यवाणी का उद्घाटन कराया है। अंतिम समय पर भी स्वाधीनता के महल की परिकल्पना उनकी राष्टभक्ति का जीवंत प्रमाण है। 'झाँसी की रानी' काव्य डॉ. आनन्द का राष्ट्रीय ऐतिहासिक महाकाव्य है। यह पूर्णरूपेण राष्ट्रीय भावना पर आधारित है।

2– एम. एल. ए. राज.

डॉ. आनन्द की यह कृति तत्कालीन काँग्रेस सरकार के विधायकों तथा जनप्रतिनिधियों की तानाशाही के विरुद्ध एक सक्रिय आन्दोलन है। राष्ट्र व्यापी भ्रष्टाचार, भुखमरी, गरीबी, चोरबजारी तथा घूसखोरी ने कवि के अन्तर्मन को व्यथित ही नहीं किया, वरन् एक सकारात्मक प्रक्रिया अपनाने पर विवश कर दिया। **'अपनी बात'** के अन्तर्गत कवि ने देश की वास्तविक स्थिति का चित्रांकन किया है– 'खाने को अन्न नहीं है, पहिनने को कपड़े नहीं मिलते। भारत के हजारों नर–नारी बे घर–बार होकर आज सड़कों और पेड़ों के नीचे नारकीय जीवन बिताने के लिये मजबूर हैं। अगर ऐसा ही हाल रहा तो निकट भविष्य में ही हमारा राष्ट्र सदा के लिये मर जायगा, इसमें सन्देह नहीं।'[1]

उक्त कथन से सिद्ध होता है कि कवि के ह्रदय में राष्ट्रीय भावना तथा देश–प्रेम पूर्णतः परिव्याप्त है और इसी कारण वह जन–प्रतिनिधियों के अन्यायों एवं भ्रष्टाचारों को उजागर करता है। राष्ट्र की संकटापन्न स्थिति को दृष्टि में रखकर कवि देश के युवा वर्ग तथा विपक्षी दलों का आह्वान करता है– 'द्रुत गति से मौत के मुँह में जाने वाले अपने राष्ट्र को बचाने के लिये हम सब एक साथ मिलकर शीघ्र से शीघ्र कोई उपाय सोचें एवं अपना एक सुदृढ़ तथा संयुक्त मोर्चा बनाकर इस संकट का मुकाबिला करें और अपने राष्ट्र को एक ऐसा सुसंगठित तथा समृद्धिशाली बनायें कि हमारा देश आज के संसार का एक किरीट बनकर चमक उठे।'[3]

1– एम. एल. ए. राज., अपनी बात, पृष्ठ 1

2– उपरिवत्, पृष्ठ 2

कवि के कथन से राष्ट्र के प्रति सद्भावना अभिव्यक्त है। कवि राष्ट्र को प्रगति पंथ पर सदैव अग्रसर देखना चाहता है।

राष्ट्र के हित चिंतक के रूप में कवि उन जन प्रतिनिधियों के दूषित चुनावी षड्यंत्रों के विरुद्ध आवाजा उठाता है, जो देश के बहुमुखी विकास में बाधक तथा राष्ट्र के लिये घातक सिद्ध हो रहे हैं—

हर चुनाव के मौके पर तुम दरशा नई कला देते हो।

सड़कें,नहरें, अस्पताल जाने क्या–क्या दिखला देते हो।।

आकर्षित करने को गाँवों–गाँवों के भोले नर–नारी।

ओठों की पटरी पर झट जिह्वा की रेल चला देते हो।।[1]

विधायकों के कूटनीतिक क्रिया–कलाप, दूषित षड्यंत्र तथा झूठे वायदों को अनावृत करते हुये कवि ने उक्त पंक्तियों में गाँव के भोले नर नारियों के प्रति सहानुभूति व्यक्त की है। चुनाव के अवसर पर किये हुये असत्य सम्भाषण को उजागर करके कवि ने विधायकों को अवसरवादी भी सिद्ध किया है। ग्रामीण क्षेत्रों के थानेदारों को आरोपित करते हुये कहा है—

पता नहीं है किस लालच में अत्याचार किया करते हैं।

देहातों में जाने क्या–क्या थानेदार किया करते हैं।।

इन माशूक़ हुसेंनों के तुम वेतन देखो खरचे देखो।

डेड़ मिनट की डेड़ बात में डेड़ हजार किया करते हैं।।[2]

उक्त छन्द में थानेदारों के विरुद्ध वक्तव्य में कवि की राष्ट्रीय भावना ही अन्तर्निहित है। यदि अधिकारी वर्ग भ्रष्टाचार में संलग्न रहकर जन सामान्य का शोषण करेगा, तो देश कभी प्रगति पथ पर अग्रसर नहीं हो सकेगा। डेड़ मिनट की डेड़ बात में डेड़ हजार रूपये उत्कोच लेकर, थानेदारों द्वारा देश के विकास में अवरोध उपस्थित करना ही है—

1— एम.एल.ए.राज., पृष्ठ 3

2— उपरिवत्, पृष्ठ 8

चिल्ला चिल्लाकर कहती हैं मंदिर मस्जिद की मीनारें।

अन्यायों से चीख रहे हैं गुरुद्वारों के दर दीवारें।।

आज देश में गिरजाघर का कंकड़–कंकड़ काँप उठा है।

आँसू बनकर बह निकली हैं वह गंगा–यमुना की धारें।।[1]

देश में चरम सीमा को पार कर चुके अत्याचारों और अन्यायों से मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारा तथा गिरजाघर की पवित्रता नष्ट हो चुकी है। धर्मावलम्बी अस्तित्वहीन हो गये हैं। गंगा–यमुना व्यथित होकर कारुणिक रुदन कर रही हैं। राष्ट्र की चिन्ताजनक स्थिति का अनुभव कर कवि जागरूक बनकर कर्तव्य पालन के प्रति सतर्क एवं सावधान है। सारा राष्ट्र पतनोन्मुख हो रहा है।

नेताओं की काल्पनिक योजनाओं की भर्त्सना करते हुये उनके अनैतिक दुष्कृत्यों को अनावृत किया गया है निम्न पंक्तियों में–

दूध दही की नदी बहाने डेरी फारम चले तुम्हारे।

नोटों की थैली की थैली यमुना तीरे कुंज–कछारे।।

भैंस बँधी, गायें चरती हैं इनकी सदरी की जेबों में।

लूट–लूट कर जनता का धन उड़ा रहे हैं यार हमारे।।[2]

उक्त कथन से कवि का अभिप्राय यह है कि योजनाएँ बनती तो हैं कृषकों के संरक्षण हेतु, किन्तु लाभार्जन नेता करते हैं। शासकीय अभिलेखों में योजना का सफल कार्यान्वयन उल्लिखित रहता है, किन्तु सामान्य जन–मानस किंचित्मात्र भी लाभान्वित नहीं हो पाता। उनकी आर्थिक स्थिति यथापूर्व ही रहती है।

डॉ. आनन्द ने अपने काव्य में शोषण के विरुद्ध अपनी आवाज को बुलन्दी पर पहुँचाया है। वे वस्तुतः ओज के कवि थे। उनकी रचनाओं में वीर–भावना का प्रस्फुटन स्थान–स्थान पर हुआ है। शोषण को प्रतिपाद्य बनाकर वे क्रान्तिकारी विचारों का तूफान सा खड़ा कर देते हैं–

1– एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 8–9

2– उपरिवत्, पृष्ठ 11

'आज समूचा भारत अपने दिल में आग लिए बैठा है।
तुम क्या जानो कितने जलियाँ वाले बाग लिए बैठा है।।
अभी समय है थोड़ा बाकी कहीं भूलकर मत छू देना।
तार–तार युग के सितार का भैरव राग लिए बैठा है।।[1]

उक्त छन्द में कवि की क्रान्ति भावना स्पष्ट है। सम्पूर्ण भारत वर्ष में राष्ट्रीय उत्थान की लहर परिव्याप्त है। कवि नेताओं को जलियाँ वाले बाग की चुनौती पूर्ण घटना की स्मृति दिलाकर भारत वासियों की उत्कट वीरता एवं राष्ट्रीय भावना की पुष्टि करता है।

कवि ने निम्न पंक्तियों में उन भारतीयों की कटु निन्दा की है, जो विदेशी शासन के गुलाम हैं तथा पाश्चात्य परम्पराओं को हार्दिक स्वीकृति देते हैं–

'कुछ भारत में ऐसे भी है गीत विलायत के गाते हैं।
भारत में अँग्रेजी शासन आज आज भी पनपाते हैं।।
कुछ भारत में ऐसे भी हैं जो भारत की सम्पति लेकर।
फिर खद्दर का पासपोर्ट ले पाकिस्तान चले जाते हैं।।[2]

यहाँ कवि ने काँग्रेस शासन के वरिष्ठ नेताओं तथा अधिकारियों की कटु भर्त्सना करते हुए राष्ट्रीय विचारधारा के प्रचार एवं प्रसार का मानो संकल्प दोहराया है। कवि राष्ट्रीय भावना का प्रबल पक्षधर तथा तन्निमित्र कृत संकल्प भी है।

अंत में कवि की चुनौती पूर्ण उद्‌घोषणा निम्न पंक्तियों में स्पष्ट है। विदेशी शासन के भक्तों को सावधान करता हुआ कवि कहता है–

'पर भारत में रहकर यदि वे अंग्रेजों के गुण गायेंगे।
तो दुनियाँ की दुनियाँ जाने हम तो देख नहीं पायेंगे।।
नेता सुनलें कान खोलकर आज खुला ऐलान हमारा।
देश–द्रोही नेताओं के अब इन्साफ किए जायेंगे।।[3]

1– एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 15

2– उपरिवत्, पृष्ठ 20

3– उपरिवत्, पृष्ठ 21

उक्त छन्द में कवि ने राष्ट्रीय विचारधारा का चरमोत्कर्ष प्रतिपादित करते हुए उन देश–द्रोही नेताओं को फटकार लगाई है, जो भारत में रहकर भी अंग्रेजों का गुणगान करते हैं।

3– सन् अड़तालीस–

भारतवर्ष 15 अगस्त 1947 ई. को स्वतंत्र हुआ। इसके ठीक 5 माह बाद 30 जनवरी 1948 को महात्मा गाँधी का आकस्मिक निधन हुआ। सम्भवतः गाँधी जी के निधनोपरान्त कवि ने इस ऐतिहासिक वर्ष के नाम पर ही इस कृति का नाम 'सन अड़तालीस' रखा हो। डॉ. आनन्द की इस रचना का मूलाधार है स्वराज्य में भी गुलामी से बदतर सामान्य भारतीय जन–जीवन। स्वतंत्रता एवं परतंत्रता में सामाजिक, नैतिक एवं राजनैतिक अन्तर को दर्शाते हुए कवि ने इस स्वराज्य से उस परतंत्रता को अधिक श्रेयस्कर माना है, जिसमें हमारा व्यापार एवं मतदान का अधिकार तो सुरक्षित था। हम भारत वासी अपना पेट पालने के लिए स्वतंत्र तो थे। इस रचना को मूल उद्‌भव स्रोत यहीं से माना जा सकता है।

इस सम्पूर्ण कृति में कवि की राष्ट्रीय विचारधारा का प्रस्फुटन हुआ है। राष्ट्र की दुरवास्था कवि के लिए चिन्तनीय विषय है। आजादी के लिए त्याग और बलिदान जिस आशा से किया था, वह पूर्ण न हो सकी–

'जिस स्वतंत्रता की पूजा में हमने निज शीश चढ़ाए थे।
माताओं ने जिस पर अपनी गोदी के लाल लुटाए थे।।
जिस आजादी के लिए हाय हो गई देश की बर्बादी।
वह कैसी किस बँगले में हैं कहाँ आज वह आजादी।[1]

तात्पर्य यह है कि आजादी प्राप्त तो हुई किन्तु वह कुछ जानी–मानी हस्तियों के हाथ की कठ्पुतली बन कर रह गई। राज नेताओं ने उसका उपयोग जन सामान्य के लिए नही होने दिया। जिस स्वराज्य के लिए अपरिमिति त्याग और बलिदान हुए, वह न जाने किस बँगला या कोठी में कैद कर लिया गया। कवि पुनः कहता है–

2– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 4

जिस आजादी पर बिसमिल ने फाँसी पर चढ़कर पढ़े छन्द।
वह आजादी किस बँगले में, बतलादो कर ली गई बंद।
जिस बँगले में वह कैद हुई, उसकी फाटक खुलवादें गे।
यदि खुल न सके तो बँगलें की ईंटों से ईंट बजा देंगे।।[1]

इस आक्रोश युक्त कथन में कवि की राष्ट्रीय भावना अभिव्यक्त है। **'ईंटों से ईंट बजाना'** मुहावरे से कवि की भावात्मक उग्रता प्रकट हो रही है। शहीद बिस्मिल ने फाँसी के तख्ते पर चढ़कर आजादी के छन्दों को पढ़ा था और हँसते–हँसते अपना बलिदान किया था। उस आजादी का विकृत स्वरूप आज देश को पतन के गर्त में ले जा रहा है।

कवि नेताओं को तथा नेताओं की शासन व्यवस्था को उपालम्भ देकर कहता है–

तुमको किसान के बल पर ही यह सिंहासन सरकार मिला।
तुमको मजूर ही के बल पर यह वेतन कई हजार मिला।
तुम डाल रहे हो अब तुषार भारत माँ के अरमानों पर।
तुम करने अत्याचार लगे भूखे मजदूर किसानों पर।।[2]

उक्त छन्द में भुखमरी से त्रस्त एवं पीड़ित देश की जनता के प्रति सहानुभूति अभिव्यक्त है तथा नेताओं की दूषित कार्यपद्धतियों एवं स्वार्थ परक नीतियों को उजागर किया गया है। कवि का देश–प्रेम तथा राष्ट्र के प्रति संवेदना प्रत्येक शब्द से झाँकती प्रतीत होती है।

डॉ. आनन्द ने निम्न पंक्तियों में लोकतंत्र एवं सच्चे स्वराज्य को परिभाषित करते हुए जन प्रतिनिधियों की शासन व्यवस्था के प्रति अपना आक्रोश व्यक्त किया है–

'इस युग के निर्माता हैं तो इस युग में आग लगा देंगे।
हम भारतीय हैं भारत से एम.एल.ए. राज्य मिटा देंगे।।
एम.एल.ए. तो होंगे लेकिन एम.एल.ए. राज्य नहीं होगा।
उस दिन होगा सच्चा स्वराज्य कोई साम्राज्य नहीं होगा।।[3]

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 5

2– उपरिवत्, पृष्ठ 8

3– उपरिवत्, पृष्ठ 9

भारत में जन प्रतिनिधियों की पक्षपात पूर्ण शासन व्यवस्था से क्षुब्ध कवि विधायकों के शासन को निर्मूल करने का संकल्प लेता है तथा किसी भी राजनीतिक दल को शासक के रूप में न देखकर सामान्य जनता के स्वराज की परिकल्पना करता है–

'अंग्रेज हुकूमत थीं तब थे हम पेट पालने में स्वतंत्र।

अंग्रेज हुकूमत थी तब थे हम वोट डालने में स्वतंत्र।।

लेकिन अब तो लेसन्स बिना व्यपार हमारा बन्दी है।

लेसन्स बिना यह जन्म सिद्ध अधिकार हमारा बन्दी है।।[1]

इन पंक्तियों में इस कृति (सन् अड़तालीस) का मूल भाव अन्तर्निहित है। भाव है अंग्रेजी शासन तथा काँग्रेसी नेताओं के शासन में 'पेट पालने तथा वोट डालने' की तुलनात्मक विवेचना। कवि ने लोकमान्य तिलक के 'जन्म सिद्ध अधिकार' के बाधित होने पर भी खेद प्रकट किया है तथा लेसन्स प्रणाली को निन्दनीय माना है।

कवि ने काँग्रेस शासन के प्रतिनिधियों को स्वराज्य के वास्तविक जन्म दाताओं के त्याग एवं बलिदान को विस्मृत करने का दोषी ठहराया है–

बतलाओं तुमने कब–कब उस,

नेता सुभाष को याद किया ?

X X X

उस भगतसिंह की फाँसी का,

कब फाँसी दिवस मनाया है ?

X X X

आजाद चन्द्रशेखर ही था,

जो उस दल का सम्राट बना।।[2]

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 13

2– उपरिवत्, पृष्ठ 16–17

उक्त पंक्तियों में कवि ने स्वतंत्र राष्ट्र निर्माताओं तथा आजादी के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने वालों के विस्मरण को अनुचित एवं निन्दनीय ठहराया है। सुभाषचन्द्र बोस, सरदार भगतसिंह तथा चन्द्रशेखर 'आजाद' आदि ने स्वातंत्र्य आन्दोलन में अपना तन, मन, धन यहाँ तक कि अपने प्राणों का भी उत्सर्ग कर दिया था। उसके लिए काँग्रेस सरकार के प्रतिनिधियों को उलाहना देते हुए कवि कहता है–

'अपने मक्खन अण्डे से तुम,
कुछ बजट निकाल नहीं सकते।
उस नर–नाहर की माँ को,
क्या दो–दाने डाल नहीं सकते।[1]

चन्द्रशेखर 'आजाद' की माँ की दयनीय अवस्था का रेखांकन उक्त पंक्तियों में किया गया है तथा नेताओं की विलासिता की अवहेलना भी प्रस्तुत की गई है। कवि के अन्तर को बार–बार उत्तेजित करती है। राष्ट्रीयता की भावना। वह नेताओं की तानाशाही को समूल उन्मूलित करने का अपना संकल्प दोहराता है–

ताना शाही बर्बरता का।
हम तख्त उलट दें जो न आज।।
हम कवि नहीं की दुनियाँ का।
इतिहास पलटदें जो न आज।।[2]

अन्त में कहा जा सकता है कि **'सन् अड़तालीस'** डॉ. आनन्द की राष्ट्रीय स्तर की रचना है तथा उसके एक–एक शब्द से राष्ट्रीयता अभिव्यंजित होती है।

झाँसी की रानी, एम.एल.ए.राज तथा सन् अड़तालीस में राष्ट्रीयता के विवेचनोपरान्त डॉ. आनन्द की कुछ अप्रकाशित रचनाओं में उपलब्ध राष्ट्रीय भावना का संक्षिप्त विवेचन निम्नवत् प्रस्तुत है–

1– सन् अड़तालीस, पृष्ठ 18

2– उपरिवत्, पृष्ठ 20

जब चीन ने भारत पर आक्रमण करने का विचार किया, तब सम्पूर्ण देश में एक विचारोत्तेजक क्रान्ति की लहर दौड़ गई। उस समय डॉ. आनन्द ने दिल्ली के लाल किले पर अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में चीन के राष्ट्राध्यक्ष को चुनौती देते हुए कहा था–

चाऊ जी तुमने चीन हिन्द की रेखा को,
क्या कभी मेक मेहन के तट से देखा है।
यदि नहीं देखना चाहो तो यह बतलादो,
क्या कभी आपने युद्ध निकट से देखा है।।[1]

उक्त पंक्तियाँ कवि की राष्ट्रीय भावना का परिचय देती हैं। देश–प्रेम से प्रभावित होकर ही कवि ने **'चाऊ–इन–लाई'** को युद्ध की भीषणता से अवगत कराया है। **'दारुल शफा'** में तत्कालीन काँग्रेस शासन की अनियमितताएँ, दुर्नीतियाँ एवं भ्रष्टाचारों को उजागर करता हुआ कवि कहता है–

कण्ट्रोल के दफ्तर में भी जाती है काँग्रेस।
कोठे पै देखते हैं तो गाती है काँग्रेस।।
इन्साफ अदालत में लिखाती है काँग्रेस।
थाने में पुलिस में भी दिखाती है काँग्रेस।।[2]

यहाँ साांकेतिक रूप में कवि का देश–प्रेम ही झलकता है। भ्रष्ट काँग्रेस शासन ने राष्ट्र को पतन के गर्त में धकेलने का जो निन्दनीय कार्य किया था, उसे कवि ने अपने शब्दों में चित्रित किया है।

कवि ने 'यही देश है वह' कविता में राष्ट्र–प्रेम को निम्नवत् प्रस्तुत किया है–

जिए तो समर में मरे तो समर में।
वही तो वही भीष्म संतान है हम।।
कि रण क्षेत्र में वीर वाणों की सेंजें।
सजाते रहे हैं सजाते रहेंगे।।[3]

1– पाण्डुलिपि–1, हिमालय सीमा, पृष्ठ 3

2– दारुलशफा, पृष्ठ 5

3– पाण्डुलिपि–1, यही देश है वह, पृष्ठ 10

उक्त पंक्तियों में कवि ने भारत–वीरों के पौराणिक इतिहास का प्रमाण देकर यह सिद्ध किया है कि यहाँ का हर व्यक्ति भीष्म पितामह की संतान है और युद्ध में प्राणोत्सर्ग करना भी भली भाँति जानता है।

चीन द्वारा भारत पर आक्रमण किए जाने पर कवि ने यहाँ की नारियों को सचेत एवं सावधान करते हुए कहा है–

समझते रहे हम तुम्हें कोमलांगी,
तुम्हीं हो कि दुर्गावती तुम बनी थीं।
हवन कुण्ड में प्राण की आहुति दे,
सती पद्मिनी सी सती तुम बनी थीं।
नये नूपुरों के स्वरों को बदल दो।
सुनादों वही भैरवी पायलों की।
न बातें करो करधनी किंकिणी की,
कमर की कटारों पै बात आगई है।।[1]

उक्त छन्द में कवि दुर्गावती एवं पद्मिनी का उदाहरण देकर भारतीय वीरांगनाओं को कमर में सुशोभित कटारों के प्रयोग के लिए उत्तेजित करता है। इन वीर रसात्मक पंक्तियों में कवि का राष्ट्रप्रेम एवं देशभक्ति की भावना स्पष्ट दृष्टि गोचर हो रही है।

डॉ. आनन्द काव्य मुख्यतः वीर रसात्मक काव्य है। इनकी रचनाओं में वैसे तो सभी रसों का अस्तित्व है, किन्तु वीररस ने आपको जितना प्रभावित किया है, उतना किसी अन्य रस ने नहीं किया। आप को राष्ट्रप्रेम का उद्घोषक तथा राष्ट्रीय भावना का प्रतिपादक कवि कहा जाय, तो अत्युक्ति नहीं होगी।

ग- आंचलिकता

आंचलिक साहित्य में किसी अंचल विशेष की भौगोलिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विशेषताओं का चित्रण किया जाता है। साहित्यकार

1– पाण्डुलिपि–1, बात आगई है, पृष्ठ 12

उस अंचल की भौगोलिक विशेषताओं के साथ वहाँ के निवासियों के त्यौहार, रीतिरिवाज, मान्यताएँ, भाषा अथवा बोली को अपने सृजन में मुखरित करता है। डॉ.आनन्द के काव्य में यत्र–तत्र आंचलिकता का स्वरूप झलकता है। आपने बुन्देलखण्ड के अंचल विशेष की भौगोलिकि सीमाओं का अंकन निम्न पंक्तियों में किया है–

चम्बल, टौंस, नर्मदा, यमुना यह जिसकी सीमाएँ।

शेष, महेश, सुरेश, शारदा, जिस पर बलि–बलि जायें।।[1]

यहाँ के बुन्देले क्षत्रियों ने बुन्देलखण्ड की प्राण–पण से रक्षा की, अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। अपनी वीरता से औरंगजेब जैसे शहंशाह के दाँत खट्टे कर दिए तथा लार्ड डलहौजी और लार्ड केनिंग की कुटिल नीतियों के आघातों को झेलते हुए इसकी सीमाओं को सुरक्षित रखा। यहाँ की नदियाँ भी इनका प्रशस्ति गायन करती हैं–

गाती है बेतवा निरन्तर इसी भूमि की गाथा।

यहीं झुका था शहंशाह औरंगजेब का माथा।।[2]

बुन्देलखण्ड के अंचल विशेष में प्रकृति–नटी का सौन्दर्य देखते ही बनता है–

चित्रकूट, औरछा, जालवन का ज्वलंत दिग्दर्शन।

जहाँ आज भी होता है नित प्रकृति का नर्तन।।[3]

यहाँ के समाज में विविध त्यौहारों को हर्षोल्लास पूर्वक तो मनाया जाता है, किन्तु बुन्देलखण्ड की नारियों के विशिष्ट त्यौहारों की वीर–रसात्मक छटा निम्नवत् दृष्टव्य है–

होते हैं त्यौहार यहाँ पैनी कटार धारों से।

और नारियाँ भी खेला करती हैं तलवारों से।।[4]

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 23

1– झाँसी की रानी, पृष्ठ 24

2– उपरिवत्, पृष्ठ 26

3– उपरिवत्, पृष्ठ 23

डॉ. आनन्द ने यहाँ की धार्मिक भावना का निरूपण करते हुए धार्मिक स्थलों का उल्लेख किया है –

चिल्ला–चिल्लाकर कहती हैं।

मंदिर–मस्जिद की मीनारें।

X X X

भ्रष्ट हुई हैं कथा भागवत्।

नष्ट हुए रोजा नमाज हैं।।[1]

इन पंक्तियों में कवि ने राजनेताओं की भ्रष्टता के कारण कथा, भागवत्, रोजा तथा नमाज के पतित होते हुए स्तर का चित्र अंकित किया है। मंदिर तथा मस्जिद की स्थिति दयनीय है।

बुन्देलखण्ड में निःसंतान दम्पत्ति के लिए दत्तक पुत्र बनाने का रिवाज है। आंचलिक परम्परा का आश्रय लेते हुए रानी लक्ष्मीबाई ने भी दत्तकपुत्र बनाया था–

उठता है मन में बार–बार दत्तक सुत लेने का विचार।

X X X

विप्रों ने यह दत्तक विधान शास्त्रोक्त रीति से रचवाया।।[2]

स्थानीय रीति रिवाजों में सगुनौती मनाने का भी प्रचलन है। शुभ–शकुन मानकर अपने इष्ट से वांछित फल की कामना की जाती है–

सगुनौती मनाय मनाय कोऊ पिय आवन की घड़ी जांचन लागी।[3]

उक्त उदाहरण में विरह व्यथिता कामिनी शुभ शकुन मानकर अपने प्रिय–आगमन की प्रतीक्षा कर रही है।

कवि ने कृषि कार्य में प्रयुक्त आंचलिक औजारों का उल्लेख करते हुए क्षेत्रीय कृषकों की लगन व उत्साह का वर्णन किया है–

1– एम.एल.ए.राज, पृष्ठ 8–9

2– झाँसी की रानी, पृष्ठ 35

3– पाण्डुलिपि–1, पावस, पृष्ठ 46

पाहन जैसे कठिन रूखड़े कर किसान के।

नव स्फूर्ति ले एक साथ ही मचल पड़ेगें।।

हँसिया, खुरपी, बक्खल, काई लगे फाँवड़े।

मरुस्थली में भी हरियाली उगल उठेंगे।।[1]

यहाँ पर कवि ने हँसिया, खुरपी, बक्खल तथा फाँवड़े आदि कृषिउपकरणों के उपयोग में आंचलिकता का वातावरण दर्शाया है। इस अंचल की परिवहन व्यवस्था को कवि ने हास्य के माध्यम से व्यक्त करते हुए उसमें समागत उलझनों को उकेरा है। **'मोटर का मजा'** रचना में अभिव्यक्त आंचलिक दृष्य निम्न पंक्तियों में रेखांकित है–

कुछ खद्दर पोश पिछाड़ी थे।

जहँ कुँजड़े और कबाड़ी थे।।

पर थानेदार अगाड़ी थे।

था जिनके सिर पर टोप सजा।

मोटर का मजा, मोटर का मजा।।[2]

पिछड़े अंचल में मोटर की यात्रा का अनुभूति पूर्ण वर्णन कवि ने अतिशय भावुक होकर किया है। मोटर मालिक, वाहन की क्षमता से अधिक सवारियाँ भरकर सामान्य लोगों की यात्रा कष्टमय बना देते हैं। इस वर्णन में आंचलिकता का स्पष्ट निदर्शन हुआ है।

डॉ. आनन्द अपनी रचनाओं में किसी न किसी रूप में आंचलिक वातावरण प्रस्तुत करने में सिद्ध हस्त थे। आपने स्थानीय जीवन की विविधता का चित्रण करके आँचलिक यथार्थ परक विवरणों को उभारा है। काँग्रेसी नेताओं की व्यावहारिकता से क्षुब्ध कवि क्षेत्रीय सामान्य जनता की ओर से कटाक्ष प्रस्तुत करता है–

1– पाण्डुलिपि–1, सावरमती के तट पर, पृष्ठ 24

2– पाण्डुलिपि–2, मोटर का मजा, पृष्ठ 1

शक्कर पै कण्ट्रोल लगाकें तैनें गजब गुजारौ।

नगर पालिका में घुस बैठो लूट लयो धन सारौ।।

कर दऔ पूरौ बंटाढ़ार– हाय रे कँगरिसिया

गिट्टी में मिट्टी मिलवाकें पहिलें कर लऔ एका।

सड़कें, पुलिया, नाली, बिल्डिंग बाप दे रहौ ठेका।।

बेटा बन गऔ ठेकेदार – हाय रे कँगरिसिया।।[1]

उक्त पंक्तियों में काँग्रेस सरकार के प्रतिनिधियों की भ्रष्टता एवं शोषण–प्रवृत्ति का खुलासा किया गया है। नेताओं के स्वार्थपूर्ण आचरण से उत्पन्न अंचल के जन सामान्य की व्यथा का दिग्दर्शन कवि ने उक्त छन्द में कराया है।

कवि ने अपनी कृतियों में बुन्देलखण्ड के जालौन व झाँसी अंचल के जीवन की झाँकी प्रस्तुत की है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार उस समय कम रहा होगा। कवि ने निम्न पंक्तियों में अशिक्षित ग्रामीणों की लालसा को गहरी अनुभूति तथा आत्मीयता से अभिव्यक्त करते हुए ग्राम–जीवन का चित्र उभारा है–

जो कऊँ हम पढ़ जायें।

नांव न लें फिर जुड़ई चना कौ भूरी पिसिया खायें।।

खोलें अपनीं हमऊँ दुकानें।

चिठिया टीप हमऊँ पहिचानें।।

पुरजी समझें रुक्का जानें।

तेरौ कौल बजार हाट में कितऊँ न धोकौ खायें।।[2]

उक्त पंक्तियों में कवि ने अशिक्षित ग्रामीणों के हृदय की कसक को उकेरा है तथा शिक्षार्जन के लाभों को भी स्पष्ट किया है। जैसे– दूकान खोलना, पत्र पढ़ना, रुक्का तथा पुर्जी आदि अभिलेखों को समझना

1– पांडुलिपि–2, हाय रे कँगरिसिया, पृष्ठ 7

2– उपरिवत्, जो कऊँ हम पढ़ जायें, पृष्ठ 11

और क्रय–विक्रय के समय बाजार की धोखाधड़ी से सुरक्षित रहना आदि। इस रचना में आंचलिकता की स्पष्ट झलक मिलती है।

ग्रामीण अंचलों में पुलिस की कार्य प्रणालियों के सम्बंध में कवि का वयान दर्शनीय है–

यह लिख लीजे मेरा वयान।

थी इंगलिश दस तारीख और था शुभ मुहूर्त में सोमवार।

हम काँग्रेस के नारद हैं बस जा पहुँचे सीधे सुढ़ार।।

आ गये लाल पगड़ी धरकर था नाम आपका सदर अली।

वह समझ रहे थे अपने को उस मौजे भर का पिंदर अली।।

हम जुलूस के दायें–बायें चप्पल चटकाते जाते थे।

दीवान औरतों में सटकर आँखें मटकाते जाते थे।।[1]

कवि ने जन्म स्थान के समीप का ग्राम (सुढ़ार), जिसमें किसी जुलूस में कोई दंगा हुआ, पुलिस पहुँची। न्यायालय में कवि डॉ. आनन्द को आँखों देखी गबाही के बतौर तलब किया गया। न्यायालय में कवि का दिया हुआ वयान उक्त पंक्तियों में स्पष्ट है। यह वयान अंचल की स्थिति को तथा पुलिस कीभ्रष्टता को उजागर करता है।

अंचल में हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जाने वाला होली का त्योहार विरहिणियों के लिये कष्टकर प्रतीत होता है। उदाहरण देखिये–

विरहिन को दुखदाई, अरी ऋतु होली की आई।

उड़त गुलाल लाल लखि वैरिन, बाढ़त पीर सबाई।।

किह पर छिड़कूँ कुसुम रंग भरकर छाये विदेश कन्हाई।

सूरत मेरी बिसराई, अरी ऋतु होली की आई।।[2]

इसी तरह **'पावस'** ऋतु की अँधेरी रातों में वियोगिनी नायिकाओं की विरह वेदना दृष्टव्य है–

1– पांडुलिपि–2, वयान, पृष्ठ 13

2– उपरिवत्, ऋतु होली की आई, पृष्ठ 30

वह गये द्वारिका छाये।

हम पर दल बादल चढ़ आये।।

दमक–दमक दामिनि दबकाये।

बरस्स–बरस्स फिर–फिर भर आईं।।

बैरिन निकट बदरियाँ–पावस रैन अँधिरियाँ।।[1]

उपर्युक्त छन्द में पावस ऋतु की अँधेरी रात्रि में, जब आकाश में काले–काले बादल घिरे हों, विद्युत माला चमक कर भयभीत कर रही हो तथा जल आपूरित मेघ माला वृष्टि के लिये तत्पर हो, प्रिय के परदेश गमन पर नायिकाओं की विरह वेदना अभिव्यक्त है।

डॉ. आनन्द ने, विशिष्टतः अपनी बुन्देली रचनाओं में आंचलिकता का दिग्दर्शन कराया है। वैसे अन्य रचनाओं में भी अंचल विशेष के रीति रिवाज, त्यौहार, ऋतुओं, परिस्थितियों तथा भौगोलिक स्थितियों का आंचलिक वर्णन यत्र–तत्र मिल जाता है। वस्तुतः डॉ. आनन्द ग्रामीण क्षेत्र में जन्मे, पले और बड़े हुये थे। आंचलिकता उनके रक्त में समाहित होकर काव्य–सृजन के माध्यम से प्रस्फुटित हुई है।

अन्त में कहा जा सकता है कि कवि ने अंचल विशेष से सम्बंधित समस्त स्थितियों और परिस्थितियों का उदघाटन अपने काव्य में किया है।

घ- निष्कर्ष-

डॉ. आनन्द के साहित्यिक कृतित्व का समग्र मूल्यांाकन रस, राष्ट्रीयता तथा आंचलिकता शीर्षकों को आधार मानकर किया गया। वस्तुतः डॉ. आनन्द की कविता मूलतः ओजगुण सम्पन्न है। वीर रस इनका प्रिय रस है, किन्तु एक सफल और मूर्धन्य कवि होने के कारण इनकी रचनाओं में श्रृंगार, करुण, शान्त और वीभत्स रसों की भी निष्पत्ति होती है।

1– पांडुलिपि–2, पावस रैन अँधिरियाँ, पृष्ठ 3

राष्ट्रीयता आपके काव्य का केन्द्रीय भाव माना जा सकता है। देश–प्रेम एवं राष्ट्रहित चिंतन पर विशेष वल दिया गया है। देश प्रेम एवं राष्ट्रहित में युद्ध एवं संघर्ष भी होते रहे हैं। अतः कहा जा सकता है कि कवि की वीर रसात्मक अवधारणा के कारण राष्ट्रीयता स्वतः स्फुरित हुई है। डॉ. आनन्द को राष्ट्रीयता का कवि कहा जाय, तो अनुचित नहीं होगा।

आपके साहित्यिक कृतित्व के समग्र मूल्यांकन में तीसरा तत्व है आंचलिकता। कवि का हृदय ग्राम्य अंचल से अत्यधिक प्रभावित रहा। ग्रामीण परिवेश में जन्म के कारण आंचलिक परिस्थितियों एवं स्थितियों ने कवि को आकर्षित एवं प्रभावित किया, जिससे उनके काव्य में आंचलिक प्रसंगों की सफल अभिव्यक्ति हो सकी।

अन्त में कहा जा सकता है कि भाषा, शैली, रस, राष्ट्रीयता, आंचलिकता, ऐतिहासिक चिन्तन तथा भौगोलिक सर्वेक्षण आदि की दृष्टि से डॉ. आनन्द का काव्य उत्कृष्ट कोटि का है, स्पृहणीय है।

अष्टम् अध्याय :

उपसंहार

अष्टम अध्याय

उपसंहार

आधुनिक काव्य में राष्ट्रीय चेतना के संवाहक के रूप में प्रतिष्ठित डॉ. मन्नूराव आनंद मूलतः ओज के कवि थे। उनके काव्य में राष्ट्रीयता के स्वर सर्वत्र मुखरित हुये हैं। हास्य, करुण, शान्त एवं श्रृंगार आदि रसों का अस्तित्व वीर रस के सहायक के रूप में उपलब्ध है। पं. श्याम नारायण पाण्डेय से तुलना करते हुये डॉ. सेवक वात्स्यायन ने लिखा है कि 'राष्ट्रीयता में वीरता हो सकती है, प्रायः होती है, पर केवल वीरता का नाम राष्ट्रीयता नहीं होता और इस अर्थ में पाण्डेय जी राष्ट्रीयता में आनन्द से पीछे हैं।

'डॉ. मन्नूराव आनन्द : व्यक्तित्व और कृतित्व' विषय पर प्रस्तुत शोध प्रबंध में अवतरण से लेकर देहावसान पर्यन्त उनके व्यक्तित्व को उभारा गया है। उनकी पारिवारिक पृष्टभूमि , माता–पिता, कद–काठी, वेश–भूषा, खान–पान, रुचियाँ, स्वाभाविक औदार्य, विनोद–प्रियता तथा अखिल भारतीय काव्य मंचों पर गौरवपूर्ण स्थिति को रेखांकित किया गया है। आपबुन्देलखण्ड को गौरवान्वित करने वाले वीर रस के अप्रतिम कवि के रूप में प्रतिष्ठित रहे तथा जीवन पर्यन्त इस अंचल के साहित्यिक वातावरण को शक्ति प्रदान करते रहे।

डॉ. आनन्द के साहित्यिक कृतित्व में उनका अनूठा ऐतिहासिक महाकाव्य 'झाँसी की रानी' जनप्रतिनिधियों की दुर्नीतियों एवं शोषण प्रवृत्ति के विरुद्ध सक्रिय आन्दोलन के रूप में रचित **'एम. एल. ए. राज.'** तथा काँग्रेस शासन की कमियों को उजागर करती हुई रचना **'सन् अड़तालीस'** मुख्य हैं। **'शक्ति निदान'** प्रसिद्ध आयुर्वेदिक ग्रन्थ **'माधव निदान'** का सटीक एवं सार्थक पद्यानुवाद है। **'दारुल शफा'** (अप्रकाशित) रचना विधायकों की विलासी प्रवृत्ति एवं सुरा–सुन्दरी के वैभव का प्रत्याख्यान है। **'पब्लिक इन्टरेस्ट'** में तत्कालीन काँग्रेस शासन द्वारा रेलगाड़ी के तृतीय श्रेणी के किराया–वृद्धि के विरुद्ध आन्दोलन को हास्य के माध्यम से व्यक्त किया गया है।

'हिमालय सीमा' तथा **'फौजी गठबंधन'** रचनायें चीन तथा पाकिस्तान को लक्ष्य मानकर लिखी गईं तथा दिल्ली के लाल किले पर अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में उनकी भूरि–भूरि सराहना की गई। **'साबर मती के तट पर'** तथा **'यही देश है वह'** रचनायें महात्मागाँधी के सत्य और अहिंसावादी आन्दोलन पर आधारित हैं तथा भारत के वीरों की कभी न धूमिल होने वाली गुण–गरिमा का स्पष्ट दस्तावेज है।

'दमन' रचना में लखनऊ विश्व विद्यालय में घटित पुलिस की दमनकारी नीतियों को उजागर किया गया है। **'याद किसी की आ जायेगी'** में आध्यात्मिक प्रसंगों को उभारते हुये लौकिक विरह वेदना को व्यक्त किया गया है। **'अब तक सोने वाली'** में आत्मा तथा परमात्मा के मिलन का रूपक बाँधा गया है। **'पावस रैन अँधिरियाँ'** बुन्देली रचना में गोपियों का विरह वर्णन है। **'हाय रे कँगरिसिया'** में काँग्रेसी नेताओं के भ्रष्टाचारों का विवरण है। **'जो कऊँ हम पढ़ जायें'** रचना में बुन्देली मिठास का तथा खनकते स्वरों का दिग्दर्शन है, इसमें भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त पिछड़ी शिक्षा व्यवस्था को रेखांकित किया गया है।

वस्तुतः डॉ. आनन्द की काव्य भाषा में तत्सम, तद्‌भव, देशज तथा स्थानीय बुन्देली शब्दों के सफल प्रयोग प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। उनके काव्य में **'अनुप्रासमयता'** शीर्षक के अन्तर्गत छेकानुप्रास, वृत्यनुप्रास तथा लटानुप्रास आदि के प्रयोग वर्णन को कलात्मकता प्रदान तो करते ही हैं, सौन्दर्य की अभिवृद्धि भी करते हैं। डॉ. आनन्द की रचनाओं में **'चित्रमयता'** शीर्षक के अन्तर्गत प्रकृति चित्रण, शारीरिक सौष्ठव, भावानुकूलता तथा अन्य विविध चित्रों को रेखांकित किया गया है। **'नादात्मकता'** शीर्षक में प्राकृतिक नाद–योजना, अस्त्र–शस्त्र सम्बंधी नाद, युद्ध क्षेत्र की नादात्मकता आदि का विवरण प्रस्तुत किया गया है तथा आवश्यक उदाहरण देकर उनकी पुष्टि की गई है।

डॉ. मन्नूराव आनन्द की काव्य भाषा में व्याकरणिक कोटियों का मूल्यांकन भी प्रस्तुत किया गया है। इसमें संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय आदि की परिभाषायें, उदाहरण तथा भेदोपभेदों का विस्तृत एवं सफल निरूपण किया गया है।

अंतिम अध्याय में **'डॉ. मन्नूराव आनन्द के साहित्यिक कृतित्व के समग्र मूल्यांकन'** शीर्षक के अन्तर्गत रसों के विवेचन में श्रृंगार, करुण, शांत, वीर, रौद्र तथा वीभत्स आदि रसों की निष्पत्ति को विविध उदाहरणों द्वारा सम्पुष्ट किया गया है। राष्ट्रीयता की भावना को उनकी समस्त रचनाओं के परिप्रेक्ष्य में देखा गया है। **झाँसी की रानी, एम. एल. ए. राज., सन् अड़तालीस, हिमालय सीमा, दारुल शफा, पब्लिक इन्टरेस्ट** तथा **फौजी गठबंधन** आदि रचनाओं में राष्ट्रीयता के पर्याप्त उदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं। उनके काव्य में **'आंचलिकता'** शीर्षक में बुन्देल खण्ड के रीति रिवाजों, त्यौहार, मान्यतायें, बोली, भाषा तथा भौगोलिक सीमाओं का चित्रांकन किया गया है।

डॉ. आनन्द का राष्ट्रीय ऐतिहासिक महाकाव्य **'झाँसी की रानी'** अनूठा महाकाव्य है। वस्तु प्रतिपाद्य, भाषा, शैली, सामाजिक स्थिति, राजनीतिक संदर्भ, मार्मिक स्थल तथा रस निष्पत्ति आदि सभी दृष्टियों से

यह काव्य उत्कृष्ट काव्य की संज्ञा से अभिहित किया जा सकता है। भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलन में रानी लक्ष्मीबाई के अप्रतिम योगदान का ऐतिहासिक दस्तावेज है उनका **'झाँसी की रानी'** महाकाव्य।

'शक्ति निदान' उनकी आयुर्वेदिक रचना है। इसे पढ़कर उनके बहुमुखी व्यक्तित्व का आभास मिलता है। डॉ. आनन्द का साहित्य साध्य न होकर मात्र साधन है, जिसके माध्यम से उन्होंने अपने आपको मानव समुदाय से सम्बद्ध किया है। उनकी उर्दूशैली में लिखी गईं गज़लें तथा नज्में बेजोड़ हैं। उनका हास्य एवं श्रृंगार भी अनूठा है तथा अपनी काव्य प्रतिभा के कारण ही लगभग पचास वर्षों तक अखिल भारतीय कवि सम्मेलन– मंचों पर वे प्रतिष्ठित रहे।

यह शोध प्रबंध डॉ. मन्नूराव आनन्द के साहित्य की उपादेयता तो प्रकट करता ही है, साथ ही बुन्देलखण्ड से सम्बंधित अन्य अनेक नवीन शोध विषयों का मार्ग प्रशस्त करता है।

परिशिष्ट :

आधार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची

पत्र-पत्रिकाएँ

परिशिष्ट–

आधार एवं संदर्भ ग्रन्थ सूची

1– झाँसी की रानी : राष्ट्रीय ऐतिहासिक महाकाव्य, डॉ. आनन्द, आनन्द प्रकाशन, जालौन, उ.प्र.

2– एम.एल.ए.राज. :डॉ. आनन्द, आनन्द प्रकाशन, जालौन, उ.प्र.

3– सन् अड़तालीस :डॉ. आनन्द, आनन्द प्रकाशन, जालौन, उ.प्र.

4– शक्ति निदान : डॉ. आनन्द, आनन्द प्रकाशन, जालौन, उ.प्र.

5– अगस्त सन् बयालीस :डॉ. आनन्द, (अप्रकाशित)

6– दारुल शफा : डॉ. आनन्द, (अप्रकाशित)

7– पब्लिक इन्टरेस्ट : डॉ. आनन्द, (अप्रकाशित)

8– हिमालय सीमा : डॉ. आनन्द, (अप्रकाशित)

9– फौजी गठबंधन : डॉ. आनन्द, (अप्रकाशित)

10– साबरमती के तट पर : डॉ. आनन्द, (अप्रकाशित)

11– हर्षिता भूगोल : जिला जालौन, डॉ. बी. शर्मा, हर्षिता प्रकाशन मंदिर, राजमार्ग, उरई

12– भारतीय शासन एवं राजनीति : एम.पी. त्यागी, संजीव प्रकाशन मेरठ

13– मध्य भारत का इतिहास : डॉ. हरिहर निवास द्विवेदी, सूचना प्रकाशन, मध्यप्रदेश, भोपाल, प्रथम संस्करण 1959ई.

14– डॉ. हारिहर निवास द्विवेदी के साहित्यिक कृतित्व का मूल्यांकन : डॉ. सुखदेव सिंह सेंगर (अप्रकाशित शोध प्रबंध) जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म. प्र.)

15– अनुभूति रत्नाकर : पं. मिहीलाल, साधन प्रकाशन, डेम्पियर नगर, मथुरा, सन् 1986ई.

16– शताब्दी के अंत में कविता : डॉ. मुक्तेश्वरनाथ तिवारी, साहित्यनिकेतन, शिवाला रोड़, कानपुर

17– मानक हिन्दी व्याकरण : डॉ. पृथ्वीनाथ पाण्डेय, जयभारती प्रकाशन, 267–बी, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

18– अकबरी दरबार के हिन्दी कवि : डॉ. सरयूप्रसाद अग्रवाल, लखनऊ विश्वविद्यालय प्रकाशन, सं. 2007वि., लखनऊ

19– झाँसी की रानी :समीक्षा, डॉ. सेवक वात्स्यायन, आनन्द प्रकाशन, जालौन, उ.प्र.

20– साहित्यिक निबंध : डॉ. विजयपालसिंह, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,

21– भाषा विज्ञान : डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, ग्रन्थम् प्रकाशन, रामबाग–कानपुर, सन् 1990ई.

22– जिन्दगी की आँच और रंग : सम्पादक–गुरूचरण सिंह, मंजूषा प्रकाशन, नई दिल्ली

23– गीतीतिहास में ये गीत : डॉ. सूर्यप्रसाद शुक्ल, विहान प्रकाशन, दर्शनपुरवा, कानपुर, जनवरी 2002ई.

24– पाश्चात्य काव्य शास्त्र के सिद्धान्त : डॉ. शान्तिस्वरूप गुप्त, अशोक प्रकाशन, नई सड़क–दिल्ली

25– हिन्दी साहित्य :अतीत के झरोखे से: डॉ. इन्द्रपालसिंह 'इन्द्र', वागीश्वरी प्रकाशन, लायर्स कॉलोनी, आगरा

26– अभिनव हिन्दी व्याकरण तथा निबंध रचना : श्रीमती सुमित्रा देवी गुप्ता, आशा प्रकाशन गृह, करोलबाग–नई दिल्ली, सन् 1964ई.

27– साहित्यिक निबंध : डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद

28– बुन्देलखण्ड की रासो रचनाओं की काव्य–भाषा का अनुशीलन : डॉ.मुकेश कुमार श्रीवास्तव, (अप्रकाशित शोध प्रबंध) 1996ई.

29– आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ. वासुदवनंदन प्रसाद

30– मानक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ. हरिवंश तरुण, प्रकाशन संस्थान, दयानंद मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, सन् 2003ई.

31– मध्यकालीन हिन्दी काव्य भाषा : डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1991ई.

32– काव्य में उदात्त तत्व : डॉ. नगेन्द्र, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, सन् 1961 ई.

33– हिन्दी शब्दानुशासन : आचार्य किशोरीदास बाजपेयी, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सन् 1966ई.

34– हिन्दी व्याकरण : कामताप्रसाद गुरू, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सन् 1960ई.

35– आधुनिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना : डॉ. कैलाशचन्द्र अग्रवाल, रंजन प्रकाशन, आगरा, सन् 1974ई.

36– सर्वनाम, अव्यय और कारक चिह्न : डॉ. सीताकिशोर, आराधना ब्रदर्स, गोविन्द नगर, कानपुर, सन् 1989ई.

37– ग्वालियर संभाग के बोली रूपों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन : डॉ. सीताकिशोर, आराधना ब्रदर्स, गोविन्द नगर, कानपुर

38– दतिया जिले की ओली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन : डॉ. नसीम फरहत, (अप्रकाशित शोध प्रबंध) जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

पत्रिकायें–

1– वचन : अक्टूबर 2003, प्रभात प्रिन्टिग प्रेस, इलाहाबाद

2– पल–प्रतिपल : सितम्बर–दिसम्बर 2002